

रक्षत गङ्गाम्

डॉ॰ कमला पाण्डेया

गङ्गा!

गङ्गा मात्र जलधारा ही नहीं, युगों से बहती आ रही भारतीय परम्परा की धारा है; तटों पर बसी सभ्यता संस्कृति की धारा है; गङ्गा सच्चिदानन्दा है, मकरासनस्था है, सदानीरा है; सदा से होता आया है इसकी महिमा का गान, सुधा सौन्दर्य का ध्यान, तोयामृत का पान; किन्तु अपनों के अत्याचारों से रूठी है आज गङ्गा, दुःखी है, मूर्च्छित हो रही है अपनों द्वारा किये जा रहे पापों से; मलिन है आज भारत की प्राणधारा, जर्जर है प्रदूषणों से;

आज आवश्यकता है उसके प्राचीन गौरव और सांस्कृतिक वैभव की ओर मुड़कर देखने की; उसे पुनः स्वच्छ बनाने के दृढ़ संकल्प की;

इसी अन्तर्वेदना ने 'रक्षत गङ्गाम्' काव्य रचना की प्रेरणा दी है।

इस कोमल काव्याभिव्यक्ति में कहीं स्वर्धुनी का निर्मल उज्ञ्वल सौन्दर्य उद्भासित है, कहीं प्रदूषण से भयभीत गङ्गा की वेदना की मूक कराह है, कहीं प्रदूषिता का मुखरित आर्तनाद है तो कहीं रक्षा की करुण पुकार है!

प्राञ्जल भाषा में भावों की मधुर झङ्कृति अलङ्कारों की सहज सज्जा एवं छन्दों की विविधता में एकाकार हो गई है, वर्णनों में तथ्यों का यथायथ सन्निवेश है।

गङ्गा सेवा भारत सेवा है, गङ्गा रक्षा आत्मरक्षा है, गङ्गा प्रदूषण सम्पूर्ण मानव सभ्यता का प्रदूषण है; इस विकट सङ्कट से उबरने के लिए विचार क्रान्ति की अपेक्षा है, पुनर्जागरण की आवश्यकता है। 'रक्षत गङ्गाम्' गङ्गा रक्षा के लिए इसी नव जागरण का आह्वान है, पर्यावरण चेतना एवं प्रकृति संतुलन के प्रति सावधान करने की सचेत वाणी है, यन्त्रयुगीन अंधेरे में घिरे हुए मानव के लिए दीपशिखा है।

रक्षत-गङ्गाम्

(गङ्गा-सप्तशती)

(हिन्दी भावानुवाद सहित)

'श्रीकिशोरीकिङ्करी'
डॉ. कमला पाण्डेय
उपाचार्य, संस्कृत-विभागाध्यक्ष, वसन्त कन्या महाविद्यालय
कमच्छा, वाराणसी

अंग्रेजी भावानुवाद

डॉ. अनुराधा बैनर्जी
उपाचार्य, अंग्रेजी-विभागाध्यक्ष, वसन्त कन्या महाविद्यालय
कमच्छा, वाराणसी

प्रकाशक
Shreemata
श्रीमाता
Publications
सत्साहित्य, सद्-विचार, सद्-व्यवहार, सद्-गति

Rakṣata Gangām (Retrieve Gangā) -- by Kamala Pandey
(Translated into English -- by Anuradha Banerjee)

रक्षत गङ्गाम् (गङ्गा-सप्तशती महाकाव्य)

प्रथम संस्करण १९९९

मूल्य- ३००.००

आवरण एवम् अलङ्करण
श्रीमती अञ्जना चटर्जी
वरिष्ठ प्रवक्ता-कलाविभाग
वसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी

प्रकाशक
श्रीमाता पब्लिकेशन्स
बी ४/६० हनुमानघाट, वाराणसी
दूरभाष - ३१४४३९।

अक्षर संयोजक
श्रीमाता कम्प्यूटर्स,

मुद्रक
महावीर प्रेस, भेलूपुर, वाराणसी



श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य पदवाक्यप्रमाण-पारावारपारीण अनन्त श्रीविभूषित ज्योतिष् एवं द्वारकाशारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामिश्रीस्वरूपानन्दसरस्वती जी महाराज का शुभाशीर्वाद।

गङ्गावतरण भारत की प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं में से एक है। इस महानदी के आविर्भाव ने भारत के मानचित्र को ही बदलकर रख दिया है। गङ्गा की महिमा का वर्णन वेदों से लेकर सम्पूर्ण अवान्तर साहित्य में भरा पड़ा है। हमारी संस्कृति व सभ्यता का विकास इसी के तट पर हुआ, हमारे पूर्वज ऋषि-महर्षियों ने इसी के पावन तट पर समाधिस्थ होकर वेदों का साक्षात्कार किया, दर्शन शास्त्रों के अज्ञेय रहस्यों को खोला और उपनिषदों में निगूढ़ अनुभूति की अभिव्यञ्जना की।

वर्षों तक संग्रह कर रखने पर भी विकृत न होना-कीड़े आदि उत्पन्न न होना - गङ्गाजल की वह विलक्षण विशेषता है जो संसार की किसी अन्य नदी के जल में नहीं मिलेगी। पाश्चात्य एवं पौरस्त्य सभी गङ्गाजल के इस महत्त्व को स्वीकार करते हुए उसे आन्त्रिक रोगों की दिव्यौषधि मानते हैं।

पर यह कैसा दुर्भाग्य है कि भौतिकवादी चाकचिक्य में गङ्गा आज उपेक्षिता हो गई है, उसका प्रत्यक्ष नदी रूप अनुदिन प्रदूषित होता जा रहा है। यह मानव सभ्यता के लिए महान भावी सङ्कट का ही सङ्केत है।

इस विभीषिका को अनुभव करते हुए कवयित्री की काव्य साधना 'रक्षत गङ्गाम्' महाकाव्य के रूप में प्रवाहित हुई है, जो गङ्गारक्षा के लिए लोकमानस को सचेत करने का एक सार्थक प्रयास है।

'रक्षत गङ्गाम्' के प्रकाशन के अवसर पर हम अपना मङ्गलाशीष प्रदान करते हैं तथा भगवती शारदाम्बा और भगवान् चन्द्रमौलीश्वर से प्रार्थना करते हैं कि भविष्य में भी लेखिका ऐसी रचनाओं से साहित्य जगत् को समृद्ध करती रहे।

स्वरूपानन्द सरस्वती

शुभाशंसा

गङ्गा का संकट सभ्यता का संकट है। सभ्यता के संकट से मानव जाति त्रस्त है। भोगवादी प्रवृत्ति प्रकृति के साथ कसाई सा व्यवहार कर रही है। विकास की अवधारणा में बेहोश आज के कर्णधार समाजवादी जीवन की प्रतीक गङ्गा में बांध बनाकर उसे पूंजीवादी शिकंजे में कस रहे हैं। आज धरती, प्रकृति और मानव के दुःखों को मिटाने के लिये तीन प्रकार के लोगों की आवश्यकता है । ज्ञान के प्रतीक मानवतावादी वैज्ञानिकों की, कर्म के प्रतीक आन्दोलनकारी सामाजिक कार्यकर्ताओं की एवं भक्ति के प्रतीक करुण–हृदय साहित्यकारों एवं कलाकारों की। ये तीनों जन हृदय को आलोकित कर समाज परिवर्तन करेंगे। आज इन्कलाब लाने वाले बीज, जो तेजी से नष्ट हो रहे हैं, की रक्षा करना है। विफल तकनीकी क्रान्ति वाले इस युग में अब मानवीय संवेदना की क्रान्ति की आवश्यकता है जो यह बता सके, अहसास करा सके कि गङ्गा हमारी माँ है।

'रक्षत गङ्गाम्' इसी मानवीय संवेदना की सजीव अभिव्यक्ति है। मैं इस काव्य की रचना के लिए अपनी शुभकामना देता हूं और कवयित्री को आशीर्वाद से अभिनन्दित करता हूं।

गङ्गा हिमालय कुटी
टिहरी –गढ़वाल

सुन्दरलाल बहुगुणा
29-9-96

सुन्दर लाल बहुगुणा

नगरे नगरे ग्रामे ग्रामे विलसतु संस्कृत-वाणी।
सदने सदने जन-जन-वदने जयतु चिरं कल्याणी।।

सार्वभौम-संस्कृत-प्रचार-संस्थानम्

(देश-विदेशयोः संस्कृतभाषायाः प्रचारार्थं सञ्चालितं प्रतिष्ठानम्)

वासुदेव द्विवेदी शास्त्री
(सञ्चालकः)

डी. ३८/११० हौजकटोरा,
वाराणसी-१
दूरभाष : ३५३०१२

हार्दिकी शुभाकाङ्क्षा

सुविमल-भाव-तरङ्गा
नव-नव-कमनीय-कल्पनासङ्गा।
गङ्गासप्तशतीयं
भव-भय-भङ्गाय जायतां जगतः ।।१।।

एषा च सप्तशतिका
सरस-मधुर-पद्यपुञ्ज-सङ्गीतैः।
दिशि-दिशि शशिकर-धवलां
'कमला'ऽमल-कान्ति-कीर्तिमातनुताम् ।।२।।

अभिनव-रचनोद्यानं
देवगिरो नव्य-भव्य-सुममेतत् ।
सुरभीकरोतु कविकुल-
गुञ्जद् -भृङ्गालि-सेवितं सततम् ।।३।।

इति गङ्गासप्तशती-ललितकविता-रसपानमुग्धमनसः
वासुदेव द्विवेदि शास्त्रिणः
(सञ्चालकस्य)

२५-२-१९९९

समीक्षणम्

त्याग, तपस्या और तपोवन की विशुद्ध शाश्वत चेतना से अनुप्राणित वाल्मीकि-व्यास-कालिदास आदि महाकवियों की सशक्त वाणी ने भारतीय संस्कृति के उस महनीय स्वरूप को प्रकाशित किया है जिसमें जीवन और जगत् की एकाकारता पदे-पदे उपलब्ध है। इस संस्कृति में न त्याग की प्रधानता है न भोग की, अपितु दोनों का समन्वय अभीष्ट है। इसीलिये गृहस्थ और संन्यास-जिसके मूल आधार ब्रह्मचर्य और वानप्रस्थ हैं, को जीवन के अनिवार्य अङ्ग के रूप में स्वीकार किया गया है। गृहस्थों के लिए नगर और संन्यास के लिए अरण्य की उपयोगिता अपरिहार्य है। नगर और अरण्य का सन्तुलन पर्यावरण को शुद्ध रख सकता है। इसी क्रम में दोनों प्रकार के आश्रम ध र्मियों के लिए शुद्ध पर्यावरण संवाहिका, अन्नौषधि उत्पादिका तथा भुक्ति-मुक्ति - उभयोपपादिका भगवती गङ्गा को भारत ने सर्वदा आध्यात्मिक परिचिति दी है । यही कारण है कि ऋषियों के मत में गङ्गाजल जल नहीं, ब्रह्मद्रव है।

दुर्भाग्यवश दीर्घकाल तक भारत के विदेशी आक्रान्ताओं के अधीन हो जाने पर इस पवित्र स्रोतस्विनी में मल एवम् अन्य प्रदूषणों को मिलाने का जो उपक्रम चल पड़ा,वह उत्तरोत्तर बढ़ता ही जा रहा है। यदि अभी भी सचेत होकर इसे प्रदूषणों से न बचाया गया तो जन जीवन, भारतीयता किंबहुना मानवता ही संकटग्रस्त हो जायेगी; अतएव गङ्गा पर गहराये इस सङ्कट से दुःखी होकर, गङ्गा की भक्ति से ओत-प्रोत सुकोमल हृदया कवयित्री की अन्तर्वेदना 'रक्षत-गङ्गाम्' महाकाव्य के रूप में प्रवाहित हुई है।

यह कृति प्रायशः महाकाव्य के लक्षणों को गतार्थ करती है। ग्यारह सर्गों के इस महाकाव्य में अनेक गेय छन्दों का मधुर समावेश है । सर्गान्त में भिन्न छन्द का उपन्यास किया गया है। नगर, समुद्र, शैल, ऋतु, सूर्योदय, चन्द्रोदय, जलक्रीड़ा, वन, आश्रम, विप्रलम्भ, विवाह, पुत्रोदय, संग्राम इत्यादि वर्ण्य विषयों का चित्रण है। काव्य की नायिका दिव्य प्रकृति जगत्तारिणी गङ्गा हैं, जिनके आधिदैविक, आधिभौतिक एवम् आध्यात्मिक स्वरूप का चित्रण क्रमशः पौराणिक, आधुनिक,भौगोलिक एवं आध्यात्मिक सर्गों में किया गया है।

रेखा में उद्भासित चित्रों की भाँति भावानुरूप कहीं वैदर्भी कहीं गौड़ी और कहीं पाञ्चाली रीतियों के प्रयोग से शब्दचित्र का उत्कीर्णन है। छोटे-छोटे सुमधुर

पदों के विन्यास से माधुर्य गुण, स्फुटार्थ होने से प्रसादगुण और प्रसंगानुकूल कहीं-कहीं ओजोगुण का सन्निवेश है। उपनागरिका, कहीं-कहीं परुषा तो कहीं-कहीं कोमला वृत्ति का प्रयोग है।

रसभाव समाहित-चेता कवयित्री ने इस काव्य में अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, व्यतिरेक, अर्थान्तरन्यास आदि अहमहमिकया समागत अलङ्कारों से कविता कामिनी को अलङ्कृत किया है। उत्तम देवता गङ्गा विषयक रतिभाव ध्वनि अथवा दृष्टिभेद से भक्ति रस एवं शान्त रस काव्य में अङ्गी रूप से अवस्थित है। अन्य शृङ्गारादि रसों का अङ्ग रूप से यथायथ सन्निवेश है। प्रदूषण से द्रवित हृदया कवयित्री ने स्थान-स्थान पर करुण रस की मार्मिक अभिव्यक्ति की है। इस प्रकार नाना रसभाव समुज्जवल यह कृति महाकाव्य के रूप को प्रस्तुत करती है।

वैदिक छन्द अनुष्टुप् में यह महाकाव्य वाग्देवता एवम् अन्य इष्टदेवों के नमस्कारात्मक मंगल से प्रारम्भ होता है। अनन्तर विविध वृत्तपुष्पों में गुम्फित स्त्रग्विणी गङ्गा का मनोहारी चित्रण है। कवयित्री ने श्रीगङ्गा को सामान्य निर्झरिणी के रूप में नहीं,अपितु उस चेतन शक्ति के रूप में देखा है,जो भारतीय संस्कृति की मूल आधार है; भारत राष्ट्र की अमूल्य निधि है। इस प्रकार यह महाकाव्य गङ्गा परिशोधन पुरस्सर पर्यावरण चेतना की ओर लोकमानस को आकृष्ट करता है। पारम्परिक शास्त्रानुकूल वर्णना एवम् आधुनिक प्रगतिशील विचार धाराओं के गङ्गा-यमुनी समन्वय से समृद्ध यह काव्य राष्ट्रीय एकता एवम् अखण्डता तथा विश्वबन्धुत्व के कल्याणकारी सन्देश का संवाहक है। सम्पूर्ण विश्व के लिए साम्यवाद की प्रतीक गङ्गा का चित्रण करते हुए विश्व में व्याप्त विनाश लीला के भय के संकेत भी काव्य में सूक्ष्मरूप में विद्यमान हैं। मां गङ्गा के प्रति भक्ति संचार, प्रदूषणों का निराकरण एवं पर्यावरण रक्षा के लिए जन जागरण का आह्वान करती हुई कवयित्री अपने उद्देश्य में पूर्णतः सफल हुई है।

श्री गङ्गा के प्रति यह भावमयी अभिव्यक्ति कल्पान्तर स्थायिनी हो और स्वर्धुनी की अविरल धारा के समान कवयित्री के यश का विस्तार करे, यह शुभकामना है।

डॉ. वायुनन्दन पाण्डेय
पूर्व उपाचार्य-साहित्य विभाग
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,वाराणसी

श्रीमती लीला शर्मा

संस्थापक-प्राचार्या
वसन्त कन्या महाविद्यालय
कमच्छा, वाराणसी- १०

प्रथम अध्यक्षा- स्वच्छ गङ्गा अभियान, वाराणसी

आशीर्वाद

वसन्त कन्या महाविद्यालय की स्थापना शिक्षा जगत् की एक चिरस्मरणीय घटना है; क्योंकि इसकी स्थापना के समय शिक्षा के पुनर्गठन के साथ ही भारतीय संस्कृति के चिरन्तन आदर्शों को अक्षुण्ण रखने, सामाजिक मूल्यों की रक्षा के साथ छात्राओं की नैतिक, बौद्धिक, शारीरिक, आध्यात्मिक तथा सौन्दर्यग्राही शक्तियों के सन्तुलित विकास का महान् आदर्श था। इस आदर्श को अपनी छात्राओं एवं शिक्षिकाओं में पल्लवित होते देख 'वसन्त' सदैव गौरवान्वित होता रहा है। सतत साधना ही सफलता एवम् आत्मोत्कर्ष का सोपान है, इसी के द्वारा सच्चा ज्ञान प्राप्त हो सकता है। अध्यापिकाएं छात्राओं के हृदय में पवित्र ज्ञान की शाश्वत ज्योति प्रज्वलित करें- यही हमारा सङ्कल्प रहा है। इस सङ्कल्प को 'रक्षत गङ्गाम्' के रूप में साकार हुआ देख मुझे अपार हर्ष हो रहा है। मैं इस कृति की लेखिका डॉ. कमला पाण्डेय, अंग्रेजी भावानुवादिका डॉ. अनुराधा बैनर्जी, आवरण शिल्पी श्रीमती अञ्जना चैटर्जी तथा प्रकाशन सहयोगिनी कु० सरला पाण्डेय (संस्कृत आनर्स, स्नातक तृतीय वर्ष) को हार्दिक बधाई देती हूँ।

इस महाकाव्य की लेखिका जब बालिका के रूप में महाविद्यालय में प्रविष्ट हुयी, उसी समय मुझे उसके भविष्य का आभास हो गया था। वह दिनों दिन उन्नति के सोपान पर, पहले शिक्षा के क्षेत्र में तत्पश्चात् अध्यापिका के रूप में अग्रसर होती गयी। अपनी छात्राओं में अपने द्वारा अर्जित गुणों को कूट-कूट कर भरने में सतत प्रयत्नशील इस संस्कृत सेविका के बारे में सोचती हूँ तो कालिदास का यह श्लोक मेरे मानस पटल पर छा जाता है-

क्व ईप्सितार्थंस्थिरनिश्चयं मनः पयश्च निम्नाभिमुखं प्रतीपयेत् ।

गङ्गा आज प्रदूषण के भयानक दौर से गुजर रही है। उसकी रक्षा का सङ्कल्प भावी पीढ़ी को महाविनाश से बचाने के लिए अत्यन्त आवश्यक है। 'रक्षत गङ्गाम्' में कवयित्री ने इसी सामाजिक एवं सांस्कृतिक जागरण का आह्वान किया है।

मैं इस प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा करती हूँ और इसकी सफलता के लिए गद्गद हृदय से आशीर्वाद देती हूँ।

सस्नेह आशीर्वाद सहित
लीला शर्मा
२६. २. ९९

(लीला शर्मा)
'कृष्ण-कुटी'
बी.२९/१९ संकट मोचन मार्ग
वाराणसी-५
दूरभाष : ३१००२६

दिनाङ्क : २६-२-९९

R.C. SHARMA
Professor, Indian Art
& Museology



Director,
Bharat Kala Bhavan,
Banaras Hindu University,
Varanasi - 221005
Tel. 0542-316337
Fax. 317074 (B.H.U.)

I was much delighted to go through the manuscript of *'Rakṣata Gaṅgāṁ'* composed by Dr. Kamla Pandey, Reader and Head of the Department of Sanskrit, Vasant Kanya Mahavidyalaya, Kamachha, Varanasi. The journey of the Holy River from its emergence to the union with portion touching a number of important places is highly enchanting and rhythmic. The beautiful description not only unfolds the religious and cultural significance of these places but also highlights the role of the *Gaṅgā* in furthering their grandeur. This spontaneous outburst of her sentiments in form of prayers and pains appreciate the sanctity of the most sacred river of the East and also suggest remedies for its maintenance and proper care. This is a burning problem of the modern environment and this book will undoubtedly help in eradicating the menace of pollution.

The bunch of lyric poems comprising more than 700 verses is of great merit from the literary point of view and it was a great pleasure to read and listen to their melodious recitation from Dr. Pandey. The Hindi translation by the poetess herself and its English rendering by her colleague Dr. Anuradha Banerjee has further enhanced the value of the work and it will certainly be admired by the masses paying homage to the River *Gaṅgā* and appreciating the beauty and great contribution to the Indian thought and culture. Dr. Pandey deserves best compliments and congratulations for successful completion of this marvellous work.

R. C. Sharma

16.5.98

(R.C. SHARMA)

Res. A. 3, Principals' Colony, B.H.U., Varanasi- 221005, Tel. 0542-316291

Translator's note

The process of creativity is amazing. It silently etches out an opening because it can not remain muffled for ever. Teaching for a long time in class rooms loses its original excitement unless the mind of the teacher sets out to explore the ways to renew itself. Fortunately *'Sarjanā* became that platform for resuscitation. It has eventually offered a rare chance to the writer of *'Rakṣata Gaṅgāṁ'* to express her essential self and a nagging concern for *Gaṅgā*, the source of life for millions.

Translating the epic into English posed to be a challenge. The basic ideas in *Deva Vāṇī Sanskṛt* often resisted easy translation. The rich texture of Indian mythology recounting the minute movements of the divine river often left the translator vanquished in her modest effort. A verbatim translation of the text sometimes seemed to give a stilted flavour. So with the consent of the author the mode of free translation has been adopted, as it helps to render the essence of the epic in a more flexible way. Whatever, finally could be done is the result of the blessing of my *Guru* and the grace of *Gaṅgā*.

A glossary has been added for the readers who do not know the typical *Sanskṛt* expressions.

The writer and the translator feel overwhelmingly indebted to Dr. Aruna Mukhopadhyaya, who despite her fragile health took great pains to prepare the glossary and go through the translation minutely.

Anuradha Banerjee

25th March, 1999
Sheesh Mahal
Varanasi

अनुक्रमः

नमनम् .... (i)
निवेदनम् .... (iii)
मङ्गलाचरणम् १

उत्पत्तिः

प्रथमःसर्गः ..... पौराणिकमतम् ७
द्वितीयःसर्गः ..... आधुनिकमतम् ४२

यात्रा

तृतीयःसर्गः ..... हिमालय-देवप्रयागवर्णनम् ४९
चतुर्थः सर्गः ..... हृषीकेश-कर्णपुरवर्णनम् ७२
पञ्चमः सर्गः ..... तीर्थराजप्रयाग-विन्ध्यवर्णनम् ८४
षष्ठः सर्गः ..... काशी (वाराणसी)-वर्णनम् ९९
सप्तमः सर्गः .... विहारप्रदेश-वर्णनम् १४०
अष्टमः सर्गः ..... बङ्गभू-गङ्गासागर-वर्णनम् १६२

अध्यात्मम्

नवमः सर्गः ..... अध्यात्म-वर्णनम् १८९

प्रदूषणम्

दशमः सर्गः ..... प्रदूषण-वर्णनम् २०१

निवारणम्

एकादशः सर्गः .... निवारण-वर्णनम् २१५

परिशिष्टम्

सङ्केत सूची

१.--------वृ. ना. पु. .... वृहन्नारदीय पुराण
२.--------ब्रह्मं वै. पु. .... ब्रह्मवैवर्तपुराण
३.--------ब्र. पु. .... ब्रह्माण्ड पुराण
४.--------प. पु .... पद्म पुराण
५.--------स्क. पु. .... स्कन्द पुराण
६.--------पञ्च क्रो.परि. .... पञ्चक्रोशी परिक्रमा
७.--------का.र. .... काशी रहस्य
८.--------वारा. वै .... वाराणसी वैभव
९.--------वा. रा. .... वाल्मीकि रामायण
१०.--------दु. स. .... दुर्गा सप्तशती
११.--------कु. सं. .... कुमार सम्भवम्
१२.--------मेघ. .... मेघदूतम्
१३.--------अभि. शा. .... अभिज्ञान शाकुन्तलम्
१४.--------श. कल्प. .... शब्द कल्पद्रुम
१५.--------अ. को. .... अमर कोश
१६.--------गंगा ल. .... गंगालहरी
१७.--------देवी भाग. .... देवी भागवत
१८.--------श्रीमद् भा. .... श्रीमद्भागवत
१९.--------महाभा. .... महाभारत
२०.--------ऋग् .... ऋग्वेद
२१.--------गंङ्गो.मा. .... गंङ्गोत्तरी माहात्म्य
२२.--------उ. यात्रा. .... उत्तराखण्ड यात्रा
२३.--------कल्या.ती. .... कल्याण तीर्थाङ्क
२४.--------कल्या.ना.पु. .... कल्याण नारद पुराणाङ्क
२५.--------कल्या.श. .... कल्याण शक्त्यङ्क
२६.--------कल्या.भ. .... कल्याण भक्ताङ्क
२७.--------शं. दि. .... शंकर दिग्विजय
२८.--------का. इति. .... काशी का इतिहास
२९.--------अ. .... अध्याय
३०.--------श्लो. .... श्लोक
३१.--------स्क .... स्कन्ध



श्रीमती पञ्चाननी देवी

मातरं सानुमत्पुत्रीं सुकृतारण्यचारिणीम् ।
नमस्कृत्यानुरागेण कृतिं तस्यै समर्पये ।।

नमनम्

श्रीगङ्गाया गौरवं, स्वच्छं स्वरूपं माहात्म्यं, सम्प्रति च तस्यामहर्निशं विधीयमानं प्रदूषणं--इत्येतदुभयमवलोक्य समुद्भूता अन्तर्वेदना काव्यकलेवरमा-वहन्ती 'रक्षत गङ्गाम्' इत्युद्गाररूपेण प्रस्फुटिता। एतत्काव्यरचनायै प्रेरणातरङ्गप्रेषिकाम् अमृततोय-तरङ्गिणीं पराम्बां श्रीगङ्गामेव आदौ प्रणामाञ्जलिं समर्पये; तदनु अमिताऽऽशीर्भिः संवर्धयन्तीं मातरं पञ्चाननीदेवीं प्रणमामि। वैष्णवमहात्मनां बरेलीजनपदस्थ-तुलसीमठाधीश्वराणाम् अनन्तश्रीविभूषितानां केशवदासमहाराजानां शिष्या ममाग्रजा गुरुवर्याश्च श्रीस्वामिकमलनयनदासाः (श्रीकैलाशचन्द्रपाण्डेयाः) श्रद्धया प्रणम्यन्ते यैर्लक्ष्यस्यास्य सिद्धये मनसा वाचा कर्मणा सहयोगो विहितः।

एतस्मिन्नवसरे शास्त्रदृष्टिप्रदातार अस्मद्गुरुचरणाःप्राच्यापाच्यविधाविचार-चतुरा महामनीषिणो गोलोकवासिनः प्रो. सिद्धेश्वर भट्टाचार्यवर्याः, न्यायप्राचीन-भारतीय राजनीति शास्त्र-चूडामणयः पं. विश्वनाथ-शास्त्रिदातार-महोदयाः, मीमांसकप्रवराः पं. गजाननशास्त्रिमुसलगांवकर-महाभागाः,वैयाकरणाः पं.काशीनाथ पाण्डेयाः, प्रखरनैयायिकाः प्रो. कीर्त्यानन्द झा महोदयाश्च प्रणति पुरस्सरं सादरं स्मर्यन्ते।

यैस्तु काव्यकृतिरेषा आद्योपान्तं प्रसमीक्ष्य महाकाव्य कोटौ स्थापिता तेषां समालोचकमूर्धन्यानां साहित्यमनीषिणाम् अस्मद्गुरुवर्याणां डॉ. वायु-नन्दनपाण्डेयमहोदयानां कृते कृतज्ञता-ज्ञापनाय न समर्थानि मे वचांसि, तेषां चरणेषु ससम्मानं प्रणतिं निवेदये।

अस्य महाकाव्यस्य सफलतायै सनातन-धर्मध्वजधुरीणानां भारतीयसंस्कृति-संस्कृतोन्नायकानां देशोद्धाररतानां शारदा-ज्योतिष्पीठाधीश्वराणाम् अनन्तश्रीविभूषितानां पूज्यपादानां जगद्गुरुशङ्कराचार्याणां स्वामिस्वरूपानन्दसरस्वतीमहाराजानां शुभाशीर्वचोभिर्भृशमनुगृहीतास्मि, अतएव तत्रभवतां भवतां पादारविन्दयोः साष्टाङ्ग प्रणतिततिं समर्पये।

प्रख्यातपर्यावरणविद्भिः श्रीसुन्दरलाल-बहुगुणा-महोदयैरपि

अभिनन्दिताऽस्मि तावदाशीर्वचोभिः तान् प्रत्यपि हार्दिकीं कृतज्ञतां ज्ञापयामि। भारतकलाभवनस्य (काशीहिन्दूविश्वविद्यालयस्य) निदेशकैः प्रो.रमेशचन्द्रशर्ममहाभागैः स्नेहेन सभाजिताऽस्मि तान्प्रत्यपि भूयांसि नमांसि अर्पये। नमामि पं. वासुदेवद्विवेदिवर्याणां चरणयोश्च।

दीर्घकालं यावत् प्राचीन-नव्यन्याय-वेदान्तादिशास्त्राणाम् अध्ययने रतत्वात् शुष्के हृदये नवकवितालताविकासाय सरसरसधाराप्रवाहकाणां वसन्तकन्या-महाविद्यालयस्य सहयोगिनां संस्कृतमातृमण्डल-सर्जनासदस्यानां स्नेहपाशेन दृढमाबद्धाऽहं न पारये किमपि वक्तुम्; केवलं गद्गदहृदयेन प्रथमं बाल्यादेव सत्प्रेरिकानां सन्मार्गदर्शिकानां साकेतधामगतानां डॉ. सावित्री- श्रीवास्तवमहाभागानां पुण्यस्मरणं कुर्वे, वसन्तकलिकां विकसितामवलोक्य प्रहृष्यमाणामाद्यां प्राचार्यां श्रीमतीं लीलाशर्ममहाभागां सादरं प्रणमामि। मानसमुत्साहेन उल्लासयन्तीं प्राचार्याचरां मान्यामिन्दिरागुप्तमहोदयां, स्नेहमयीं वर्तमानप्राचार्यां डॉ. वीणा व्यासमहोदयाञ्च नमस्करोमि। काव्यसर्जनायाः प्रेरिकां कृतिञ्च आङ्ग्लभावानुवादेन विभूषयन्तीम् अनुरागवतीं डॉ. अनुराधा वन्द्योपाध्यायां तत्र साहाय्यं विदधतीं डॉ. अरुणामुखोपाध्यायां नमस्कुर्वन्ती ताभ्यः भूयशो धन्यवादान् वितरामि। शिष्यां सहयोगिनीं डॉ. शान्ता चट्टोपाध्यायां कनीयसीं पाण्डेयवंशजां डॉ. मीनाक्षीं पूर्णिमाञ्च प्रीत्याऽभिनन्दामि। शुभकामनाभिरानन्दयन्तीं डॉ. नन्दिनीं (वर्मा) स्नेहेन संवर्धयामि, आवरणालङ्करणकर्त्रीं श्रीमतीम् अञ्जनाचट्टोपाध्यायां सधन्यवादं सौहार्द्रेन सम्मानयामि।

ग्रन्थमिमं प्रकाशयन्तं श्रीमन्तम् उमाशङ्करपाण्डेयमहोदयं स्नेहेन सभाजयामि, संवर्धयामि चाशीर्भिः चिरायुष्मतीं सरलापाण्डेयां स्नेहपात्रां नन्दिनीञ्च स्नातकतृतीयवर्षीयां स्वकीयां शिष्याम्।

अन्ते च मानवसुलभभ्रमप्रमादवशाद् जातानां त्रुटीनां कृते विदुषां समक्षं क्षमां प्रार्थयन्ती पुण्यसलिलां निर्मलां कर्तुं प्रेरयेद् लोकमानसम् एष लघुप्रयास इति भगवन्तं विश्वेश्वरं सम्प्रार्थये।

कमला पाण्डेया

पञ्चामृतम्
बी१६/३८बी-१ पाण्डेय हवेली
वाराणसी-१०
दूरवाणी-३२९८३८,

निवेदनम्

साम्प्रतिके युगेऽनुक्षणम् अतिशयेन प्रदूष्यमाणं पर्यावरणं न केवलं मानवसभ्यतायाः कृते चिन्ताया विषयः, अपितु सकलचराचरजीवजातस्य कृतेऽभिशापरूपम् । विश्वधरातले प्राकृतिकापदाभिः प्रतिक्षणं भयाक्रान्तः खलु मानवः। प्रकृतिं प्रति क्रियमाणम् अप्राकृतिकं व्यवहारं विलोक्य समुत्पत्स्यमानो विनाशोऽनुमीयते तावत् पर्यावरणतत्त्वविद्भिः[१]। ध्यानाकर्षणमपि विधीयते अन्ताराष्ट्रियस्तरेण समायोज्यमानेषु सम्मेलनेषु [२]। प्राच्यभारतीयै मनीषिभिरपि पर्यावरणचेतनायाः प्रतिबोधः क्वचित् साक्षात् क्वचिच्च प्रतीक माध्यमेन कृतः। उदात्तप्राकृतिकतत्त्वेषु देवत्वमादधानानां वैदिक ऋषीणां छन्दस्वती सभ्यताया मुकुलनेन सार्धमेव पर्यावरणचेतनाया दीपशिखां प्रज्वालितवती । तैः प्रकृतिर्जडरूपेण न विश्लेषिता अपितु जगत आधारभूता [३] चिच्छक्तिरूपेण प्रतिपादिता,[४] सर्वोच्चसत्तात्त्वेन समाराधिता [५], मातृभावेन च उपासिता [६]।

आधुनिकं भौतिकं विज्ञानन्तु प्रकृतिं जड इत्यभिमन्यते। अमूर्तेषु परमतत्त्वेषु अनास्थां प्रकटयति। अतएव प्रकृतिसन्दोहस्य सम्पूर्णा प्रक्रिया उपभोक्तृवादिभिः मूल्यैरभिप्रेरिता वर्तते। साम्प्रतं हि नूतनानां वैज्ञानिकचमत्काराणां चाकचिक्येन

---

१. पर्यावरण असन्तुलन : आज की ज्वलन्त समस्या - (आज ५-६-८३)।
पवित्र गङ्गा में भारी प्रदूषण से गङ्गा घाटी में बसी बीस करोड़
आवादी को खतरा - (आज ३-६-८३)।
Ecological threat from man- (Times of India 6-6-83.)

२. पृथ्वी सम्मेलन (५-६-९२)।

३. आधारभूता जगतस्त्वमेका-दु.स. ११/४।

४. .... त्वं च परब्रह्मतत्त्वमेव। स्वयं प्रकाशमानमनतिशयानन्द चिद्रूपमसीत्यर्थः।
दु. स. ४/७ शान्तनु कृता व्याख्या।

५. द्रष्टव्यम् - ब्र.. वै. पु. प्रकृति खण्डे २/६६, ७-१०, वह्वृचोपनिषद् ।

६. या देवि सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता। दु. स. ५/७१।

चमत्क्रियमाणानि केषां चक्षूंषि न भवन्ति? प्रतिदिनम् अभिनवम् उपभोगोपकरणम् अवाप्य को नु न प्रसीदतितराम् । सकलसौविध्यसङ्कुला विलासिनी जीवनशैली केषां मनांसि न हरति? किन्तु नूनं विज्ञानस्य अपरोऽपि विनाशपिशुनः पक्षो भस्मासुरायते। एकेनैव पारमाणविकास्त्रेण क्षणादेव मानवता भस्मसात् भवेत् । भूतलाङ्गणं लघुमन्यमानै रणधीरै इदानीं गगनार्णवौ अपि रणाङ्गणायेते। 'स्टारवार' सदृशैः युद्धकौशलैः सकलम् आन्तरिक्षं पर्यावरणं भृशं प्रदूष्यते; येन सूर्यमण्डलस्य ओजोन इति सुरक्षाकवचो विहन्यते। दुष्परिणामोऽयं - सूर्यस्य प्रखरमयूखाः साक्षाद् भूतले निपतन्ति, असाध्यान् चर्मरोगान् जनयन्ति। सार्वभौमिक ऊष्मा सामान्यं तापमतिशेते। अन्तरिक्षयुद्धयानानां धूमेन निखिलजीवजन्तूनां प्राणधारको वायुः (आक्सीजन) प्रदूष्यते।

प्राचीनैः प्रकृति-वैज्ञानिकैस्तु प्रकृतिं प्रति एतस्या उपभोग्योपभोक्तृभावापन्नदृष्टेः दुष्परिणामो देवासुरसङ्ग्रामप्रतीकेन प्रतिपादितः।[७] तेषां मते पर्यावरणप्रदूषणं मानवस्य अन्तर्जगति अङ्कुरितानाम् आसुरीप्रवृत्तीनां प्रतिफलम् ।[८] अशुद्धे सति अन्तःकरणे बाह्य प्रदूषणं स्वतो निरस्यति।[९]

गङ्गावतरण प्रतीकेनापि किमपि अपूर्वमुपदिष्टं किल प्राच्यप्रकृतिवैज्ञानिकैः। एकस्यैव राज्ञः सगरस्य जनप्रतिनिधिभूतस्य षष्टिसहस्त्रसंख्याका आत्मजा जनसंख्यायाः सीमानमुल्लङ्घयन्ति। तेन जनसंख्याविस्फोटरूपिणी समस्या उत्पद्यते। विकृतजीवन-पद्धत्या आचरणे व्यतिक्रमो भवत्येव। फलतः ते विकारप्रेरिताः राजपुत्राः प्रथमं तावल्लतागुल्मपादपादीन् छिन्दन्तः तपोवनस्य बाह्यं पर्यावरणं विक्षोभयन्ति।[१०] विनीतवेषेण प्रवेष्टव्यानि तपोवनानि[११] इति कालिदासोक्तदिशा आश्रमप्रवेशकाले विनयशीलेन भाव्यम् । अहङ्कारमूर्तयः तेऽविनयिनः परुषवचनेन असद्व्यवहारेण

---

७. द्रष्टव्यम् - कु. स. २ सर्गः, दु. स. (प्रथम-मध्यम-उत्तम चरित्रम्)
वा. रा. सुन्दरकाण्डे ५१/३४। देवी भागवतम् स्क. ५।

८. द्र. कु.सं. २ सर्गः ।

९. ववुः पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभूद् दिवाकरः।
जज्वलुश्चाग्नयः शान्ताः शान्ता दिग्जनितस्वनाः।।
(दु. स. १०/३१ -३२)

१०. द्र. बृ.ना. पु. अ.७/२४ - ३३, ४७ - ५६।

११. अभि. शा. १ सर्गः।

च मुनेरन्तःप्रकृतिमपि उद्वेजयन्ति [१२] । परिणामतः कपिलान्तः- प्रकृतौ प्रादूर्भूता प्रतिक्रिया शापरूपेण परिणमते।[१३] एतस्यां विषमस्थितौ आधिभौतिकाधिदैविकाध्यात्मिकैतत्-त्रितयवैभवशालिनी सकलप्रदूषणनिवारिणी पर्यावरणचेतनायाः संवाहिका महानदी गङ्गा कथमवतरेदस्यां भारतभुवि-इति बहुविचारितं भगीरथेन तत्पूर्ववर्तिभिश्च भूपतिभिः। सा गङ्गा एव सर्वतो विशुद्धम् आन्तरिकं बाह्यं च पर्यावरणं संस्थाप्य आविद्यकान् कल्मषरूपान् विनाशबीजान् सगरात्मजान् समुद्धर्तुम् उन्मूलयितुं क्षमते।

ननु, कथं सामान्यरूपेण जलवाहिका नदी अन्तःप्रकृतिपरिशोधनपुरस्सरं बाह्यप्रकृतिं परिशोधयितुमर्हति-इति चेत्

न, श्रीगङ्गा न केवलं जलसंवाहिका अपितु त्रिविधाकारा शक्तिः। तथाहि-स्वकीयेन आध्यात्मिकवैभवेन सकलाज्ञाननिवारिणी अघौघसंहारिणी चिदानन्दासंविद्रूपिणी निराकारा स्वयंप्रकाशिनी। आधिदैविके नराकारा सती अवनितलेऽवतीर्य ' दैत्यतेजांसि हिनस्ति '। [१४] एषैव आधिभौतिके नीराकारा भवति। अतएव श्रीगङ्गा नामोच्चारणमात्रेण पवित्रीकृतहृदया, दर्शनेन पापापहारिणी, स्नानेन तापापहा, पानेन पुष्टितुष्टिदा, समाराधनेन च चतुवर्गफलप्रदा । अस्या इदं वैशिष्ट्यं सर्वविधां प्रकृतिं पर्यावरञ्च शोधने समर्थम् ।

अत्रेदमवधेयम् - गमयति प्रापयति ज्ञापयति वा भगवत्पदं या शक्तिः सा गङ्गा ।[१५]

आधिभौतिके इयमापोमयी शक्तिः तोयामृतेन तर्पयन्ती लोकम् आहिमालयात् सागरान्तं प्रवहन्ती जलधारारूपेण दृग्गोचरीभूता । हिमालयान्तर्गतस्य बदरिकाश्रमस्य उत्तरस्यां नारायणपर्वतस्य प्रान्तप्रदेशादुद्गता धारा विष्णुपदी अलकनन्देति स्मृता। एतस्या अपरा धारा गङ्गोत्तरी-हिमप्रवाहे नन्दन-मेरु-भृगुपथ-शिवलिङ्गयादि शिखरेषु अन्तःसलिला सती आविर्भवति गोमुखात् । सा च भागीरथीति कथ्यते। अपरा मन्दाकिनी केदारक्षेत्रे विद्यमानाद् हैमप्रवाहाद् उद्गता सती पर्वतीयान् प्रदेशानभिषिञ्चती

---

१२. वृ. ना. पु. अ. ८ १-६ ।

१३. इत्युक्तो कपिलः क्रुद्धो नेत्राभ्यां ससृजेऽनलम् ।
स वह्निः सगरान्सर्वान् भस्मसादकरोत् क्षणात् ।।
(वृ. ना. पु. ८/७)

१४. दु. स. ११/२७ ।

१५. शब्दकल्पद्रुमे गङ्गापदस्य व्युत्पत्तिः।

रुद्रप्रयागे भागीरथीं मिलति। कूर्माञ्चलसीमातः समुद्भूता पिण्डारका कर्णप्रयागे अनयोः सम्मिलति। एवं हिमाद्रेः भिन्न-भिन्नप्रदेशादुद्गत्य कलकलध्वनि - ध्वनितदिगन्तराः नैका निर्झरिण्यः परस्परं सम्भिदन्त्यः सन्देशमेकताया अखण्डतायाः समाहरन्त्य इव प्रतीयन्ते। भागीरथी अलकनन्दया सह सुप्रसिद्धे रमणीये देवप्रयागे मिलित्वा प्रसीदतितमाम्। ततः सर्वाः सम्मिश्रिताः सरितो गङ्गा-पदं भजन्त्यः पर्वतप्रदेशानतिक्रम्य समतले समागच्छन्ति। तीर्थराजे तु गङ्गा-यमुना-सरस्वतीनां सङ्गमो भवति। अत्र 'यमयति विरमति गङ्गायाम् [१६]' इति व्युत्पत्त्या यमुनाऽपि गङ्गा भवति। सर्वासां नदीनां संघभूता गङ्गा भगवन्तं समुद्रशायिनं नारायणं, नाराणाम् अपामयनं नारायणं समुद्रं वा सङ्गन्तुं सततं गतिशीला। एतासां सर्वासां नदीनां गतिशीलता गङ्गा-पद-वाच्या शक्तिः।

आधिदैविके तु विष्णोः चरणारविन्दसमुद्भूता चरणाऽमृतरूपा तावद् विष्णुपदी गङ्गा। अस्याः प्राकट्यमधिकृत्य विविधाः किल कथाः श्रूयन्ते पुराणेषु। तथाहि- अनुपमसौन्दर्यशाली वनमाली रासेश्वरः शरच्चन्द्रज्योत्स्नाच्छुरितायां राकायां यदा गोपिकाभिः सह रममाणः आसीत्, निरतिशयप्रेममयत्वात् तदा द्रवरूपेण परिणतः, एष ब्रह्मद्रवः श्रीकृष्णस्य परंब्रह्मस्वरूपत्वात्। निराकारसत्तायां सच्चिदानन्दात्मकोऽसौ साकारसत्तायां प्रेमरूपेण स्फुरितः सन् गङ्गारूपेण प्रवाहितः।[१७] भगवतः इयं प्रेमाशक्तिः तं गमयति, प्रापयति ज्ञापयति वा; अतएव गङ्गेति अभिधीयते। किञ्च- वामनावतारे हरिणा पादत्रयेण त्रिलोकी मिता। अन्तरिक्षे पादप्रक्षेपणे सति अङ्गुष्ठनखेन विवरोऽभूत्; ततः समुज्ज्वला गाङ्गधारा समुद्गता [१८]। सैषा तमसः परस्ताद् आदित्यज्योतिः प्रस्फुरिता सती आकाशगङ्गेति विज्ञायते। अपि च - महर्षेः कपिलस्य शापेन भस्मीभूताः खलु सगरात्मजाः। तेषां तर्पणाय गङ्गाया भूलोकेऽवतरणं परवर्तिभिः वंशजैराकाङ्क्षितम्। कृतभूरिपरिश्रमो भगीरथः सफलो बभूव किल स्वपूर्वजानां सगरात्मजानां तर्पणव्याजेन वसुधातले आनेतुमिमां प्राणधारां प्राणिजातस्य।[१९]जीवनस्य आधारभूता एषा सुधामयी तोयतरङ्गिणी पुरुषार्थत्रयं सम्पादयन्ती अन्ते स्वर्गं मुक्तिञ्च प्रददातीति सार्थक्यनामा गङ्गेति।

आध्यात्मिके च परं ब्रह्म गमयतीति योगात् चिदानन्दा संविद् गङ्गा-पदवाच्या[२०]।

---

१६. शब्दकल्पद्रुमे यमुनापदस्य व्युत्पत्तिः।

१७. द्र. ब्र.वै. पु. प्रकृति खण्डः।

१८. श्रीमद्भा. ५/अ. १७।

१९. वा. रा. अयो. ४३सर्गः।

इदमत्र ध्येयम् - अध्यात्मयोगे ध्यानप्रक्रियायां विषयीभूतं तत्त्वं यदा शब्दार्थौ अतिक्रम्य बिम्बग्राहकं भवति तदाऽतिनिगूढं तत्त्वं प्रतीकेषु बीजाक्षरेषु च निगूहन्ति तत्त्ववेत्तारः । गङ्गावतरणमपि आख्यानच्छलेन कमपि अपूर्वं दिव्यं लोकोत्तरं च तत्त्वं प्रतीकमाध्यमेन प्रतिपादयति। तथाहि -अखिलब्रह्माण्डस्य अधिष्ठानचैतन्यं तावद् विष्णुः =विशुद्धं व्यापनशीलं निरवच्छिन्नं च ब्रह्म। तदेव यदा द्रवरूपेण परिणमते तदा गङ्गेति उच्यते ।[२१] एष एव विष्णुः सावच्छिन्नः सन् ज्ञानेच्छा-क्रियात्मकाभिः तिसृभिर् गतिभिः त्रैलोक्यं व्याप्नोति।[२२] तस्य चिन्मयचरणेषु सञ्चरिता ऋतम्भरा पीयूषधारा चितिर्गङ्गेति गीयते[२३]।

एषा चिन्मयी आलोकधारा पृथिव्यन्तरिक्षपातालेषु, दैहिक-दैविक-भौतिकाऽवस्थासु, जाग्रत-स्वप्न - सुषुप्तिषु, मनोबुद्धयहंकारेषु, सत्य- शिव - सुन्दरेषु, इडा-पिङ्गला - सुषुम्णासु, सत्त्व-रजः - तमस्सु, पश्यन्ती - मध्यमा-वैखरीषु, सर्वेषु त्रियोगेषु ओता च प्रोता च; अतएव त्रिपथगेति उच्यते।[२४]

एषा विष्णुपादोदका विष्णुपदी, धातुः कमण्डलौ स्थिता ब्रह्मद्रवी, शिवजटासु

---

२०. यथोक्तं जगन्नाथेन गङ्गालहर्याम् -' न साक्षात्वेदैः .....' इत्यादिना श्लोके। अयमर्थः- हे सुरतटिनि! देवधुनि! यद् = ब्रह्म, गलितभेदै = अद्वैतप्रतिपादकैः 'नेह नानाऽस्ति किञ्चन' इत्यादि ब्रह्मरूपैः, साक्षाद् वेदैः = प्रत्यक्षश्रुतिभिरपि, न अवसितम् = इयत्तया न निश्चितम् । यस्मिन् ब्रह्मणि जीवानां = व्यासादिविद्वत्-प्राणिनां, मनोवागवसरः = मनोवचोव्यापारः, न प्रसरति ' यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह' इत्यादि श्रुतेः। निराकारम् = अशरीरं, नित्यम् =उत्पत्त्यादिशून्यं, निजमहिमनिर्वासिततमः =स्वमाहात्म्येन निर्वासितं = नाशितं तमो येन तत् स्वप्रकाशं ' यस्य भासा सर्वमिदं विभाति' इति श्रुतेः। विशुद्धं = मायामलरहितं, तत्त्वं = निखिलजगत्कारणत्वेन प्रसिद्धं ब्रह्मत्वं त्वमेव असि, न विषयः = त्वमितरविषयभूता नासीत्यर्थः । - पीयूषलहरी व्याख्या श्लो. १०। नारायण तीर्थसरस्वतीभिरपि 'चिदात्मैका नित्या चितिसुख सदाऽऽविष्कृतिरसि ' इत्यादि श्लोकेन गङ्गैव अद्वितीय ब्रह्म इत्युक्तम् । - पीयूषलहर्यामुद्धृतः ।

२१. योऽसौ सर्वगतो विष्णुः चित्स्वरूपी जनार्दनः।
स एवं द्रवरूपेण गङ्गाम्भो नाऽत्र संशयः ।। बृह. ना. पु. ४/२२।

२२. विचक्रमाणः त्रेधोरुगायः । ऋग्. १. १५४. १ ।
यस्य उरुषु त्रिषु विक्रमणेषु ।
अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा ।। ऋग्. १. १५४. २ ।

२३. विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः । ऋग्. १.१५४.५ ।

२४. गङ्गा - चिन्मय आलोक की नदी - डॉ. रमा कान्त पाण्डेय - सन्मार्ग-गङ्गाविशेषाङ्कः।

च अवतरिता जटाशङ्करीति ज्ञायते। अयमभिप्रायः-दिक्कालाद्यनवच्छिन्नस्य व्यापनशीलस्य ब्रह्मणः =विष्णोः सोपाधित्वं नाम ब्रह्मकमण्डलुत्वम् ।उपाधिपरिच्छेदेन सङ्गोलितं चैतन्यम् अण्डाकृतिं भजते। प्रकाशमयत्वात् स्वर्णाभोऽसौ हिरण्यगर्भपदेन प्रसिद्धः । तत्र परमविन्दुस्वरूपिणी गङ्गा विराजतेतमाम् । तां ब्रह्मकमण्डलुवर्तिनीं चैतन्यवारिधारां भुवस्तलेऽवतारयितुं महत्तप आवश्यकम् । तपोविग्रहो भगीरथः विश्वासे शिवेऽवतारयति इमाम् ऋतम्भराम् । विश्वासेऽवतरिता चैतन्यसलिला गङ्गा अहङ्कारविग्रहान् अविद्याग्रस्तान् जीवान् सगरात्मजान् उद्धर्तुं क्षमते। [२५]

यद्वा, 'नारा = आपोऽयनमस्य '[२६] इति व्युत्पत्या सूर्य मण्डले देदीप्यमानो देवो नारायणः । तस्य गगनव्यापिनी प्रभा गङ्गेति गीयते, गं = गच्छतीति निर्वचनात्[२७]। सूर्यस्य भगं = तेजः ईरयति योऽसौ भगीरथः प्रेरकः तस्य आन्तरिकीं शक्तिं त्रिलोक्यां प्रसारयति।

यद्वा, सूर्यमण्डलमध्यवर्ती नारायणः [२८] = व्यापनशीलं ब्रह्म तस्य ब्राह्मी चितिः सूर्यप्रभा आकाशगङ्गेति ज्ञायते ।

अपि च - पश्यन्ती - मध्यमा- वैखरीषु सञ्चरणशीला परा वाग् गङ्गा पदवाच्या। ऋग्यजुःसामसु अविच्छिन्नप्रवाहा एषा छन्दस्वती अनाद्यनन्ता शब्दब्रह्मस्वरूपा । [२९]

हा हन्त! अस्मिन्नघौघसङ्कुले कलौ ईदृशी विलक्षणा जीवनदायिनी प्राणधारा, भारतीय संस्कृति संवाहिका साम्प्रतं सर्वतोभावेन प्रकृष्टं दूष्यते। अमृततोय संवाहिनीं लोकमानसपावनीं स्वकीयां मातरं मलेन तिरस्कुर्वन्ति, दोषसमूहेन जर्जरीकुर्वन्ति तस्या एव पुत्राः । आधुनिक-जड़वादिसभ्यतायां पुनः -पुनः आसुरी प्रवृत्तयः वरीवृध्यन्ते। दुष्परिणामोऽयं भगीरथरथखातावच्छिन्न-प्रवाहा गङ्गा बन्धेषु प्रणालिकासु आबध्यते। व्यापारपोतानां रासायनिकद्रवैः तस्याः तोयाऽमृतं विषं विधीयते। उद्योगप्रधाननागरीसभ्यतायाश्च सकलं प्रदूषणजातं तत्तटेषु प्रक्षिप्यते। तस्या परात्वं देवत्वं अमृतत्त्वञ्च विस्मृत्य तामुपभोग्यात्वेन अभिमन्यन्ते आधुनिकाः साक्षराः

---

२५. तदेव।

२६. अमरकोश १.१.१८।

२७. सङ्गमाद् गमनाद् गङ्गा लोके देवी विभाव्यते-देवी भा. पु. ४५ अ.।

२८. ध्येयः सदा सवितृ-मण्डल ध्यवर्ती नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः ।

२९. गङ्गावतरण की दार्शनिक व्याख्या - डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी- सन्मार्ग-गङ्गाविशेषाङ्कः।

राक्षसा मानवाः । एतस्या आसुरीप्रवृत्तेः कुफलं मानवेनैव उपभोक्ष्यते। प्रदूषितेष्वपि पञ्चभूतेषु परासंविद्रूपिणी भगवती गङ्गा कदापि न विनङ्क्ष्यति। किन्तु मानवस्तु स्वकृतस्य पापपुञ्जस्य फलभोक्ता नूनं भविष्यति। पर्यावरणसन्तुलनस्य केन्द्ररूपो धवलगिरिमालाभिः समाच्छादितः शैलाधिराज उत्तरस्यां दिशि राष्ट्रप्रहरीरूपेण सुशोभते, किन्तु आधुनिकविकासवादिभिर् हिमालयं प्रति यद् वैनाशिकमाचरणं विधीयते , तस्य निदर्शनं पर्यावरणविदः श्रीसुन्दरलालबहुगुणामहोदयस्य वचनेषु द्रष्टुं शक्यते- The Himalaya is bleeding today on account of the onslaught of agressive developement. ------The Tehari dam is being constructed inspite of the scientist's warnings about the danger inherent in its construction [30]

हिमालयोद्‌गता निर्मलापगा वन्यसम्पत्तयश्च राष्ट्रं सञ्जीवयन्ति । किन्तु साम्प्रतं क्रियमाणेन भोगलिप्सामयेन विकासेन हिमवाहा यथा विनश्यन्ते, तेन सर्वासां नदीनां शुष्कता समापद्येत -One more threat to the Himalayan rivers is from the continuous recession of glaciers which has accelerated during recent years. ------- with recession of this glacier, a disert is spreading north wards [31]

श्री गङ्गायाः सङ्कटः सभ्यतायाः सङ्कटोऽस्ति। यतो हि एषा भारतीयसभ्यतायाः संस्कृतेश्च सन्देशामृतं सततं प्रवाहयति अस्माकं हृदयेषु। गङ्गा सङ्कटापन्ना भवेच्चेत् जीवनं सुखमयं कथं भवेत् । अतएव समुपागतोऽयं कालो भारतीयानां पुनर्जागरणस्य। अधिकाधिकानि धनानि अर्जयितुं नैव विस्मरणीयोऽयं सिद्धान्तः - Ecology is permanent economy. इति। स्मरणीयं तावद् भगीरथतपः , स्मरणीयं च महामनसां मालवीयमहाभागानां मतम् – भगीरथ–रथखातावच्छिन्नः प्रवाहो बन्धरहितो भवेदिति।

ज्ञान–विज्ञान–प्रज्ञानानां मणिकाञ्चन संयोगेन एव मानवकल्याणं भवितुमर्हति, प्रकृतिं जडत्वेन अभिमन्यमानं भौतिकं विज्ञानं स्वीयैः सहोत्पादविभूतिभिः विमोहितं सत् परमं सत्यं विस्मरति । एतद् विज्ञानं प्रज्ञानेन सह संवालितो भवेत् चेत् चतुर्वर्गफलावाप्तिर्भवेत् ।

तदेवम् एतस्मिन्नतिविषमे सङ्कटाऽऽपन्नेऽवसरे श्रीगङ्गायाः स्वरूपप्रतिपादकानि

---

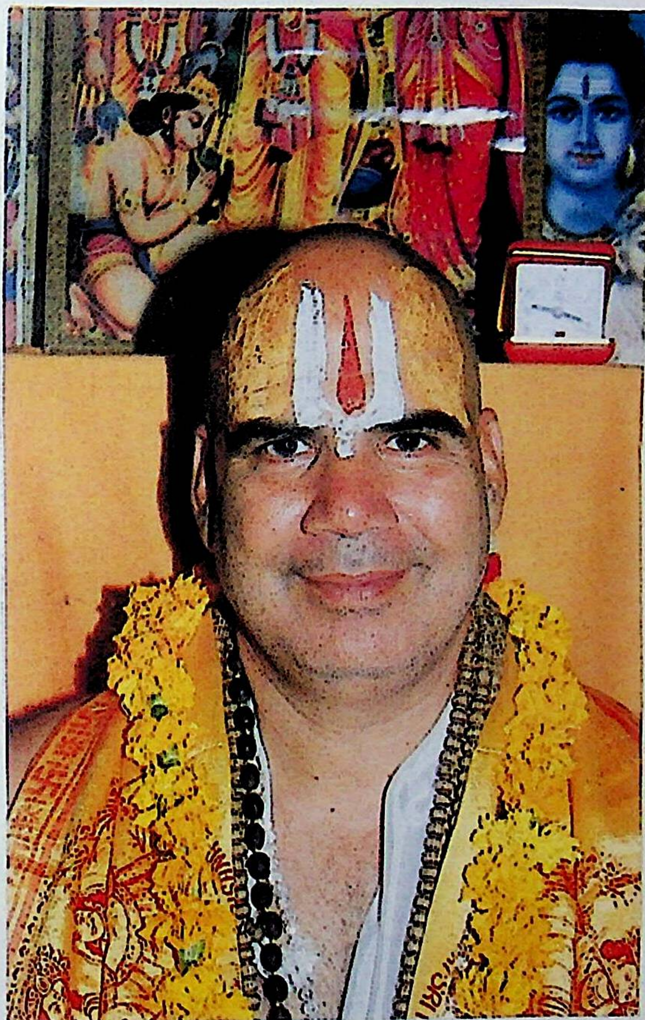
३०. The Himalayan threat- Sundar Lal Bahuguṇā.

३१. Ibid.

माहात्म्यप्रतिपादकानि च वचांसि मनसि अवधार्य तस्याः स्वच्छीकरणाय चिन्तनीयं प्रयतनीयञ्च दिवानिशम् । अस्यां हि पर्यावरण प्रशोधिकायाम् अभ्युदयनिःश्रेयसोः सम्पादिकायां लोकमातरि दोषजातानां वर्जने सति मानवसभ्यतायाः कल्याणं भवेत्। एतदन्तश्चिन्तनं 'रक्षत गङ्गाम्' काव्यकृतेः बीजं यमुरी कृत्य उत्पत्ति–यात्राऽध्यात्म–प्रदूषण–निवारण–प्रकरणेषु संविभक्तं तावदेकादशसर्गात्मकं महाकाव्यमिदम् । अत्र हि श्रीगङ्गायाः पौराणिकाधुनिक–भौगोलिकाध्यात्मिकस्वरूपनिरूपणं, तदनु साम्प्रतं क्रियमाणं दौर्भाग्यपूर्णं प्रदूषणं तन्निराकरणाय विचारणञ्च निरूपितं यथामति। निखिलानां नदीनां प्रतिनिधिभूताया गङ्गाया रक्षणम् अस्माकं जीवनस्य कृतेऽपरिहार्यम् इति मूलमन्त्रस्य गुञ्जनं लोकमानसे भूयात् । भारतीयानामास्थायाः केन्द्रीभूताया अस्याः स्वच्छीकरणाय कृतसङ्कल्पेन भाव्यं प्रत्येकं जनेन–इति शुभाकाङ्क्षया कृतिरियं लोकाय अर्प्यते ।

कमला पाण्डेया

रामनवमी २०५६ वैक्रमाब्दः



श्री श्री १०८ स्वामी कमलनयनदासः

वैष्णवी-गुणगानाय वैष्णवेन महात्मना।
दीक्षिता येन तं वन्दे स्वाग्रजं ब्रह्मचारिणम् ।।

॥ मङ्गलाचरणम् ॥

अमृताम्बुमयीं गङ्गां दर्शं-दर्शं प्रदूषिताम् ।
मर्मान्तिवेदनोद्भूतः शोकः श्लोकत्वमागतः ।।

।।श्रीः।।
।। ॐ नमो गङ्गादेव्यै ।।
।। ॐ गं गणपतये नमः।।

वाणीं वीणाधरां वन्दे वरदां बोधरूपिणीम् ।
काव्यसारमयीं शुद्धां छन्दोऽलङ्कारभूषिताम् ।।१।।
बुद्ध्यधिष्ठातृदेवञ्च वक्रतुण्डं विनायकम् ।
नमामि विघ्नहर्तारं गौरीपुत्रं गणाधिपम् ।।२।।
ज्ञानदं शङ्करं वन्दे परमं शाश्वतं गुरुम् ।
हनूमन्तं कृपाशीलं धीमन्तं भक्तवत्सलम् ।।३।।
संसारोच्छेदिकां देवीं मोहासुरविमर्दिनीम् ।
श्रद्धया नौमि कल्याणीं ब्रह्मविद्यां पराम्बिकाम् ।।४।।

काव्य के सारभूत तत्त्व रस से युक्त एवं छन्द तथा अलङ्कार से विभूषित विद्या की अधिष्ठात्री वरप्रदात्री वीणाधारिणी ज्ञान स्वरूपा भगवती वाणी (सरस्वती) को नमस्कार है। बुद्धि के अधिष्ठातृ देवता, विघ्नहर्ता गौरीपुत्र गणपति को नमस्कार है। परमशाश्वत आदिगुरु शङ्कर तथा कृपाशील भक्तवत्सल हनुमन्त लालजी महाराज को नमस्कार है। संसार का उच्छेद करने वाली, मोहरूपी असुर का मर्दन करने वाली कल्याणमयी परा अम्बा ब्रह्मविद्या को नमस्कार है।।१-४।।

I revere the goddess of learning,who holds *Vīṇā* in her blissful hands and who is the essence of poetry, ornamented by rhetoric and prosody. I bow to *Gaṇapati*-the god of intellect, the son of *Gaurī* and the remover of all obstacles. I greet the perennial preacher, Lord *Śaṅkar* and *Hanumān*. I adore the ultimate reality, that is *Brahmavidyā*, which eradicates all worldly attachments and releases one from the cycle of life and death.(1-4)

शास्त्रद्वारं ययोद्घाट्य मोक्षद्वारमनावृतम् ।
शिक्षादीक्षोभयोपेतां वन्दे गुरुपरम्पराम् ।।५।।
पाषाणमङ्कुरीकृत्य सिञ्चन्तीं स्नेहधारया ।
वत्सलां जननीं वन्दे पञ्चाननीति संज्ञिताम् ।।६।।
अम्बरादाशिषां ज्योतिर्विकिरन्तं दिवि स्थितम् ।
नीलाम्बरं स्वपितरं प्रणमामि पुनः पुनः ।।७।।

* * * * *

सीतारामकृपाभिषेकविमलां तन्वीं मतिं कोमलाम्
आदाय प्रयते प्रगातुममितं गङ्गायशो निर्मलम् ।

शास्त्रद्वार को खोलकर मोक्षद्वार का उद्घाटन करने वाली शिक्षा और दीक्षा–दोनों प्रकार की गुरुपरम्परा को प्रणाम है। पाषाण के समान जड़ मेरे हृदय में ज्ञानबीज को अङ्कुरित कर निरन्तर स्नेह धारा से सींचने वाली वात्सल्यमयी जननी पञ्चाननी देवी को नमस्कार है। आकाश से आशीर्वाद के प्रकाश को फैलाते हुए स्वर्ग में स्थित पिता श्री नीलाम्बर दत्त पाण्डेय को मैं बार बार प्रणाम करती हूँ ।।५–७।।

सीता और राम के कृपारूपी जल से स्नात होकर विमल हुई अल्प बुद्धि से मैं गङ्गा के अमित यश का गान करने के लिए प्रवृत्त हुई हूँ। हे माता गङ्गे ! तुम्हारे जल से आकृष्ट चित्त वाली अत्यन्त भावाकुल मैं जो तोतली शिशुवाणी बोल रही हूं,

I pay homage to both traditions of teachers, those who have propagated education and those who have given the spiritual initiation leading to salvation. Again I bow gratefully to my beloved mother Smt. Panchanani Devi, who nourished the roots of my creative leaning with her immense love and patience and today the sapling is eager to blossom in its own limited capacity. My salutations are to my father Nīlamber Dutta Pandey; the rays of whose blessings are bestowed upon me from his heavenly abode.[5-7]

The grace of Lord *Rāma* and *Sīta* has so kindled the dorment sense of creativity in me that my humble self seeks to sing the glory of the celestial river *Gaṅgā* in its meek and modest way. O Mother *Gaṅgā*, seeing your holy water I am so overwhelmed that I try to render my feelings into these verses! Due to your

मातः! तेऽम्बुसमाहृतैकहृदया भावाञ्चिता भूरिशः
तुभ्यं देवि! समर्पयामि सहजां वाणीं मृदुं शैशवीम् ।।८।।
यद्यप्यम्ब ! गभीरता तव तनोः प्राज्ञैर्न विज्ञायते
वेदान्तादिनयेप्यवेद्यमिति ते तत्त्वं समाकर्ण्यते ।
चञ्चत्तोयतरङ्गयाऽऽर्द्रहृदये सम्प्रेषितं यत्त्वया
तत्तुभ्यं करुणालयेऽनुकवनं प्रत्यर्पये सादरम् ।।९।।
यद्यप्यम्ब ! गभीरकाव्यकृतिषु स्तोत्रप्रबन्धेष्वपि
प्रीत्या ते महिमा त्रिलोकविशदः सङ्गीयते कोविदैः।
किन्त्वद्य प्रचुरप्रदूषणहतां दृष्ट्वाऽऽर्तनादः स्वतो
'गङ्गां रक्षत-रक्षते' ति वचनैरुद्गीर्यतेऽन्तःस्थितः ।।१०।।

उसे तुम्हें ही अर्पित करती हूँ। हे अम्ब ! तुम्हारी गम्भीरता को बड़े-बड़े ज्ञानी-ध्यानी नहीं जान पाते। वेद-वेदान्त में तुम्हारे रहस्य को अवेद्य बतलाया गया है। किन्तु मेरा हृदय तुम्हारे चञ्चल जलतरङ्गों से आप्यायित हो जो कुछ कह रहा है, उसे मैं तुम्हें ही सादर अर्पित करती हूं। हे अम्ब ! यद्यपि तुम्हारी महिमा का गान वेद-पुराणों में बारम्बार हुआ है। शङ्कराचार्य, जगन्नाथ जैसे सारस्वत कवियों ने तुम्हारी प्रचुर स्तुति की है, किन्तु आज तुम्हें अत्यधिक प्रदूषण से विनष्ट होता देख, मेरे अन्तस् में जो आर्तनाद हो रहा है वह 'गङ्गा की रक्षा करो-रक्षा करो'- इन वचनों से स्वतः फूट पड़ा है ।।८-१०।।

kind inspiration a spring of poetry has opened up inside me and I offer my innocent utterings into these lyrical chants!O Mother, although your reality could not be encompassed by learned and wise scholars, while *Vedānta* says that your mystic Self is inaccessible, yet your twinkling spray of water provokes this ignorant narrator to relate your delightful glory to the millions of mortals. O merciful Mother, I convey my reverence in these hymns. Galaxy of celeberated poets from time immemorial have sung for your pure life-giving stream, still your anguished cry emanating out of pollution is yet to receive attention. My entire existence is shaken by the state of ruin which has been inflicted on you and hence, a cry to " *Save Gaṅgā* " impels me to write instinctively.[8-10]

आविर्भावकथामघौघशमनीं ब्रह्मद्रवि! प्राञ्जलां
शास्त्रोक्तं रुचिरञ्च तेऽवतरणं श्रेयस्करं वर्णये ।
यात्रास्तेऽनुपमा हिमालयनगादासागरं चित्रिता
अध्यात्मं परिकीर्तितुं परमणुं गूढं कथं पारये! ।।११।।
पैशाचीं विकृतां प्रवृत्तिमशुचिं सन्दृश्यमानां नृणां
क्रूराणां दुरितं वदानि किमु हा! सर्वं जुगुप्साकरम् ।
अस्मात् पापसमुच्चयादनुदिनं प्रक्षीयमाणां समै-
रस्माभिः परिचिन्तनीयमवितुं नूनं परं श्रेयसे ।।१२।।

हे ब्रह्मद्रवि ! तुम्हारी रक्षा की इस करुण पुकार के क्रम में सर्वप्रथम पुराणों में उल्लिखित आर्विभाव कथाओं का काव्यात्मक चित्रण है। तत्पश्चात् तुम्हारी अवतरण कथाओं का चित्रण है। यात्रा प्रकरण में तुम्हारी हिमालय से गङ्गा-सागर तक की अनुपम यात्रा का वर्णन है। तुम्हारे अत्यन्त सूक्ष्म अध्यात्मतत्त्व का निरूपण करने में समर्थ मैं भला कैसे हो सकती हूँ! मनुष्यों की पदे-पदे दिखाई देने वाली जुगुप्सा उत्पन्न करने वाली उस पैशाची प्रवृत्ति के बारे में क्या कहूं माँ ! जो तुम्हें निरन्तर प्रदूषणों से बोझिल बना रही है। इस पाप समूह से निरन्तर क्षीण होती हुई गङ्गा को बचाने का प्रयास हम सभी मानवों को मिल कर करना होगा, तभी हमारा कल्याण सम्भव है।।११-१२।।

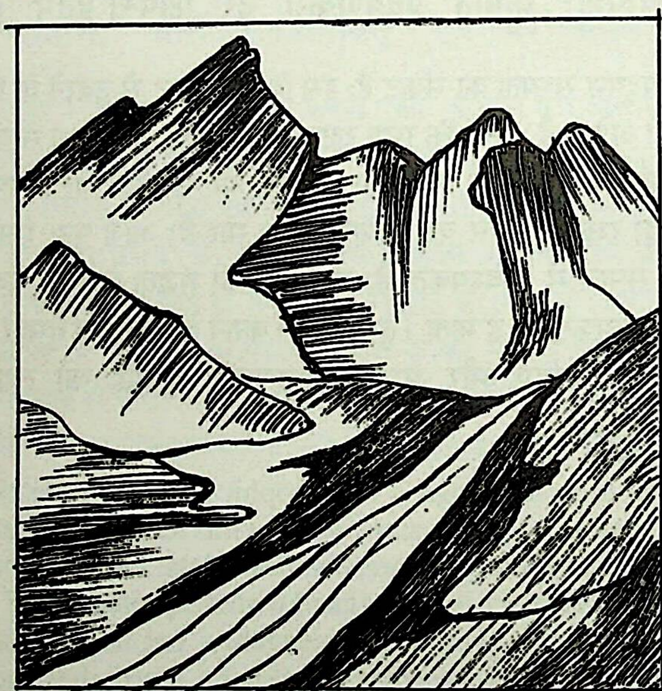
Drawing on the sublime heritage of the holy *Purāṇas*, at the outset, the prime outburst of my chants toils to delineate your divine manifestation and then it rolls on to give voice to your mystical descent and finally it strives to recount your time-honoured journey from the *Himalaya* to *Gaṅgā-Sāgar*. It was an uphill task for my meek capacity to comprehend and reflect on your inexplicable spiritual magnanimity, but even then I felt goaded to get a glimpse of your reality, It was an awesome venture far above my potential. The inherent cruelty and the faithlessness of the degraded modern man have graudually eroded the sap of your life and imparted an anguished look to you. This awareness makes me raise a voice of protest and find a wayout of the terrible pollution inflicted on you.[11-12]

गङ्गारक्षणमेव भारतभुवः संरक्षणं शाश्वतं
गङ्गारक्षणमेव जीवजगतोः सञ्जीवनं सुन्दरम् !
गङ्गारक्षणमेव विष्णुभजनं स्वर्गापवर्गप्रदं
गङ्गारक्षणमेव दुर्लभतमं संसारसारायितम् ।।१३।।
इत्येषा नवजागृतिः समुदिता भूयात् समाजे पुनः
क्रान्तिः स्यात् परिवेशशोधनपरा वैचारिकी पूर्णतः
अम्ब! त्वाममलां विधातुमधुना सङ्कल्पनीयं ध्रुवं
त्वत्पुत्राः कुमतिं प्रदूषणकरीं दूरे क्षिपन्तु द्रुतम् ।।१४।।

(गङ्गा प्रदूषण सभ्यता का संकट है; इस विकट संकट से उबरने के लिए जन जागरण की अपेक्षा है) क्योंकि गङ्गा रक्षा भारत रक्षा है, गङ्गा रक्षा से जीव और जगत् का संजीवन सम्भव है, गंगा रक्षा ही स्वर्ग और मोक्ष देने वाला विष्णु भजन है और गङ्गा रक्षा ही संसार का अत्यन्त दुर्लभ सार है। आज पुनः ऐसी विचार क्रान्ति की समाज में आवश्यकता है। पर्यावरण की शुद्धता के लिए संकल्पबद्ध होने की आवश्यकता है। हे माता ! तुम्हें निर्मल बनाने के लिए अब तुम्हारे पुत्रों को तैयार होना चाहिए और अपनी प्रदूषणकरी दुर्बुद्धि को त्याग देना चाहिये।।१३-१४।।

The pollution of *Gaṅgā* is catastrophic for the whole civilization. Generating public awareness about this terrible problem may hint at a escape route. The preservation of the identity of *Bhārat* and the entire ecology is interrelated with the protection of *Gaṅgā* which is the living symbol of spirituality. Let us join hands at every level of our existence and enkindle the highest point of intellectual revolution, which shall enable us, O Mother, to protect and preserve you from mindless torture of human society! [13-14]





॥उत्पत्तिः॥

सर्वतीर्थमयीं गङ्गां स्वर्णदीं सुरदीर्घिकाम् ।
जगदुद्धारिणीं वन्दे लोलकल्लोलमालिनीम् ।।

प्रथमः सर्गः
पौराणिकमतम्

श्रीहरेः पादपद्मोद्भवा पावनी,
ब्रह्मणोऽमत्रगा शम्भुमौलौ स्थिता ।
आपतन्ती द्युलोकात् तरङ्गायिता
राजते गाङ्गधारा सिता शीतला ।।१।।
लोककल्याणहेतोरचिन्त्याऽव्यया
सच्चिदाऽऽनन्दरूपाऽप्यभिव्यज्यते ।
गुम्फितः सत्कथासूद्भवोऽस्या भुवि
स्तूयते श्रूयते मानवैः सर्वदा ।।२।।

श्रीहरि के चरण कमलों से उद्भूत, ब्रह्मा के कमण्डलु में विराजमान एवं शम्भु के मस्तक पर स्थित, स्वर्गलोक से उतरती हुई तरंगायित, पावन, शुभ्र एवं शीतल गङ्गा की धारा सुशोभित हो रही है। यह अपने वास्तविक रूप में सच्चिद् आनन्द रूपा है, अचिन्त्य और अव्यय होते हुए भी लोक कल्याण के लिए प्रकट होती है। इसीलिए इसके उद्भव की कथाओं को अनेक प्रकार से गुम्फित कर संसार में मानवों द्वारा गाया जाता है।।१-२।।

The sacred *Gaṅgā* springs up from the lotus-like feet of *Śrī Hari*, gets contained in the chalice of *Brahmā* and dwells on the pinnacle of Lord *Śiva's* head. She gushes down from the celestial world with surging waves and adorns the earth with Her cool purity.This *Gaṅgā*, despite the truth that She is beyond human knowledge and the sense of material exhaustion, has taken a palpable form to bring about welfare to this immense creation.

आविर्भाव-कथा

नित्यगोलोकधाम्नि प्रकाशात्मिका
रासलीलोत्सवे चानुरागात्मिका।
कृष्णराधाङ्गसंस्पर्शसत्त्वस्रुती
राजते गाङ्गधारा सिता शीतला[१]।।३।।
मञ्जिमानौ प्रियौ कुञ्जमध्ये स्थितौ
श्यामगौरच्छवी मेलयन्तावुभौ।
भावमावर्धयन्तावभिन्नौ यदा
प्रेमगङ्गा स्रुता दिव्यरूपा तदा ।।४।।
सर्वदाऽन्योऽन्ययोर्भावभूमौ यदा
रूपमाधुर्यपानेन चित्तद्रवः ।
दिव्यनीरं भवल्लक्ष्यमाणस्तदा
प्रेमगङ्गोच्छलत्यूर्मिभिर्मञ्जुला ।।५।।

श्रीगङ्गा नित्य गोलोक धाम में प्रकाशस्वरूपा हैं और रास लीला के अवसर पर अनुराग रूपा होकर सर्वत्र व्याप्त हैं। श्रीकृष्ण और श्रीराधा के अंगों के परस्पर संस्पर्श से जो सात्त्विक स्वेद होता है वही गङ्गा की शुभ्र शीतल धारा के रूप से सुशोभित होता है। अतिमञ्जुल प्रिया प्रीतम कुञ्ज में बैठकर श्याम और गौर कान्ति को परस्पर मिलाते हुए जब अनुराग के भाव को बढ़ाते हैं तब प्रेमगङ्गा का प्रस्रवण होता है। सर्वदा एक दूसरे की भावभूमि में विराजमान होते हुए जब वे रूप और माधुर्य का पान करते हैं तब उनका हृदय द्रवित होता है। उस समय वह चित्तद्रव

For this reason alone the event of Her descent is recounted, sung and commemorated by humanity.[1-2]

Gaṅgā expresses Herself in the form of Supreme Light in the immortal *Go Loka Dhām*. She is the embodiment of love in the moments of *Rās Līlā*. *Gaṅgā* is the outcome of that purest form of sweat, which is generated at the time of the eternal union of the divine couple-*Rādhā* and *Kṛṣṇa*. *Gaṅgā* streams down as the incarnation of love of *Rādhā* and *Kṛṣṇa*, illuminating the moment of the unified paradox of black and white colours, when the divine couple grace the seat of their beautiful bower. They remain absorbed in each other's reality; while the elements of *Rūpa*

राधिका माधवं माधवो राधिकां
　　नित्यमध्यात्मयोगेन　सम्पश्यतः।
अद्वयत्वं भजन्तौ मिथः प्रीतिदौ
　　प्रेमसौन्दर्यभेदेन　संशोभितौ।।६।।
गोपगोपीसमाकीर्ण-राधोत्सवे,
　　शम्भुसङ्गीत-माधुर्य-सुस्वादिते[२]।
अप्रकेतद्रवः सन् तरङ्गायितः
　　प्रेमरूपोऽच्युतोऽभूच्च गङ्गापयः।।७।।
वेदवाक्ये 'रसो वै स'[३] इत्युक्तिभिर्
　　वर्णितश्चिन्मयो रस्यमानो रसः।
सैष रासेश्वरः सैव रासेश्वरी
　　दिव्यनीरस्वरूपावभूतामहो ! ।।८।।

दिव्य नीर के रूप में दिखाई देता है और प्रेमगङ्गा के रूप में उछलता है ।।३-५।।

श्रीराधा माधव को और श्रीमाधव राधा को सर्वदा अध्यात्मयोग द्वारा देखते रहते हैं अर्थात् दोनों एक दूसरे के ध्यान में समाधिस्थ रहते हुए अभेदावस्था को प्राप्त हो जाते हैं, वे ही अपनी द्वैतावस्था में प्रेम और सौन्दर्य के भेद से सुशोभित होते हैं। ।।५-६।।

गोप-गोपियों से भरे हुए राधा महोत्सव में जब शम्भु ने अत्यन्त मधुर गान गाया तो उस गान के आस्वाद से श्रीकृष्ण अप्रकेत सलिल हो गये और उनका प्रेममय द्रवीभाव ही गङ्गा जल हो गया ।।७।।

वेद वाक्य में जिसे 'रसो वै सः' कहा गया है, जो चिन्मय है, रस्यमान रसस्वरूप है,

and *Mādhurya* saturate them, their essence dissolves into the form of the divine water- *Gaṅgā*.[3-5]

Rādhā and *Mādhava's* meditative vision unites them; it is an inward unison, and when they asume an outward expression, it acquires the form of eternal love and beauty. When *Śambhu* played his mellifluous music during the great celebration of *Rādhāmahotsava*, the chants overwhelmed *Kṛṣṇa* so deeply that His entire entity of love got transformed into the self of *Gaṅgā*.[6-7]

The Supreme Reality, whom the *Vedās* infer as "*Raso vai saḥ*", who is *Chinmay Rasa* and *Rasyamān*, as revealed in the form of

राधाभूदनुरागभूरिभरिता धारा कृपासागरी
कृष्णप्रेमपरिद्रुता रसमयी गोलोकरासेश्वरी।
गङ्गेति श्रुतिगोचरा सितरुचिर्माधुर्यरत्नाकरी
द्यावाभूमिविगाहिनी विलसिता कल्लोलमालाधरी ।।९।।

* * * * *

वामनोरुक्रमे वा त्रिलोक्यां मिते
पादविक्षेपणादन्तरिक्षे स्फुटे।
तस्य चाङ्गुष्ठदेशात् स्रवन्ती शुभा
राजते गाङ्गधारा सिता शीतला।।१०।।
सैव विष्णोः पदाद् ब्रह्मलोके, ततः
प्राप्य लोकं ध्रुवं पुण्यतोया शुभा।

वही रासेश्वर और रासेश्वरी दिव्यनीर के रूप में परिणत हो गये और गङ्गा कहलाये। अत्यधिक अनुराग से भरी हुई कृपा की सागर, गो लोक की रासेश्वरी राधा जब कृष्ण के दिव्य प्रेम में डूबी तो स्वयं भी धारा बन गई। अति श्वेत कान्ति वाली, माधुर्य की खनि वही धारा गङ्गा नाम से स्वर्ग से पृथ्वी तक लहरों की माला धारण करके बह रही है।।८-९।।

विशाल पादप्रक्षेप वाले वामन ने जब अपने तीन पैरों से त्रिलोकी को नाप लिया था, तब अन्तरिक्ष लोक में उनके बायें पैर के अंगूठे से जो छिद्र हुआ था, उससे निकलती हुई गङ्गा की शीतल धारा सुशोभित हुई। वही विष्णु चरण से ब्रह्मलोक,

Raseśwar and *Raseśwarī* has melted to become the divine water - *Gaṅgā.* The elements of *Rādhā*, the *Raseśwarī* of *Go loka*, an ocean of grace, when immersed in the divine love of *Kṛṣṇa*, also got transformed into a stream. That same white stream due to its intense purity, a reservoir of sweetness, became the celebrated *Gaṅgā*, who took in her fold the earth and the eternal void.[8-9]

When *Vāman* with long strides had measured the *Trilokī* by taking three steps, then from the very crevice created by the pressure of His left toe in the Void the cool.white stream *Gaṅgā* ensued. The same *Gaṅgā* went to *Brahmaloka* from *Viṣṇu-charaṇa* and then to

भिद्यमाना चतुर्धा चतुर्दिक्षु च
स्वोच्चशृङ्गेषु सम्यग्धृता पर्वतैः।।११।।
तासु सीता सतीचारुचारित्र्यवद्
निर्मला गन्धमाद्यद्रिशृङ्गं गता।
प्राच्यभागे तु भद्राश्ववर्षं जलैः
प्लावयन्ती वरा क्षारमब्धिं गता।।१२।।
माल्यवच्छृङ्गतोऽभिप्रतीचीं गता
सिञ्चती केतुमालं सुचक्षुः सदा।
किञ्च, भद्रा सुमेरोश्च्युता शोभते
क्लेदयन्ती कुरूनुत्तरानम्भसा ।।१३।।
हेमकूटाद् गिरेः प्लावनायावनीं
भारतीयामवाचीं गता नन्दिता।

फिर ध्रुवलोक में गई। वहां से चार धाराओं में विभक्त होकर चार दिशाओं में बह चली, जिसे पर्वतों ने अपने ऊंचे शिखर पर धारण किया। उनमें सती के चरित्र के समान निर्मल सीता नाम की धारा गन्धमादन पर्वत में गिरी और पूर्व में भद्राश्ववर्ष को सींचती हुई समुद्र में मिल गई।।१०-१२।।

सुचक्षुः माल्यवान् पर्वत से निकलकर पश्चिम की ओर केतुमालवर्ष को सींचने लगीं और सुमेरु से गिरी हुई भद्रा ने उत्तर कुरुवर्ष को जल से भिगोया। हेमकूट से जो धारा पृथ्वी को सींचने के लिए दक्षिण की ओर बही उसी को विद्वानों ने

Dhruvaloka. From there She flowed to four different directions dividing into four separate streams, which were held by the peaks of the high mountains. Out of these, there was one stream named *Sītā* (with the purity of character like that of *Sati*) who fell upon *Gandhamādan Parvat*, watered the entire *Bhadraśwavarṣa* in the end, and merged into the brackish ocean (*Kṣār Samudra*).[10-12]

On the western side the stream *Suchakṣu* descended on *Mālyanvān Parvat* and started watering *Ketumālvarṣa* and *Bhadrā* the stream descending down from *Sumeru*, drenched *Uttar-kuru-varṣa*. The stream which flowed southward springing from

साऽलकापूर्वनन्दा बुधैरीरिता
राजते गाङ्गधारा सिता शीतला[५]।।१४।।

*   *   *   *   *

खर्वरूपोऽप्यखर्वो बलेः बन्धने
सत्यलोकं पदेनाऽक्रमील्लीलया।
तत्पदं येन धाताऽनसाऽक्षालयत्
पावनं तज्जलं गाङ्गधाराऽभवत्[६]।।१५।।

अवतरणकथा

स्वर्धुनी-गिः-श्रियः स्वर्गलोकाच्च्युता
एकदाऽन्योऽन्यशापाभिभूताः स्मृताः।
भूमिभागेऽवतीर्णाः पयोविग्रहाः
सुप्रवाहा लहर्यान्विताः शोभिताः[७] ।।१६।।

अलकनन्दा नाम से जाना ।।१३-१४।।

एक बार वामन होते हुए भी विराट ने बलि को बांधने के लिए लीला से सत्य लोक को नाप लिया। उस समय उनके उस चरण को ब्रह्मा ने जिस जल से धोया वही गङ्गा जल कहलाया।।१५।।

स्वर्ग लोक में एक बार गङ्गा, सरस्वती और लक्ष्मी में परस्पर विवाद हो गया। उन्होंने एक दूसरे को परस्पर शाप दे डाला। फल स्वरूप वे तीनों पृथ्वी तल पर उतर कर नदी रूप में बहने लगीं।।१६।।

Hemakūta to nourish the earth was known by the sages as *Alaknandā*. [13-14]

Once despite being *Vāman*,the *Virāt* in order to restrict *Bali* had measured the *Satyaloka* by *līlā*. At that time the water by which *Brahmā* had washed his feet came to be known as the water of *Gaṅgā*.[15]

Once a debate raged among *Gaṅgā*, *Saraswatī* and *Lakṣmī*. They hurled curses at each other and as a result they came down upon the earth and flowed there in the form of rivers. [16]

ब्रह्मगोष्ठ्यां सुराणां समक्षं पुरा
वायुवेगात् समुद्धूयमानेंऽशुके।
देवनद्या उरोजौ स्फुटौ, निर्जरा
जातलज्जा बभूवुस्तदाऽवाङ्मुखा:[८] ।।१७।।
देवलोके सभायां समामन्त्रितो
भूपतिर्निर्निमेषोऽभवत् तत्क्षणम् ।
ऐक्षत स्वर्धुनीं सस्पृहं निस्त्रपो
हन्यते कामवृत्या विवेक: सदा।।१८।।
लोककर्त्राऽनयो: सङ्गमायाद्भुतं
शापरूपं विधानं समुद्घोषितम् ।
साऽभिलाषा शुभाङ्गी सिता स्वर्णदी
भूतले प्रेषिता काममास्वादितुम् ।।१९।।

ब्रह्मगोष्ठी में सभी देवताओं के समक्ष एक बार वायु के झोंके से गङ्गा का आँचल उड़ गया और उसके उरोज स्फुट हो गये, उस समय सभी देवताओं ने लज्जा के कारण अपना मुख नीचा कर लिया। किन्तु देवलोक की उस सभा में आमन्त्रित इक्ष्वाकुवंशीय राजा महाभिष गङ्गा को निर्निमेष देखने लगे और लज्जा त्यागकर स्वर्ग की नदी के प्रति अभिलाषामय हो गये । वास्तव में कामवृत्ति के कारण विवेक नष्ट हो जाता है ।।१७-१८।।

लोक निर्माता ब्रह्मा ने इन दोनों को मिलाने के लिये शापरूप विधान की घोषणा की और अभिलाषा से युक्त सुन्दर अंगों वाली गङ्गा को काम के आस्वाद के लिए

Once in a gathering of deities (*Brahmagoṣṭhī*), infront of all the gods *Gaṅgā*'s shawl was airlifted and Her breasts became exposed. At that time all the Gods drooped their faces down in shame, but the king *Mahābhiṣa* of the *Ikṣwāku* dynasty, an invitee to that gathering gazed at *Gaṅgā* without batting an eyelid and became unashamedly desirous of the divine river. It's true that lust annihilates conscience. [17-18]

To unite both of them the creator of the universe (*Loka kartā Brahmā*), declared a curse-like dictate.He sent *Gaṅgā*, the one

शापितानां वसूनामपि प्रार्थनां
श्रृण्वती स्वर्गलोकादथ प्रस्थिता।
कर्मणो यत्फलं तच्छुभं वाऽशुभं
कुत्र सम्भुज्यते कर्मभूमिं विना।।२०।।
पुत्रशोकस्य शापाभिशप्तो नृपो
जन्मनाऽलञ्चकार प्रतीपालयम्।
राजपुत्रो युवा शन्तनुः सैकदा
क्रीडमानो मृगैः प्राविशत् काननम् ।।२१।।
श्रीरिवद्योतमानामपश्यत्तदा-
ऽमानवीं मानवीविग्रहां सुन्दरीम्।

पृथ्वी पर भेज दिया। उसी समय वहां गङ्गा ने वसुओं की प्रार्थना को भी सुना, जिन्हें भूमि पर जाने का ऋषि द्वारा शाप मिला था। तत्पश्चात् वह स्वर्गलोक से पृथ्वी पर आई; क्योंकि कर्म का फल चाहे शुभ हो या अशुभ कर्मभूमि में ही भोगा जाता है।।१९-२०।।

राजा महाभिष को पुत्र शोक का शाप मिला था। उन्होंने राजा प्रतीप के घर में शान्तनु के रूप में जन्म लिया। वे राजपुत्र (शान्तनु) अपनी युवावस्था में शिकार खेलते हुए एकबार जंगल में प्रविष्ट हुए। वहां उन्होंने ऐसी सुन्दरी को देखा, जिसके अधर पके बिम्ब के समान लाल थे और मुख पूर्ण चन्द्र के समान था, जो मन्द हासवाली और कमल के समान आंखों वाली थी। राजा उसके मुख कमल के प्रति

with beautiful limbs, brimming with desire, down to earth to have a taste of craving. In the meanwhile *Gaṅgā* also had heard the prayer of the *Vasus*, who had been accursed by the *Ṛṣis* to go to the earth. After that She came down to the earth from the *Swargaloka*, because the consequence of any action whether good or evil has to be undergone on the *Karmabhūmi* i.e. in the very world of action.[19-20]

The king *Mahābhiṣa* was cursed to be aggrieved by the death of his sons. He took birth in the house of king *Pratīpa*. Once he, the prince *Śāntanu*, in his youth, while hunting, had entered the forest. There he saw (*Gaṅgā*) a beauty with *Lakṣmī* like luminescence. She held human form despite being non-human.

पक्वबिम्बाधरां पूर्णचन्द्राननां
मन्दहासां विलोलां सरोजेक्षणाम्।।२२।।
तन्मुखाम्भोजभृङ्गायमाणश्चिरं
दिव्यसौन्दर्यसारं निपीयाऽनिशम् ।
आददे तत्करं रूपसम्मोहितः
पूर्वजन्माऽनुरागेण सम्प्रेरितः ।।२३।।
प्राप्य कान्तां रसज्ञां मनोहारिणीम्
अन्वभूत् सर्वश्रेष्ठं रसं तद्रतौ।
यौवनेन प्रवृद्धो रतीशस्तदा
सन्ननङ्गोऽपि केलिं वितेने मुहुः।।२४।।
अङ्कुरीभूततेजो दधानामथ
प्रापितां दोहदं पश्यतो भूभुजः।

भ्रमर के समान आसक्त हो गया और उसके दिव्य सौन्दर्य का पान करने लगा।पूर्व जन्म के अनुराग से प्रेरित हुआ वह उसके रूप सौन्दर्य से सम्मोहित होते हुए उसके साथ विवाहसूत्र में बंध गया।।२१-२३।।

श्रृंगार रस के मर्म को समझने वाली मनोहारिणी कान्ता को पाकर उसने उत्तम रति सुख का अनुभव किया। यौवन से बढ़ा हुआ कामदेव उस समय अङ्गहीन होते हुए भी अनेक प्रकार की काम क्रीडायें करने लगा। गङ्गा के गर्भ में राजा का तेज अङ्कुरित हुआ । जब राजा ने प्रिया को दोहद लक्षणों से युक्त देखा, तब उसके मन

Her lips were as red as the ripe *Bimb* fruit and her face was like the full moon. She wore a soft smile and had eyes like lotus. The king got enthralled like a bee by the lotus-like face and he started to drink deep into her ethereal beauty. Spurred by the love of his previous birth and enamoured by the charm of her beauty, he got bound by the tie of marriage with her.[21-23]

On attaining an enchanting consort who understood the essence of *Śṛingāra*, he experienced the exalted heights of love. *Kāmadeva*, despite being at that time an existence without a physique started playing numerous pranks of love. The virility of the king seminated in the womb of *Gaṅgā*. When the king found the

मानसे लालसाऽजायत प्रेक्षितुं
पुत्ररत्नाननेन्दुं हृदाऽऽह्लादकम् ।।२५।।
किन्तु सद्यः प्रसूतं शिशुं तत्क्षणं
जायया वारिणि प्रक्षिपन्त्या तया।
'अङ्गनाः कोमलाः' लोकसूक्तिर्न किं
निष्ठुरत्वेऽनले भस्मतां प्रापिता ? ।।२६।।
चञ्चलापाङ्गि! मैवं विधेहि प्रिये !
नैव वक्तुं शशाक क्षितीशः खलु।
स प्रतिज्ञापराधीनवृत्तिः पति -
मौंनमेवाललम्बे व्यथाकर्षितः ।।२७।।
सप्तपुत्रान् जले न्यक्षिपद् भामिनी
पुत्रशोकेन राजा भृशं मूर्च्छितः ।

में हृदय को आनन्द देने वाले पुत्ररत्न के मुख को देखने की लालसा जगी। किन्तु सद्यः प्रसूत शिशु को तत्क्षण जननी ने जब पानी में फेंक दिया तो 'स्त्रियां कोमल होती हैं' यह लोक प्रचलित धारणा क्या निष्ठुरता की अग्नि में जल कर राख नहीं हो गई?।।२४-२६।।

हे चञ्चल अपाङ्गों वाली प्रिये! ऐसा मत करो-यह राजा नहीं कह पाया; क्योंकि वह तो प्रतिज्ञा के पराधीन पति था; अतएव अन्दर ही अन्दर व्यथा से व्याकुल होकर वह मौन रहा। क्रमशः गङ्गा ने सात पुत्रों को जल में बहा दिया और बार-बार

symptoms of pregnancy in his beloved, he started desiring to see the joy inducing face of a son. But when the mother abandoned the new-born in the water of river, at that point of time, the prevailing idea, 'women are soft-hearted by nature', got burnt down to ashes in the fire of ruthless cruelty.[24-26]

"O, you beloved with playful glances, do not do this".! The king could not forbid her thus, because he was a husband bound by his word of honour. He, therefore, remained silent, turmoiled by grief to the core of his heart. *Gaṅgā* kept on floating Her sons one after the other down the river and the king swooned

अष्टमं दिव्यतेजस्विनं सा सुतं
सस्मितं पार्थिवायाऽऽकुलायार्पिपत् ।।२८।।
सप्तसंख्यायुतानां वसूनां कृते
मुक्तिमार्गः प्रशस्तः कृतः सत्वरम्।
दीयते देव! देवव्रतस्तेऽष्टमो
वंशकीर्तिप्रसाराय पुत्रः प्रियः ।।२९।।
एतदुक्त्वा परित्यज्य पृथ्वीपतिं
पूरयित्वा विधातुश्च शापावधिम्।
तर्पयित्वा सुधाधारया भूतलं
स्वस्वरूपेण सा ब्रह्मलोकं गता ।।३०।।
श्रीगङ्गा तनयं ददावनुपमं सत्यव्रतं सुन्दरं
त्यागस्याचरणेन शिक्षयति योऽपूर्वं चरित्रं जगत् ।

राजा पुत्रशोक से मूर्च्छित होता रहा। आठवें पुत्र को फेंकने से मना करने पर उस (गङ्गा)ने मुस्काते हुए अष्टम पुत्र राजा को अर्पित किया। 'सात वसुओं की मुक्ति का मार्ग मैंने प्रशस्त किया और यह आठवां देवव्रत हे राजन्! तुम्हारे वंश की कीर्ति की बढ़ाने के लिये तुम्हें सोंपती हूँ'- यह कहकर प्रतिज्ञानुसार राजा को छोड़कर , विधाता के शाप की अवधि पूर्णकर तथा सुधा की धारा से पृथ्वी को सींच कर वह अपने स्वरूप से पुनः ब्रह्मलोक में चली गई।।२७-३०।।

श्रीगङ्गा ने जगत् को अप्रतिम, सत्यव्रत वाला, सुन्दर पुत्र दिया, जिसने अपने

repeatedly shocked at the terrible loss of his sons every time. On being stopped from throwing the eighth one into the water, She surrendered the child to the king smilingly and said, "I have paved the way to emancipation for the seven *Vasus* and this is *Devabrata*, the eighth one. O king, I proffer him unto you to enhance the fame of your dynasty." Saying this according to Her promise She abandoned the king, completed the term of the curse of *Vidhātā* and nourishing the earth with Her nectar, She returned again to *Brahmaloka* in Her own identity.[27-30]

Śrī Gaṅgā offerd to the world a peerless, truthful and handsome son who for his outstanding calibre of selflessness held

गाङ्गेयो गरिमामयो गुणनिधिर्देदीप्यते भारते
गङ्गा गौरवशालिनी त्रिभुवने भीष्मप्रसूःख्यापिता ।।३१।।

बाहुपुत्रः[१] पुराऽभूत् परं धार्मिकः
षष्टिसाहस्रपुत्रैर्युतोऽधीश्वरः ।
अश्वमेधाख्यसत्रं समारब्धवान्
एकदा चक्रवर्तित्वसम्प्राप्तये ।।३२।।
छद्मवेषेण यज्ञाऽन्तरायो भवन्
देवराजो महेन्द्रोऽहरद् वाजिनम् ।
पार्थिवोऽन्वेष्टुकामो हयं पावनं
प्रैरिरत् पुत्रजातं बलोद्दीपितम् ।।३३।।
अश्वमन्वेषयन्तस्तदा सागरा
यौगपद्येन सम्प्रस्थिता गर्विताः।

त्याग के आचरण से उत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया। गरिमा से मण्डित हुए भीष्म गङ्गा पुत्र होने के कारण और भीष्म जैसे पुत्र की माता होने के कारण गङ्गा ने गौरव को प्राप्त किया। राजा बाहु के पुत्र सगर धार्मिक राजा थे, जिनके साठ हजार पुत्र थे। एक बार उन्होंने चक्रवर्तित्व की प्राप्ति के लिए अश्वमेध यज्ञ आरम्भ किया। इन्द्र ने छद्मवेष धारण किया और यज्ञ में विघ्न डालने के लिए यज्ञ के घोड़े को चुरा लिया। राजा ने उस घोड़े को खोजने की आज्ञा अपने साठ हजार पुत्रों को दी ;जो बलशाली होने के कारण सदा उत्तेजित रहते थे। वे सभी सगर पुत्र गर्व से भरे हुए एक साथ अश्व को ढूढ़ने के लिये चल पड़े । उस समय वे साठ हजार

out an excellent example of moral conduct to the world. *Sagar* the son of king *Bāhu* was a religious soul. He had sixty thousand sons. Once to be the sovereign of the entire world, he began *Aśvamedha yajña. Indra*, disguised himself and stole away the sacrificial horse. The king commanded his sixty thousand sons, who happened to be excessively energetic. For this reason they remained in perpetual excitement. All those sons of *Sagar* filled with pride set off in search of the horse. These sixty thousand sons

ते नृणां सागरेवोत्थिता दर्पिताः
क्षोभितुं क्ष्मामशेषां समारेभिरे ।।३४।।
उत्खनन्तो महीं राजपुत्राश्चिरं
प्राकृतीं शान्तिमुद्वेजयन्तो भृशम् ।
प्राप्य पाताललोकं परं विस्मिताः
सांख्यशास्त्रप्रणेतुः[१०] कुटीमागताः ।।३५।।

वक्ति तत्त्वानि विज्ञश्चतुर्विंशतिं
स प्रकृत्या विलासं जडं मन्यते ।
पूरुषश्चेतनो निष्क्रियः केवलो
लिप्यते नैव दोषैः क्वचित् तन्मते ।।३६।।
अत्र संयोगिनावन्धपङ्गू यथा
पूरुषोऽपि प्रधानेन युक्तस्तथा ।

राजकुमार विशाल जन समुद्र की भांति उमड़ पड़े और सम्पूर्ण पृथ्वी को क्षुब्ध करने लगे। पृथ्वी को खोदते हुए वे राजपुत्र प्रकृति की शान्ति को नष्ट करने लगे और इसी क्रम में पाताल लोक पहुंचे, आश्चर्य से भरे हुए वे सभी सांख्यशास्त्र के प्रणेता महर्षि कपिल की कुटी के पास पहुंच गये।।३१-३५।।

परम दार्शनिक कपिल मुनि ने सांख्य शास्त्र में चौबीस तत्त्वों को माना । उनके मत में प्रकृति के समस्त कार्यकलाप जड़ हैं; पुरुष चेतन, निष्क्रिय और केवल है। वह दोषों में लिप्त नहीं होता। प्रकृति और पुरुष का संयोग अंध और पङ्गु की भांति है। प्रकृति द्वारा रचित इस जगत् में चेतन पुरुष का चित्तत्त्व प्रतिबिम्बित होता है ।

surged up like human waves and kept on turmoiling the earth. Those princes delved down the earth, destroyed her peace and subsequently reached the hut of *Maharṣi Kapil*, the author of *Sāṅkhya Śāstra*. [31-35]

In *Śānkhya Śāstra*, *Kapil* the great sage has acknowledged the existence of twenty- five elements. He holds all the actions of *Prakṛti* as non-conscious.The *Puruṣa* is pure consciousness, non-active and liberated. *Puruṣa* is free from all attachments. The

चेतनच्छायया‌ऽऽश्लिष्टयेदं जगत्
सृज्यमानं प्रकृत्या दरीदृश्यते ।।३७।।
स्वीकृतं दृष्टमेव प्रमाणं पुरा
चारुवाक्यैर्बहिर्दृष्टवादे रतैः।
साध्यते चानुमित्या प्रवृत्तिःपुनः
बौद्धजैनैर्विचारप्रवीणैरथ ।।३८।।
स्वीकृतं शाब्दमानञ्च वैशेषिकैः
सन्निवेश्याऽनुमायां कणादादिभिः।
आप्तवाक्यं प्रमाणं तृतीयं वदन्
वेदयाथार्थ्यमङ्गीचकारैषकः ।।३९।।
तस्य कैवल्यभावं गतस्याश्रमे
लक्षयाञ्चक्रिरे वाजिनं तं यदा ।

चार्वाकों ने केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को स्वीकार किया, विचार कुशल जैनों और बौद्धों ने प्रवृत्ति अनुमान से भी होती है – ऐसा माना।।३६–३८।।

कणाद आदि वैशेषिकों ने शब्द प्रमाण का अन्तर्भाव अनुमान में कर दिया किन्तु उन (कपिल मुनि) ने आप्त वाक्यरूप शब्द को प्रमाण कह कर वेद की प्रामाणिकता को स्वीकार किया ।ऐसे कैवल्यभाव में प्रतिष्ठित मुनि के आश्रम में जब सगर-पुत्रों ने उस अश्व को देखा तो वे मूर्ख राजकुमार पूजनीय योगी एवं

conjunction of these two principles is like the inter-action of a blind person and a lame man. The principle of Self (*Puruṣa*) gets reflected in the entire creation of the Primal Nature (*Prakṛti*).The *Chārvākas* have accepted perception to be the only source of valid knowledge. The deft *Jain* and *Buddhist* thinkers have concluded that inference too motivates to act.[36-38]

The *Vaiśeṣikas* like *Kaṇād* and others accept inference as a valid source of knowledge but they include verbal testimony (*Śabda pramāṇa*) also along with it. *Kapil* has recognised the verbal testimony of the *Vedas* in addition to the above mentioned sources of knowledge.When the sons of *Sagar* saw the horse in the hermitage of such an elevated *Muni*, then the foolish princes

उद्यता हन्तुमेते विमूढास्तदा
चौरमाशंक्य पूज्यं हरिं योगिनम् ।।४०।।
हन्यतां छिद्यतां भिद्यतां दीर्यतां
गृह्यतां तस्करो ध्यानलग्नो बकः।
एवमूचुः विवेकेन भ्रष्टाः समे
सर्वनाशं समामन्त्रयन्तः स्वकम् ।।४१।।
भावयामास योगी प्रलापे रतान्
सद्विवेकच्युतान् तान् मनोरोगिणः।
षोडशेमे विकारा अहंसम्भवा
मूर्तिमन्तो ध्रुवं चित्प्रभावञ्चिताः ।।४२।।
कारणेऽहंकृतौ लीनतां प्राप्नुयुः
कालसम्प्रेरिताः पापपुञ्जा अमी।

विष्णु के अवतार कपिल मुनि को चोर समझ कर मारने को उद्यत हो गये । विवेक से भ्रष्ट वे सभी अपने सर्वनाश को आमन्त्रित करते हुए बोले—इस चोर , ध्यान का ढोंग करने वाले को मारो , काटो, फाड़ दो, टुकड़े-टुकड़े कर दो । ऐसे प्रलाप में लगे सद् विवेक से रहित उन मनोरोगियों को देख योगी ने समझा—कि अहंकार से उत्पन्न ये सोलह विकार निश्चय की चैतन्य की प्रभा से वञ्चित हैं।।३९-४२।।

अतएव ये अपने कारण अहंकार में पुनः लीन हो जांय; क्यों कि इन पापपुंजों का समय आगया है । देवहूति के पुत्र श्रीहरि कपिल ने तत्त्व को जानकर मन में

were about to hit the former surmising him to be the thief whithout knowing that the *Muni* was a great yogi and the incarnation of *Viṣṇu*. Without the slightest compunction they paved their way to inviting their damnation and said," Hit this thief, pretending to meditate! Kill him, tear him into pieces!" The *yogi* assumed them to be bereft of conscience and mentally sick. He felt that those sixteen *vikāras* were definitely deprived of the light of consciousness.[39-42]

Therefore they should dessolve again in *Ahaṅkāra* i.e. their cause because the doom of those sinners was quite close by. Thus

मानसे कल्पयामास तत्त्वार्थविद्
देवहूतेः तनूजः स्वयं श्रीहरिः ।।४३।।
दुर्वचोभिस्तिरस्कर्तुमग्रेसराः
ते दुराचारिणः कुप्यमाना यदा।
तस्य धीरं गभीरं मनश्चञ्चलं
जातमम्भोनिधिःक्षुब्धवीचिर्यथा।।४४।।
स त्रयाणां गुणानां तमोवर्धनाद्
हन्त ! मेने महत्तत्वमत्यार्दितम् ।
सागराणां विनाशं समीपागतं
निश्चिकायाऽऽत्मवित् कालसंचोदितम् ।।४५।।

धू धू धू कपिलप्रकोपजनिता लेलिह्यमाना भुवं
हा-हाकारमजीजनन् कवलने दक्षा दवाग्नेः शिखाः।

यह सोचा।दुर्वचनों से तिरस्कृत करने के लिये वे दुराचारी क्रोधित होकर जब आगे बढ़े तो मुनि का धीर गम्भीर मन उसी प्रकार चञ्चल हो उठा जैसे क्षुब्ध तरङ्गों वाला समुद्र । उन्होंने यह माना कि सगर पुत्रों में तीनों गुणों में से तमोगुण की वृद्धि हो गई है। आत्मतत्त्ववेत्ता मुनि को निश्चय हो गया कि अब काल से प्रेरित हुआ इनका विनाश समीप आ गया है।।४३-४५।।

कपिल के प्रकोप से उत्पन्न अग्नि की लपटें सब कुछ निगल जाने में दक्ष हो धू धू करके ज़लने लगीं और पूरे वातावरण में हाहाकार को उत्पन्न करने लगीं ।

thought *Devahuti's* son *Śrī Kapil* who was aware of the *tattva.* When the evil doers advanced forward in anger to insult him then the calm and serious mind of the *Muni* became as agitated as the sea tossing with restless waves. He felt that in the sons of *Sagar* the *Tamoguṇa* had exceeded its limits and their sanity was overpowered by it. The enlightened *Muni* who had attained self-knowledge was sanguine that driven by time their ruin was at hand.[43-45]

The flames born out of the anger of *Kapil,* proficient in swallowing everything, started burning ferociously and

तड्-तड्-तड्-तडिति प्रचण्डचपला व्यक्षोभयन् खं भृशं
चट्-चट्-चट्-चटितिस्फुलिङ्गनिचयैर्भस्मायिताः स्थावराः ।।४६।।

यावत्प्रार्थयितुं मुनिं सुरगणाः वाञ्छन्ति नाके स्थिताः
क्रोधः संह्वियतां प्रभो! विजयतां तेजस्त्वदीयं महत् ।
तावत् तन्नयनद्वयात् प्रकटितो ज्वालाकरालोऽनलः
चक्रे तानघविग्रहान् नृपसुतान् भस्मावशेषं खलु ।।४७।।

भीता भूर्जडवत्स्थिताः शिखरिणो हीनं वनं पादपै-
र्विक्षुब्धाः सरितो दिशश्च मलिनाः शून्यं नभोऽजायत ।
भस्मीकृत्य चराऽचरं तृणमिवाङ्गारायमाणाश्चिरं
पर्यावृत्य जगत् श्मशानमिव ते धूमायिता वह्नयः।।४८।।

प्रचण्ड बिजलियां तड् – तड् शब्द करती हुई आकाश को उद्वेलित करने लगीं और चिनगारियों की चट्चटाहट से सभी वृक्ष जल कर खाक हो गये।जब तक आकाश में स्थित देवता और मुनि गण यह प्रार्थना करने आंये कि 'हे प्रभो आप अपना क्रोध समेट लें, आप का यह अप्रतिम तेज विजयी होवे '; तब तक उनके दो नेत्रों से निकला हुआ ज्वालाओं से भयङ्कर अग्नि उन पाप विग्रह सगर पुत्रों को राख के रूप में परिणत कर चुका था। पृथ्वी भयभीत हो गयी, पर्वत जड़ हो गये, वन वृक्षों से विहीन हो गये, नदियां क्षुब्ध हो गई; दिशायें मलिन और आकाश शब्दहीन हो

generated a terrible mourning in the environment. The fearsome lightning started to stir up the sky with booming sound and the trees all around were licked down to ashes by the sparks. By the time the *gods* and the *munis* seated in the Heaven could start to chant this prayer, "O you lord ! control your rage, let your peerless power be victorious", the fire dire for its flames, had emanated out of his eyes and turned the sons of *Sagar* into ashes. The earth cowered, the mountains got petrified, the forests became empty of trees, the rivers remained shocked, the directions (*diśaḥ*) became tarnished and the skies became silent.

पाताले घटितो विनाशबहुलोऽयं वज्रपातोपमः
विद्युज्ज्योतिरिव क्षणात् त्रिभुवने व्याप्तोऽभवद् विप्लवः।
तेनाऽमङ्गलशङ्कया विचलितो भीतो वितर्के रतः
पुत्रासक्तमना बभूव सगरः पर्याकुलो भूयशः।।४९।।

अशुमन्तं स्वपौत्रं त्वनुप्रैषयद्
दीर्घकालं प्रतीक्षन् पिता चिन्तितः।
सोऽपि गच्छन् समासादितः तत्स्थलं
यत्र भस्मावेषाः स्थिताः सागराः ।।५०।।
हन्त! भस्मावशेषत्वमालोकयन्
पूर्वजानां महानर्थसंसूचकम् ।

गया। एकक्षण में सम्पूर्ण चराचर को भस्म करके अंगारों के रूप में सम्पूर्ण जगत् को श्मशान बना कर वे वह्नि शिखायें धूमायित हो गयीं ।पाताल लोक में घटित हुए विनाश बहुल, व्रजपात के समान इस विप्लव का समाचार बिजली की भांति शीघ्रता से तीनों लोकों में पहुँच गया। तब अमङ्गल की आशंका से विचलित,भयभीत और वितर्क में रत राजा सगर अपने पुत्रों की चिन्ता करते हुए अत्यन्त व्याकुल हो गये।।४६-४९।।

दीर्घकाल तक प्रतीक्षा करने वाले चिन्तित पिता ने अपने पौत्र अंशुमान् को उनका पता लगाने के लिये भेजा; वह उस स्थान पर पहुँचा जहाँ सभी सगरपुत्र राख के ढेर बने थे। पूर्वजों के इस महाविनाश को देखकर वह शोकाकुल बालक

Within a split moment, the fire spread burning down the entire lifescape and transforming the world into a region of death.The news of this commotion in the *pātāl*, which was overwhelmingly disastrous and as terrible as a blow from the thunder spread as swiftly as lightning across the three worlds (*Tribhuvanas*). Then the king *Sagar*, agitated and frightened in anticipation of the portent, engrossed in the thought of his sons, became extremely anxious.[46-49]

The worried father, who had been awaiting for a long time, sent his grandson, *Anśumān* to find them out. He reached that point where all the sons of *Sagar* had become the mounds of ash.

क्रन्दनेनातितारस्वरेणाऽर्भको
रोदसीं कम्पयामास शोकाकुलः।।५१।।
तत्समालोक्य दौर्भाग्यपूर्णं परं
सोऽथ विक्षिप्तचित्तो विलापे रतः।
तादृशीं दुर्गतिं पूर्वजानां बत
प्रेक्ष्वतः कस्य चेतो न दूयेत हा ! ।।५२।।
अश्रुधाराभिराप्लावितं दुःखितं
शोकसन्तप्तचित्तं तमेकाकिनम् ।
वैनतेयो गरुत्मान् समाश्वासयन्
नीतवानाश्रमं कापिलं शान्तिदम् ।।५३।।
अंशुमन्तं नमन्तं परं भावुकं
वीक्षमाणः कृपापूर्णदृष्ट्या तदा।
यज्ञसम्पादनायेममश्वं नये-
त्यादिशत् सांख्यतत्त्वोपदेष्टा मुनिः ।।५४।।

अपने उच्चक्रन्दन से आकाश और पृथ्वी को कंपाने लगा। इस परम दुर्भाग्यपूर्ण घटना को देख वह विक्षिप्त हृदय वाला बालक बहुत रोया । अपने पूर्वजों की ऐसी दुर्गति देख किसका चित्त दुःखी न होगा ।वहां पर अकेले, आंसुओं से भींगे, शोक से सन्तप्त मन वाले बालक को ढाढ़स बंधाते हुए गरुड़जी उसे कपिल के पास ले गये। नमस्कार करते हुए परम भावुक अंशुमान् को महर्षि कपिल ने कृपापूर्ण दृष्टि से देखा तथा सांख्यतत्त्व का उपदेश देकर यज्ञसम्पादन के लिये अश्व को ले जाने की आज्ञा दी ।।५०-५४।।

On witnessing the horrific end of his ancestors the grief stricken boy started to stir the sky and the earth by his heart-rending cries. Witnessing this terribly unfortunate event that crazed boy wailed much. Who will not be aggrieved to see such a plight of his forefathers? While consoling him *Garuḍajī*, the son of *Vinatā* escorted that lonely, tearful, distress-laden boy to *Kapil. Maharṣi Kapil* glanced kindly at the agitated boy *Anśumān*, and after preaching *Saṅkhya* philosophy, let him take away the horse for the *yajña*.[50-54]

प्राप्य बालो गृहं सूचयामास हा !
दारुणं द्रावकं सर्वनाशं यदा।
लुप्तसंज्ञो जडः कातरः सन् तदा
पार्थिवः पुत्रशोकार्णवे मज्जितः ।।५५।।
पौत्रमेवावशिष्टं तमेकं प्रियं
वंशजं वीक्ष्य चीत्कारशब्दाऽऽकुलः।
बालकं गाढमालिङ्ग्य राजा चिरं
पुत्रहीनो रुरोद व्यथाकर्शितः।।५६।।
पौत्रमेवाऽधुना भूप ! पुत्रीयतु[११]
प्रोक्तवन्तो द्विजा यज्ञसम्पूर्तये।
अश्वमेधं सुसम्पाद्य तस्मै ददन्
राज्यभारं नृपः स्वर्गलोकं गतः।।५७।।

जब उसने घर पहुँच कर इस दारुण हृदय द्रावक वृत्त की सूचना दी तो राजा सगर जड़ हो गये और अत्यन्त कातर हो पुत्रशोक के सागर में डूब गये।उन्होंने अपने को पुत्र हीन जाना और अपने एकमात्र वंशधर पौत्र को सामने देख छाती से लगा कर बड़ा करुण रुदन् किया ।।५५-५६।।

उस करुण परिस्थित में ऋत्विजों ने राजा को सलाह दी कि वे पौत्र को ही पुत्र मान कर यज्ञ को पूरा करें (क्यों कि पुत्रहीन राजा को अश्वमेध यज्ञ का अधिकार नहीं है)। तब राजा ने उसी प्रकार यज्ञ को पूरा किया। राज्यभार अंशुमान् को सोंप कर वे कुछ समय बाद स्वर्गलोक चले गये।।५७।।

On reaching home, when he narrated the harrowing event, king *Sagar* turned dazed and was swallowed up by a sea of mourning. He realized that his life had become barren and so embracing the only successor, the grandson present there, he cried bitterly.[55-56]

In that awful situation the *Ṛtvijas* advised the king that he should conduct the *yajña* deeming his grandchild to be his son. (The scriptures ordain that a king without a son is forbidden to perform the *Aśwamedh Yajña.*) Then the king completed the *yajña* following this instruction. After sometime he entrusted the responsibilities of his kingdom to *Anśumān* and died. [57]

गाङ्गनीरं परब्रह्मरूपो द्रवः
पूर्वजानां समुत्तारणाय क्षमः ।
वैनतेयं वचः संस्मरन्नंशुमान्
कामयामास गङ्गावतारं क्षितौ।।५८।।

एतदर्थं प्रयत्नं प्रकुर्वन् नृपो
जीवनान्तेऽग्रिमं कार्यजातं महत् ।
सन्निवेश्यात्मजस्योपरि स्वर्गतः
श्रद्धया स्वर्धुनीं संस्मरन् पुण्यदाम् ।।५९।।

सोऽपि भूपो दिलीपः सदाऽतन्द्रितः
स्त्रावितुं तां दिवः प्रायसद् भूतले।
नाऽत्यजत् श्रेयसां सिद्धये दुष्करं
कार्यमारब्धपूर्वं नृपैः पूर्वजैः ।।६०।।

अंशुमान् को गरुड़ ने बताया कि गङ्गा का जल ब्रह्मद्रव है, अतएव उसी जल से उसके पूर्वजों का उद्धार संभव है। इस वचन को स्मरण करते हुए उन्होंने पृथ्वी पर गङ्गा के अवतरण की कामना की।राजा ने इस कार्य के लिये सतत प्रयत्न किया और जीवन के अन्त में इस महान् लक्ष्य को अपने पुत्र दिलीप को सौंपा और स्वयं स्वर्धुनी का स्मरण करते हुए स्वर्ग चले गये।।५८-५९।।

राजा दिलीप ने भी सदैव विना थके उनको स्वर्ग से पृथ्वी में लाने का प्रयास किया और अपने पूर्वजों के द्वारा आरब्ध दुष्कर कल्याणकारी प्रयास को नहीं

The son of *Vinatā* i.e. *Garuḍa* told *Anśumān* that the water of *Gaṅgā* was *brahmadrava*. Therefore it was possible to redeem his forefathers by the same water alone. Accepting the counsel of *Garuḍa* he desired for the descent of *Gaṅgā* on the earth. The king made every effort to make his task fruitful and at the end of his life he intrusted this magnificient work to his son *Dilīp* and himself went to *swarga* meditating upon *swardhuni Gaṅgā* .[58-59]

King *Dilīp* too tried to bring *Gaṅgā* on the earth from the *swarga* incessantly and did not leave the formidable and beneficial task initiated by his ancestors. His son *Bhagīratha* who was

तस्य पुत्रः प्रकृष्टोद्यमः सत्कृती
गाङ्गधारां पृथिव्यामनैषीदतः[१२]।
तस्य नाम्नैव भागीरथी संज्ञिता
सागराणामघक्षालिका तारिका।।६१।।
दीर्घकालं चचारातिकृच्छ्रं तपः
प्राप्य गोकर्णतीर्थं परं भक्तिमान्[१३] ।
द्वादशाष्टाक्षरं विष्णुमन्त्रं जपन्
सोऽधिशिश्राय शृङ्गं हिमाद्रेस्ततः ।।६२।।

भगीरथो जटाधरः सवल्कलः सुसंयतः ।
त्यजन् समस्तसौख्यमाचचार दुःसहं तपः।।६३।।
स कन्दमूलसेवने रतः शुचिः समीरभुक् ।
अनेकवर्षमास्थितोऽचलेन्द्रवज्जितेन्द्रियः ।।६४।।

छोड़ा। उनके पुत्र भगीरथ, जो प्रकृष्ट उद्यमी और सत्कार्य करने वाले थे, गङ्गा को पृथ्वी पर लाये अतएव सगर पुत्रों के पापों का प्रक्षालन कर उन्हें तारने वाली भगवती गङ्गा का नाम भागीरथी पड़ा । गोकर्ण तीर्थ में परम भक्तिमान् भगीरथ ने दीर्घकाल तक कठोर तपस्या की । उसके बाद उन्होंने हिमालय के उच्चशिखर पर द्वादश अक्षर का विष्णु मन्त्र (ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय) का जप किया।।६०-६२।।

जटाधारी, वल्कल पहने हुए, संयमवान् भगीरथ ने समस्त सुखों का त्याग करके अत्यन्त कठिन तप किया। कन्दमूल फल खा कर, हवा पीकर और जितेन्द्रिय

industrious and dedicated to perform virtuous deeds brought *Gaṅgā* down upon earth. Therefore, the redeemer of the sons of *Sagar*, the one who washed away there sins, has been celebrated as *Bhāgirathī*.At *Gokaraṇa tīrtha*, the devout *Bhagīratha* did a very unrelenting penance (*tapas*); later he chanted *Viśṇumantra* of twelve syllables (*Dwādaśakṣar*) on the peak of *Himalayas*.[60-62]

Bhagīrath, an ascetic, the one wearing long matted hairs and bark of tree, who had renounced every happiness, underwent a gruelling penance. He ate wild fruits, drank air and practised total

शिलासने समास्थितः स्वपूर्वजप्रियङ्करः।
निरन्तरं कृपाकरं प्रभुं जजाप सुव्रतः ।।६५।।
सुराऽऽपगाऽभिलाषिणं विरागिणं तपस्विनम् ।
उपागमद् वरप्रदः प्रजापतिः शुचिस्मितः ।।६६।।

दीप्तिमन्तं तपोभिः परं सात्त्विकं
ध्यानयोगे सदाऽऽनन्दितं पार्थिवम् ।
दर्शयामास धाता स्वरूपं शुचि-
र्निमलं भासमानं चतुर्भिर्मुखैः ।।६७।।
ब्रह्मलोके लसन्तीं सुधाभास्वराम्
अञ्जलौ याचमानं परं भावुकम् ।

रह कर वे अनेक वर्षों तक अचल खड़े रहे। शिला के आसन में बैठकर अपने पूर्वजों का प्रिय करने वाले भगीरथ ने निरन्तर परम कृपालु प्रभु का जप किया। तब स्वर्ग की नदी गङ्गा के अभिलाषी उस विरागी तपस्वी के पास पवित्र मुसकान वाले प्रजापति ब्रह्मा वरप्रदान करने के लिये आये।।६३-६६।।

तप से देदीप्यमान, परं सात्त्विक, ध्यान योग में आनन्द का साक्षात्कार करने वाले राजा भगीरथ के समक्ष विधाता ने अपना पवित्र, निर्मल और चारमुखों से सुशोभित स्वरूप को प्रकट किया। ब्रह्मलोक में शोभायमान अमृत के समान भास्वर देवनदी को अञ्जलि में मांगते हुए उस परम भावुक, तपस्या से क्षीण काय

restraint of the senses and thus he stood motionless for numerous years. He sat on a stone and chanted the name of the benevolent Almighty ceaselessly. *Prajāpati Brahmā* -- the Creator with his sacred smile came to bless that detached ascetic desiring the celestial river *Gaṅgā*.[63-66]

The Almighty *Vidhātā* revealed himself in his true form, adorned with the four pious faces infront of king *Bhagiratha*, who glowed with the resplendence of penance, extremely devout, experienced the highest bliss in *dhyānyoga*. Lord *Brahmā* spoke out sagacious and encouraging words to the king, who was highly

तं तपःक्षीणकायं महीपं विधि-
व्याजहारानुकूलां गभीरां गिरम् ।।६८।।
स्वर्गलोकान्महोच्चैः पतेच्चेदियं
मर्त्यलोके भवेद् विप्लवो भीतिदः ।
स्वर्धुनी घोरघोषा धरां दुर्धरा
तीव्रवेगेन पातालगर्तं नयेत् ।।६९।।
सन्नियन्तुं मुदा रंहसौजस्विनीं
कः क्षमः शङ्कराद् देवदेवादृते।
यः समाराधनेन प्रसन्नो भवन्
भक्तयाच्ञामवन्ध्यां करोति ध्रुवम् ।।७०।।
एतदाकर्ण्य धीरोऽवनीशोऽनिशं
तुष्टुवे सर्वलोकेश्वरं शङ्करम् ।

राजा से ब्रह्मा जी अनुकूल एवं गम्भीर वाणी बोले।।६७-६८।।

यदि यह अत्यधिक ऊंचे स्वर्गलोक से एकाएक नीचे गिरेगी तो मर्त्यलोक में भय को उत्पन्न करने वाला महान् विप्लव हो जायेगा। यह भयङ्कर शब्द करती हुई, धारण की जाने में कठिन,स्वर्ग की नदी पृथ्वी को अपने तीव्र वेग से पाताल में ले जायेगी। इस ओजस्विनी के वेग को नियन्त्रित करने में समर्थ एक मात्र देवाधिदेव महादेव हैं। वे आराधना से जब प्रसन्न होते है तो भक्त की प्रार्थना को अवश्य सफल बनाते हैं । यह सुनकर धीर राजा भगीरथ ने निरन्तर सर्वलोकेश्वर

emotional, emaciated from penance and who begged for the effulgent river which graced the *Brahmaloka* like the sparkle of nectar, within the folds of his palms. [67-68]

If She fell all of a sudden from the heights of the *Swarga* down on earth, this would generate an appalling commotion. This astral river which is difficult to be retained, should sweep away the earth down to the *Pātāla*. The lord of the lords (*Devādhideva-Śankara*) was competent alone to contain the speed of this incarnation of vigour. When he became pleased by the propitiation of the devotees, he consummated their entreaty.On hearing this the persevering king *Bhagīratha* started to appease *Śaṅkara*, the

स्वीचकाराशुतोषः प्रपन्नार्तिहा
दुर्धरां तीव्रधारां निरोद्धुं तदा ।।७१।।

उत्तुङ्गे शिखरे हि पादयुगलं धीरो विधाय स्थिरं
मध्ये न्यस्तभुजो बभावविचलो विद्योतितस्तेजसा।
व्यूढोरस्क उदारधीः परिकरं बद्ध्वा पुनः पन्नगैः
सन्नद्धः स्वजटावितानविपिने रोद्धुं धुनीं धूर्जटिः।।७२।।
मोचयित्वा कपर्दी जटाबन्धनान्
संयतो स्वर्गधारां नियन्तुं यदा।
दिव्यलोकाद् ददावब्जभूर्भूभृतः
सत्तपस्याफलां तां महादुर्लभाम् ।।७३।।

शङ्कर को सन्तुष्ट करना प्रारम्भ किया। उन आशुतोष शिव ने जो शरणागतों के कष्ट को दूर करते हैं, तीव्रधारा को रोकना स्वीकार कर लिया।।६९-७१।।

भगवान् शङ्कर ने हिमालय के ऊंचे शिखर पर अपने दोनों पैरों को अच्छी प्रकार टिका लिया और कमर में दोनों हाथों को रखकर अविचल खड़े हो गये। अपने तेज से प्रकाशित होते हुए, विशाल वक्षःस्थल वाले, उदार बुद्धि वाले धूर्जटि पुनः अपनी कमर को सांपों से भली-भाँति कस कर अपने जटाओं के विस्तार रूपी विपिन में श्रीगङ्गा को रोकने के लिये तैयार हो गये।।७२।।

ज्यों ही कपर्दी शिव अपनी जटाओं को खोल कर स्वर्ग की धारा के नियन्त्रण के लिये संयत हुए त्यों ही दिव्यलोक से कमल से उत्पन्न ब्रह्मा ने राजा की सत्

Sarvalokeśwar unflaggingly. *Śiva*, who is appeased easily, who mitigates the afflictions of those who seek His shelter, consented to hold the fierce stream.[69-71]

Lord *Śaṅkara* placed both of His feet on the high peaks of the *Himalayas* and placing His hands on His loin stood motionless. Revealed by His own lustre, with stately bosom and generous mind, the *Dhūrjaṭi* braced Himself up by refastening the snakes round His loin firmly, to hold *Śrī Gaṅgā* in the expanse of the wilderness of His matted hair.[72]

The moment *Kapardī* (one who bears a pile of matted tresses)

विधेरनुज्ञामनुमन्यमाना कमण्डलोर्वेगयुता च्युता सा।
स्ववाहिनी शुभ्रतरङ्गदेहा व्यभान्निनादैर्विपुलैर्गभीरैः ।।७४।।
वेगावलेपादथ कर्तुकामा
पालाललोके विलयं पृथिव्याः ।
द्यावाभुवौ कम्पयितुं प्रवृत्ता
रवेण घोरेण भयङ्करेण।।७५।।

घन-गर्जन-घोर-निनादमयी
प्रलयङ्कर - घर्घर - शब्दमयी ।
रवपूरित-दुर्धर-धारमयी
वसुधामभियाति तरङ्गमयी।।७६।।

तपस्या की फलभूत उस महादुर्लभ धारा को छोड़ दिया।विधि की आज्ञा को शिरोधार्य करती हुई, कमण्डलु से गिरी, बड़ी वेगवती स्वर्धुनी, जाने की इच्छा न रखती हुई भी भयङ्कर नाद के साथ द्युलोक से चल पड़ी।उन्हें अपने वेग का बड़ा अभिमान था, अतः वे पृथ्वी को पाताल के गड्ढे में विलीन कर देना चाहती थीं। वे अपने भयङ्कर रव से पृथ्वी और आकाश को कंपा रहीं थीं।।७३-७५।।

बादलों के घोर गर्जन के समान नाद करती हुई , प्रलयङ्कारी घर्घर शब्द करने वाली, रव से भरे हुए दुर्धर धार वाली तरङ्गमयी श्रीगङ्गा पृथ्वी की ओर आ रही हैं।

got poised to retain the divine stream by unloosening His matted locks, then *Brahmā*, born out of lotus, bringing fruition to the virtuous penance of the king unleashed that extremely rare stream from the celestial land. Fallen from (His) *Kamandalu* (water-pot) that extremely speedy *Swardhūnī* despite reluctance gushed towards the earth making fearsome sound upholding the command of *Brahmā*. She prided on Her velocity, so She wanted to merge the earth into *Pātāl loka*. She made the earth and the skies tremble by Her awesome tumult.[73-75]

Making a commotion of the roaring clouds, creating catastrophic reverberation, full of noisy currents and strewn with waves *Śrī Gaṅgā* headed towards the earth. As if due to intense anger

अतिरोष-विलोलित-नीरमयी
भुवनत्रय - कम्पित - घोषमयी ।
अतिविस्मय-भीति-विधानमयी
वसुधामभियाति तरङ्गमयी।।७७।।
शुचि-कूल-दुकूल-वितानमयी
शशि-शुभ्र-पयः - परिधानमयी।
सित-सीकर-मौक्तिक-मालमयी
वसुधामभियाति तरङ्गमयी ।।७८।।
अधिदैवतदिव्यशरीरमयी
मकरासन - संस्थित - मूर्तिमयी।
चपलेव विभासित-दीप्तिमयी
वसुधामभियाति तरङ्गमयी ।।७९।।
शरदिन्दु इवाऽमित-कान्तिमयी
मद-मोह - विभञ्जन-क्रान्तिमयी।

अत्यन्त क्रोध से मानो उनका जल चञ्चल हो गया है और उनके घोष से तीनों लोक कांप रहे हैं वे विस्मय और भय दोनों को उत्पन्न कर रही हैं।पवित्र कूल (तट) रूपी दुकूल (दुपट्टा) को ओढ़े हुए, चन्द्रमा के समान शुभ्र जल के वस्त्रों को पहने हुए, सफेद सीकरों (जल कणों) रूपी मोतियों की माला पहने हुए वे पृथ्वी की ओर आ रही हैं। वे अपने आधिदैविक स्वरूप में दिव्य चतुर्भुज रूप धारण किये हैं और मकर के ऊपर बैठी मूर्तिमयी हैं, बिजली के समान श्वेत कान्ति वाली हैं।वे शरद कालीन चन्द्रमा के समान कान्तिवाली और मदमोह को नष्ट करने की क्रान्ति

Her water had become volatile and the *Triloka* trembled to hear Her uproar. She generated both wonder and fear. Wearing the fabric of the holy banks, donning the garb of water, which was as luminous as the moon, putting on the garland of the beads of spray,She came towards the earth.She in Her supernatural form was adorned with four divine arms and was seated upon the *Makara*.

She was as brilliant as the lightning is.She was bright like the luminous moon of *Śarada ṛtu* and She was an aggressive destroyer

जल-जीव-समूह-निकेतमयी
वसुधामभियाति तरङ्गमयी ।।८०।।
सगरात्मज-तारण-लक्ष्यमयी
भवताप - निवारण - मन्त्रमयी ।
जनकारण-धारण-शक्तिमयी
वसुधामभियाति तरङ्गमयी ।।८१।।
लहरी सुभटी रणभूमितटी
दुरितारि - निवारण - केलिघटी।
नटराज-जटाङ्गण-लास्य-नटी
वसुधामभियाति तरङ्गपटी ।।८२।।

जातगर्वा धुनी ब्रह्मभाण्डाच्च्युता
पूरयन्ती त्रिलोकीं महानिःस्वनैः।

वाली हैं, वे जल जीवों की आवास स्थली हैं । सगर पुत्रों का उद्धार करना उनका लक्ष्य है, भव की भीति को दूर करने के लिये वे मन्त्र स्वरूपा हैं। जन्म लेने वाले प्राणियों की कारण और उनके जीवन के धारण की शक्ति भी उनके ही जल में है। वे अपने लहर रूपी सेनाओं के साथ तटरूपी रणाङ्गण में आ रही हैं, पाप रूपी शत्रुओं का संहार करने में वे निपुण हैं। नटराज की जटाओं में नृत्य करने वाली नटी, तरङ्ग रूपी पट को धारण कर पृथ्वी की ओर आ रही हैं।।७६-८२।।

इस प्रकार गर्व से भरी हुई धुनी ब्रह्म कमण्डलु से गिर कर, महान् शब्दों से

of the darkness of ignorance. She was the abode of the aquatic beings. Her goal was to redeem the sons of *Sagar*. She was the *mantra* -incarnate to dispel the fears of this mortal life. She was the first cause of the creation and embodied the source of the power that sustains it.With Her army of waves, She came to the battle fields of the banks as She was adept to ravage the enemies in the form of sins. She, who danced in the matted locks of *Naṭarāja*, like a danseuse, holding the veil of Her waves, came down towards the earth.[76-82]

Swollen with vanity *Dhunī* (*Gaṅgā*) after falling from *Brahma*'s

उत्तमाङ्गे जवेन त्रिलोकीपतेः
सावलेपापतत् सर्वपापापहा ।।८३।।
दिग्गजाल्ँल्लोकपालान् नरान् किन्नरान्
यक्ष-गन्धर्व-नागान् नगान् भूरुहान् ।
कम्पयन्ती भृशं स्थावरं जङ्गमं
भञ्जितुं तीव्रधाराप्रवाहेण गाम् ।।८४।।
यावदेषा महाराविणी धूर्जटे-
र्मस्तकेऽवातरत् तावदेव स्वतः ।
तज्जटाजूटचक्रभ्रमं भ्राम्यती
सम्प्रपेदे विवर्ताऽऽकृतिं विह्वला।।८५।।
मुक्तये सप्रयासा बभूवाऽऽत्मनः
सा बहिर्गन्तुकामाऽऽकुला भूयशः।
नष्टगर्वां वराकीं प्रपश्यन् हरो
लोकनाथः स्मितं मन्द-मन्दं दधे ।।८६।।

तीनों लोकों को कंपाती हुई त्रिलोकी पति शिव के मस्तक पर बड़े अभिमान के साथ गिरीं। दिग्गजों, लोकपालों, मनुष्यों , किन्नरों , यक्ष, गन्धर्व और नागों , पर्वतों , वृक्षों तथा सम्पूर्ण स्थावर और जङ्गमों को कंपाती हुई वह अपनी तीव्रधारा के प्रभाव से पृथ्वी को नष्ट करना चाहती थीं । परन्तु ज्यों ही वे धूर्जटि के मस्तक पर उतरीं त्यों ही उनके जटा समूहों के चक्र में घूमती हुई भंवर के समान दिखाई देने लगीं; उन्होंने अपनी मुक्ति का बहुत प्रयास किया और वे बाहर निकलने के लिए व्याकुल होने लगीं। उनका गर्व चूर-चूर हो गया, ऐसी बेचारी स्वर्धुनी को देख

pot of holy water, shaking the *Triloka* with tumultuous roar, fell on the head of *Trilokīpati Śiva* with pride. Making *Diggaja, Lokapāls, Yakṣas, Gandharva, Nāga, Kinnara,* human beings, mountains, trees i.e. the entire phenomena of immovable and movable objects, She wanted to devastate the earth under the impact of Her intense currents. But as soon as She descended on the head of *Dhurjaṭi Śiva,* She looked like a moving whirlpool entangled in the maze of His locks. She tried much and longed

मानिनीमानभङ्गे पटुः शङ्करः
सान्त्वयामास भीतां भ्रमन्तीं प्रियाम् ।
ईक्षमाणा पिनाकीप्रभावं तदा
विस्मिता वीतशोका विनीताऽभवत् ।।८७।।
वामभागस्तनोर्दक्ष्यपुत्र्या हृतो-
ऽतः शिरस्याऽऽदृता प्रेमसारा धुनी ।
अप्यतिक्रम्य तर्कं सदा राजते
चेतसः शुद्धदाक्षिण्यभावो यथा।।८८।।

लोकनाथ हर मन्द-मन्द मुसकाने लगे।।८३-८६।।

मानिनी के मान भङ्ग में निपुण भगवान् शङ्कर ने तब भय से घूमती हुई प्रिया को सान्त्वना दी। पिनाकी के अमित प्रभाव को देख वह विस्मित हुई और विगत शोक होकर विनम्र बन गई। भगवान् शिव ने उस प्रेम रूपी सार वाली नदी को सिर पर आदर पूर्वक ग्रहण किया; क्यों कि उनका वामाङ्ग तो पहले से ही दक्ष (तर्क) की पुत्री पार्वती ने ले लिया था। तर्क की अपेक्षा हृदय का शुद्ध औदार्यभाव श्रेष्ठ होता ही है। (श्रीगङ्गा प्रेम सारा है अर्थात् श्रीराधा कृष्ण का प्रेम ही गङ्गा के रूप में द्रव रूप हो गया है,अतएव शङ्कर उन्हें शिरोधार्य कर आदर दे रहे हैं। तर्क की अपेक्षा प्रेम, जो हृदय की उदारता की प्रसूति है, श्रेष्ठ है। श्रेष्ठ को ऊंचा स्थान और तर्क

for release. Her pride was shattered to pieces. Looking at the plight of poor *Swardhunī, Lokanātha Hara* smiled softly.[83-86]

Śankara, the skilled one in the art of conciliating a capriciously haughty female, then consoled the beloved who was trembling with fear. Realizing the excessive power of *Pinākī*, She was surprised and getting over the shock She became meek. Lord *Śiva* held that young quintessence of love upon His head with veneration, because His left part had already been owned by the daughter of *Dakṣa* (reason). Infact, the noble generosity of the heart enjoys a higher position.(In Her true essence *Śri Gaṅgā* is love, because She is the molten expression of the love of *Rādhā* and *Kṛṣṇa*.Therefore, Lord *Śankara* payed His reverence to Her as He placed Her on His forehead. Love the incarnation of the nobleness of heart is greater than reason. *Śiva* was desirous of assigning a

ऊर्मिभिः सुस्मितैर्व्यञ्जयन्ती रतिं
　　चन्द्रचूडस्य　　सौन्दर्यसम्मोहिता।
सा जटाशङ्करी नैकसम्वत्सरान्
　　तज्जटासूपगूढातिरोमाञ्चिता　　।।८९।।
पूर्वजानामहो ! तर्पणायाऽऽतुरः
　　प्राञ्जलिः तोषयामास राजा भवम् ।
जातहार्दो भवन्नार्तभक्तप्रियो
　　गाङ्गधारां　जटाजालतोऽमोचयत् ।।९०।।
तां वियोगव्यथा-व्याकुलां कोमलां
　　विश्वमित्रां [१४] समुद्धारिणीं तारिणीम् ।
विश्वकल्याणलक्ष्यं महादुर्लभं
　　शङ्करोऽस्मारयद्　बन्धनोद्भेदकः ।।९१।।

प्रसूति को समस्थान देना शिव को अभीष्ट है)।।८७-८८।।

वे अपने अनुराग को लहरों से व्यक्त करती हुई, सफेद जल से मन्द स्मित करती हुई चन्द्रचूड़ के सौन्दर्य से सम्मोहित हो गई; इस प्रकार अनेक वर्षों तक उन्होंने उनकी जटाओं में सुखपूर्वक निवास किया। अपने पूर्वजों के तर्पण के लिए आतुर राजा भगीरथ ने हाथ जोड़ कर पुनः शङ्कर को प्रसन्न करना प्रारम्भ किया। आर्त भक्त जिन्हें प्रिय हैं ऐसे शिव ने दया से द्रवित होकर गङ्गा को अपने जटाजाल से मुक्त किया। प्रिय वियोग की व्यथा से व्याकुल हुई देवनदी, जो विश्व की मित्र है, जगत् का उद्धार और तारण करने वाली हैं, को बन्धन खोलने वाले शङ्कर ने विश्व का

higher place to love and the place of an equal to reason.[87-88]

Revealing Her love and reflecting Her smile in the resplendent waves She got enamoured by the grace of *Chandrachūda*.Thus that *JaṭāŚaṅkarī* dwelt happily for many years in His matted locks.The king *Bhagīratha*, who was too eager to observe *tarpaṇa* for His forefathers, started to please *Śaṅkara* again with folded hands. *Śaṅkara* is one, who loves His aggrieved devotees, released *Gaṅgā* from the mesh of His locks.*Gaṅgā*, who is celebrated as the benefactor and the redeemer of the world, was

मुक्तकेशः कपर्दी जटास्वेव तां
प्रेमपूरां प्रियां धारयन् विह्वलाम् ।
प्रापयामास विन्दुं सरः श्रेयसे
भक्तकल्याणकारी कृपालुः शिवः ।।९२।।
ह्लादिनी पावनी पद्मिनीत्यादयः
सिन्धु - सीते सुचक्षुश्च भागीरथी ।
सप्तधारा विभक्ताः कपर्दाच्युताः
पावयन्त्योऽम्भसा निर्मला रेजिरे[१५] ।।९३।।
तासु तिस्रस्तु पूर्वां गता निम्नगाः
ताः प्रतीचीं समायान्ति तिस्रः शुभाः।
दक्षिणामभ्युपेत्यावशिष्टाऽपरा
राजते गाङ्गधारा सिता शीतला ।।९४।।

कल्याण करने वाले उस महान् लक्ष्य का स्मरण कराया, जिसके लिये स्वर्ग से उनका अवतरण हुआ है।।८९-९१।।

मुक्त केश जटाधारी शिव ने प्रेम से भरी हुई वियोग की व्यथा से व्याकुल स्वर्णदी को अपने जटा में धारण करते हुए ही भक्तों का कल्याण करने के लिए कृपापूर्वक विन्दुसरोवर में छोड़ दिया। जटा से छूटकर वह ह्लादिनी, पावनी, नलिनी, सिन्धु, सीता, सुचक्षुः और भागीरथी --इन सात धाराओं में विभक्त होकर जल से सबको पवित्र करती हुईं सुशोभित हुई। उनमें से तीन पूर्व दिशा में, बाकी

stricken by Her painful alienation from Her beloved(*Śaṅkara)*. *Śaṅkara,* the reliever of such a *Deva-nadi*, reminded Her of that great purpose for which She had descended from *Swarga.* [89-91]

Śiva who wore outstretched matted locks of hair, graciously released the divine river,(which was full of love) in the *Vindu Sarovara.*, though She looked woe-begone owing to separation. Released from His tangle of hair, She divided into seven streams-- *Hlādinī*, *Pāvaṅī*, *Nalinī*, *Sindhu*, *Sītā*, *Suchakṣu* and *Bhāgīrathī* and they purified every object. Out of the seven streams three ran eastward, the rest three coursed westward. The seventh stream flowed southward. That seventh stream named *Bhāgīrathī*,

सैव भागीरथी सप्तमी भारते
भूभुजस्यन्दनाऽनुप्रयाता सती ।
आतुषारालयात् सागरान्तं गता
कच्छप-ग्राह-मत्स्यादिभिः सङ्कुला।।९५।।
प्रान्तभागाधिवासास्तपश्चारिणो
दृष्टवन्तः सुतोयां सुधावाहिनीम् ।
तज्जलं स्वादयन्तोऽधिजग्मुर्दिवं
धूतपापा विशोकाः प्रहर्षान्विताः ।।९६।।
चञ्चला बालिकेवोच्छलन्ती मुदा
तुङ्गरिङ्गत्तरङ्गोल्लसन्ती सदा।
यज्ञशालां प्रवाहे नयन्त्यद्भुता
जह्नुरोषाभिभूता बभूवैकदा ।।९७।।

तीन पश्चिम दिशा में बहने लगीं। सातवीं धारा दक्षिण दिशा की ओर प्रवाहित हुई। वही भागीरथी नाम की सातवीं धारा राजा भगीरथ के रथ का अनुसरण करती हुई कच्छप, ग्राह, मत्स्य आदि से युक्त होकर हिमालय से सागर तक गई। उसके तटप्रान्त में निवास करने वाले तपस्वी ऋषि मुनियों ने सुन्दर जल वाली अमृतवाहिनी गङ्गा को देखा। उसके पुण्य जल का पान कर वे पापरहित, शोकरहित एवम् आनन्द मग्न होकर स्वर्ग लोक को गये।।९२-९६।।

चञ्चल बालिका की तरह उछलती, कूदती, ऊंची-ऊंची लहरों से उल्लास को प्रकट करती हुई जब वह जा रही थी तो मार्ग में जह्नु ऋषि की यज्ञशाला को

pursuing the track of *Bhagīrath*'s chariot reached the sea travelling from the *Himalaya*. She harboured within herself turtle, crocodiles, fishes etc.The pious ascetics dwelling on Her banks witnessed this bearer of nectar. Tasting Her pious water they were absolved of sin and became devoid of grief and lived absorbed into *Ānanda* and thus they went to *Swarga loka*.[92-96]

Like a playful lass springing and bounding, evincing Her delight in Her elavated waves, when She had been coursing along on Her way, She washed away *Jahnu ṛṣi*'s *yajñaśālā* by Her sharp

तामशेषां निपीयाऽतिकोपाऽऽकुलः
प्रार्थनाभिः प्रसन्नो यदाऽभूदृषिः ।
श्रोत्रतः स्त्रावयामास योगी तदा
जाह्नवीति प्रसिद्धिं जगत्यां गता।।९८।।
सा समुद्धर्तुकामाऽखिलान् सागरान्
नूतनैर्वीचिभिस्संयुता सन्ततम् ।
मुक्तिदात्री समासादिता यत्स्थलं
सागरः सोऽपि वारांनिधिः कथ्यते ।।९९।।
भस्मीकृतानां सगरात्मजानाम्
उद्धारहेतोः सततप्रवाहा।
भगीरथस्यन्दनमन्वगच्छद्
रसातलं पूरयितुं जलेन ।।१००।।

अपने तेज प्रवाह में बहा ले गई। इस प्रकार वह जह्नु के रोष की पात्र बन गई। क्रोध से व्याकुल ऋषिने उसे सम्पूर्ण पीकर उदरस्थ कर लिया। भगीरथ एवम् अन्य ऋषि मुनियों ने जब उन्हें प्रार्थना से प्रसन्न किया तो योगी ने उसे अपने कर्णछिद्र से निकाल कर पुनः प्रवाहित कर दिया और इस प्रकार लोक में उसका नाम जाह्नवी पड़ गया। मुक्तिदात्री वह सभी सगर पुत्रों के उद्धार की इच्छा करती हुई, नई-नई लहरों से निरन्तर युक्त होती हुई , जिस स्थल पर पहुंची उस जलनिधि को सगर पुत्रों के नाम से सागर कहा जाता है। इस प्रकार भस्म किये गये सगर पुत्रों के उद्धार के लिये निरन्तर प्रवहमान धारा भगीरथ के रथ के पीछे चली,

currents. Thus She became the target of *Jahnu*'s rage. Torn by anger the *ṛṣi* swallowed Her up. On being propitiated by *Bhagīratha* and other *ṛṣi*s the *yogi* released Her through His earholes and made Her flow again. Thus She was named *Jāhnavī*. She, the redeemer, desiring to redeem all the sons of *Sagar*, being saturated with new waves incessantly, reached a spot (in the sea) which is called *Sāgar* after the name of the sons of *Sagar*. To redeem the sons of *Sagar*, burnt down to ashes, She flowed ceaselessly after the wheel of *Bhagīratha*'s chariot, so as to fill the

दशहरां[१६] दशपापविनाशिनीं
　　धरणिमानयति　　द्रुतगामिनीम् ।
दशमुहूर्तयुता दशमी[१७] ततो
　　दशहरेति　　जनैः　　परिगीयते ॥१०१॥

इत्थं ब्रह्मकमण्डलौ विलसिता विष्णोः पदान्निःसृता
भक्तानां हितकाम्यया ऽवतरिता भूमौ सुराणां सरित् ।
गङ्गोत्पत्तिरतीव मङ्गलमयी दिव्या मनोहारिणी
पूर्वैः सूरिभिरीडिता बहुविधा पौराणिकैः प्राञ्जला॥१०२॥

रसातल को जल से पूर्ण करने के लिए ॥९८-१००॥

दशपापों का नाश करने वाली, दश शुभ मुहूर्तों से युक्त ज्येष्ठ शुक्ल दशमी तिथि को यह द्रुतिगामिनी स्वर्णदी पृथ्वी पर आई; अतः इस तिथि को 'गङ्गा दशहरा' कहा जाता है॥१०१॥

इस प्रकार ब्रह्मा के कमण्डलु में विहार करने वाली, विष्णु के चरणों से निकली देवनदी भक्तों के हित की कामना से पृथ्वी तल पर अवतीर्ण हुई। यह मङ्गलमयी दिव्य और मनोहर गङ्गा की उत्पत्ति की कथा पूर्व विद्वानों ने पौराणिक आख्यानों में प्राञ्जल रीति से वर्णित की है॥१०२॥

Rasātala with water.[98-100]

The nimble-paced celestial river, being adorned by ten pious stars (*Daśa-muhūrta*), came down upon the earth to destroy the ten sins. Therefore, this particular *tithi* is celebrated as *Gaṅgā Daśaharā*.[101]

Thus sporting in the holy pot of water of *Brahmā*, emanating from *Viṣṇu*'s feet, this divine river, descended upon the earth to benefit the devotees. This account of the origin of *Gaṅgā*, which is beneficial, divine and enchanting, has been narrated in a lucid way by the ancient scholars in the mythological tales.[102]

द्वितीयः सर्गः
आधुनिकमतम्

अथ षष्टिसहस्त्रसंख्यका जनसंख्यामतिशेरते प्रजाः।
सततं प्रकृतिप्रदूषका अपि वाच्याः सगरात्मजा ननु।।१।।
गरलेन सहैव भूतलं जनुषा भूषयता नु भूभृता[१]।
गरलो ददृशे किमद्भुतः सुतरूपो धृतविग्रहोऽशुभः।।२।।
असमञ्ज इति स्मृतो युवा तनयः सार्थकसंज्ञको भवन्।
कृतवान् परितोऽसमञ्जसं प्रकृतिं स्वाचरणैः प्रदूषयन्[२]।।३।।

राजा सगर के साठ हजार पुत्रों को प्रजा में जनसंख्या विस्फोट का प्रतीक माना जा सकता है, जिन्होंने निरन्तर प्रकृति को प्रदूषित किया। ऐसा लगता है मानो राजा सगर, जो कि माता के गर्भ से गरल के साथ ही उत्पन्न हुए थे, ने अपने पुत्रों के आकार में उस गरल को देखा।।१-२।।

उनका ज्येष्ठ पुत्र असमञ्ज अपने नाम को सार्थक करते हुए अपने दुराचारों से प्रकृति को दूषित करने लगा; इस प्रकार उसने चारों ओर असन्तुलन कर दिया।।३।।

The sixty thousand sons of king *Sagar* can be assumed to be the symbol of population explosion in the world. It seems as if king *Sagar*, who was born from the womb of his mother along with bane, found the same in the form of his sons.[1-2]

His eldest son *Asamañja* lived up to the full implication of his name to generate pollution in nature by intensifying an all-round misconduct and evil deeds which brought about the total imbalance in the environment.[3]

विनयी चतुरः प्रतापवानभवत्तत्तनयस्तु सुन्दरः ।
तमसा पिहिते किमौषसे गगने नोदयते दिवाकरः[३] ।।४।।
क्रमशः परिवर्धितोंऽशुमान् किरणैः सूर्य इव प्रभामयः ।
सुतपौत्रपरम्परायुतः स चकासे सुतरां धराधिपः ।।५।।
कपिल-प्रकृति-प्रदूषण-प्रभवा-प्राकृतिकी-प्रतिक्रिया ।
अनलेऽदहताऽऽशु सागरान् परितः पीडयतोऽखिलं जगत् ।।६।।
सकलानविशेषभस्मितानवलोक्याऽऽकुलितः स पूर्वजान्।
भृशतापनिवारणे क्षमां बहुनीरां तटिनीमचीकमत् ।।७।।
अमृताऽम्बुमयीं महानदीं भुवि गङ्गां नयनाय भूपतिः।
मनसा समकल्पयत्ततः सततं कर्मरतो बभूव ह ।।८।।

किन्तु उसका पुत्र विनय सम्पन्न, चतुर और प्रतापी था। अन्धकार से ढके होने पर भी उषः काल में क्या आकाश में सूर्योदय नहीं होता? अर्थात् अवश्य होता है। क्रमशः किरणों से प्रभामण्डित सूर्य की भांति अंशुमान् बढ़ने लगा और पुत्र -पौत्र की परम्परा में विस्तार को प्राप्त हुआ वह राजा बहुत सुशोभित हुआ। कपिल मुनि के अन्तः प्रकृति को प्रदूषित करने के कारण जो प्राकृतिक प्रतिक्रिया हुई, उसने सम्पूर्ण जगत् को पीडित करने वाले सगरपुत्रों को शीघ्र ही जला कर राख बना दिया। अंशुमान् अपने पूर्वजों को भस्म हुआ देख बहुत व्याकुल हुआ और इस भयङ्कर ताप का निवारण करने में समर्थ बहुनीरा नदी की कामना करने लगा।

But his (*Asamañja*'s) son (*Anśumān*) was courteous, clever and powerful. Despite the gloom of a dark sky doesn't the sun rise at the crack of the dawn? The sun always does rise.Gradually like the haloed sun *Anśumān* grew and sprouted up into a large family of descendants and as a king he became celebrated.The extreme natural reactions, which were triggered off, consequent to the profanation of the essence of *Kapil muni*, turned to ashes all the sons of *Sagar* instantly, who had turmoiled Nature.*Anśumān* was intensely moved to see the dire fate of his anscestors. He started to yearn for that river whose ample water would be able to douse the terrible radiation.He was determined to bring the great river *Gaṅgā* with Her nectar-like water down upon the earth from

अनवाप्य फलं स कीर्तिमाननवच्छिन्नविकासहेतवे ।
तनयं च विधातुमुत्तरं विनियुञ्जन् त्रिदशौकसं गतः ।।९।।
कृतभूरिपरिश्रमोऽधिपः स दिलीपोऽप्यभजन् कृतार्थताम्।
पितुराशयमुक्तवान् सुतं जगदुद्धारकरं महत्तरम् ।।१०।।
परितर्पयितुं स्वपूर्वजानुचितारम्भकलाप-शालिभिः।
पितृभिः परिकल्पितं परं बहुलाऽऽयासिभिरुज्झितेऽन्ततः।।११।।
परिपूरयितुं सुधाम्बुभिः वसुधामुत्तरभारतस्य सः ।
कुशलः सुभटो दृढव्रती विविधोपाययुतो भगीरथः ।।१२।।

उसने अमृत रूपी जलवाली महानदी गङ्गा को पृथ्वी पर लाने का सङ्कल्प किया और इस मनोकामना को पूर्ण करने के लिये वह कर्म करने में लग गया ।।४-८।।

कीर्तिमान् अंशुमान् को फल प्राप्त नहीं हुआ। किन्तु यह कार्य विना रुके आगे चलता रहे - यह सोच कर आगे के प्रयत्न को उन्होंने अपने पुत्र को सोंपा और वे स्वर्ग चले गये। कृतभूरिपरिश्रम राजा दिलीप को भी इस गङ्गानयन रुपी कार्य में सफलता नहीं मिली; किन्तु उन्होंने पिता के अभिप्राय को अपने पुत्र भगीरथ को समझाया जो कि संसार का उद्धार करने वाला महान् कार्य था । उचित आरम्भ करने वाले अपने पिता एवं पितामह के द्वारा सोचे गये कार्य को, जो कि उनके पूर्वजों के तर्पण के लिए प्रारंभ किया गया, किन्तु जीवन के अन्त में छोड़ दिया गया, भगीरथ ने आगे बढ़ाया । कुशल, वीर, दृढ़व्रत वाले तथा अनेकों उपायों से युक्त भगीरथ ने उत्तर भारत की धरती को सींचने के लिये गङ्गा को लाने का प्रयत्न प्रारम्भ किया।।९-१२।।

Swarga. To satiate his longing he acted accordingly.[4 -8]

The glorious king (*Anśumān*) couldn't enjoy the fruit of his deeds but to help this work continue undeterred entrusted the entire responsibility with his son (*Dilīp*) and ascended to *Swarga loka.* Despite his zeal *Dilīp* the king, too, did not succeed in bringing *Gaṅgā* to the mortal world, but he explained his father's great intentions to his son *Bhagīratha.Bhagīratha,* the befitting pioneer led forward the work, which was begun by his grandfather and father for the *tarpaṇa* of their ancestors. Deft, brave, strong-willed and equipped with many resources, *Bhagīratha* started his efforts to bring *Gaṅgā* to irrigate the entire area of the northern part of India.[9-12]

सुविचारणचातुरीमयीमवगच्छन्नभियान्त्रिकीं कलाम् ।
सहकर्मकरैः समन्वितः समुपेयाय हिमाचलं सुधीः।।१३।।
सचराचरतृप्तिदायिनीं हिमवाहेषु कृतालयां द्रवीम् ।
प्रकटीकरणाय सन्ततं विबुधोऽसौ बहुधा व्यचिन्तयत् ।।१४।।
समवापयितुं भुवस्तलं प्रकृतेः शेवधिरूपिणीं नदीम्।
सहकारितयोपकारिकां सकलां शक्तिमलौकिकीं भजन् ।।१५।।
त्रिपथां त्रिदशैरुपासितां स विधातुं वसुधातिथिं धुनीम् ।
शरणः परमात्मनः परं प्रतिपेदे धरणीपतिश्चिरम् ।।१६।।
सुसमाहितचेतसा नृपो जपमानः प्रणवाक्षरं परम् ।
सगुणात्त्रितयाज्जगत्प्रभोर्लभमानः करुणां शुचिव्रतः।।१७।।

सुन्दर विचार करने में चतुर अभियान्त्रिकी कला (इञ्जीनियरिंग)को जान कर वे अपने सहकर्मियों को साथ ले हिमालय में गये। सम्पूर्ण चर और अचर को तृप्त करने वाली हिमवाहों (ग्लेशियर्स) में छिपी हुई नदी को प्रकट करने के लिए विद्वान् भगीरथ ने बहुत सोचा। प्रकृति की निधि रूप गङ्गा नदी को पृथ्वी पर लाने के लिये सभी सहकारी प्राकृतिक शक्तियों को उसने प्राप्त किया। भू भुवः स्वः में विचरण करने वाली देव नदी को पृथ्वी की अतिथि बनाने की इच्छा से राजा भगीरथ परमात्मा (ब्रह्मा,विष्णु और महेश) के शरणागत हुए।एकाग्र चित्त से राजा ने ओंकार मन्त्र का जप किया और पवित्र व्रत वाले उस भक्त ने ब्रह्मा,विष्णु, महेश--इन तीन रूपों से सगुण परमात्मा की करुणा की पात्रता प्राप्त की ।।१३-१७।।

With the inventive brain of an engineer he took his associates to the *Himalayas*. He thought of the strategies so as to release the river from the mesh of the glaciers, which have ever quenched the entire animate and inanimate world. To make himself well-braced he obtained the support of the accessory powers of Nature to bring *Gaṅgā* to the earth, who Herself is the precious treasure of Nature. *Bhagīratha*, the king, desirous to make the divine river a guest of the earth, who traversed along *Bhū*, *Bhuvaḥ*, *Swaḥ*, saught the succour of *Paramātman*.The king chanted the mantra of *Oṁkār* single mindedly and this dedicated devotee attained the eligibility to receive the grace of *Brahmā*, *Viṣṇu* and *Maheśwara* - the three forms of *Parmātman*.[13-17]

मनसा वचसाऽथ कर्मणा नियतः संयमितो भगीरथः।
अनुकूलयितुं परिस्थितिं समवापानुपमां धियं तदा।।१८।।
निपुणो नृपतिः सुयन्त्रविद् हिमवाहानवभेत्तुमुद्यतः ।
सरिदुद्गमनाय गोमुखं सहजं खातविलं विनिर्ममे ।।१९।।
रभसाऽमितशक्तिरूपिणी यदि विद्युज्जनिकोद्गता भवेत् ।
सकलं जनजीवनं किमु प्रहतः स्यान्नतरङ्गसङ्कुलैः।।२०।।
अतएव कृताञ्जलिर्बुधो जगदीशं हिमवत्स्वरूपिणम्।
रवपूरितवेगभीतिदामवरोद्धुं निविवेद धूर्जटिम् ।।२१।।
नगशीशधृतां सुधामयीमवतीर्णामवलोक्य निम्नगाम् ।
पुलकाञ्चितवाष्पगद्गदः परमानन्दमवाप भूपतिः ।।२२।।

तब मन, वचन और कर्म से नियत, संयमी भगीरथ ने गङ्गानयन की सभी परिस्थितियों को अनुकूल करने के लिये उत्तम बुद्धि प्राप्त की। निपुण और तकनीकी के मर्मज्ञ राजा हिमवाहों को तोड़ने के लिये उद्यत हुए और नदी के उद्गम के लिये उन्होंने गोमुख नामक सुरङ्ग बनवाई। उन्होंने सोचा कि अमित शक्ति रूपिणी, बिजली को उत्पन्न करने वाली यह नदी तीव्र वेग से यदि निकलेगी तो इसके तरङ्ग समूहों से जन जीवन क्या बाधित नहीं होगा?।।१८-२०।।

इस लिए हाथ जोड़ कर ज्ञानी राजा ने हिमालय रूपी जगदीश शङ्कर को रव से पूर्ण वेग वाली भयंकर नदी को रोकने का निवेदन किया। जब राजा ने पर्वतराज हिमालय के मस्तक पर विराजमान सुधामयी नदी को अवतरित होते देखा तो वे

Subsequently *Bhagīratha*, who was both disciplined and restrained in his mind, words and actions, attained the best skill to make the situations favourable ones. He, the one endowed with the essentials of technical expertise became ready to build a tunnel named *Go-mukha* for the river to spring up by breaking the glaciers. He comprehended that the effusion of this immensely powerful river, which was potent enough to generate dynamic force, could disrupt the entire life by its waves when it would gush forth vigorously.[18-20]

Therefore, the sagacious king prayed with folded hands to *Śaṅkara* -- the personified *Himalaya*, to restrain the mightily

अवलोकिततोयसम्पदां लहरीभिः सुभगाञ्चलायिताम् ।
अनमद् बहुधा सुपूजितामथ नीराजनया सुदीपिताम् ।।२३।।
तपसे मुनिवृत्तिधारकः स तु गङ्गौघसुदर्शनेच्छुकः।
वपुषाऽतिकृशो महीपतिर्यशसा दीप्रतनुर्व्यराजत ।।२४।।
हिमपर्वतमध्यगा शुभा वनराजीरभिषिञ्चती सती ।
अटवीमटवीमटन्त्यसौ प्रतिभातीशजटासु शोभिता।।२५।।
अवरोधमपेतुमुत्सुकः सुपथे खातमकारयद् नृपः ।
नितरां मुमुदेऽतिबुद्धिमान् वसुधारां वसुधां नयन्नसौ ।।२६।।

पुलकित, आंसुओं से गद्गद होते हुए परम आनन्द को प्राप्त हुए। उस जलसम्पदा वाली, लहरों रूपी सुन्दर आंचल वाली, अनेक प्रकार से पूजित और आरार्त्तिक से समर्चित देव नदी को राजा ने अनेक बार प्रणाम किया। तपस्या के लिए मुनि बने हुए, गङ्गा के प्रवाह को देखने के इच्छुक वे राजा भगीरथ शरीर से अत्यन्त कृश होते हुए भी प्रकाशमान यशः शरीर से सुशोभित हुए। इसीलिए हिमालय पर्वत के बीच में बहने वाली वनराजियों को सींचती हुई एक जङ्गल से दूसरे जङ्गल में बहती हुई यह भगवान् शङ्कर के मस्तक में शोभायमान है--ऐसा कहा जाता है। बीच-बीच में प्रवाह के अवरोध को दूरकरने के लिए राजा ने मार्ग बनवाये और वे बुद्धिमान् इस वसुधारा को वसुधा में लाते हुए परम प्रसन्न हुए।।२१-२६।।

rushing and rumbling river.When the king saw the nectar-like river descending from her seat of the forehead of *Himalaya*, he was thrilled and ecstatic with tears and experienced eterenal bliss. The king saluted the divine river several times, who was the reservoir of marine wealth, embellished with the billowing fabric of waves and worshipped in many ways with the pure flames of auspicious lamps. Despite being extremely ematiated, *Bhagīratha*, the king, who had become an ascetic to do penance and desirous of beholding the onrush of the river, attained the haloed body of fame. This river coursing through the ridges of the *Himalayas*, moistening the forest vegitation, flowing from one forest to the other, seems to grace the forehead of *Śaṇkar*.The king occassionally built channels to remove the impediments in the course of the river.[21-26]

नर-नाग-सुरासुरार्चिता किल गङ्गां सुतरङ्गिणी ततः।
स्रुतिमाप्य गता रसातलं सकलामुर्वरतां दधत्यहो।।२७।।
भगीरथस्तु प्रखरप्रयत्नो बभूव भूपः कुशलोऽभियन्ता ।
त्रिविष्टपाद् भारतभूमिभागे गङ्गां समानेतुमिह प्रवृत्तः ।।२८।।
गङ्गाजलेनोत्तरभारतं तच्छस्यश्रिया भूषयितुं निकामम् ।
कुर्वन्प्रयत्नं सफलो मनस्वी चकास्ति लोके यशसा प्रकामम् ।।२९।।
स्वर्लोकादवतारिणी जनिभृतां तापत्रयोद्धारिणी
नानाशैलविदारिणी गिरि-गुहा-कान्तारसञ्चारिणी।
लोकानामुपकारिणी सुचरितां संसारसंहारिणी
भूलोकार्तिनिवारिणी विजयतां गङ्गा मनोहारिणी ।।३०।।

तब नर, नाग,देवता और-दानवों द्वारा पूजित सुन्दर तरंगों वाली गङ्गा वहां (हिमालय)से बहती हुई सम्पूर्ण उर्वराशक्ति को लिए हुए रसातलपर्यन्त बहने लगी। प्रखरप्रयत्न वाले, कुशल अभियन्ता राजा भगीरथ ने तिब्बत (अथवा स्वर्ग)से भारतभूमि में गंगा को लाने का सफल प्रयास किया। गङ्गा के जल से उत्तर भारत को हरियाली से सुन्दर बनाने की इच्छा से इन यशस्वी ने जो कार्य किया,उससे आज भी वे पृथ्वी पर प्रसिद्ध हैं ।।२७-२९।।

स्वर्गलोक से उतरने वाली, जन्म लेने वाले प्राणियों के त्रिविध (दैविक, दैहिक, भौतिक)ताप को दूर करने वाली, अनेक पर्वतों को तोड़ने वाली, पर्वत गुफाओं एवं जंगलों में घूमने वाली, संसार का उपकार करने वाली, सत्कर्म करने वालों के आवागमन को काटने वाली, पृथ्वी लोक के कष्ट को दूर करने वाली, मनोहारिणी गङ्गा की जय हो ।।३०।।

Worshipped by human beings, *Nāgas*, Gods, *Dānavas* decked with beautiful waves, *Gaṅgā* started flowing right from the *Himalayas* down to *Rasātal* along with Her fertile energy. *Bhagīratha* a hard-worker and an efficient king, made a fruitful effort to bring *Gaṅgā* from Tibbat (*Triviṣṭapa*) to *Bhārat-bhūmi*. Desiring to invest the *Uttar-Bhārat* with greenary by the water of *Gaṅgā*, this man of glory performed such an act that he stands celebrated till today.[27-29]

Glory be to *Gaṅgā*, who descends from the celestial heights of *Swarga loka*, the remover of the three kinds of sufferings (physical, mental and spiritual) of the mortals, the splitter of mountains and wanderer through the hills and forests, the benefactor of the world and the releaser of the pious people from the cycle of birth and death and who is the eradicator of the afflictions of this mortal world.[30]

॥ यात्रा ॥

कुन्दपुष्पप्रतीकाशां मकरासनसंस्थिताम् ।
त्रितापशमनीं देवीं नीराकारामुपास्महे ॥

तृतीयः सर्गः
हिमालय-वर्णनम्

उज्जवलः पावनः शीतलः सुन्दरः
सीकरैः संयुतो निर्झरैर्झङ्कृतः ।
मातृभूमेः किरीटायितः कान्तिमान्
भारते भाति भूभृत्तुषारालयः ।।१।।
देव-देवर्षिसप्तर्षि-संसेवितो
यक्ष-गन्धर्वनागादि-सम्पूजितः ।
देवभावेन सम्पूरितः सर्वथा
भारते भाति भूभृत् तुषारालयः।।२।।
देवदारोर्हरिच्छाययाऽऽच्छादितो
देवदारैस्तथा वन्दितः सेवितः।

उज्ज्वल, पावन, शीतल, सुन्दर, सीकरों (छोटे-छोटे)जलकणों से युक्त, निर्झरों से झङ्कृत, भारतमाता का शीशमुकुट, कान्तिमान् हिमालय पर्वत भारत में सुशोभित है। यह हिमालय देवता, नारदादि देवर्षि, सप्तर्षि,यक्ष,गन्धर्व,नाग आदि समस्त जातियों से पूजित है। देवदारु की हरी-भरी छाया से युक्त, देवाङ्गनाओं द्वारा वन्दित

Himalaya Vignette

Adorned with scintillating, pristine, cool, charming droplets, echoing with the music of streams, the crown of our motherland, the radiant *Himalaya* is situated in India. It is worshipped by *Devas*, *Devarṣis*, *Saptarṣis*, *Yakṣas*, *Gandharvas*, *Nāgas* and other numerous communities.Enriched with the lush green shades of

मालया देवनद्या समालङ्कृतो
भारते भाति भूभृत् तुषारालयः।।३।।
भूर्ज-पीतद्रु-शालद्रुमैरावृतः
पुष्पिताभिर्लताभिः समालिङ्गितः।
वन्यसम्पत्तिसम्भूषितः सर्वतो
भारते भाति भूभृत् तुषारालयः।।४।।
धातुसन्धारकः सम्पदासम्भृतो-
ऽनेकरत्नप्रभाभासितो भासुरः ।
दिव्यगन्धौषधेरुद्भवः स्वास्थ्यदो
भारते भाति भूभृत् तुषारालयः।।५।।
निश्चलः सिद्धयोगीव सिद्धासने
नीरवोऽनन्ततत्त्वं विदल्लँक्ष्यते।
मौनसन्देशसंवाहकः संस्कृते-
र्भारते भाति भूभृत् तुषारालयः।।६।।

तथा देवनदी रूपी मालाओं से अलङ्कृत है।भोज, चीड़, शाल आदि वृक्षों से ढका हुआ, पुष्पित लताओं से आलिङ्गित और वन्यसम्पत्तियों से विभूषित है। गैरिक आदि धातुओं का उत्पत्ति स्थान, सम्पत्तियों का खजाना, अनेक प्रकार के रत्नों से भासित, तथा स्वास्थ्यप्रद दिव्यगन्ध वाली औषधियों का उद्भव स्थान है। यह पर्वत सिद्धयोगी के समान सिद्धासन में बैठा हुआ निश्चल, शान्त होकर अनन्ततत्त्व परमात्मा का साक्षात्कार करता हुआ सा दिखाई देता है तथा संस्कृति का मौन सन्देशवाहक है।।१-६।।

Devdāru (pines), it is adorned with the strings of *Devanadī* and enjoyed by *Apsarās*.It is shaded by the canopy of *Bhoj*, *Chīd*, *Śāl* and other trees and embraced by blooming creepers and invested with the wealth of the wild life.It is the origin of metals, the store of assets and the fountainhead of invigorating and divinely fragrant medicines. He seems to be sitting like a sanctified ascetic on his seat of enlightenment and transfixed in communion with the Supreme Self,(*Paramātman*) unmoved and quiet.[1-6]

यद्गुहासु स्थितानां मुनीनां हृदि
स्फूर्जते शाश्वतं ज्ञानमत्यद्भुतम् ।
शान्तिदं सारभूतं परं पावनं
विश्वबन्धुत्ववृत्तेः समुन्नायकम् ।।७।।
यद्गुहासूपदिष्टं जगज्जीवकं
मौनसंलापितं संशयोच्छेदकम् ।
धर्ममूलं रहस्यं धरण्यङ्गणे
प्रासरत् प्राणिमात्रोपकर्तुं चिरम् ।।८।।
गन्धवाहेन पर्यावृता श्यामला
शस्यपूर्णा धरित्री पवित्रीकृता।
वन्यशोभाविलासप्रसारो नवः
पार्वते भूमिभागे दरीदृश्यते।।९।।

जिसकी गुफाओं में निवास करने वाले मुनियों के हृदय में उस अद्भुत शाश्वत दिव्य ज्ञान का उदय हुआ जो परम शान्तिदायक, सार स्वरूप तथा परम पावन है और विश्व बन्धुत्व के भाव को जगाता है। जिस हिमालय में बैठ कर ऋषियों ने अपने मौन संलापों से समस्त संशयों की दूर करने वाले ज्ञान का उपदेश दिया तथा प्राणि मात्र के उपकार के लिए धर्म के मूल रहस्य को धरती के आंगन. में प्रसारित किया ; जहाँ सुन्दर गन्धवाले वायु ने शस्य श्यामल पृथ्वी को पवित्र बनाया, उस हिमालय के पर्वतीय स्थलों में वन की शोभा का नित नवीन विस्तार भूयशः दिखाई देता है।।७–९।।

He is the silent herald of *Sanskṛti*. In the heart of the sages who dwell in his(*Himalaya's)* caves has dawned that light of eternal knowledge which is blissful, truth -incarnate, holy and engenderer of the sense of universal brotherhood. Sitting in the lap of this *Himalaya* the sages have exhorted their spiritual instructions through their silent communion to dispel every doubt and spread the quintessence of benevolent *Dharma* in the entire world for the good of every creature. In the *Himalaya* the beauty of the rich forests is seen expanding with cyclic renewal and the fragrant air here has rendered the entire earth sacred.[7-9]

श्वेतमुक्तावलीवोच्चश्रृङ्गावली
दृश्यमानाऽभिरामा ललामाऽमिता।
आरुणी प्रातराभा सुवर्णाङ्किता
भास्वरा भासते भूयसी भूधरे ।।१०।।
सूर्यबिम्बं स्पृशनुन्नतो दृश्यते
रौप्यकान्तिच्छटाच्छन्नश्रृङ्गः क्वचित् ।
तप्तकार्तस्वराभः क्वचिद् दीप्यते
शैलराजस्य सानुः प्रभाभास्वरः ।।११।।
स्वच्छनीहारिकाभिः समालिङ्गितः
शीतरश्मीयते तिग्मभानुर्मृदुः।
ईक्षमाणा प्रियं चन्द्रकान्तायते
सानुरागा हिमानी स्थिता पर्वते।।१२।।
कोमलैः पल्लवैः पाणिभिः पादपाः
सीकराम्भोभिरर्घ्यं ददाना मुदा।

हिमालय की ऊँची-ऊँची सफेद पर्वत श्रेणियां मोतियों की माला के समान अभिराम लगती हैं। जब उनमें प्रातः कालीन सूर्य की किरणें पड़ती हैं तो वे सुनहरी पर्वत मालायें बड़ी सुन्दर दिखाई देती हैं। कोई पर्वत सूर्य के बिम्ब को स्पर्श करता हुआ सा चांदी के पहाड़ जैसा दिखता है तो कोई सोने जैसा पीताभ दिखाई देता है।बर्फीली चोटियों में सूर्य स्वच्छ नीहारिकाओं से आलिङ्गित हो स्वयं भी शीतल हो जाता है और पर्वत की हिमानी मानो अपने प्रिय को देख कर चन्द्रकान्त मणि की भांति अनुराग से पिघल जाती है। अपने कोमल पल्लव रूपी हाथों से, सीकरों

The towering spotless range of *Himalaya* looks beautiful like white strings of pearl. In the morning when the early rays of the sun fall on them the golden peaks appear to be beautiful. Some mountains seem to turn silvery as though by touching the orb of the sun, while some turn yellow as gold. The sun himself gets chilled being embraced by the heavy dew and the snow drift. The ice of the mountains melts in love like *Chandrakānt maṇi*. The Himalayan range is adorned with such trees which offer ablution of dew-drops to the

अर्चनार्याऽर्कदेवस्य ते सुन्दरं
पुष्पगुच्छं समादाय श्रृङ्गे स्थिताः।।१३।।
पङ्कजाऽऽमोदपूरैः सरोभिर्युतः
स्वर्ण-पद्म-प्रसूनश्रिया शोभितः।
नूनमुत्थाप्यते पक्षिणां कूजनै-
र्गुञ्जनैः षट्पदानां नगेन्द्रः शुचिः।।१४।।
आपगानां तरङ्गैः समुद्भावितं
सामगानं प्रकृत्या समुच्चारितम्।
गह्वरे गुञ्जितं यः समाकर्णयन्
ब्राह्मकाले समाधिस्थितो भासते।।१५।।
यस्य कैलासश्रृङ्गे नभश्चुम्बिनि
त्र्यम्बकस्याऽऽलये शोभमानं सितम्।

(छोटे-छोटे जल कणों)से सूर्य को अर्घ्य देते हुए तथा सुन्दर पुष्प गुच्छों से पूजन करते हुए अनेक वृक्ष हिमालय की चोटियों में सुशोभित हैं। ।।१०-१३।।

कमल के पराग से सुगन्धित जलाशयों वाला, हेमकुण्ड में उत्पन्न स्वर्णपद्म से सुसज्जित, अत्यन्त पवित्र पर्वतराज हिमालय मानों प्रतिदिन पक्षियों के कलरव और भ्रमरों के गुञ्जन से जागता है, नदियों की उठती तरङ्गों से प्रकृति के सामगान को गुफाओं रूपी कानों से सुनते हुए ऐसा लगता है मानों ब्राह्ममुहूर्त में पर्वतराज समाधि लगाये हुए हों ।।१४-१५।।

हिमालय में कैलाश की गगनचुम्बी चोटी पर त्र्यम्बक शिव का घर है और वहां धूर्जटि के अट्टहास के समान सफेद बर्फ जमी रहती है। वहीं देवाधिदेव गिरीश

sun with their soft leafy palms and worship him with lovely bunches of flowers.[10-13]

Himalaya, the king of mountains embellished with the lakes containing the fragrance of lotus pollen and adorned with golden lotus flowers sprung in the *Hemkuṇda*, gets up from sleep, listening to the chirp of birds and humming of the bees.It seems as if *Himalaya* sits in meditation at the break of dawn and hears the *Sāma gāna* like rumble of the rivers through the ears of caves. [14 -15]

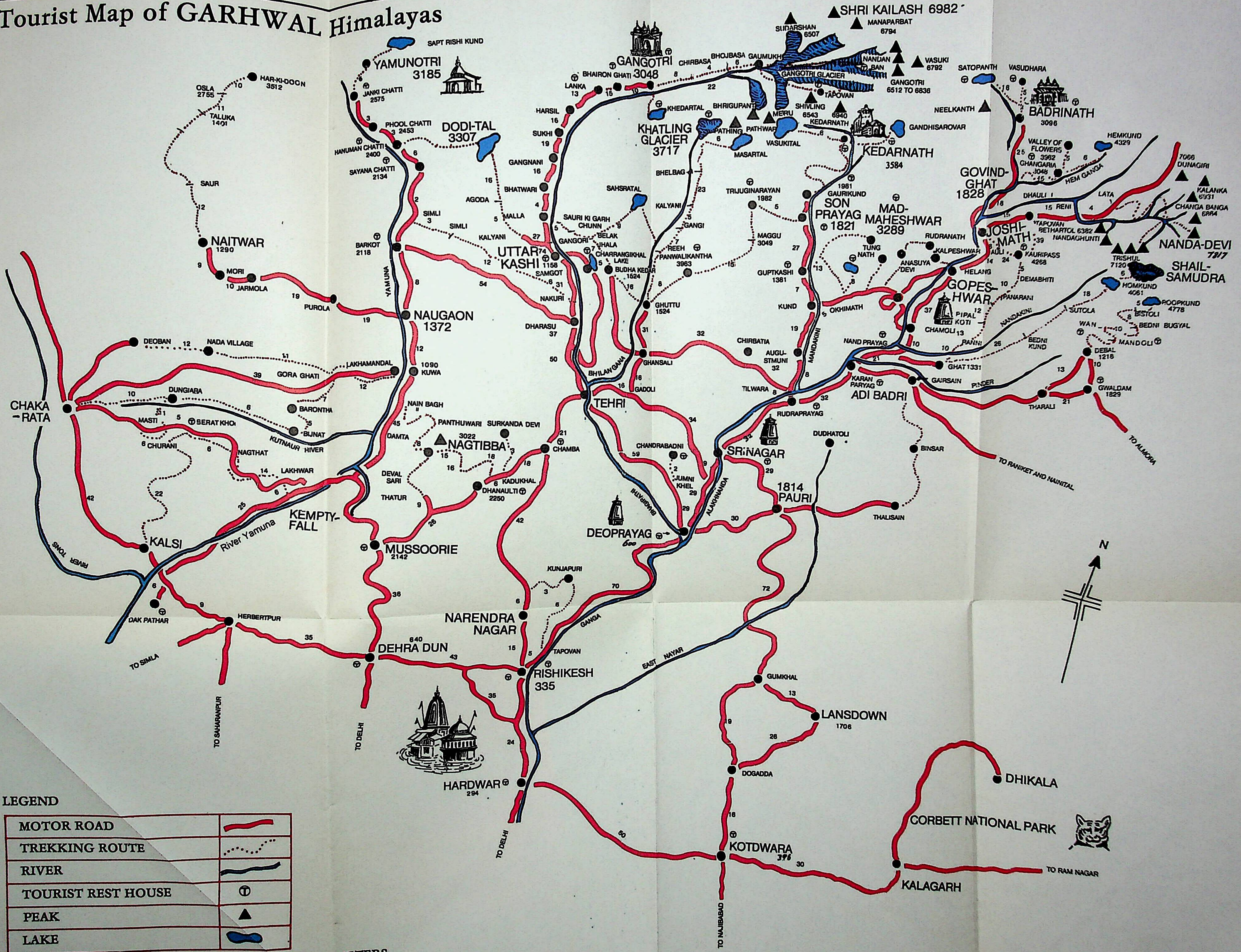
At the *Himalaya*, on the peak of *Kailāśa* which touches the

धूर्जटेरट्टहासोपमं[१] सञ्चितं
राजताभं मनोहारि सान्द्रं हिमम् ।।१६।।
तत्र देवाधिदेवो गिरीशः शिवो
ध्यानयोगे निमग्नः तपोविग्रहः ।
दृश्यते धारयन्नुत्तमामाकृतिं
निर्गुणो निर्विशेषोऽष्टमूर्त्यात्मकः [२]।।१७।।
स्त्रोतसामुद्गमेऽघौघसंहारके
पुण्यतोये सरस्युत्तमे मानसे ।
योगिनां मानसेवाऽमले पावने
स्वर्णहंसस्वरूपो हरः[३] शोभते ।।१८।।
किन्नराणां सुगीतैः सदा गूजिता
वंश-वीणाध्वनिध्वानसम्पूरिता ।
अप्सरोवृन्दनृत्यैः समासज्जिता
पूः कुबेरस्य रम्याऽलकाऽऽलोक्यते ।।१९।।

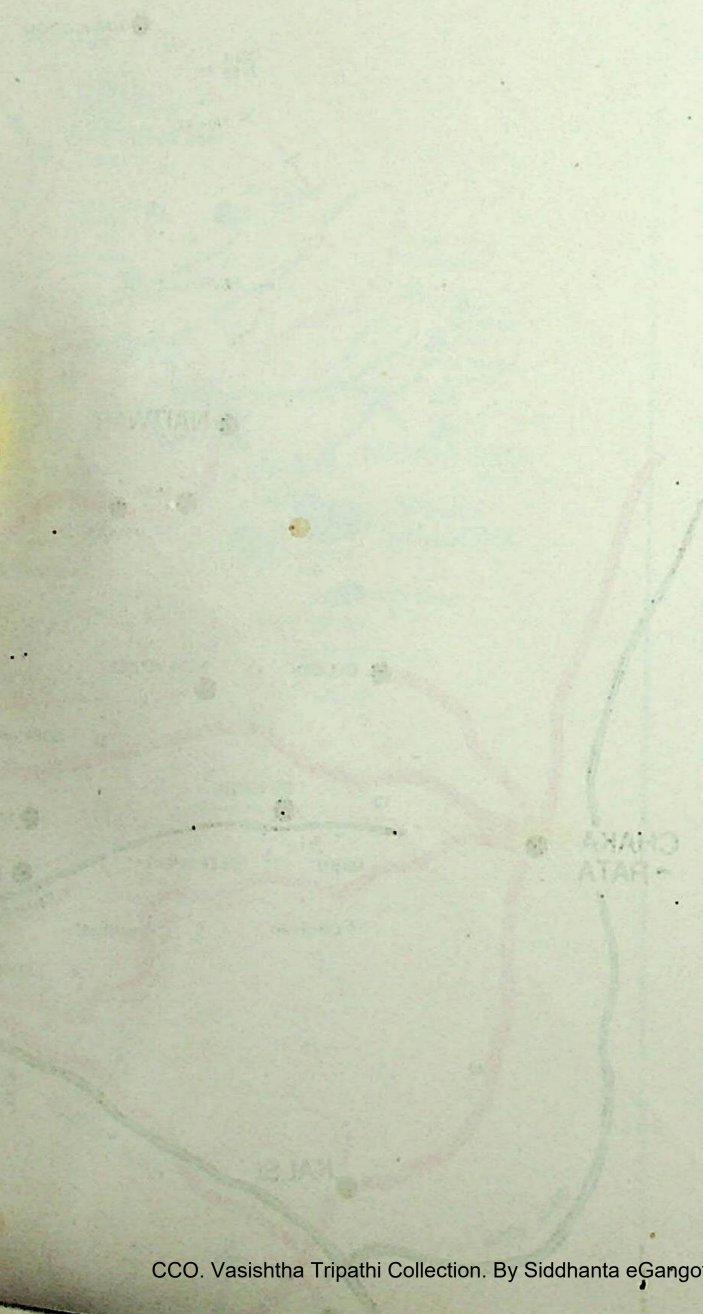
तपोमूर्ति बन ध्यानयोग में डूबे रहते हैं, जो निर्गुण निराकार होते हुए भी आठमूर्तियों में परिलक्षित होते हैं । यहीं नदियों के उद्गम स्वरूप, पापों को नष्ट करने वाले, योगियों के निर्मल मन के समान पवित्र मानसरोवर में भगवान् शिव स्वर्ण हंस के रूप में विचरण करते हैं । यहीं किन्नरों के मधुर गीतों से गुञ्जायमान, वंशी वीणा आदि की ध्वनि से पूरित, अप्सराओं के नृत्य से सुसज्जित कुबेर की अत्यन्त रमणीय अलकापुरी है ।।१६-१९।।

skies, there happens to be the home of *Śiva*. where the ice remains frozen which is as white as the laughter of *Dhūrjaṭi*. There itself the *Girīśa*, the lord of the lords, being the incarnate of penance (*Tapomūrti*) remains immersed in *Dhyān yoga* . Despite being *nirguṇa* and *nirākāra*, He is emanent in eight forms.Here only in the *Māna sarovara*, the origin of rivers,which is as pure as the minds of *yogis* , Lord *Śiva* the destroyer of sins, swims like the golden swan.Here only is situated the *Alakāpurī* of *Kubera*, which resounds with the mellifluous songs of the *Kinnaras* and is filled with the sound of flute and *vīṇā* and the dance of *Apsarās* embellishes the entire expanse. [16-19]





By Courtesy of Garhwal Mandal Vikas Nigam (Tourism) Dehradun



अलकनन्दा-वर्णनम्

अमल-धवलधारा दुग्धवर्णाऽम्बुवाहा
श्रुतिसुभगनिनादा झर्झरीत्यूर्मिहासा ।
स्त्रवति नगविशेषात् स्वर्गकल्पाऽलकायाः
सततमलकनन्दा पुण्यतोया प्रसन्ना ।।२०।।

हिमगिरि शिखरस्याऽत्रैव नारायणस्य
स्त्रवति रुचिर-पादप्रान्तभागाद् यतः सा।
वदति विबुधवर्गो विष्णुपादोद्भवां तां
सरितमलकनन्दां चैव नारायणीति ।।२१।।

निपतति सुरलोकाद् यावदेषा पृथिव्यां
धरति शिरसि तावच्छैलराजो दयालुः।
विदधति हि महान्तो मानिनां मानरक्षां
विधिवशविनिपाते जायमाने जनानाम् ।।२२।।

दूध के समान शुभ्र जल की संवाहिका, वर्णमधुर ध्वनि वाली, लहरों से झर-झर हंसने वाली पुण्यतोया अलकनन्दा की अमल धवल धारा स्वर्ग के समान अलकापुरी के पर्वत विशेष से निकलती है। इसीं अलकापुरी में नारायणपर्वत के पादप्रान्तभाग से इसका उद्गम है,अतएव विद्वान लोग इस नदी को विष्णुपदी अथवा नारायणी कहते हैं। जब ये स्वर्ग लोक से पृथ्वी पर गिरती हैं तो दयालु पर्वतराज हिमालय इन्हें अपने शिखर पर धारण कर लेते हैं; क्योंकि भाग्यवश गिरे हुए मानी जनों के मान की रक्षा महान् व्यक्ति ही करते हैं।।२०-२२।।

Alakanandā

The pure stream of the sacred *Alakanandā*, the bearer of water as white as milk, the creator of enchanting music, rumbling with the laughter of waves, has sprouted up from an exclusive mountain of the paradisal *Alakāpurī*. She sprang up from the *Nārāyaṇa Parvat*, situated in *Alakāpurī*. Hence wise people have named the river as *Viṣṇupadī* or *Nārāyaṇī*. When she fell from the *Swarga loka* on the earth at that time *Himalaya*, the kind king of the mountains held her on his forehead, because it is said that great souls alone save the honour of the generous souls who have tripped by quirk of fate.[20-22]

अवतरति यदाऽसौ कम्पमाना धरायां
सपदि मृदुतमाऽङ्के स्वोर्धबाहुद्वयेन।
दुहितरमिव नीतां सान्त्वयन् तामधीरां
जनक इव विभाति स्नेहसान्द्रोऽद्रिराजः।।२३।।
स्पृशति मृदुतरङ्गैः स्वर्गसोपानभूतं
तुहिनशिखरवन्तं पाण्डवारूढशैलम्[४]।
लहरिभिरुपयान्ती सत्पथं[५] चातिरम्यं
जनयति बहुशोभां सत्पथोन्नायिकाऽसौ ।।२४।।
अनुपमरमणीयादुन्नताच् शैलशृङ्गात्
प्रपतति वसुधारा[६] सीकरैर्भूषिताङ्गी।

जब यह अलकनन्दा कांपती हुई स्वर्ग से पृथ्वी पर गिरती है तो गिरिराज उसे अपनी ऊंची बाहों में उठा कर कोमल गोद में बैठा लेते हैं। अधीर हुई उसको पुत्री के समान सान्त्वना देते हुए वे स्नेह से आर्द्रहृदय पिता के समान सुशोभित होते हैं। तब अलकनन्दा अपनी कोमल लहरों से स्वर्ग के सोपान के समान बर्फीले स्वर्गारोहण पर्वत पर आती हैं, जहां पाण्डव गये थे। पुनः सुन्दर मार्ग की ओर ले जाने वाली अलकनन्दा सत्पथ नामक अत्यन्त सुरम्य स्थल में अपनी लहरों के साथ आती है।।२३-२४।।

तत्पश्चात् अत्यन्त रमणीय पर्वत के ऊंचे शिखर से वसुधारा नामक प्रपात

When *Alakanandā* fell quivering on the earth from *Swarga*, at that time this *Girirāja* held her up in his arms and put her on his soft lap. At that time he enacted the role of a father melting with affection consoling her as if she were a daughter, gone distracted in distress.Then *Alakanandā*, on her soft waves comes down upon the icy *Swargārohaṇa Parvat*, which is like the steps to *Swarga.* In the ancient days the same place had been visited by the *Paṇdavas.* Later the same *Alakanandā*, the one who inspires to lead a virtuous life has come with her waves to *Satpath*, a pleasant place.[23-24]

A fall named *Vasudhārā* plummets down from the high peaks embellished with spray; now *Alakanadā* takes in this nectar-like

अमितसितसुधाऽभां तां नयन्ती बिभर्ति
च्छविमतनुमपूर्वां गोचरा लोचनानाम् ।।२५।।
निखिलभुवनवन्द्याऽसौ सरस्वत्यपीमां
मिलति विमलतोया केशवाख्ये प्रयागे।
उपरि लसति यस्या भीमसेनेन नीता
जयति खलु शिला [७] सा सेतुभूता विशाला।।२६।।

बदरिकाश्रम-वर्णनम्

द्वन्द्वहीने मुनीनां स्थिरे मानसे
संस्फुरन्ती परा वाग् यथा भासते।
तादृशे सुप्रशान्ते बदर्याश्रमे
झङ्कृता निःस्वनैः शोभते निर्मला ।।२७।।
अद्रिमालाधरं स्निग्धनीलाम्बरं
फुल्लवल्लीप्रसूनैः समालङ्कृतम् ।

गिरता है जो सीकरों से विभूषित है, उस अत्यन्त सफेद अमृत के समान निर्झर को अपने साथ लेती हुई अलकनन्दा अत्यन्त मनोरम लगती है। तत्पश्चात् जिसके ऊपर भीम द्वारा स्थापित विशाल शिला का नैसर्गिक पुल है, ऐसी सरस्वती को जहां यह अपने में मिलाती है उस पावन स्थल को केशवप्रयाग कहते हैं ।।२५-२६।।

जिस प्रकार मुनियों के सुखदुःखात्मक द्वन्द्व से रहित मन में परा वाणी का उदय होता है, उसी प्रकार अत्यन्त प्रशान्त बदरिकाश्रम में अलकनन्दा अपनी मृदु झङ्कार से शोभायमान होती है। चारों तरफ पर्वत मालाओं से घिरे हुए, स्निग्ध नीले

spring along her stride and turns enchanting.Then *she* watches that spot where the natural stone bridge was once built by *Bhīma* over *Saraswatī*.[25-26]

Badarikāśrama

She beholds the *Badrivan* which is as serene and unruffled as the enlightened mental state of *munis* liberated from the paradox of joy and sorrow. The *Badrīvan* is surrounded by the mountain

तापसानां तपोभूमिभागं वरं
पश्यति श्रीसनाथं बदर्याश्रमम् ।।२८।।
यत्र देवाङ्गनाभिः प्रपातोद्गतैः
सीकरैः क्लिद्यमानाभिरामोद्यते ।
अप्सरोभिश्च सिस्नाषुभिस्तन्यते
देववृन्देन साकं जलक्रीडनम् ।।२९।।
उर्वशी जन्मदं नाकिभिर्वन्दितं
तं महर्षिं नरञ्चैव नारायणम् ।
विश्ववासं हरिं श्रीविशालं प्रभुं
स्नापयन्ती तरङ्गैर् दरीदृश्यते।।३०।।

पञ्च'प्रयागवर्णनम्

उद्गमः सङ्गमो विस्मयोत्पादको-
ऽतीवरोमाञ्चकः स्रोतसां विद्यते।
सङ्गतेः कारणात् सार्थसंज्ञो भवन्
तीर्थवाची प्रयागः प्रसिद्धिं गतः ।।३१।।

आकाश तले , खिली हुई लताओं के पुष्पों से सुसज्जित, तपोभूमि, बदरीवन को देखती है, जहां देवाङ्गनायें प्रपातों के सीकरों से भीगती हुई आनन्दित होती हैं। यहाँ यह अलकनन्दा उर्वशी नामक अप्सरा के जन्मदाता, देवताओं, द्वारा पूजित नर एवं नारायण विश्ववास श्रीहरि बद्रीविशाल को अपनी लहरों से नहलाती हुई सी दिखाई देती हैं । २७-३०।।

नदियों का उद्गम और सङ्गम अत्यन्त रोमाञ्चक और विस्मयोत्पादक है। ये जहां मिलती हैं वे स्थल प्रयाग कहे जाते हैं; क्यों कि'यज्'धातु संगति अर्थ में भी है।

ranges and adorned with the spray of flowers blooming under a soothing sky, where the divine dames feel elated bathing in the shower of falls. The *Apsarās* who come to bathe here, make merry with gods and sport in water. *Alakanandā* seems to be washing *Śri Hari Badrīviśāla* with her waves.[27-30]

The process of the origin of rivers and their confluence is thrilling and amazing. The place of their fusion is known as *Prayāga* because the root *yaj* is also indicative of intermingling

तामृषिर्हेमविष्णू च नन्दाकिनी-
त्यादयो निर्झरिण्यः प्रयागेष्विताः।
मुख्यधारां समावर्धयन्त्यश्चिरं
वीचिमालाभिरुल्लासिताः सङ्गताः ।।३२।।

मन्दाकिनी-वर्णनम्

या तुषाराद्रिशृङ्गैः समन्ताद् वृतात्
शीतलात् तोयकुण्डात् स्रुता मोदते।
पुण्यकेदारतीर्थध्वजेवाङ्किता
मन्दतां मर्दयन्तीव मन्दाकिनी ।।३३।।
अग्रजा शैलजाकुण्डमासादिता
चन्द्रलेखेव शुभ्रा तरङ्गोद्धता।
श्यामलां शोणगङ्गां ग्रहीतुं ततः
सैव शोणप्रयागं प्रयाता मुदा।।३४।।
सुभग-सलिलदेहा सा पिनाकिप्रियाऽथ
स्नपयितुमिव शम्भुं प्राप्य रुद्रप्रयागम् ।

ऋषि गङ्गा, कञ्चन गङ्गा, हेम गङ्गा, विष्णु गङ्गा, नंदाकिनी आदि सरितायें जब अलकनन्दा से मिलती हैं तो अपने उल्लास को लहरों से व्यक्त करती हैं और उसे जल से संवृद्ध करती हैं ।।३१-३२।।

जो बर्फीली चोटियों से घिरी हुई बर्फानी झील से निकल कर पवित्र केदार तीर्थ में आती है,वह मंदाकिनी जड़ता को हरण करती हुई गौरी कुण्ड के समीप आती है; तत्पश्चात् शोण गङ्गा को सोन प्रयाग में मिलाती है। सुन्दर जल रूपी देह वाली

(*sangati*). The streams like *Ṛṣi-Gaṅgā,Kañchan Gaṅgā, Hem-Gaṅgā, Viṣṇu-Gaṅgā, Nandākinī* combine with *Alakanandā*. They reveal their joy through their waves and magnify her with their water.[31-32]

Mandākinī river which comes out of an icy lake surrounded by icy peaks (as if dispelling ignorance) descends to *Kedāra tīrtha*. She comes dancing along with her waves to *Gaurī kuṇda* and after that takes in *Śoṇa gaṅgā* at *Śoṅa prayāga*. That *Mandākinī*,

अभिलषति विधातुं मालिकाकारितां तां
त्वरितमलकनन्दां सङ्गमाय प्रयाता।।३५।।

पिण्डारका-वर्णनम्

अपरगिरिगुहातः प्रस्रुता स्वच्छतोया
कल-कलमधुरा या कर्णपीयूषनादा।
सरितमलकनन्दां मेलितुं पिण्डराख्या
लहरिभिरभियाता चैव कर्णप्रयागे।।३६।।

भागीरथी-वर्णनम्

या च तत्रैव नारायणे पर्वते-
ऽन्तःस्थिता गोपयन्तीव तोयाऽमृतम् ।
सैव भागीरथी गोमुखान्निर्गता
राजते गाङ्गधारा सिता शीतला।।३७।।
दूषणत्रासभीत्येव ज्ञाड्यं गता
या हिमानीदरीषूपगूढा क्वचित् ।

पिनाकी शिव की प्रिया वह (मन्दाकिनी) मानों शम्भु को स्नान कराने के लिये रुद्रप्रयाग पहुंचती है और मालाकार बन कर अलकनन्दा के साथ मिल जाती है। दूसरी गिरि कन्दरा (पिण्डारी ग्लेशियर)से कल-कल ध्वनि से कानों में मीठी ध्वनि करने वाली पिण्डारक नदी अलकनन्दा से मिलने के लिये लहरों से कर्ण प्रयाग पहुंचती है। ।।३३-३६।।

जिस नारायण पर्वत से अलकनन्दा का उद्गम हुआ है,उसी नारायण पर्वत में अन्तः सलिला होकर अपने अमृत रूपी जल को छिपाती हुई, जो प्रदूषण के भय से

the beloved of *Pinākī Śiva* reaches *Rudra Prayāga* as if to bathe *Śambhu* and gets intertwined with *Alakanandā* to form the shape of a garland. The other stream *Pindāraka* comes out of *Piṇḍārī* glacier with its soothing resonance and reaches *Karṇa Prayāga* to meet *Alakanandā* riding on its waves.[33-36]

Bhāgīrathi

The second main stream known as *Bhāgīrathī* in that same *Nārāyaṇa Parvat* from which *Alakanandā* has come out, stays underground hiding her nectar-like water. She seems to have

दृश्यमानाऽद्भुता गोमुखे साऽपरा
राजते गाङ्गधारा सिता शीतला।।३८।।
नन्दनादौ किलाऽन्तःप्रवाहा सरिद्
या चतुःस्तम्भशृङ्गात् सुमेरुं गता।
अप्यतिक्रम्य सानूनि साऽनुक्रमाद्
ईशलिङ्गादगादागता गोमुखम् ।।३९।।
विष्णुपत्न्या धराया उरोजान्नगाद्
गोमुखात् प्रस्नुता दुग्धधारेव या।
पोषयित्री जनानां तनूनामसौ
राजते गाङ्गधारा सिता शीतला।।४०।।
निर्जनं नीरवं पावनं गोमुखं
घोषयन्ती निनादेन लोकोत्तरम् ।
श्रावयन्तीव वेदध्वनिं सस्वरं
राजते गाङ्गधारा सिता शीतला।।४१।।

मानो बर्फ की गुफाओं में जम गई और अन्दर- ही अन्दर ग्लेशियर में रहती हुई अन्त में गोमुख नाम की गुफा से प्रकट होती है,वह भागीरथी नाम की दूसरी धारा है। वह अन्दर-ही अन्दर नन्दन ,भृगुपन्थ, हेमकूट, चतुःस्तम्भ (चौखम्बा) पर्वत से शिवलिङ्ग शिखर पर आती है तत्पश्चात् गोमुख से निकलती है। वह ऐसी प्रतीत होती है मानो विष्णु पत्नी पृथ्वी के स्तनों से निकलती प्राणियों के शरीर का पोषण करने वाली दुग्ध धारा हो । निर्जन, नीरव और पावन गोमुख को अपनी लोकोत्तर ध्वनि से गुञ्जित करती हुई वह सस्वर वेदपाठ करती हुई सी लगती है ।। ३७-४१।।

frozen there in the icy caves because of her fear of pollution. After staying inside the glaciers, she finally appears from a cave named *Go mukha*. She travels in a hidden way down *Nandana, Bhṛgu pantha, Hemkūṭa, Chatus stambha* mountains and reaches the *Śiva liṅga* peak. After this she comes out of *Go mukha Parvat*. She is like the stream of milk coming out of the breast of earth, the wife of Lord *Viśṇu*. She seems to be chanting the *Vedas* aloud as she reverberates the entire region of the holy *Go mukha* with her transcedental symphony.[37-41]

गोमुख-वर्णनम्

प्रालेयसंघैः परितो वृताया
गोरास्यवद् दृष्टिमनोहरायाः ।
क्षणे-क्षणे नूतनतां गताया
गङ्गोद्गता गोमुखकन्दरायाः ।।४२।।

चयो हिमस्य स्फटिकेन तुल्यो
बिलं विभात्यप्रतिमं मनोज्ञम् ।
यतः स्फुटा निर्झरिणी सवेगा
सा गोमुखी नोऽवतु पुण्यतोया।।४३।।

गङ्गाम्बुसेकाच्छिवलिङ्गरूपा
अचेतनाः शैलशिलादयोऽपि ।
सचेतनीभूय लसन्ति यत्र
सा गोमुखी नोऽवतु पुण्यतोया ।।४४।।

बर्फ समूह से चारों ओर से घिरी हुई, गो (पृथ्वी) के मुख के समान अति सुन्दर, प्रतिक्षण नवीभाव को प्राप्त गोमुख गुफा से गङ्गा निकली है। बर्फ का समूह स्फटिक के समान लगता है और वह छिद्र जहां से निर्झरिणी निकली है, अत्यन्त मनोरम है; वह पवित्र जल वाली गोमुखी गुफा हमारी रक्षा करे। यहां पर अचेतन पर्वत और शिला आदि अचेतन वस्तुएं भी गङ्गा जल से अभिषिञ्चित होने से सचेतन से लगते हैं।।४२-४४।।

Go mukha

Śri Gaṅgā comes out of *Go mukha* cave which is surrounded by mass of snow. It looks beautiful like the mouth of a cow (earth) and every moment undergoes renewal. The amassed snow look like crystal stone and the opening from which the river comes out is enchanting. Let that *Go mukha* cave containing holy water protect us. Here the inanimate objects like mountains and stones ever seem to become animate when washed by the water of *Gaṅgā*. [42-44]

क्षुद्रोपला गाङ्गजले निमग्नाः
शिवस्वरूपाः सुहिताः सुधाभिः ।
गङ्गा-कृपा-वञ्चित-जीवजातान्
पङ्के निलीनानिव भावयन्ति।।४५।।

फुल्लानि पुष्पाणि समुल्लसन्ति
तामर्चितुं यत्र समृद्धवेगाम् ।
नगाञ्चले गोमुखभूमिभागे
तां पुष्पवासेति विदन्ति विज्ञाः ।।४६।।

गङ्गातटाद्रौ तुलसी वनाली
गङ्गेति नाम्ना परिकीर्तिता या ।
आमोदपूरैः पथिकश्रमं सा
निवारयन्ती हरते मनांसि।।४७।।

गङ्गाप्रशस्तिं लिखितुं सुवर्णाम्
उपायनं शुद्धमथाहरन्तः ।
भूर्जस्य वृक्षाः परितः प्रसन्ना
लसन्ति रम्ये ननु भूर्जवासे ।।४८।।

छोटे–छोटे पत्थर जो गङ्गा जल में डूब कर शिव रूप हो गये हैं, गङ्गा की कृपा से वञ्चित प्राणियों को कीचड़ में डूबा हुआ समझते हैं । जिस भाग में भगवती गङ्गा की पूजा के लिये रंग–बिरंगे फूल खिलते हैं उसे फूलवासा कहते हैं। गङ्गा तट के पहाड़ों में गङ्गा तुलसी नामक हरा पोंधा अपनी सुगन्ध से पथिकों की थकान हर लेता है । भोजवासा में गङ्गाकी प्रशस्ति को सुन्दर अक्षरों में लिखने के लिये भोजवृक्ष मानो उपहार लिये खड़े हैं।।४५–४८।।

The small pebbles which have become synonymous of *Śiva linga* by remaining immersed in *Ganga* deem the beings deprived of Her grace, as submerged in filth and pollution The area where flowers of thousand hues sprout is known as *Phūla vāsā.* A particuler *Gangā tulasī*, which sprouts in the hills along the banks of *Gangā* removes the fatigue of travellers by its smell. At *Bhoja vāsā* the *Bhoj* trees stand to write the praise of *Gangā.*[45-48]

अत्रापि हा ! मानवतां विहाय
स्वार्थाऽन्धभूता अरयः प्रकृत्याः ।
छिन्दन्ति क्रूराः सततं मनुष्या
गङ्गाप्रपातान्तविरूढवृक्षान् ।।४९।।

विभाति मार्गे सरलद्रुमाणां
प्रच्छायया शीतलमञ्जुगात्रम् ।
लक्ष्मीविहारोपवनं पवित्रं
लक्ष्मीवनं चारुवनं विचित्रम् ।।५०।।

अत्यच्छतोयामिह देवगङ्गां
भागीरथीं प्रत्यभिधावमानाम् ।
उच्चैश्च्युतां सीकरजालपूर्णां
भजन्ति ये ते बहुभाग्यवन्तः ।।५१।।

भागीरथीं निर्झरचामरेण
सम्वीजयन्तीमिव चन्द्रगौराम् ।
दिवाकरांशुस्फुटितेन्द्रचापां
पश्यन्ति ये ते खलु धन्यभाग्याः ।।५२।।

किन्तु हाय! यहां भी स्वार्थ में अन्धे प्रकृति के शत्रु क्रूर मनुष्य गङ्गा के तटवर्ती वृक्षों को निर्ममता से काट रहे हैं। मार्ग में सुन्दर चीड़ वृक्षों से आच्छादित स्थल है जो लक्ष्मीवन नाम से विख्यात है। यहीं चीड़वासा चट्टी है। उसके आगे देवघाट है जहां पर्वत के अत्यन्त ऊंचे शिखर से गिरती हुई देवगङ्गा सीकरों के जाल से पूर्ण हो, भागीरथी की ओर दौड़ रही है । भागीरथी को मानो अपने सीकर रूपी चंवर डुलाने के लिए जाती हुई, सूर्य किरणों के पड़ने से इन्द्र धनुषी सतरंगी आभा ली

But alas! here too the mean mercenary people inimical to nature are brutally felling the trees grown along the banks of *Gaṅgā*. On the way there are regions densely covered with *Chīd* trees which are celebrated as *Lakṣmī van*. Here lies *Chīd vāsā chatti* and beyond that is *Deva ghāt* where the foaming *Deva Gaṅgā* falls steeply from the high mountains and rushes towards *Bhāgīrathi*. Those people are really fortunate who could get a

श्रीगोमुखं पावनगाङ्गमूलं
गङ्गोत्तरं क्षेत्रमपूर्वतीर्थम् ।
हिमावृतं चारुनिसर्गचित्रं
पुनः पुनर् दृष्टिगतं भवेन्मे।।५३।।

गङ्गोत्तरी-वर्णनम्

सा कदाचिद् विभान्ती लहर्यञ्चला
भङ्गरिङ्गद्-विवर्तोल्लसत्कुण्डला ।
श्वेतनीहारहारावलीभूषिता
राजते गाङ्गधारा सिता शीतला।।५४।।
गोमुखान्निर्गता निर्मला निर्झरी
मृत्तिकामिश्रिता दृश्यते सुन्दरी।
प्राप्य गङ्गोत्तरीमुत्तमामद्रिजा
राजते गाङ्गधारा सिता शीतला।।५५।।

हुई, चन्द्रकिरणों सी सफेद देवगङ्गा का जिन्हें दर्शन होता है वे धन्यभाग्य है। गङ्गा के पवित्र उद्गम, गङ्गोत्तर तीर्थ जो हिम से आच्छादित है और प्रकृति का सुन्दर चित्र है, उसका दर्शन मुझे बार- बार होवे ।।४९-५३।।

लहरों रूपी आंचल वाली, ऊंची तथा घूमती लहरों के भंवरों की कुण्डल वाली, सफेद नीहार हार धारण करने वाली गङ्गा गोमुख से अट्ठारह कि. मि. पर स्थित गङ्गोत्तरी धाम में सुशोभित होती है। गोमुख से निकली यह निर्झरी अपनी सम्पूर्ण उर्वराशक्ति को लिये हुए है, इसलिये मटमैली है। प्राणदायिनी, स्वर्गादि लोकों में

glimpse of the glittering *Deva Gaṅgā* who rushes forward with her rainbow-like water to wave her frothy watery feathers at *Bhāgīrathī*. May I get a vision of the holy, beautiful and snow- covered *Gaṅgottar tīrtha*, the origin of *Gaṅgā*, again and again![42-53]

Gaṅgottarī

She wears the veil of waves, puts on the earrings of the web of high swirling water. Embellished with the white garland of dew, *Gaṅgā* adorns *Gaṅgottari*, eighteen kilometres away from *Go mukha*. She carries along with her the power of fertility. Her

ऊर्ध्वलोकेषु सञ्चारिणी स्वर्धुनी
नीररूपेण गामागता प्राणदा।
गां गतेति प्रसिद्ध्याप्य गङ्गापदं
शोभते लोलधारातरङ्गायिता ।।५६।।
व्यक्तिमासाद्य चेहोत्तरन्ती मुदा
दृश्यते सा समुत्तारिका प्राणिनाम् ।
उच्यतेऽतो हि गङ्गोत्तरीयं [१०] स्थली
तीर्थमूर्धाभिषिक्ता महापुण्यदा।।५७।।
यत्र गङ्गा प्रधाना [११]महादेवता
पूजनीया प्रतिष्ठापिता मुक्तिदा ।
उच्यतेऽतो हि गङ्गोत्तरीयं स्थली
तीर्थमूर्धाभिषिक्ता महापुण्यदा ।।५८।।
उत्तरस्यां [१२] दिशि प्रस्फुटा गोमुखात्
स्वच्छतोया हिमाद्रेः सुता शीतला।
उच्यतेऽतो हि गङ्गोत्तरीयं स्थली
तीर्थमूर्धाभिषिक्ता महापुण्यदा ।।५९।।

सञ्चरण करने वाली यह नदी जब जल धारा के रूप में सर्व प्रथम पृथ्वी पर आती है तब 'गां गता' (पृथ्वी में गई)इस प्रसिद्धि से गङ्गा नाम को प्राप्त करती है और चञ्चल तरङ्गों से सुशोभित होती है। प्राणियों का उद्धार करने के लिये सर्व प्रथम अभिव्यक्त होकर चूंकि वह यहां उतरती है; अतएव यह स्थल सर्वश्रेष्ठ गंगोत्तरी तीर्थ कहलाता है।अथवा यहां गङ्गा प्रधान देवता है अथवा उत्तर दिशा में स्थित गोमुख से

water is earth-coloured. She moves into the rejuvenating *Swargādi loka,* descends down upon the earth as a stream of water and begets the name of *Gaṅgā* (= *Gām gatā*). She is adorned with quick waves and emerges for the first time at *Gaṅgottarī* to emancipate the souls. Therefore this place is known as the holiest of the holy *tīrthas. Gaṅgā* is the prime deity here and Her stream springs out of *Go mukha*, situated on the northern side. So this

आवेदयत्यनुदिनं सुयशः प्रकृष्टं
स्वर्गापगानयनतत्परपार्थिवस्य ।
गङ्गोर्मिसिञ्चितपवित्रतमा प्रसिद्धा
धन्या भगीरथशिला स्मृतिचिह्नरूपा ।।६०।।

गौरी कुण्डेऽवतरति महारंहसा घोरनादा
स्थाणोर्लिङ्गं तरललहरी-सेचनाय प्रवृत्ता।
तस्याऽधस्तात् पुनरुपगता भैरवोपत्यकायां
चञ्चत्तोया हरति हृदयं स्वर्धुनी सुप्रवाहा ।।६१।।

केदारशैलशिखराद् विपुलं स्रवन्ती
केदारगाङ्गलहरी धवलाऽतिरम्या।
सम्मेल्य जह्नुतनयां सखिनिर्विशेषां
भागीरथीं समधिगच्छति वीचिपादैः ।।६२।।

यह धारा फूटी है अतः यह स्थान गङ्गोत्तरी अथवा गङ्गोत्तर क्षेत्र कहलाता है।।५६-५९।।

यहीं पर स्वर्णदी को लाने के लिये तत्पर राजा भगीरथ का यशोगान करने वाली स्मृतिचिह्न रूप भगीरथ शिला गङ्गाकी लहरों से सींची जाती हुई शोभायमान है।श्रीगङ्गा बड़े वेग से घोर नाद करती हुई गौरीकुण्ड में गिरती हैं जहां शिवलिङ्ग स्वरूप विशाल प्रस्तर को वह अपनी लहरों से सींचने के लिये प्रवृत्त हैं। उसके नीचे वह भैरव घाटी में उतरती है। स्वर्धुनी का सुन्दर प्रवाह अपने चञ्चल जल से हृदय को हर लेता है।केदार पर्वत से निकली केदार गङ्गा जाह्नवी गङ्गा को अपने में मिलाती हुई

spot is known as *Gaṅgottarī*.[54-59]

Here itself stands the *Bhagīratha śila* as the token of the memory of being washed by the waves of *Gaṅgā* to praise *Bhagīratha*, the king for his dedication to bring *Swarṇadī* on earth. *Śri Gaṅgā* falls into *Gaurī kuṇd*, creating fearsome noise and it seems as if She is ready to drench the huge stone of *Śiva liṅga* with Her own water. Subsequently She descends to the *Bhairava ghātī*. The beautiful place of *Swardhunī* thrills the hearts with Her quick flow. The *Kedār Gaṅgā* emerging from *Kedār Parvata* takes into her

श्रीकण्ठवासनिलयादतिपुण्यरूपात्
श्रीकण्ठशैलशिखरात् स्रुतदुग्धगङ्गा।
भागीरथीं मिलति हर्षतरङ्गिताङ्गां
नानाप्रपातपरिभूषितचारुगङ्गाम् ।।६३।।

सङ्गं कुर्वत्यसिवरणयोरुत्तरस्याञ्च काश्यां
विश्वेशञ्च प्रणतिबहुलैर्नन्दयन्ती प्रसन्ना।
नानाशैलानथ गिरिगुहा दारयन्ती जवेन
चञ्चत्तोया हरति हृदयं स्वर्धुनी सुप्रवाहा।।६४।।

टिहरी-वर्णनम्

पर्वतस्यैकदेशात् स्रुतामापगां
मेलयन्तीह भिल्लाङ्गनामग्रगा ।

सखी की भांति भागीरथी, में आ कर मिल जाती है। श्रीकण्ठ शिव के वासस्थान अत्यन्त पवित्र श्रीकण्ठ पर्वत के शिखर से निकली दूध गङ्गा अनेक झरनों से विभूषित भागीरथी में आकर मिल जाती है। उत्तरकाशी में आकर असि और वरणा को मिलाती हुई तथा विश्वेश्वर को अनेक प्रणामों से आनन्दित करती हुई, अनेक पर्वतों गुफाओं को अपने वेग से तोड़ती हुई, चञ्चलधार वाली और सुन्दर प्रवाह वाली स्वर्धुनी हृदय को हर लेती है। ।।६०-६४।।

भगीरथी पर्वत के एक भाग से निकली भिलङ्गना नदी को यहां पर मिलाती है और लहरों से गरजती - तरजती हुङ्कार भरती हुई सी मानों मानवों के दुष्कार्यों

the water of *Jānhavī Gaṅgā* like a bosom friend and gets merged into *Bhāgīrathī*. *Dūdha Gaṅgā*, which springs out of the sacred *Śri Kaṇṭha Parvata*, the abode of *Śri Kaṇṭha* (*Śiva*), gets united with *Bhāgīrathī*, who is embellished with many streams. The *Swardhunī* infuses in Her the *Asi* and *Varaṇā* at *Uttar kāśī*, pleasing *Viśweśwara* by bowing to Him. She breaks many caves and mountains with Her fierce flow and elates every heart that watches Her.[60-64]

Ṭihari

Bhāgīrathī joins *Bhilaṅganā* river and seems to be reproaching

गर्जनं तर्जनं हुङ्कृतिं कुर्वती
दुष्कृतिं भर्त्सयन्तीव बाभात्यसौ ।।६५।।
सर्वतन्त्रा स्वतन्त्रा सुराणां नदी
मुक्तिदात्री नृणां बन्धनोद्भेदिका।
सैव बन्धेषु बद्धा विधेया कथं
यन्त्रविद्याप्रवीणैरहो ! साक्षरैः ।।६६।।
अत्र बन्धं प्रतीकर्तुमग्रेसरं
पुत्रमन्वेषयन्तीव सन्दृश्यते।
दारुणेऽस्मिन् कलौ दुःखिता स्वर्धुनी
भर्त्सयन्ती कलां यान्त्रिकीं भूयशः ।।६७।।
टिहरीपर्वते बन्धं क्रियमाणं विपत्करम् ।
प्रतीकर्तुमनश्नन्तं भागीरथ्यास्तटे स्थितम् ।।६८।।
पर्यावरणरक्षायै विमृशन्तं हि सुन्दरं ।
लालं बहुगुणोपेतं स्वर्धुनी वीक्षतेऽधुना ।।६९।।

की भर्त्सना करती हुई लगती है । जो सर्वतन्त्र स्वतन्त्र है, मनुष्यों के सांसारिक बन्धनों को काटती हुई मुक्ति देने वाली है, वही अब साक्षर तकनीकियन्त्रविद्याविशारदों द्वारा बांधों में बांधी जा रही है। वह टिहरी बांध का प्रतीकार करने के लिये आगे आने वाले अपने किसी सुपुत्र को ढूंढती हुई सी लगती है: तथा इस दारुण कलियुग में यान्त्रिक कला की घोर निंदा करती हुई लगती है। टिहरी में विपत्तिकारी बांध का विरोध करने के लिये अनशन करते हुए, पर्यावरण रक्षा के लिये जन जागरण करने वाले श्रीसुन्दर लाल बहुगुणा को स्वर्णदी देख रही है ।।६५-६९।।

the evil deeds of human beings surcharged with her noisy waves. She is the one who is free from every domination and restriction and dispels the bondage of worldly attachments. She herself is being enslaved by the sophisticated technologists. She seems to be looking for an able son who will come forward to dissent against the construction of Ṭiharī Dam. The *Swarṇadī* watches the zeal of Śri Sunderlāl Bahuguṇā who pursues the great mission of rousing public awareness to save ecology and environment.[65-69]

देवप्रयाग-वर्णनम्

आगते दिव्यदेवप्रयागं शुभे,
कुन्दपुष्पद्युती देवनद्यावुभे ।
शैलशृङ्गारहारावलीवाङ्किते,
सङ्गमायोत्सुकेऽपूर्वशोभावहे ।।७०।।

सरितमलकनन्दामत्र भागीरथीयं
द्रुतगतिरमणीया संगता धावमाना।
सुहृदिव परिसक्ते वीचिहस्तैरसंख्यैर्
गिरिवरतटशोभां वर्धयन्त्यौ विभातः ।।७१।।

उद्गमोऽयं नदीनां तथा सङ्गमो
वक्ति किञ्चिद्गभीरं रहस्यं किमु ?
नूनमाख्यात्यसौ भव्यभौगोलिकीम्
एकतां सर्वतोव्यापिनीं मङ्गलाम् ।।७२।।

कुन्दु पुष्प के समान कान्ति वाली दोनों देवनदियां भागीरथी और अलकनन्दा शुभ देव प्रयाग पहुंचती हैं । दोनों नदियां परस्पर मिलने की इच्छुक हुई पर्वत को हार से सजाती हुई सी अनुपम शोभा युक्त हैं। यहां पर भागीरथी अलकनन्दा से मिलने के लिए द्रुतगति से आती हुई अत्यन्त रमणीय लगती हैं तथा अपनी असंख्य लहरों रूपी हाथों से मित्र की तरह मिली हुई पर्वत के तट की शोभा को बढ़ा रही है। नादियों का उद्गम और सङ्गम – दोनों ही क्या कुछ गम्भीर रहस्य को कहते हुए से लगते हैं ? निश्चय ही यह भारत की भौगोलिक एकता के रहस्य को प्रगट करते

Deva Prayāga

The two transluscent rivers *Bhāgīrathī* and *Alakanandā* reach holy *Deva Prayāga*. They seem to frill the mountains like garlands. Desirous of uniting with each other they are brimming with peerless beauty. *Bhāgīrathī* at that spot looks enchanting as she gushes forth to meet *Alakanandā*. She enhances the beauty of the banks embracing them with the thousand friendly arms of her waves. All these streams as though represent the basic unity in diversity existing in the very spirit of India. Though they spring

भारते गोमुखान्निर्गताऽसौ यथा-
ऽनेकधाराभिराभूषिताऽऽवर्द्धिता ।
राष्ट्रधारानुबद्धा तथा वर्तते-
ऽनेकताप्येकताऽखण्डतामण्डिता ।।७३।।
हैमवत्योऽखिला भिन्नदेशोद्गता
एकवर्णा भवन्ति प्रवाहाकुलाः।
अत्र गङ्गेतिनाम्ना समाख्यामिताः
सागरं गन्तुकामाः तरङ्गायिताः ।।७४।।

हैं। भारत में जैसे गोमुख से निकली भागीरथी अनेक धाराओं से सम्भूषित एवं संवर्धित होती है,उसी प्रकार अनेकता एकता और अखण्डता से विभूषित होकर राष्ट्रधारा में अनुस्यूत है। भिन्न -भिन्न देशों से उद्गत होने पर भी ये सभी धारायें हैमवती (हिमालय प्रसूत)हैं तथा सभी देव प्रयाग में आकर एकाकार हो जाती हैं। यहां सबका नाम गङ्गा हो जाता है और वे सागर में जाने के लिए तरङ्गित हैं ।।७०-७४।।

up from different regions yet they are all Himalaya-born . At *Deva Prayāga* they assume a kind of oneness. Here they have all been named *Gaṅgā* as riding the waves they have the same eager volition to reach *Sāgar.*[70-74]



चतुर्थः सर्गः
हृषीकेश-वर्णनम्

यत्र कुब्जाम्रवृक्षे हृषीकं मुनिं
दर्शयामास रैभ्यं स्वरूपं हरिः।
यद्धि पौराणिको वक्ति कुब्जाम्रकं[१]
पावनं तं हृषीकेशमासादिता ।।१।।
कूर्मवद् विष्णुदेवो हृषीकाण्यहो!
यत्र संहृत्य तेपे तपः दुष्करम् ।
योगिनां सात्त्विकानां तपस्यास्थलं
पावनं तं हृषीकेशमासादिता[२]।।२।।
दोलयन्ती तरङ्गान्वितैश्चानिलैर्
लक्ष्मणं सेवितुं निर्मितं दोलनम् ।

जहां जितेन्द्रिय रैभ्य को श्रीहरि ने कुबड़े आम्रवृक्ष पर अपना दर्शन दिया था तथा जिस स्थान को पुराणों में कुब्जाम्रक कहा गया है, वहाँ श्रीगङ्गा आयीं । जहां भगवान् ने कछुए के समान इन्द्रियों को समेट कर तप किया था, जो योगियों और सात्त्विकों की तपःस्थली है वहां श्रीगङ्गा पहुंची । यहाँ वह अपनी तरङ्गों से उठी

HṛṣiKeśa Vignette

Śri Gaṅgā reaches that spot where *Śri Hari* had appeared before the ascetic *Raibhya* on the stunted mango tree (a place which has been named as *Kubjāmraka* in the *Puraṇas*) where *Bhagavān Viṣṇu* had done penance, gathering up his sense organs like a turtle. It is a place of meditation for ascetics and spiritual people. Swinging the *Lakṣmaṇa jhūlā* by the breeze

मीनचक्षुर्भिरालोकतेऽत्राऽनिशं
पर्वतीयानवद्यामहो! रम्यताम् ।।३।।
सेतुमध्येऽत्र दोलायमाने स्थितैर्
दर्शकैर्दीयमानं प्रतिस्पर्धया ।
उच्छलन्नच्छतोयेऽन्नमत्तुं मुदा
मत्स्यपुञ्जो विभात्यद्भुतः सुन्दरः।।४।।
वर्धमानामवारे विकासोन्मुखीं
मानवीं सभ्यतामीक्षमाणा मुहुः।
भाति पारेऽपि नैसर्गिकं निर्जनं
क्लेदयन्ती विलोलैः तरङ्गैर्युता।।५।।
लोलकल्लोलिनीयं सुधास्यन्दिनी
पर्वतीयोन्नतात् सत्पथादद्रिजा ।
वीचिपादैः समे भूतलेऽवातरद्
धावमाना स्वनं कुर्वती घर्घरम् ।।६।।

हवा से लक्ष्मण झूले को झुलाती हुई, मछलियों की आंखों से पर्वतीय अभिरामता को देखती है। इस पुल में खड़े होकर यात्री गण जब मछलियों के लिये दाना डालते हैं तो प्रतिस्पर्धा से उसे खाने के लिये उछलते मछलियों का समूह बड़ा सुन्दर लगता है। इस पार विकास की ओर अग्रसर मानवी सभ्यता को देखती है और उस पार प्राकृतिक तट को चञ्चल लहरों से भिगोती है ।।१-५।।

अब पर्वत पुत्री ऊंचे पहाडों के सुन्दर पथ से नीचे अपनी लहरों रूपी पैरों से

generated by Her own waves, She as if watches through the eyes of fishes the rocky elegance around. Standing on this bridge when the travellers feed the fishes by dropping grains into the river then they vying with each other, jumping to eat the food, seem enchanting. On one of Her banks She witnesses the progressive human culture and with Her quick ripples She waters the natural expanse of the other side.[1-5]

And now the "offspring of the rocks" *Gaṅgā* descends down the beautiful pathways of high mountains tripping on Her feet of

विप्रयुक्ता सती पितृक्रोडात्किलो-
त्कण्ठिता शैलराजात्मजा विह्वला।
स्वीयशब्दायमानोर्मिभिर्मानसीं
खिन्नतां ख्यापयन्तीव सम्प्रस्थिता ।।७।।

मायापुरी (हरिद्वार)-वर्णनम्

श्रीहरिद्वारभूतां हरिप्राप्तये
तीर्थरूपाञ्च मायापुरीमागता।
नीलधारास्वरूपेण विभ्राजते
स्वच्छतोया तरङ्गैर्युता शीतला ।।८।।
साऽत्र शुम्भादिदैत्यान् निहन्तुं यथा-
ऽनेकरूपाऽभवच्चण्डिकैका तथा[३]।
सप्तधारासु सप्तर्षिसन्तृप्तये
शोभिता तारिणी पापसंहारिणी।।९।।
राजितां नीलबिल्वाद्रिमध्ये पुरी-
मीक्षती ब्रह्मकुण्डं गता धारया।

उतरती है। घर्घर नाद करती हुई ऐसा लगता है मानो पिता की गोद से बिछुड़ने की व्याकुलता को व्यक्त कर रही हों ।।६-७।।

श्रीहरि की प्राप्ति के लिये द्वार भूत मायापुरी में आकर गङ्गा स्वच्छतोया नील धारा के रूप में सुशोभित है। यहां पर सप्त ऋषियों को तृप्त करने के लिये वह एक होती हुई भी सात धाराओं में उसी प्रकार विभक्त हो गई जैसे चण्डिका शुम्भ आदि दैत्यों के विनाश के लिए एक होते हुए भी अनेक हो गई । नील और बिल्व

waves. The uproar of Her water makes one wonder whether She is expressing sorrow of being alienated from Her father.[6-7]

Haridwāra

That pure stream has come to *Māyāpurī* and is known as *Nīla dhārā*, a place which enables the devotee to reach *Śri Hari*. To satiate *Saptarṣi* She has cleaved into seven streams in the same way as *Chaṇḍikā* had become many to destroy the demons like *Śumbha* and others. Flowing past *Māyāpurī*, situated between

वेधसा यत्र तप्तं तपः सिद्धिदं
पूरयन्ती स्वतोयाऽमृतेनाऽनिशम् ।।१०।।
श्वेतनाम्ना प्रसिद्धो नृपश्चैकदा
तोषयामास पद्मोद्भवं भक्तिमान् ।
ईक्षमाणः पृथिव्यां धुनीं प्रस्तुताम्
अध्युवास प्रसन्नो विधिः तत्स्थलम् ।।११।।
विक्रमस्याग्रजन्मा कविःकोविदो
नीतिशृङ्गारवेत्ता विरक्तो भवन् ।
भर्तृहर्याऽऽख्यराजाऽत्र तीव्रं तपो
वासुदेवस्य तुष्ट्यै चचाराद्भुतम् ।।१२।।
निर्मितिर्विक्रमस्याऽद्भुता दृश्यते
यत्र सोपानपङ्क्तिर्मनोहारिणी ।
स्वर्गसोपानरूपा हरेः स्मारिका
प्रापिका विष्णुलोकस्य शान्तिप्रदा ।।१३।।

पर्वत के बीच बसी पुरी को देखते हुए वह एक धारा से ब्रह्मकुण्ड में आ गई, जहां ब्रह्मा जी ने तप किया था। यहीं श्वेत राजा ने भगवान् विष्णु को सन्तुष्ट करने के लिये तपस्या की। पृथ्वी में बहती स्वर्ग की नदी को देखते हुए ब्रह्मा ने भी यहाँ निवास किया । राजा विक्रमादित्य के बड़े भाई, प्रख्यात कवि भर्तृहरि नें भी यहां अद्भुत तप किया । यहीं पर उन की स्मृति में हरि की पैढ़ी है, जो स्वर्ग के सोपान के समान है।।८-१३।।

Nīla and *Vilva Parvata*, She has entered as a stream into *Brahmākuṇd*. Once upon a time *Śweta*, the king had undergone penance to please *Bhagavān Viṣṇu*. *Brahmā* also stayed here to do penance and was both astonished and pleased to find the divine river flowing on earth. The celebrated poet *Bhartṛhari*, the elder brother of *Vikramāditya* the king also went through peerless penance here itself. To commemorate his (*Bhartṛhari's*) memory he (*Vikramāditya*) raised the structure of steps along the bank, famed as '*Hari kī paiḍī*', which is like the steps of *Swarga*.[8-13]

सान्ध्यनीराजनं राजते स्वर्णिमं
यत्र दीपावली दीप्यते प्रायशः ।
दृश्यते स्नानलाभाय रम्ये तटे
कुम्भयोगे नराणां महासङ्गमः।।१४।।

दत्तात्रेयमुनेः कुशादिसहिता यावत्प्रयाताऽग्रगा
तावत्तेन तपस्विना सुरधुनी रुद्धप्रवाहा कृता ।
आवर्त्तेषु समस्तवस्तुनिवहं चक्रायमाणं चिरं
दृष्टं यत्र तमेव पश्यति पुनः घट्टं कुशावर्तकम्[१] ।।१५।।

चण्डिकामुच्चकैः संस्थितां मानसां
बिल्वकेशं तथा नीलकण्ठं शिवम्।
स्नापयन्ती सुधा सन्निभैरम्बुभिः
शोभते लोलधारा प्रवाहाकुला।।१६।।

दक्षयज्ञे प्रदग्धां सतीं दुःखितां
त्यक्तदेहां स्वसारं परिप्लावितुम् ।

सायं काल यहां श्रीगङ्गा की आरती अत्यन्त शोभायमान लगती है और कुम्भपर्व में मानवों का महान् सङ्गम होता है। पुनः कुशावर्त घाट में आती है जहां दत्तात्रेयमुनि के कुश कमण्डलु को बहाने की इच्छा वाली इसको उस तपस्वी ने चक्राकार बना कर रोक दिया था। इसी पुरी में ऊंचे पर्वत पर स्थित चण्डिका एवं मनसा देवी तथा बिल्वकेश और नीलकण्ठ शिव को वह अमृत जल से स्नान कराती हुई लगती है। पुनः दक्ष यज्ञ में दग्ध सती, जो दुःखी तथा त्यक्तदेहा है,

In the evening the *ārati* of *Śri Gaṅgā* becomes an elegant act and during *Kumbha* fair there takes place a congregation of millions of human beings. Again She comes to the *Kuśāvartta Ghāt*. It is the place where She was stopped as a whirlpool by the sage *Dattātreya* as she was desirous of washing away his *kuśa*, *kamaṇḍalu* etc. Today also She seems to be bathing *Chaṇḍikā*, *Manasā Devī*, *Vilvakeśa* and *Nīla Kaṇṭha Śiva*, situated on high peaks with Her revitalizing water. She reaches *Kankhal*, where She consoles with wavy arms Her sister *Satī*, who had immolated

स्नेहनीरं समादाय सम्प्रस्थिता
सान्त्वयन्तीव तां वीचिहस्तैः शुभैः ।।१७।।
कनखले जनकेन तिरस्कृतां
पतिपराभवरोषभयङ्करीम् ।
मखविनाशकरीं ज्वलितां सतीम्
अहह! भस्ममयीं ददृशे तदा ।।१८।।

कण्वाश्रम-वर्णनम्

आगता तत्र गङ्गा प्रसन्नोर्मिभिर्
यत्र कण्वोऽवसत् सुप्रशान्ते वने ।
नैष्ठिकब्रह्मचारी व्रती ब्राह्मण-
श्छन्दसां पारदृश्वा विधिज्ञो मुनिः ।।१९।।
वत्सलाकोमलाङ्गी मृगाक्षी मृगान्
कण्वपुत्री स्वपुत्रोपमान् शावकान् ।

उस प्रिय बहन को लहरों रूपी हाथों से सान्त्वना देती हुई कनखल पहुंचती है। वहां पिता द्वारा तिरस्कृत, पति के पराभव को देख रोष से भयङ्कर, यज्ञ का विध्वंस करने वाली, जलकर राख के रूप में परिणत सती को देखती है।।१४-१८।।

अब श्रीगङ्गा नैष्ठिक ब्रह्मचारी,वेदज्ञ, व्रतधारी ब्राह्मण कण्व मुनि के प्रशान्त आश्रम में पहुंची, जहां वात्सल्य परिपूर्ण कोमल अङ्गों वाली मृगनयनी शकुन्तला नीवार धान्य से मृगशावकों को पालती थी और पौधों में सहोदर भाव रख कर उन्हें

herself in the *Dakṣa yajña* long long ago. She contemplates *Satī*, who had transmuted herself into ashes, on being castigated by her father. Unable to bear the humiliation of her husband here *Satī*, fierce with rage, had devastated the *yajña*.[14-18]

Kaṇvāshrama

Śrī Gaṅgā reaches the peaceful hermitage of *Kaṇvāshrama*, a devoted and assiduous seer of the *Vedas* where the affectionate, soft-limbed, deer-eyed *Śakuntalā*, who propagated the notion of universal brotherhood while she tended the brotherly saplings,

यत्र नीवारधान्यैः पुपोष स्वयं
तं प्रसिद्धं पवित्राश्रमं पश्यति ।।२०।।

यत्र सोदर्यभावाञ्चिता पादपै-
र्लालिता सा शकुन्तैर् निसर्गप्रिया।
विश्वबन्धुत्वशिक्षामनन्ताङ्गणे
प्रैषयत् तं पवित्राश्रमं पश्यति ।।२१।।

वेदपाठेन गुञ्जायमानोऽनिशं
हव्यगन्धैश्च धूपायितो नित्यशः।
आश्रमोऽसौ प्रदीप्तः तपोभिश्चिरं
मालिनीकूलवर्ती मनोहारकः ।।२२।।

वल्कलैः सज्जितान् मन्त्रपाठे रतान्
भ्रष्टपाठान् बटून् वारयन्तः पुरा।
किंशुकान् स्पर्धमानाः शुकाश्चञ्चुभिः
शाखिनां कोटरेषु स्थिता रेजिरे।।२३।।

सागरं चुम्बितुं वीचिभिश्चञ्चलां
मालिनीं कामिनीमीक्षती सस्मिता।

सींचती हुई विश्व बन्धुत्व की शिक्षा का प्रसार करती थी। वेद पाठ से वह आश्रम सदा गुञ्जित रहता था तथा यज्ञ के हविर्गन्ध से सुगन्धित और तप से प्रदीप्त था। वह आश्रम मालिनी के तट पर स्थित था। वहां वल्कल पहने, मन्त्र पाठ में लगे, बटुओं को पाठ के गलत हो जाने पर पेड़ों के कोटर में बैठे लाल ठोंठ वाले तोते टोका करते थे। वहां सागर का चुम्बन करने के लिये व्याकुल कामिनी की भांति

and fed the fawns with *Nīvār* grains. The hermitage resounded with the echoes of *Vedic* chants and was surcharged with ambrosial fragrance. The refulgence of ascetic penance stood like an aura. The hermitage stood on the bank of *Mālinī* river. Here the red-beaked parrots sitting in the hollow of the trees checked the disciples erring in their lessons. She (*Gaṅgā*) has smilingly taken along Her stride the river *Mālinī* who seems impassioned to touch the ocean.[19-24]

सङ्गमायोद्यतां तां नयन्ती सती
राजते गङ्गधारा सिता शीतला ।।२४।।

शुकाश्रम (शुकताल) वर्णनम्

यत्र परमात्मभावः स्फुटश्चिन्मयः
सर्वदा द्योतते स्वप्रकाशोऽद्वयः।
भक्तिपीयूषपानाय तत्राप्यसौ
सुप्रविष्टा तरङ्गैः शुकस्याश्रमम् ।।२५।।
श्रावयामास तापापहाराय स
श्रीशुकः पार्थपौत्रं पवित्रां कथाम् ।
पावयन्त्यश्च गङ्गालहर्यः शुभा
आगता आश्रमं श्रोतुकामा इव ।।२६।।
तत्र लोलैः तरङ्गाक्षिभिर् वीक्षते
कृष्णतत्त्वं समस्तेषु जीवेषु यत् ।

मालिनी को देखकर मुस्काती हुई गङ्गा उसे लेकर आगे बढ़ी ।।१९-२४।।

जहां चिन्मय, स्वप्रकाश, परमात्मभाव स्फुट है वहां भक्तिसुधा का पान करने के लिए श्रीगङ्गा अपनी तरङ्गों से प्रविष्ट हुई। जहाँ शुकदेव मुनि ने अर्जुन के पौत्र परीक्षित को भागवत की पवित्र कथा सुनाई, मानो उस कथा को सुनने की इच्छा से शुक के उस आश्रम को पवित्र करती हुई गङ्गा की लहरें वहाँ पहुंची। अपनी चञ्चल लहरों रूपी आंखों से मानों वहां वह समस्त जीवों में कृष्ण तत्त्व को देख कर

Śukatāl

She has entered with Her waves *Śukatāl*, resplendent with the brilliance of supra-consciousness, to drink deep into the stream of devotion and to be saturated with the feeling of *Bhakti*. Here in the hermitage of *Śukadeva* the sage (*Śukdeva*) had preached the sacred *Bhāgavata Purāṇa* to *Parīkṣita*, the grandson of *Arjuna*, the swell of *Śri Gaṅgā* today too reached the same hermitage purifying it and seems desirous of listening to the narration of the holy scripture and looking through Her wet eyes She envisaged

तेन सर्वं जगत् स्थावरं जङ्गमं
वासुदेवस्वरूपं ध्रुवं मन्यते ।।२७।।
राजधानी कुरूणां तया दृश्यते
हस्तिनापूरिति ख्यातिलब्धा वरा।
यत्र सास्मर्यते शन्तनुर्भूपतिः
तत्सुतो भीष्मनामा परं साहसी ।।२८।।
यत्र गङ्गाऽवहद् दीर्घकालावधिं
सा ततो विप्रकृष्टाऽभवत् साम्प्रतम् ।
तत्र धाराऽपरा वृद्धगङ्गाऽभिधा
शोभते लोकपापापहा निम्नगा ।।२९।।
तां समादाय यातोच्छलद्वीचिभिर्
द्रष्टुकामाऽथ मुक्तेश्वरं मुक्तिदम् ।
पुष्पवत्यां शिवं मण्डकेशं पुनः
पूजयित्वा गता नागयज्ञस्थलम् ।।३०।।
इष्टवान् सर्पयज्ञं पितुः कारणाद्
अत्र पारीक्षितः शोकसम्मूर्छितः।

समस्त स्थावर जङ्गम को वासुदेवमय समझने लगी।।२५-२७।।

आगे कुरु की राजधानी हस्तिनापुर पहुंची, यहां राजा शान्तनु और पुत्र भीष्म को स्मरण करती हुई बहुत काल तक बहीं, किन्तु अब यहां से दूर हो गई हैं और अपनी एक धारा बूढ़ी गंगा को मिलाती हुई गढमुक्तेश्वर पहुंची हैं। इसके आगे पुष्पवती (पूठ) में मंडकेश्वर की पूजा कर अहार पहुंची। जहां पिता की मृत्यु का

the entire living and non-living world as the emanation of *Kṛṣṇa.*[25-27]

In the past She travelled further to *Hastināpura*, the capital of *Kuru*. Here She rolled for a long time recalling *Śāntanu*, the king and his son *Bhīṣma*. But now She has changed Her course and later one of Her streams reached *Gaḍha mukteśwar*. At *Puṣpāvatī* She prayed to *Maṇḍakeśwar* and flowed to *Ahār*. Here *Janamejaya*, the son of *Parīkṣita*, in order to avenge the death of

भस्मसात् संविधातुं रिपुं तक्षकं
नागजातं जुहाव क्रुधा पार्थिवः।।३१।।
प्राक्षिपत् क्वापि कानीनमस्या जले
हन्त लोकापवादाद् वराकी पृथा।
यत्र दृष्टः पुरा दानवीरोऽनया
तन्निवासस्थलं कर्णवासः स्मृतः।।३२।।
अर्चितुं श्वेतवाराहदेवं गता
किन्त्विदानीं परित्यक्तमेतत्स्थलम्।
किञ्च, काम्पिल्यपूरीक्ष्यते दूरतो
धावमानेव शृङ्.याश्रमं गच्छति।।३३।।
श्यामकर्णाश्वशुल्कं ददौ गाधये
तत्सुतापाणिमिच्छन् ऋचीको मुनिः।
यत्र हर्षो जहर्ष प्रसिद्धो नृपः
कान्यकुब्जं तमासादयत् पुण्यदा।।३४।।

बदला लेने के लिए परीक्षित पुत्र जनमेजय ने नागयज्ञ किया और तक्षक को मारने के लिए क्रोध से राजा ने अनेक सर्पों को यज्ञाग्नि में झोंक दिया। पुनः गङ्गा लोकापवाद से डरी कुन्ती द्वारा जल में बहाये गये कर्ण के निवास स्थान् कर्णवास में आज भी सुशोभित हैं। वे सोरों और कम्पिल्य में पहले बहती थीं, उसके बाद शृङ्गीरामपुर से कन्नौज आईं, जहां ऋचीक मुनि ने गाधि ऋषि से श्याम कर्ण घोड़े लेकर अपनी पुत्री दी थी (यह स्थान अश्वतीर्थ कहलाया)। कन्नौज में राजा हर्ष ने राज्य किया।।२८-३४।।

his father, had performed *Nāga yajña* and had charmed a number of snakes to enter the fire of sacrifice to destroy *Takṣaka*. She has flown past *Karṇavāsa*, where *Kuntī* out of her shame of public censure had thrown her son *Karṇa* into *Gaṅgā*. She has crossed *Soron* and *Kāmpilya* and has come down to *Śṛṅgī rāmpura* and then has touched *Kannauja* (*Aśvatīrtha*) where once the sage *Ṛchīka* had wedded his daughter with *Gādhi* in return of black-eared horses. The historical documents reveal that the king *Harṣa* also ruled here.[28-34]

Rāma Gaṅgā initially emerging as a very lean stream broadens

उद्गमेऽणीयसी याऽम्बुधारा स्रुता
सैव वैपुल्यमासाद्य सद्योऽद्भुतम्।
सिञ्चती सस्यसम्पत्तिदात्रीं धरां
रामगङ्गा[९] समालिङ्गति स्वर्धुनीम् ।।३५।।

अत्र लक्ष्मीं स्मरत्यर्पयित्रीमसून्
राष्ट्ररक्षारतां सैन्यसञ्चालिकाम् ।
आंग्लसेनां तृणं मन्यमानां रणे
तां यशोविग्रहां वीरबालां मनुम् ।।३६।।

'एको रसः करुण'[१०] इत्यभिमन्यमानं
स्नेहेन सिञ्चितवती भवभूतिमत्र।
भोजं नृपञ्च कविकर्मणि सुप्रवीणं
स्मृत्वा प्रसीदतितरामिह कान्यकुब्जे ।।३७।।

जो अपने उद्गम स्थान में अत्यन्त पतली धारा है किन्तु कुछ ही दूर जाने पर विपुलता को प्राप्त करती हुई नदी का रूप ले लेती है ; फसलों से भरी जमीन को सींचती हुई वह राम गङ्गा यहाँ गङ्गा में मिल जाती है। तत्पश्चात् वे महारानी लक्ष्मीबाई, बीरबाला मनु, जिसने राष्ट्र की रक्षा के लिये सैन्य सञ्चालन करते हुए अपने प्राण अर्पण कर दिये थे, का स्मरण करती हुई बिठूर आयीं। एक मात्र करुण रस को ही मानने वाले भवभूति को स्नेह से सिञ्चित करती हुई, कवि कर्मनिपुण भोज को स्मरण करके वह प्रसन्न होती है।।३५-३७।।

into a gigantic river. After pacing for some miles it gets united with numerous tributaries and around *Kannauja* merges into *Gaṅgā*. She flows past *Biṭhūra* paying homage to *Rānī Lakṣmī Bai*. The queen sacrified her life for the sake of her dear motherland, commanding her army in the bravest possible way. She (*Gaṅgā*) seems to be delighted to have blessed *Bhava bhūti* who has given *Karuṇa rasa* the highest place in literature.She has also honoured the outstanding creativity of king *Bhoja*.[35-37]

कर्णपुर-वर्णनम्

शश्वदुद्योग-संस्थानजातोद्भवैर्
दूषणैः सङ्कुलं कर्णपूर्वंपुरम् [११]।
दूयमानेक्षते स्वर्धुनी साम्प्रतं
श्रीयुतं श्रीविहीनं जुगुप्साकरम् ।।३८।।
नैव कञ्चित्प्रवक्तुं क्षमा स्वव्यथाम्
अक्षमा वीक्षितुं तान् विषाक्तान् नदान् ।
संवहन्ती सुतानां कृतं दुष्कृतं
लज्जिता धर्षिता चिन्तिता स्वर्धुनी ।।३९।।
व्याकुला दूषणैश्चर्मगन्धोद्भवैर्
मिश्रितैरुग्ररासायनैर्मारकैः ।
वेदनां मार्मिकां वक्तुकामेव सा
प्रस्थिता तीर्थराजप्रयागं प्रति ।।४०।।

स्वर्धुनी निरन्तर कारखानों के निकलने वाले कूड़े-कचरे से भरे हुए धन से पूर्ण किन्तु शोभाहीन कानपुर शहर को देखकर बड़ी दुःखी होती हैं। किसी से अपनी पीड़ा को कहने में असमर्थ तथा उन विषैले बड़े-बड़े नालों को देखने में भी असमर्थ गङ्गा अपने ही पुत्रों के पापों को ढोती हुई बड़ी लज्जित और दुःखी है। चमड़े के गन्ध के प्रदूषण से तथा जान लेवा रासायनिक द्रवों से व्याकुल होकर मानों अपने हृदय की मार्मिक वेदना को तीर्थराज प्रयाग से कहने के लिये वह आगे चल पड़ती है।३८-४०।।

Kanpur

The *Swardhunī* is deeply dismayed to behold the plight of the city Kanpur. It is buried under the wealth of riches yet suffocates under the filth of pollution. The meterialistic riches of the city has added to its destitution. She is unable to confide Her sorrow to anyone else. She relunctantly looks at the huge filth bearing sewers which pour into Her and make her dejected. She feels mortified to shoulder the burden of sins of Her sons. Unable to endure the harrowing stentch that emanates out of the tanneries and the deadly chemicals, She as if flows towards *Tīrtharaja Prayāga* to unburden the anguish of Her heart.[38-40]

पञ्चमः सर्गः
प्रयाग-वर्णनम्

इष्टवान् वेदवेत्ता विधाता पुरा
यत्र यागं[1] प्रकृष्टं महापुण्यदम् ।
संस्मरन्तीव माहात्म्यमस्याद्भुतं
प्रस्थिता तीर्थराजप्रयागं प्रति ।।१।।
वत्सनाम्ना[2] प्रसिद्धो य आसीत्पुरा
पुष्यमित्रस्य यागात् प्रयागोऽभवत् ।
साम्प्रतं यावनेनाऽभिधानेन वा
तावदल्लाह[3]- वासोऽपि विज्ञायते ।।२।।

गङ्गा जहां प्राचीन काल में ब्रह्मा ने बहुत बड़ा पुण्यदायी यज्ञ किया था, उस प्रयाग के पवित्र माहात्म्य का स्मरण करती हुई सी आई। यह जनपद पहले वत्स नाम से जाना जाता था, पुष्यमित्र शुङ्ग ने यहां यज्ञ किया अतः इसका नाम प्रयाग हुआ, तत्पश्चात् यवन सम्राट् अकबर ने इसका नाम अल्लाहवास-इलाहाबाद रखा।।१-२।।

Tirtharaj Prayaga Vignette

It is the place where aeons ago *Brahmā* had done a holy *yajña*. She comes here as though to commemorate that gigantic act. This district was known as *Vatsa* in the earlier times but when *Puṣyamitra* did the *yajña*, it came to be celebrated as *Prayāga*. Later emperor Akbar named it as Allahabad.[1-2]

यमुना-वर्णनम्

उन्नताच्छैलश्रृङ्गात् कलिन्दाच्च्युतां
नीलकान्त्याऽभिरामां तरङ्गायिताम् ।
एकतोऽपूर्वधारां गभीरामभि-
प्रेक्षमाणाऽऽगता तीर्थराजं प्रति ।।३।।

मेलयन्ती बहून्निर्झरानापगाः
तामजस्त्रप्रवाहां मनोहारिणीम् ।
तीव्रवेगां सुरम्यां विशालां नदीं
प्रेक्षमाणाऽऽगता तीर्थराजं प्रति ।।४।।

वीचिहस्तैरसंख्यैः समालिङ्गितुम्
उत्सुकामेकतो दृश्यमानां शुभाम् ।
भद्रदां नीलरत्नाऽऽभसंशोभितां
प्रेक्षमाणाऽऽगता तीर्थराजं प्रति ।।५।।

कृष्णरागानुरक्ताऽर्कजां कोमलां
राधिकाऽऽराध्यमाराधने तत्पराम् ।
चिद्घनानन्दलीनां प्रफुल्लान्तरां
प्रेक्षमाणाऽऽगता तीर्थराजं प्रति ।।६।।

गङ्गा ऊंचे कलिन्द पर्वत से गिरती नील कान्ति से अभिराम गम्भीर धारा यमुना को सामने से आती हुई देखते हुई तीर्थराज प्रयाग आई। अनेक झरनों , नदियों को मिलाती हुई, अजस्त्र प्रवाह वाली, तीव्र वेग वाली, लहरों रूपी हाथों से आलिङ्गन करने के लिए उत्सुक, कल्याण कारिणी, नीलम की आभा से सुशोभित, कृष्ण के अनुराग में रंगी, सूर्यतनया, राधिका के आराध्य की आराधना में लगी, चैतन्य और

Yamunā

Śrī Gaṅgā comes to *Prayāga* gazing at the scintillatingly bluish stream falling from the high peaks of *Kalinda* mountain. She witnesses *Yamunā*, who is full of sharp currents eager to embrace the wavy arms of other brooks and tributaries. It is believed that *Śrī Hari*, the protector of the universe (*Viśwapā*) who

शेषशायी वसत्यर्णवे विश्वपा
तस्य पादारविन्दे मिलिन्दायितुम् ।
यम्यते भक्तिमत्या स्वरूपं निजं
गाङ्गनीरे यया राजते साऽमला ।।७।।

सङ्गम-वर्णनम्

यावदेनां कलिन्दाद्रिजाऽऽगच्छति
स्नेहपूरैस्तरङ्गैः समालिङ्गितुम् ।
गुप्तरूपेण तावत्सरस्वत्यपी-
हागतातस्त्रिवेणी स्थलीयं स्मृता ।।८।।
गाङ्गतोयं सितं यामुनाम्भोऽसितं
स्पर्धमानं मिथः मेलितुं चञ्चलम् ।

आनन्द स्वरूप गोविन्द में लीन होने से आनन्दित हृदयवाली यमुना को देखती हुई वह आई। विश्वपालक शेषशायी श्रीहरि समुद्र में बसते हैं, उनके चरण कमलों में भ्रमर के समान आचरण करती हुई भक्तिमती यमुना अपने स्वरूप को गङ्गा जी में मिलाती हैं। ।।३-७।।

जब तक कलिन्द तनया (यमुना) स्नेह प्रवाह से इन (गङ्गा) को आलिङ्गन करने के लिये आती हैं, तब तक अन्तः सलिला होकर सरस्वती भी वहां मिल जाती है; इसलिए वह स्थल त्रिवेणी कहलाता है। गङ्गा जल सफेद है और यमुना जल

sleeps on the serpent named *Śeṣa* (*Śeṣa śāyī*), resides in the ocean. *Yamunā* offers her prayers to the lotus feet of *Hari* like a bee, therefore, it seems that she merges herself in *Gaṅgā* to go to the ocean to see Him.[3-7]

The Saṅgam

As the daughter of *Kalinda* she courses ahead to embrace *Gaṅgā* affectionately. The subterranean river *Saraswatī* comes and joins them. This confluence of three rivers has made the place celebrated as *Trivenī* where the pristine white water of *Gaṅgā* and the azure blue-coloured water of *Yamunā* try to reach each other. To see this flux of colours one wonders whether sapphire

इन्द्रनीले मणौ मौक्तिकं किन्विदं
छायया सङ्गतो भ्राजते वाऽऽतपः ।।९।।
सङ्गमोऽनेकधाराकृतः शोभते
भारतीयैकतां साधयन्नेकतः ।
संस्कृतीनां महासङ्गमोऽस्यास्तटे
राष्ट्रियैकत्वसंवाहकश्चान्यतः ।।१०।।
कर्मयोगे रता भक्तिधाराप्लुता
ज्ञानमार्गेऽनुरक्ताश्च सारस्वताः ।
योगसिद्धा मुनीशाः सदा कुर्वते
धर्मतत्त्वोपदेशं त्रिवेणी तटे ।।११।।
ज्ञानिवर्यं प्रयागे समासङ्गतं
भक्तवर्यो भरद्वाजनामा ४ ऋषिः ।
स्वाश्रमं नीतवान् सादरं पावनीं
श्रोतुकामः कथामत्र रामायणीम् ।।१२।।

श्यामल दोनों जब स्पर्धा में मिलने के लिये चञ्चल होते हैं तो सन्देह होता है कि क्या यह नीलम में रखा हुआ मोती है अथवा छाया से मिली हुई धूप?।।८-९।।

अनेक धाराओं का सङ्गम एक ओर भारतीय एकता को पुष्ट करता है दूसरी ओर इस त्रिवेणी तट पर अनेक संस्कृतियों का सङ्गम राष्ट्रिय एकता एवं अखण्डता का संवाहक है। कर्मयोग में लगे, भक्ति की धारा से स्नात, ज्ञान मार्ग का अवलम्बन करने वाले विद्वान् , सिद्ध, योगी, और मुनि त्रिवेणी के तट पर धर्म का उपदेश देते हैं। प्रयाग में आये ज्ञानी याज्ञवल्क्य से भक्त राज भरद्वाज ऋषि रामायण की कथा

is conjoined with pearl or is it a chiaroscuro of light and shade?[8-9]

The union of numerous streams and the harmonious co-existence of various cultures along the banks of *Trivenī* confirm the notion of unity in diversity of Indian life. The followers of the path of action (*Karma*), knowledge (*Jñyāna*) and devotion (*Bhakti*) can be seen preaching the core of *Dharma* to enlightened people.The great *Bharadwāja muni* desired to listen to the narration of the *Rāmāyaṇa* from *Yājñavalkya*, so he invited

बोधयद् याज्ञवल्क्यस्तदा तं मुनिं
रामगाथारहस्यं परं दुर्लभम् ।
सङ्गतेव प्रतीता त्रिवेणीतटे
भक्तिमन्दाकिनी सत्कथारूपिणी ।।१३।।
दृष्टवानेकदाऽद्वैतवादी महान्
शङ्कराचार्यपादः परिव्राजकः [५] ।
भट्टवर्यं ज्वलन्तं तुषाग्नौ चिरं
कर्मकाण्डप्रदीपं तुतातं [६] द्विजम् ।।१४।।
कर्मणोऽप्यस्तु बोधेन सम्मेलनं
चिन्तयित्वा दृढं तेन मेधाविना ।
शङ्करो वेदरक्षाव्रती शाश्वत-
ज्ञानमार्ग - प्रचाराय सम्प्रेरितः ।।१५।।
नामसङ्कीर्तनं केवलं श्रीहरे-
रस्त्युपायो भवाब्धेस्तितीर्षावताम् ।

सुनने के इच्छुक थे, अतः उन्होंने अपने आश्रम में उन्हें सादर आमन्त्रित किया। याज्ञवल्क्य ने राम कथा के रहस्य को समझाया। इस प्रकार त्रिवेणी के तट पर भक्ति मन्दाकिनी कथा रूपिणी होकर बहने लगी। एक बार अद्वैतवादी शंङ्कराचार्य सङ्गम तट पर आये, वहां उन्होंने कर्मकाण्ड के संस्थापक कुमारिलभट्ट को प्रायश्चित करते हुए तुषानल में जलते देखा। ज्ञान कर्म समुच्चय करने के लिए उन मेधावी कुमारिल ने शंङ्कराचार्य को ज्ञानमार्ग के प्रचार की प्रेरणा दी।।१०-१५।।

भवसागर से पार होने का एक मात्र उपाय नाम सङ्कीर्तन है- यह बताते हुए

the latter with great regard to grace his hermitage. *Yājñavalkya* enabled him to get an insight into the mystery of *Rāmakathā.* Thus *Gaṅgā* flows like the stream of devotion along the banks of *Triveṇī*. *Śaṅkarāchārya*, the propounder of *Advaita* had also come to *Triveṇī*. Here he saw *Kumāril Bhaṭṭa* burning in husk-fire for atonement. *Kumāril*, a great scholār of *Mīmānsā Śāstra* inspired *Śaṅkarāchārya* to propagate the message of the path of knowledge.[10-15]

Chaitanya Mahāprabhu too came here. He held that the

अत्र चैतन्यदेवो[७] वदन्नागतः
कृष्णराधाप्रियो वीतरागो यतिः ।।१६।।
पुष्टिमार्गप्रणेताऽमिलत् तं तदा
वल्लभाचार्यपादो हरेर्वल्लभः ।
प्रेममूर्तिं भजन्तं हरिं केवलं
कृष्णरूपं महान्तं परं सुन्दरम् ।।१७।।
यामुनीं नीलिमां वीक्ष्य गौरः प्रभुः
कृष्ण एवेति मत्त्वाऽतिभावाकुलः ।
मज्जितुं नीलधारातरङ्गं गतः
प्रेमधारातरङ्गेण रोमाञ्चितः ।।१८।।

रामानन्दो[८] जयति स यतिः राघवाचार्यशिष्यो
ज्ञानी ध्यानी सदयहृदयो लब्धजन्मा प्रयागे ।
लोके कर्तुं मधुरवचसा रामभक्तिप्रचारं
ग्रामाद् ग्रामं सततमगमद् वैष्णवोऽसौ महात्मा ।।१९।।

चैतन्यमहाप्रभु भी यहां आये, जो राधाकृष्ण के भक्त वीतराग साधु थे। यहां उनसे पुष्टिमार्गी महाप्रभु वल्लभाचार्य भी मिले। वे प्रेममूर्ति, परम सुन्दर, साक्षात् कृष्ण रूप, गौराङ्ग प्रभु यमुना की नीलिमा को कृष्ण समझकर बार-बार उसमें डूब जाते थे और प्रेम से रोमाञ्चित हो जाते थे । माधवाचार्य के शिष्य जगद्गुरु रामानन्दाचार्य भी संसार में राम-भक्ति का प्रचार करने के लिये एक गांव से दूसरे गांव गये। उन वैष्णव महात्मा का जन्म भी प्रयाग में हुआ था।।१६-१९।।

chanting of the Lord's name alone liberates from the maze of birth and death. He was the great devotee of *Rādhā* and *Kṛṣṇa*. *Mahāprabhu Ballabhāchārya*, the follower of *Puṣṭimārga*, met *Chaitanya* here. *Rāmānandāchārya*, the great disciple of *Rāghavāchārya* also wandered from place to place in order to infuse in the people the devotion for Lord *Rāma*. He too was born in *Prayāga*.[16-19]

अत्र बुद्धो महात्मा दयालुर्महान्
　　　　आगतो　　　　बौद्धधर्मप्रतिष्ठापकः।
किञ्च, सम्राडशोको विलोक्याऽद्भुतं
　　　　सङ्गमं　देवनद्योः　परं　विस्मितः[९] ।।२०।।
चीनदेशाद्धि वैदेशिकौ यात्रिणौ
　　　　भारतं　　पर्यटन्तौ　　समासादितौ ।
अत्र　फाह्याननामा　प्रसिद्धस्तथा
　　　　ह्वेनसाङ्गोऽपरो　लेखको　विश्रुतः[१०] ।।२१।।
पुण्यभूमिं प्रयागं सिषेवे चिरं
　　　　यो　　दयानन्दनामा　　महर्षिर्यतिः[११]।
वेदतत्त्वं गुहायां स्थितं दुर्लभं
　　　　ज्ञातुमापातचिन्तापरः　　सोऽभवत् ।।२२।।
सङ्गता गुप्तरूपेण याऽन्तर्जला
　　　　तीर्थराजप्रयागे　　　सरस्वत्यसौ ।
राष्ट्रभाषाकवीनां मुखादुद्गता
　　　　काव्यधारामयी　　मञ्जुवर्णात्मिका ।।२३।।

बौद्ध धर्म के संस्थापक, करुणावतार गौतम बुद्ध भी यहां आये। सम्राट् अशोक भी देवनदियों का सङ्गम देख कर प्रभावित हुआ। चीन देश के विदेशी यात्री फाह्यान और ह्वेनसांग भी भारत में पर्यटन करते हुए यहां आये । आर्यसमाज के स्थापक दयानन्द ने भी पुण्यभूमि प्रयाग में कुछ दिन तक निवास किया । जो सरस्वती गंगा यमुना के साथ गुप्तरूप में मिली थी, वही राष्ट्रभाषा हिन्दी के कवियों के मुख से कविता के रूप में फूट पड़ी।।२०-२३।।

Gautam Buddha, the founder of Buddhism, the compassion incarnate also had visited this place. The travellers from China like Hiuen-tsiang and Fa-hien while moving through also came to *Prayāga*. *Dayānanda*, the founder of *Ārya-samāja* too stayed here for a short while.The *Saraswatī* which had remained secretly interwoven with *Gaṅgā* and *Yamunā* as if in our times has burst out in the form of poetry created by the poets of Hindi - our national language.[20-23]

उद्यता दासताशृङ्खलोच्छेदने
जीवनोत्सर्गरूपाऽमरा निर्जरा ।
शासकान् कम्पयन्त्यत्र वैदेशिकान्
जागृता राष्ट्रिया चेतना मङ्गला ।।२४।।
वेषभूषान्नपानेषु भिन्ना अपि
प्रान्तभाषादिभेदेऽप्यभिन्ना नराः ।
राष्ट्रियैकत्वबुद्धेरनुप्राणिताः
सङ्गताः सङ्गमं सेवमानाः सदा ।।२५।।
यत्र 'विश्वं भवत्येकनीडं' ध्रुवं
तैर्महावाक्यमेतद्धि सत्यापितम् ।
धर्मसूत्रे निबद्धैः सदाचारिभिः
कल्पवासाय सङ्कल्पयद्भिश्चिरम् ।।२६।।
स्नानलाभाय सङ्क्रान्तियोगे शुभे
माघमासे त्रिवेणीतटे पावने ।
दृश्यमानो महासङ्गमः सुन्दरो
द्वादशाब्दे महाकुम्भपर्वण्यसौ ।।२७।।

दासता की शृङ्खला को तोड़ने के लिये जीवन बलिदान करने के लिये स्वतन्त्रता आन्दोलन की राष्ट्रिय चेतना का जागरण भी यहां हुआ। खान-पान, वेश-भूषा, भाषा, रीति-रिवाज, के भिन्न-भिन्न होने पर भी सभी भारतीय राष्ट्रिय एकता की बुद्धि से अनुप्राणित हो कर सङ्गम में एकत्र होते हैं। धर्म के सूत्र में बंधे कल्पवासी जहां 'यत्र विश्वं भवत्येक नीडम्' (विश्व नीड़बन जाता) उक्ति को सार्थक किया करते हैं। माघ के महीने में मकर संङ्क्रान्ति के पवित्र काल में त्रिवेणी सङ्गम में बारह वर्ष के कुम्भ और छः वर्ष के अर्धकुम्भ पर्व के अवसर पर मानवों का विशाल सङ्गम होता है।।२४-२७।।

This place is unique for its association with the freedom movement. The first rays of nationalism were cherished by *Prayāga.* Despite diversity in different walks of life the concept of world as a cohesive family has been extolled here at *Trivenī Saṅgam.* It is the holy spot where the *Kumbha* celebrations are held every sixth and twelfth year.[24-27]

कान्यकुब्जेश्वरः कुम्भयोगे पुरा
राजकोषं ददौ नैकवारं मुदा [१२] ।
मानसे हर्षमावर्धयन् शोभितः
पुण्यकाले सदा भूपतिः सङ्गमे ।।२८।।
धार्मिकीमेकतां वा चिकीर्षुः सुधी
शङ्करः कारयामास सम्मेलनम् ।
सम्प्रदायान् समस्तानिहाहूतवान्
वैदिकीं संस्कृतिं भारते स्थापयन् ।।२९।।
कुम्भमेलापकोऽप्यत्र सन्दृश्यते
संस्कृतेरैक्यसम्पादकः सुन्दरः ।
लोकशास्त्रोभयोः सङ्गमेन स्वयं
सङ्गमः सार्थकोऽभूत् चिरायाद्भुतः ।।३०।।
पुण्यकालेऽमृते स्नानदानादिना
सत्त्वरं दोषजातं विनष्टं भवेत् ।
धर्ममूलं समीहाऽभ्युदीयादहो !
सिद्ध्यतेऽर्थद्वयं सङ्गते सङ्गमे ।।३१।।

कन्नौज के राजा हर्षवर्धन इस कुम्भ पर्व में अपने सम्पूर्ण राजकोष को दान किया करते थे। शंङ्कराचार्य कुम्भ के अवसर पर यहां सभी सम्प्रदायों एवं मतावलम्बियों को एकत्र कर धार्मिकी एकता की स्थापना के लिए विशाल सम्मेलन करते थे। संस्कृति की एकता का संवाहक कुम्भ मेला भी यहां आयोजित होता है। इस प्रकार इस सङ्गम में लोकरीति और शास्त्र सिद्धान्त दोनों का संगम हैं। इस अमृतकाल में सम्पूर्ण दोष नष्ट होते हैं और धर्म को जानने की इच्छा (विविदिषा)जागती है।।२८-३१।।

History tells us that *Harṣa*, the king of *Kannauja* donated liberally from his royal coffer during the *Kumbha*. *Śaṅkarāchārya* organised a great congregation by gathering believers of various faiths so as to promote religous tolerance. Hence, *Kumbha* happens to be a convergence of folk tradition and higher philosophical doctrines.[28-31]

गोलोके विरजाऽऽपगा[13]-सहचरी रासेश्वरप्रेयसी
सम्प्राप्ता यमुना भुवीक्षितुमहो! लीलां हरेरद्भुताम् ।
श्रीकृष्णाङ्गसमुद्भवां सुविशदां गङ्गां विलोक्याऽनुजां
धावन्तीमनुरागनिर्भरभरां कण्ठे समालिङ्गति ।।३२।।

कालिन्दीतट-कुञ्ज-गुञ्जितमतीवाकर्षकं मोहकं
राकायां नटनागरस्य मधुरं वेणुस्वनं शृण्वती ।
गोपीभिः परिवेष्टितं मधुरिपुं वीचीभिरालिङ्गती
मन्ये प्रीतिमलौकिकीं निगदितुं गङ्गां समालिङ्गति ।।३३।।

गोपीनां विरहेण कातरहृदां याते हरौ द्वारिकां
नेत्राभ्यामनिशं जलं निपतितं सम्मिश्रितं कज्जलैः।

गोलोक में जो विरजा नदी की सखी थी, रासेश्वर कृष्ण प्रेमिका थी; वही पृथ्वी लोक में हरि की लीला को देखने के लिए अवतरित हुई यमुना के रूप में । श्रीकृष्ण के अंग से उत्पन्न श्वेत वर्ण वाली अपनी छोटी बहन गंगा को देखकर वह यमुना अनुराग से भरी हुई दौड़ कर उससे गले मिल रही है। अपने तट पर अत्याकर्षक वंशी की ध्वनि सुनती हुई, पूर्णिमा की रात्रि में गोपिकाओं से घिरे हुएं नटनागर को अपनी तरङ्गों से आलिङ्गत करती हुई सी लगती है।कृष्ण के द्वारिकाचले जाने पर विरह व्याकुल गोपियों के नेत्रों से निरन्तर गिरने वाले काजल मिश्रित शोकाश्रुओं से

The river which happened to be the close confidant of *Virajā* river and the beloved *of Rāśeśwar Kṛṣṇa*, descended upon the earth (*Pṛthivī loka*) to witness the ways of *Hari* in the form of *Yamunā*. She as if rushes lovingly further to embrace her sister *Gaṅgā* who has sprung out of *Śrī Kṛṣṇa*'s body. On the full moon night she as if listens to the enchanting music of flute played by *Nata nāgara Śrī Kṛṣṇa*, surrounded by *Gopīs* on her banks and enriches them with her waves. Long ago when *Kṛṣṇa* left for *Dwārikā* the *Gopīs* torn by the pangs of separation, shed tears ceaselessly. As tears blended with *kājal* touched the waters of

नीलाश्मद्युतिशालिनी नु यमुना सम्भिन्नशोकाश्रुभिः
श्यामां प्रीतिमलौकिकीं कथयितुं गङ्गां समालिङ्गति ।।३४।।

राधामाधवयोः सिताऽसितरुची नद्यावुभे सङ्गते
श्यामश्वेतविभामयौ हरिहरौ नूनं समासङ्गतौ ।
मन्ये स्फाटिकमिन्द्रनीलमहसा सङ्क्रान्तमेतत्पयः
धन्यं सङ्गमतीर्थमुत्तमगतिप्राप्तेः परं साधनम् ।।३५।।

श्वेतश्यामतरङ्गचामरमुभे समवीजयन्त्यौ शुभं
सार्थक्यं ननु तीर्थराजपदवीं ते सम्विधत्तः स्फुटम् ।
यत्राऽपूर्वसमन्वयो विविधतायामेकतायाश्चिरम्
धन्यं सङ्गमतीर्थमुत्तमगतिप्राप्तेः परं साधनम् ।।३६।।

जब यमुना जल मिला तो वह यमुना नीलम की कान्ति वाली होकर श्यामल हो गई और मानो उन गोपियों की अलौकिक प्रीति को कहने के लिए गंगा में मिल रही हैं। दोनों नदियां राधा और माधव की गौरश्याम कान्ति जैसी हो कर मिल रही हैं। अथवा क्या सफेद और श्यामल विभा से युक्त विष्णु और शङ्कर परस्पर मिल रहे है; अथवा दोनों का जल स्फटिक और नीलम का मिश्रण लग रहा है; यह संगमतीर्थ उत्तमगति प्रदायक श्रेष्ठसाधन होने से धन्य है। ये दोनों नदियां श्वेत श्याम चंवर डुलाती हुई प्रयाग के तीर्थराज पद को सार्थक कर रही हैं; यहां पर विविधता में एकता का अद्भुत समन्वय है।।३२-३६।।

Yamunā, the latter turned into the colour of sapphire. Today also she seems to be eagerly meeting *Gaṅgā* to narrate the divine love of the *Gopīs*. These twin rivers seem to unite bearing the bright and dark effulgence of *Rādhā* and *Mādhava*. Do these streams resplendent with black and white lustures remind us of the meeting of *Viṣṇu* and *Śiva*? Or does the confluence of these too distinct streams seem to be one of crystal and sapphire? This *saṅgam* is an outstanding *tīrtha* which liberates the creatures. These two rivers seem to sway the white and black fans (*chaṅvar*) and make the meaning of the term *tīrthrāja* worthwhile.[32-36]

वेदज्ञानमयः स्वरः समुदितः सत्कर्मज्ञानात्मको
द्वैताऽऽद्वैत-कृतान्तकान्तविशदो घोषः समुद्घुष्यते ।
कृष्णप्रेमतरङ्गिणी समरसा रामस्य भक्त्योर्मिभि-
र्धन्यं सङ्गमतीर्थमुत्तमगतिप्राप्तेः परं साधनम् ।।३७।।

गूजत्यत्र सनातनी मधुमयीयं देववाण्येकतो
भावैः संवलिताऽन्यतः सुकविता सा राष्ट्रभाषामयी।
स्वातन्त्र्याय चिरादनिद्रितवतीयं राष्ट्रिया चेतना
धन्यं सङ्गमतीर्थमुत्तमगतिप्राप्तेः परं साधनम् ।।३८।।

बौद्धानां करुणामयः शरणदः शब्दोऽप्यहिंसावतां
जैनानामुपकारिका मृदुतमा वाणी च शोश्रूयते ।
शिष्याणां गुरुगीर्मुहम्मदवचो धन्ध्वन्यतेऽहर्निशं
धन्यं सङ्गमतीर्थमुत्तमगतिप्राप्तेः परं साधनम् ।।३९।।

एक ओर वेद का ज्ञानमय स्वर सुनाई दे रहा है दूसरी ओर द्वैत-अद्वैत के सिद्धान्तों पर चर्चा हो रही है। कहीं कृष्ण भक्ति शाखा रामभक्ति शाखा के साथ मिल रही है। एक ओर सनातनी मधुर देववाणी संस्कृत बोली जा रही है और दूसरी ओर अनेक भावों से युक्त हिन्दी की सुन्दर कविता महादेवी, पन्त, निराला जैसे कवियों के कलकण्ठ से फूटी है और यहीं स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये जाग उठी राष्ट्रियचेतना का उन्मीलन हुआ। 'बुद्धं शरणं गच्छामि' का उद्घोष तथा अहिंसा वादी जैनों की कोमल वाणी, सिक्खों की गुरुवाणी और पैगम्बर मुहम्मद का वचन सभी का सङ्गम इस तीर्थ में है।।३७-३९।।

The *Vedic* recitals and the discourse on *Dvaita* and *Advaita* co-exist here. The devotees of *Kṛṣṇa* and the followers of *Rāma* interact peacefully. On the one hand, here the *Sanātanī Devavāṇī Sanskṛt* is being spoken with reverence, on the other, outstanding creativity in *Hindī* is also evident in the poems of *Mahādevī*, *Pant*, *Nirālā* and others. The confluence of the best thoughts of the Buddhist, the Jains, the Sikkhas and the followers of Paigambar Mohammad can be seen at *Prayāga*. [37-39]

दुर्गे यावननिर्मिते दृढतमे तीरस्थिते सुन्दरे
प्राचीनश्च विराजतेऽक्षयवटः सम्पूजनीयो महान् ।
कल्पान्तेऽस्य पवित्रपत्रपुटके शेते जलप्लावने
पादाङ्गुष्ठरसं स्वदन् प्रमुदितो बालो मुकुन्दः सदा ।।४०।।

क्षीराब्धेः प्रभवाद् विलक्षणघटात् ताक्ष्र्येन नीताद्दिवि
चत्वारः पतिताः सरित्सु विमले नीरे सुधाविन्दवः ।
श्रीसूर्ये मकरे गते वृषगते जीवे तपस्ये स्फुरन्
कुम्भोऽमातिथिसंयुतो निगदितो योगः प्रयागे शुभः[१४] ।।४१।।

कुम्भः पिण्ड इतीरयन्ति विबुधाः पूर्णोऽमृतेनात्मना
ब्रह्माण्डः परिचीयतेऽतिविपुलः कुम्भः प्रतीकेन च ।
तस्माद् विश्वसमग्रतामधिवहन् कुम्भः सदा पूज्यते
कुम्भश्चात्र सनातनः प्रचलितो दिव्यः समाजोत्सवः।।४२।।

यवन सुलतान अकबर द्वारा बनाये गये किले में प्राचीन, पूज्य, महान अक्षयवट भी विराजमान है; जिसके पवित्र पत्ते में प्रलय के समय बालमुकुन्द श्रीहरि पैर के अंगूठे को चूसते हुए सोते हैं। क्षीर सागर से उत्पन्न अलौकिक अमृत कुम्भ को गरुड़ आकाश में ले गये, वहां से अमृत की चार बूंदें नदियों में गिर पड़ी । जब सूर्य मकर राशि पर और वृहस्पति मेष राशि में आ जाते हैं तब आमावस्या तिथि में प्रयाग में कुम्भ का शुभ योग होता है। विद्वान् पिण्ड (शरीर)को कुम्भ कहते हैं जिस में अमर आत्मा का निवास है। कुम्भ सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का भी प्रतीक है। विश्वसमग्रता के

Here till today is found the ancient *Akṣaya- Vat* in the fort built up by the Mughal emperor Akbar. It is the same tree, on the holy leaf of which *Bāla-mukunda Hari* sleeps sucking his toe.According to *Purāṇa Garuḍa* took the *Amṛta kumbha* to the heavens from where four drops of nectar fell into four rivers. When the sun enters the zodiac sign of Capricorn (*Makara*)and the planet Jupiter stays in *Aries* (*Meṣa*) sign then on the *tithi* of *Amāvāsyā* the *kumbha parva* starts at *Prayāga*. The corporeal body is called *Kumbha* by great men. The immortal soul resides in it. *Kumbha* is the symbol of the entire universe. *Kumbha* as a festival has a great social implication as it underlines and stresses

नीलाङ्गी यमुनाजलेन सुभगा गङ्गा मनोहारिणी
गच्छन्ती तमसामवेक्ष्य पुरतः सम्मेलयत्युत्तमाम् ।
यस्या रोधसि कोकिलोऽतिमधुरैः शब्दैरभिव्यञ्जकैर्
वाल्मीकिस्तु चुकूज काव्यमतुलं रामायणं प्राञ्जलम् ।।४३।।

भस्मीकर्तुमशेष पाण्डवकुलं लाक्षा[१५] गृहं निर्मितं
यत्राऽनेन सुयोधनेन नितरां दुर्बुद्धिना लोभिना ।
तीरे तं भवनं विलोक्य सदया गङ्गा शुभं काङ्क्षती
तान् कुन्तीतनयान् तरङ्गबहुलैराशीर्भिरावर्धयत् ।।४४।।

इत्थं सा सततप्रवाहभरिता झङ्कारिणी हारिणी
विन्ध्याद्रिं समुपागमल्लहरिका कूले क्वणत्किङ्किणी ।

प्रतीक के रूप में यह कुम्भ पर्व सदा पूज्य है और कुम्भ सनातन काल से मनाया जाने वाला एक सामाजिक उत्सव भी है।।४०-४२।।

गोरी गङ्गा यमुना जल से मिल कर नीली हो गई और बड़ी सुन्दर लगने लगी है। आगे चल कर उन्होंने तमसा (टोंस) नदी को मिलाया। जिसके तट पर वाल्मीकि रूपी कोकिल ने मधुर तथा व्यंञ्जक शब्दों से प्राञ्जल रामायण महाकाव्य की रचना की । लाक्षागिरि स्थल पर सम्पूर्ण पाण्डव कुल को राख बना दिये जाने का षडयन्त्र जब दुर्बुद्धि और लोभी दुर्योधन बना रहा था;तब श्री गंगा अपने तट पर बनते उस भवन को देख, कुन्तीपुत्र पाण्डवों के शुभ की आकांक्षा करती हुई, उनको अपनी लहरों से आशीर्वाद देने लगी ।।४३-४४।।

इस प्रकार निरन्तर प्रवाह से भरी हुई, झङ्कार करने वाली,मनोहारिणी गङ्गा, तट

the concept of universal brotherhood.[40-42]

Śrī Gaṅgā has become bluish touching the water of *Yamunā* and looks exquisitely beautiful. Going further ahead She has joined with Her the river *Tamasā*. The great epic *Rāmāyaṇa* was composed by the renowned poet *Vālmīki* on the bank of this river.Then She reaches the *Lākṣāgiri*, where *Duryodhana* long ago had conspired to reduce the *Pāṇdavas* to ashes. *Gaṅgā's* waves flowing past the *Lākṣāgiri* blessed the sons of *Kuntī*.[43-44]

Flowing incessently and echoing melodious cadence *Gaṅgā*

कंसं नाशयितुं क्षितावतरितां मायां यशोदाङ्गजाम्
एतस्मिन्नचले स्थितां द्युतिमतीं विन्ध्येश्वरीमीक्षते ।।४५।।

दुर्गामष्टभुजां सुरैः प्रणतिभिः सन्तोषितां कालिकां
तीरस्थं चरणाद्रिदुर्गमतुलं दृष्ट्वा प्रहृष्टा सती ।
मन्दं झर्झरशिञ्जिनी सुमनसां हृत्पद्मकिञ्जल्किनी
गङ्गाऽनङ्गरिपोः पुरं जिगमिषत्यावर्तताटङ्किनी ।।४६।।

पर लहरोंरूपी कङ्गन से क्वणन करती हुई विन्ध्याचल आई, जहां वे कंस के बध के लिये पृथ्वी पर अवतरित योगमाया यशोदातनया को इस पर्वत पर स्थित विन्ध्यवासिनी के रूप में देखती हैं । अष्टभुजा दुर्गा, काली तथा अपने तट पर स्थित चरणाद्रि (चुनार) दुर्ग को देख कर प्रसन्न होती हैं । मन्द झर्झर रूनझुन करती हुई, पुण्यात्माओं के हृदय की पराग स्वरूपा, आावर्तरूपी ताटङ्क को धारण करने वाली गङ्गा कामारि शिव के पुर (काशी) में जाने की इच्छा करती हैं ।।४५-४६।।

has reached *Vindhyāchal*. It is the place where *Yoga māyā*, the incarnation in the form of *Vindhyeśwarī*, dotes upon the daughter of *Yaśodā* to uproot *Kaṁsa*. *Aṣṭabhujā Durgā*, *Kālī* and the Chunār Fort all come in Her perview, when She watches them while flowing. Then, as the musical journey of *Gaṅgā* continues, She desires to reach the city of *Kāmāri Śiva*, that is *Kāśī*.[45-46]



षष्ठः सर्गः

काशी (वाराणसी) वर्णनम्

डङ्कारं डमरोर्डमड्डुमदिति श्रोतुं जटानिर्झरी
द्रष्टुं वै नटराजताण्डवमहो ! सङ्गीतरत्नाकरी ।
तानं दातुमिवस्वकीयलहरीतन्त्रीझणत्कारिणी
गङ्गाऽनङ्गरिपोः पुरं प्रविशति ह्यावर्त्तताटङ्किनी ।।१।।

यावत्सा त्रिपुरारिराजनगरीसीमां समासादिता
तावन्मुग्धदृशा विलोकितवती श्रीशूलटङ्केश्वरम् ।
सानन्दं विपिने वसन्तमजिनव्यालावलीभूषितम्
गङ्गा स्तौति शुचिस्मिता मधुरया वाचा विधायाञ्जलिम् ।।२।।

डमरू की डम-डम ध्वनि को सुनने के लिए तथा नटराज के ताण्डव लास्य को देखने की इच्छा से, मानों अपनी लहरों के तन्त्री झंकार से नृत्य में तान देने के लिए जटाशङ्करी, सङ्गीत मर्मज्ञा आवर्त रूपी ताटङ्क धारण की हुई गङ्गा अनङ्गरिपु के पुर में प्रवेश करना चाहती हैं। जब वे त्रिपुरारि (शिव) की नगरी की सीमा के पास पहुंचती हैं तब मुग्ध दृष्टि से शूलटङ्केश्वर महादेव को देखती हैं। वन में आनन्द से निवास करने वाले, मृग चर्म और सर्पमाला से विभूषित उनकी स्तुति

The Kāśī (Vārāṇasī) Vignette

To enjoy the sound of the beats of *Damaru* and to watch the grace of *Naṭarāja*'s *Tāṇḍava* and to be an accompanist of this dance, playing the music of Her waves She, the connoisseur of music, wants to enter the city of *Anaṅga ripu*. The moment She touches the fringes of *Tripurāri Śiva*'s city, She is charmed to see *Śūla-Ṭaṅkeśwara Mahādeva*. *Gaṅgā* with Her pious smile sends

श्रीगङ्गा प्राह

जयति शूलटङ्केश्वरो हरः त्रिपुरनाशकस्त्र्यम्बकेश्वरः।
जयति विश्वनाथो महेश्वरो जयति शङ्करः काशिकेश्वरः ।।३।।
असितचर्मधारिन्! सितद्युते! भुजगभोगहारिन्! जगत्पते !
त्रिविधतापहारिन्! नमोऽस्तु ते! भवभयापहारिन्! नमो नमः ।।४।।
सुमनस्स्रग्विणे! सौख्यकारिणे! तिलकधारिणे! पुण्यशालिने!
दुरितवारिणे ते पिनाकिने चिदनुरागिणे ज्ञानरूपिणे।।५।।
अचलशायिने श्रीप्रदायिने गरलपायिने मुक्तिदायिने।
प्रणतपालिने ते कपालिने मदनवैरिणे शूलिने नमः।।६।।

पवित्र मुसकान वाली गङ्गा हाथ जोड़ कर इस प्रकार करती हैं ।।१-२।।

गङ्गा कहती हैं-शूलटङ्केश्वर ,हर, त्रिपुर नाशक, त्र्यम्बकेश्वर, विश्वनाथ, महेश्वर, शङ्कर, और काशी के अधिपति की जय हो। काले चर्म को धारण करने वाले, शुभ्रकान्ति वाले , सांपों के हार वाले, जगत्पति, तीनों तापों को हरने वाले, भव भय को हरने वाले आपको नमस्कार है। फूलों की माला धारण करने वाले, सुख प्रदान करने वाले, पुण्यशाली, तिलकधारी, पापों के निवारक, पिनाक धारी, चैतन्यानुरागी, ज्ञानस्वरूप; पर्वत पर सोने वाले, शोभा प्रदान करने वाले, विषपान करने वाले, मुक्ति प्रदान करने वाले, प्रणत का पालन करने वाले, कपाल धारी, कामदेव के वैरी, त्रिशूलधारी को नमस्कार है। ॐ के स्वरूप,

Her prayers with folded hands to Śiva, the dweller in the woods who puts on the skin of lion and the ornament of snakes.[1-2]

Gaṅgā exhorts *Śaṅkar*, the Lord of *Kāśī* with thousand names. She says,"Glory be to *Śūla Taṅkeśwara, Kāśikeśwara*! I salute you who wears the skin of black deer. You are the one who is fair-skinned and dons snakes as garlands.You are the master of the universe, who removes the agony of three types. I bow to you; the dispeller of the fear of rebirth in the world." She chants the different names of *Śiva* in deep reverence counting His manifold attributes thus, " You wear the garland of flowers, you are the bestower of joy, destroyer of sins, you hold the *Pinaka*, you are the symbol of knowledge. The mountains are your bed and your drink is poison. You are the liberator of mortals,

प्रणवरूपिणेऽद्वैतब्रह्मणे सगुणमूर्तये निर्गुणात्मने।
निगमवेद्यसच्चित्स्वरूपिणे निरुपमप्रकाशात्मने नमः ।।७।।
तव जटाटवीं सिञ्चती प्रभो!
नगकुलोद्गता तोयरूपिणी।
तव कृपाकटाक्षाऽभिलाषिणी
प्रिय! समागता काशिकामहम् ।।८।।
जननमृत्युचक्रस्य भेदिनी
सकलसंशयोच्छेदिनी पुरी ।
परमनित्यधामप्रदायिनी
जयति काशिका ज्ञानदीपिनी ।।९।।
जपतपोमयी बोधरूपिणी
सुकृतवर्धिनी मुक्तिदायिनी ।
शिवशिवाऽविमुक्ता सुशोभते
सुभग ! सर्वदाऽध्यात्मसारिणी ।।१०।।

अद्वैतब्रह्मरूप, वेद द्वारा वेद्य, सच्चिदानन्द रूप, अनुपम प्रकाशस्वरूप आपको नमस्कार है।।३-७।।

हे प्रभो! पर्वत से निकली जलस्वरूपिणी मैं तुम्हारी जटाटवी को सींचती हुई ,तुम्हारे कृपा-कटाक्ष की अभिलाषा से काशी में आई हूँ। यह काशी पुरी जन्म-मरण चक्र का भेदन करती है, सभी संशयों का उच्छेद करती है, परम नित्य धाम प्रदान करती है और ज्ञान को उद्दीप्त करती है। यहां जप-तप होते हैं,ज्ञान प्राप्त

you protect the weak, wear the garland of skulls. You are the enemy of *Kāmadeva*. You are the very embodiment of *Oṁkār*, and can be known by *Vedas* alone. I salute you."[3-7]

She further prays to *Śiva* thus, "I have come down to *Kāśī* to receive a touch of your grace, I have drenched the great forest of your locks. This city of *Kāśī* destroys the cycle of birth and death, eradicates ignorance, leads on to the eternal experience of bliss. The city vibrates with the rhythm of incantation, prayer and meditation; it liberates the ensnared minds. Lord *Śiva* and *Pārvatī*

श्रीशङ्कर उवाच

भवति ! देवि ! गङ्गे ! शुचिव्रते!
तरलरूपिणि ! स्वागतं प्रिये !
विमलवारिधारातरङ्गिणि !
प्रचुरपुण्यदे ! शर्मदे ! शुभे ! ।।११।।
धवलधारशाटी-सुशोभिता
कटितटे चलद्वीचिकिङ्किणी ।
अनुपमेय-कान्ति-प्रसारिणी
रुचिरहासिनी फेनपङ्क्तिभिः ।।१२।।
अमृततोयराशिप्रवाहिणी
सरिद्रूपिणी सिञ्चती जगत् ।
त्रिपथगे! लहर्यम्बरे ! वरे !
हिमसुतेऽत्र ते स्वागतं शुभम् ।।१३।।

होता है। यह (काशी) पुण्य की वृद्धि करती है और मुक्ति प्रदान करती है। शिव और पार्वती इसे कभी नहीं छोड़ते और अध्यात्म ही इसका सार है ।।८-१०।।

शङ्कर बोले - पवित्र व्रत वाली, तरल स्वरूप वाली देवि गङ्गे; तुम्हारा स्वागत है। हे प्रिये! तुम विमल जल धारा की तरङ्गों वाली, प्रचुर पुण्य देने वाली और स्वर्ग देने वाली हो। तुम श्वेत धारा रूपी साड़ी से सुशोभित हो, कमर में चञ्चल लहरों की करधनी पहने हो, अनुपम कान्ति का प्रसार करने वाली तथा फेन पङ्क्तियों से सुन्दर हास करने वाली हो। तुम अमृत जल राशि को प्रवाहित करती हो और

never desert this city. Spirituality is the quintessence of this place"[8-10]

Lord *Śiva* rejoins,"O You goddess *Gaṅgā* ! bound by the vow of purity, flowing in the form of water, I usher you in. O beloved *Gaṅgā* ! You are the reservoir of unblemished waves, bestower of immense purity and *Swarga.* You are adorned with the apparel of streams, the girdle of swift waves lies round your waist. You generate exquisite charm and the spray of water resembles your laughter. The rejuvenating nectar-like water flows from you and

काशी
प्रतीकात्मक स्वरूप

कृत / सत् युग
(त्रिशूल)

ओंकारेश्वर

विश्वेश्वर

केदारेश्वर

त्रेता युग
(चक्र)

दुर्गा सहाय भैरव
(हाजीपुर)

कैथी

देहलीविनायक

द्वापर युग
(रथ)

मध्यमेश्वर

ओंकारेश्वर

कलियुग
(शंख)

ओंकारेश्वर

मध्यमेश्वर

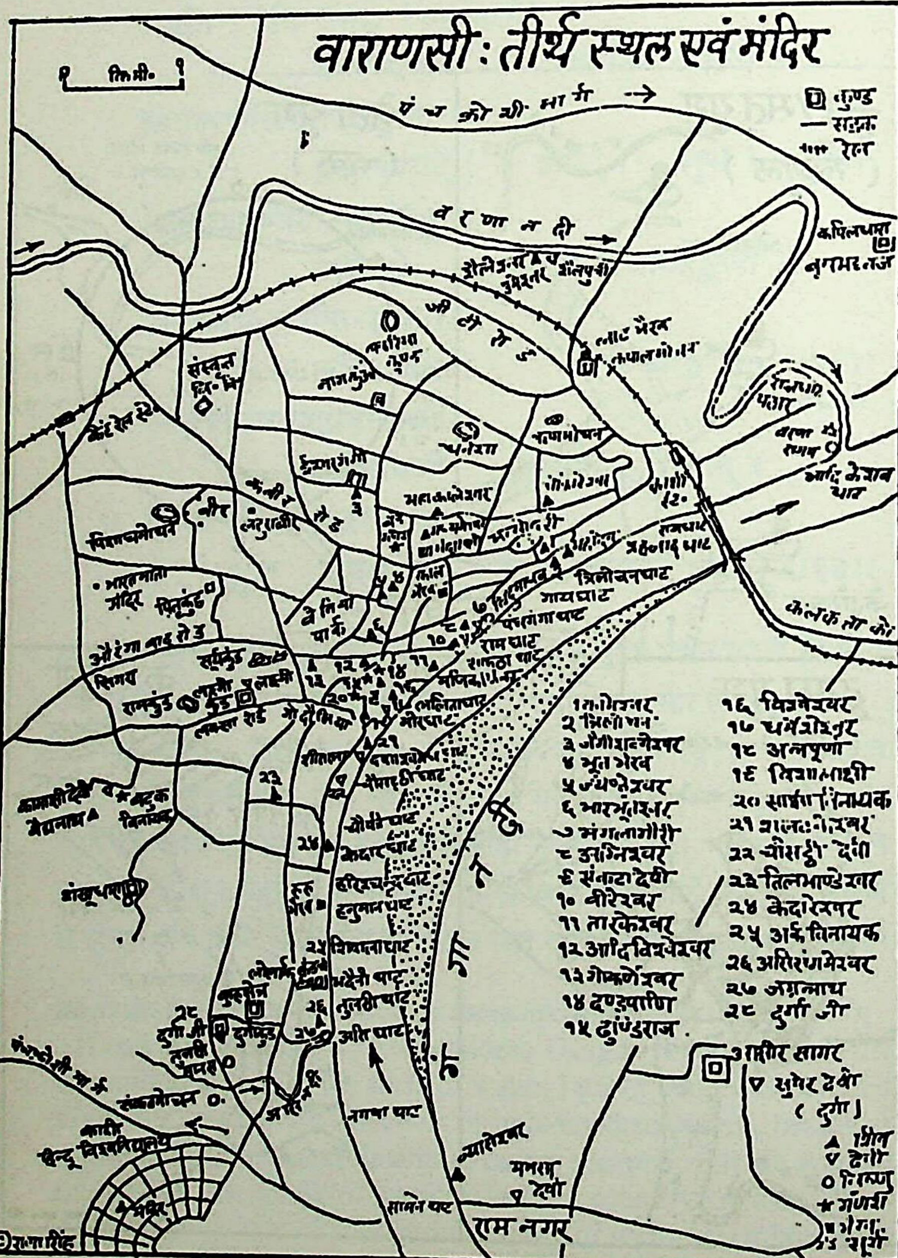
गोकर्णेश्वर

शूलटंकेश्वर

केदारेश्वर

दुर्गा जी

सन्मार्ग : तीर्थ विशेषाङ्क १९८७ से साभार



सन्मार्ग : तीर्थ विशेषाङ्क १९८७ से साभार

मम पुरी प्रिये! मत्स्वरूपिणी
　　शिवशिवामयी　सुप्रकाशिनी ।
तव समागमाद् मुक्तिदायिनी
　　भवति　सर्वगे !　जीवनप्रदे ।।१४।।
कृतयुगेऽस्ति या शूलरूपिणी
　　भजति साऽथ चक्राकृतिं ततः।
अपि रथस्वरूपा तृतीयके
　　कलियुगे　तु　शङ्खस्वरूपिणी[१] ।।१५।।
भुवि न तिष्ठतीयं क्वचित्प्रिये!
　　प्रलयवारि　नेयं　निमज्जति ।

नदी रूप में संसार को सींचती हो। तुम तीन मार्गों से पृथ्वी, अन्तरिक्ष और पाताल में जाती हो। लहर रूपी वस्त्र वाली श्रेष्ठ हिमालयपुत्री ! तुम्हारा स्वागत है। हे प्रिये ! मेरी काशी पुरी मेरा ही स्वरूप है, यह शिव शिवामयी है, प्रकाश देने वाली है, किन्तु हे जीवन दायिनी, सर्वत्र जाने वाली गङ्गे! यह तुम्हारे आ जाने से मुक्ति प्रदान करने वाली हो गई है। सतयुग में यह काशी त्रिशूलाकार, त्रेता में चक्राकार, द्वापर में रथ तथा कलि में शङ्ख के आकार की हो जाती है।।११-१५।।

हे प्रिये ! यह प्रलय काल में जल में नहीं डूबती, शूलों (दुःखों)को नष्ट करने वाली यह त्रिशूल में टिकी है। यह असंख्य शिवलिङ्गों, इक्यावन शक्तिपीठों ,

in the form of river you sustain the entire earth. You reach earth, skies and the netherworld by different routes. O you the daughter of Himalaya! wearing the cover of waves, I hail you. O beloved ! this *Kāśīpurī* is the replica of myself. It is the embodiment of the very element of *Śiva* and the source of light. But O you all pervasive *Gaṅgā*, due to your arrival here this city has become capable of liberating the souls . This city has assumed different forms during different *yugās*. In *sata-yuga* it assumed the form of trident (*Triśūla*), during Tretā it took the shape of a wheel (*Chakra*), in *Dwāpara* it became Chariot (*Ratha*) like and in *Kali*, it has taken the shape of a conchshell (*Śaṅkha*).[11-15]

During *Pralaya*, it does not get submerged under water. It

विलसिता त्रिशूले स्थिता सदा
जयति काशिका शूलनाशिका[2] ।।१६।।
अखिलशैवलिङ्गैः[3] समन्विता
निखिलशक्तिपीठस्थली[4] श्रुता ।
रसशराख्यसंख्यैर्विनायकैर्[5]
लसति भास्कराऽऽदित्यपूजिता[6] ।।१७।।
अपि च सप्तपुर्यो[7] विमुक्तिदाः
सततमत्र चैकत्र संस्थिताः ।
सकलतीर्थसंघैः समन्विता
जयति काशिका सुप्रकाशिका ।।१८।।
सकलसम्प्रदायैः सुसङ्कुला
निखिलभारतीयैः सुसेविता ।
विविधदेवतावासरूपिणी
जयति नित्यरूपाऽविनाशिनी ।।१९।।
लसति वर्तुला क्रोशपञ्चसु
प्रगतिकारिणी धर्मधारिणी ।
शिवशरीरिणी लिङ्गरूपिणी
जयति नित्यरूपाऽविनाशिनी ।।२०।।
लसति काशिका लिङ्गरूपिणी
त्वमसि देवि! शक्तिस्वरूपिणी ।

छप्पन विनायकों , बारह आदित्यों ,सात पुरियों तथा भारत के समस्त तीर्थो से युक्त है। सभी सम्प्रदाय और भारत के सभी प्रान्त के लोग यहां रहते हैं और सभी देवों का वास यहां है। यह पच्चीस कोश में गोलाकाररूप में सुशोभित है। इसका

remains suspended on the pinnacle of *Triśūla* and is the annaihilator of afflictions. One comes across the countless *Śiva liṅgas*, fifty one *Śakti-pīṭhas*, fifty-six *Vināyakas*, twelve *Ādityas* and this place is the quintessence of the holy places of India. People from every corner of India come and stay here. It is the dwelling place of all the *Devas*. It sprawls around in a circular

सततमुत्तराशां पयस्विनि!
प्रवह चारुशीलेऽर्घ्यरूपिणी ।।२१।।
अमरलोकतः प्रच्युता मया
शिरसि रुद्धवेगा कृता यथा ।
इह तथैव शूले सुटङ्किता
भवतु मन्दवेगा यशस्विनि! ।।२२।।
भवतु नैव वेगेन विघ्निता
क्वचिदपि प्रिया काशिका मम।
भव सदाऽनुकूला पुरीमभि
प्रवह मन्दगत्या महीयसि! ।।२३।।
व्रजति मञ्जुमञ्जीरशिञ्जिनी
पतिनिकेतनं नूतना वधूः ।
त्वमपि विश्वनाथस्य केतने
कुरु पदार्पणं मन्दधारया ।।२४।।

आकार शिवलिङ्ग जैसा है। अतः हे पयिस्वनि ! तुम शिव लिङ्ग रूप काशी की अर्घा बन कर उत्तर दिशा में बहो ।।१५-२१।।

स्वर्गलोक से आते वक्त जैसे मैंने तुम्हारे वेग को मस्तक पर रोका था,वैसे ही मैं तुम्हें त्रिशूल पर रोक रहा हूँ; अतः हे यशस्विनि ! अब तुम धीमी गति से बहो, जिससे मेरी प्रिय काशी वेग से बाधित न होवे । जैसे नवेली दुल्हन नुपुरों की रुन झुन करती पति के घर धीरे- धीरे जाती है, वैसे ही तुम भी विश्वनाथ के घर में मन्द

radius of twenty-five *krośas* and resembles the shape of a *Śiva liṅga*. Therefore, O river *Gaṅgā*! flow as the *Arghā* of *Kāśī*, flow northward."[15-21]

Śiva continues,"as I had controlled your velocity on my forehead at the time of your descent on the earth, similarly I will hold you here on my *Triśūla*, therefore, O the glorious one ! now you flow slowly so that my beloved *Kāśī* does not get disturbed by your speed. As the newly-wed bride enters the husband's house with the anklets musically ringing, similarly you too enter the house of *Viśwanātha* softly. As the crescent moon adorns my

मुकुटरूपिणी राजते यथा
शशिकला सिता शेखरे मम ।
विलस काशिकामस्तके तथा
सततमर्धचन्द्रस्वरूपिणी ।।२५।।
अहमिहाऽभिधीये शुचिस्मिते!
सुमुखि! शूलटङ्केशसंज्ञया ।
त्वमपि शूलटङ्केश्वरी सती
प्रवह काशिकायां निरन्तरम् ।।२६।।

* * * * *

प्रेयसी धूर्जटेः साऽभिलाषावती
प्रेमपूरं समादाय नीरात्मकम् ।
शान्तझङ्कारशीलैः पदैः कोमलैर्
वीचिरूपैः प्रविष्टाऽथ वाराणसीम् ।।२७।।
उत्तराशामगाच्छूलपाणेः प्रिया
काशिराजस्य दुर्गं स्पृशन्ती मुदा ।

धारा से जाओ। जैसे मेरे मस्तक पर चन्द्रकला मुकुट सी विराजती है वैसे ही अर्ध चन्द्राकार तुम काशी के मस्तक पर सुशोभित होवो। हे पवित्र मुस्कान वाली सुमुखि! मै यहां शूलटङ्केश्वर नाम से जाना जाता हूँ, तुम भी शूलटङ्केश्वरी बन कर काशी में निरन्तर बहो ।। २२-२६।।

धूर्जटि की प्रेयसी गङ्गा प्रिय से मिलने की अभिलाषा से प्रेम-प्रवाह रूपी जल को लेकर शान्त झङ्कार वाले लहरों रूपी पैरों से वाराणसी में प्रवेश करने लगीं। काशिराज दुर्ग को छूती हुई शूलपाणि की प्रिया उत्तर दिशा में बहने लगी। उसने

brow, similarly you too adorn the forehead of *Kāśī* in your crescent shape. O you with pure smile and charming looks! here I am known as *Śūlaṭaṅkeśwara* and you too flow eternally as *Śūlaṭaṅkeśwarī* at *Kāśī* [22-26]

Gaṅgā, the beloved of *Dhūrjaṭī* has entered *Kāśī* to be united with Her lord with the stream of love, treading on Her feet of serene echoing waves She, the beloved of *Śūlapāṇi*, flows

अस्मरद् देवभक्तं परं नैष्ठिकं
तं दिवोदासनामानमाद्यं शुचिम् ।।२८।।
रामलीलां मनोहारिणीं विश्रुतां
काशिराजस्य दुर्गे समायोजिताम् ।
द्रष्टुमुत्कण्ठिता लोलवीच्यक्षिभिर्
नूनमायाति गङ्गा जगन्मङ्गला ।।२९।।
प्राच्यविद्याप्रतीचीविधा-संयुतं
मालवीयस्य कीर्तिध्वजं सुन्दरम् ।
अर्धचन्द्राकृतिं विश्वविद्यालयं
सम्प्रति स्थापितं प्रेक्षते पण्डिता ।।३०।।
ऊर्मिणामंशुकेनाऽऽवृतं कोमलं
स्नेहपूर्णं शरच्चन्द्रगौराननम् ।
उन्नमय्येक्षते चारुकान्तालयः
कान्तया लोलमीनायताक्ष्या मुहुः ।।३१।।

दिवोदास नामक देवभक्त, सात्त्विक, निष्ठावान् प्रथम राजा का स्मरण किया। आज भी वह काशिराज दुर्ग में आयोजित होने वाली विश्व प्रसिद्ध रामलीला को चञ्चल लहरों रूपी आंखों से देखने की इच्छुक रहती है। प्राच्य विद्या और पश्चिम के आधुनिक वैज्ञानिक कला का जहां अद्भुत समन्वय है,जो महामना मदनमोहन मालवीय का यशःस्तम्भ है तथा अर्धचन्द्राकार है, उस काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को भी पण्डिता गङ्गा आज कल देखती हुई जाती है ।। २७-३०।।

लहरों रुपी घूंघट में छिपे कोमल, स्नेहपूर्ण तथा शरदकालीन चन्द्रमा के समान

northward touching the *Kāśirāja* castle. She carries the memory of the first king *Divodāsa*, a pious and religious being. She has always been eager to watch the famous *Rāmalīlā*, arranged in the *Kāśirāja* castle. As She flows past the banks, the erudite *Gaṅga* watches the Banāras Hindu University, a place, where one notes a wonderful fusion of modern western values and the knowledge of the east, i.e. the occidental and the oriental traditions lie firmly united here. Truly, it is the great achievement of *Mahāmanā Madan Mohan Mālvīya*.[27-30]

Hidden behind the veil of waves the newly wed *Gaṅgā* looks

भर्तृगेहं सुघट्टाङ्कितं पश्यति
श्रीसमृद्धं षडैश्वर्यपूर्णं पुरम् ।
ज्ञानवैराग्ययुक्तं सुशान्तिप्रदं
काशतेऽध्यात्मभासा परं मुक्तिदम् ।।३२।।
चिन्तने शास्त्रतत्त्वं मुखे कीर्तनं
मन्यते यत्र मृत्युः परं मङ्गलम् ।
सर्वतीर्थस्वरूपं पवित्रं पुरं
पश्यति ब्रह्मविद्यानिकेतं शुभम् ।।३३।।
क्रोशपञ्चात्मकं शम्भुभक्तिप्रदं
रक्षितं भैरवेण प्रबोधे रतम् ।
सेवितं सिद्धभक्तैर्बुधैर्ज्ञानिभिर्
वेद - वेदान्त- मर्मज्ञसंन्यासिभिः ।।३४।।

गोरे मुंख को उठा कर नव वधू गङ्गा मछलीरूपी आँखों से मानो अपने कान्त शिव के घर को देख रहीं है ; जो सुन्दर घाटों से युक्त, शोभा सम्पन्न तथा षड्ऐश्वर्य से पूर्ण है। जो ज्ञान, वैराग्य एवं शान्तिदायक है तथा आध्यात्म ज्योति से देदीप्यमान और नित्य मुक्ति देने वाला है। जहाँ सदा शास्त्र चिन्तन एवं हरिनाम संकीर्तन होता है, जहाँ मृत्यु को मङ्गल समझा जाता है, जो सब तीर्थों का प्रतीक तथा ब्रह्म विद्या का आलय है। जो पच्चीस कोस में स्थित, शम्भु की भक्ति देने वाला , काल भैरव के द्वारा रक्षित, सिद्ध भक्त, विद्वान् और ज्ञानीजनों तथा वेद-वेदान्त के मर्मज्ञ संन्यासियों का निवास स्थल है।।३१-३४।।

up with a face as charming as the autumnal moon. She looks at the dwelling place of Her consort *Śiva* which is dotted with beautiful *ghāts*. It generates the longing for renunciation. It is the source of knowledge, peace, spirituality and liberation. It is the abode of *Brahma Vidyā* where flow of religious discourse continues perennially. Here death is supposed to be blessing. It spreads over an area of twenty-five *krośas*, inspires devotion and remains to be the home of the spiritually enlightened people.[31-34]

यावदायाति कल्लोलिनी स्रग्विणी
किञ्चिदध्वानमग्रे शनैर् लीलया ।
तावदादाय तां स्वल्पनीरामसिं
निर्मला प्रावहद् दीर्घकालावधिम् ।।३५।।
किन्त्विदानीमसौ नष्टदेहामसिं
कुष्ठरोगेणशीर्णामिव प्रेक्षती ।
रक्ष वाराणसीनाथ ! विश्वेश्वर!
त्राहि-पाहीति रोदित्यसौ व्याकुला ।।३६।।

श्रीगङ्गा प्राह

अभिमुखी पुराऽसिः सुशोभिता विमलवारिभिः प्रावृषि प्रभो!
अहह! मामिदानीं मलाऽऽपगा मलिनतां वहन्ती समागता ।।३७।।

कल्लोल करती हुई माला से युक्त गङ्गा जब धीरे –धीरे आगे बढ़ी तो स्वल्प जल वाली असि नदी उनसे आकर मिली । वे वर्षा काल में उसके निर्मल जल को लेकर बहुत काल तक बहती रहीं। किन्तु वर्तमान समय में कुष्ठ रोग से ग्रसित तन्वी की भांति विलुप्त देहा असि को देख पुकार उठती है गङ्गा – "हे! वाराणसी नाथ! हे विश्वेश्वर ! रक्षा करो, बचाओ"। टूट जाता है धैर्य का बांध उसका और करती है करुण क्रन्दन इस प्रकार– ।।३५–३६।।

" करती थी कभी अगवानी मेरी / वर्षा के विमल जल से जो / वही आज मल संवाहक नाला बन कर / मल समूह को लाती हुई आ रही है मेरे पास / अमृत जल

Long ago when *Gaṅgā* with Her waves went forward singing happily, the lean river *Asi* joined Her. She had flowed for a long time carrying her pure water during the rainy season. But at present, *Gaṅgā* looks at *Asi* who seems to be emaciated like a leper woman. Her patience is lost and She cries out thus, " O you Lord of *Vārāṇasi*, O *Viśweśwara*! protect me!Save me![35-36]

She, who once welcomed me with the pure water of rains, today comes to me with putrid sewage water. I am impoverished despite my reserve of chaste water. Endless pollution enters me.

अमृततोयसंवाहिनी बत प्रचुरदीनतां हन्त! प्रापिता।
सकलदूषणं याति मज्जले हरतु मे व्यथां , हा हता हता।।३८।।
त्रिदशपूजितेयं पुरी तव त्रिपथगाऽमृताऽहं महानदी।
मलिनमानसैर्मानवैरुभे दयित! नाशिते पापनाशिके ।।३९।।
वदति यच्च नित्यत्वमावयोर्वचनमप्रमाणं तदस्ति किम् ?
बहुमला च वाराणसीपुरी विकृतदर्शनाऽहं प्रदूषिता ।।४०।।
अघविदारणाय प्रवाहिता शिव! पुरा जटाजूटतस्त्वया ।
अघविनष्टदेहा कृता नरैर्हरतु मे व्यथां हा हता हता।।४१।।
जगति नोचितं प्राप्यतेऽधुना मिलति वैपरीत्यं च सर्वतः ।
उपकरोति यः, सैव हन्यते किमु न लभ्यते वञ्चनादृते ।।४२।।
विकृतमन्नमेवाद्यते जनैर्विषमयं जलं चैव पीयते ।
यदमृतं तदेव प्रदूष्यते किमिदमद्भुतं नाशहेतुकम् ? ।।४३।।

की संवाहिनी मैं / हो रही हूँ प्रचुर दीनता को प्राप्त / घुल रहे हैं असंख्य प्रदूषण मुझमें / बार-बार हे प्रिय शिवशङ्कर ! / देवपूजित है तुम्हारी काशी पुरी / मै हूँ त्रिपथगा महानदी / पापों का नाश करने वाली / हम दोनों का ही किया है विनाश/ मलिन मन मानव ने आज / वाराणसी और मुझे कहते हैं नित्य जो / असत्य हो गये हैं क्या वे शास्त्रवचन आज?/ तुमने तो भेजा था कभी / पापों के नाश के लिए जटाजूट से अपने / नष्ट कर डाला है मानव ने / अपने ही पापों से मुझे आज /।। ३७-४१।।

नहीं दिखता जगत् में कुछ भी सही / सब कुछ उल्टा ही हो रहा है सर्वत्र / उपकारी मारा जा रहा है / वञ्चना है चारों ओर / अहो! कैसी है ये उन्मादी भीड़/ खाती विकृत अन्न / विषैला जल पीती / अमृत को विष बनाती/बुला रही है अपने

O Lord *Śiva Śaṅkar* ! your *Kāśīpurī* is venerated by *Devas*. I am the *Tripathagā Mahānadī*. Today the vicious mind of man has ravaged us i.e. *Vārāṇasī* and myself, who are known to be the eradicators of sins. Are the time honoured words of the scriptures, which call both of us eternal, proved wrong? Once you had sent me down from the mesh of your locks to uproot sins but human beings have defiled me with thier own sins.[37-41]

The world seems to be a topsy-turvy one. The benefactor is being tortured. It is deception everywhere. Oh! it is a mad crowd, which devours rotten food, drinks poisonous water and converts

हितविचारमत्याहितं स्वकं प्रसरति प्रियं स्थूलचिन्तनम् ।
विजयतेतमां बाह्यमण्डनं सरसताऽन्तरो हन्त! लुप्यते ।।४४।।
बलविहीनता बुद्धिहीनता श्रुतिविरोधिता रूढिवादिता ।
हृदयभीरुता रुग्णसभ्यता विरसता दरीदृश्यतेऽधुना ।।४५।।
प्रखरतापिता व्याधिपीडिता मनसिजेन हा! जर्जरीकृता ।
असमये तु कालेन मानवाः कवलिताः पिपासाक्षुधाऽऽकुलाः ।।४६।।
मुखरिता महोपद्रवा भुवि प्रतिदिनं विनाशोन्मुखी कथा ।
अवतु नाथ! मां हन्त! दूषितां मलिनताऽधुनाऽसह्यतां गता ।।४७।।
प्रतिनिर्वतितुं वाञ्छितं मया तव जटासु शम्भो ! हिमालये ।
शिव! यथा भवेयं सुरक्षिता प्रिय! तथा प्रयत्नो विधीयताम् ।।४८।।

ही सर्व नाश को / छोड़ दिया है हितकारी विचार / फैल रहा है सतही चिन्तन/ बाहरी तड़क-भड़क की धूम मची है/ आन्तरिक सरसता हो रही लुप्त / निर्बलता , बुद्धिहीनता, वेदविरोधिता, रूढिवादिता, हृदय भीरूता से / रुग्ण है सम्पूर्ण सभ्यता / विरसता ही विरसता है दिखती सर्वत्र / प्रखर ताप से और व्याधि से पीड़ित है नर नारी आज / कामदेव ने बना दिया है सबको जर्जर/समय के पूर्व कालकवलित हो रहे हैं वे / अन्तः प्रदूषण मुखरित है चहुं ओर / उपद्रवों में, हाहाकार ध्वनियों में / नहीं सहा जाता नाथ! यह सन्त्रास / लौटा लो - लौटा लो फिर से जटाओं में शम्भो / बचा लो मुझे प्रयत्नपूर्वक आज / ।। ४२-४८।।

nectar into venom. It invites its own doom. It has forsaken beneficial ideas. It is gripped by superficial ways of life: pomp and show abound here. The inner sense of harmony is disappearing fast. The entire civilization is a prey to debilitated, foolish ways. It opposes scriptures and supports heterodox attitude. There is staleness everywhere. Human beings are stricken by terrible diseases. Lust has rendered them into a dilapidated state and consquently they reach an untimely end. Pollution clamours all around in the form of disaster. It is an unbearable state of affairs. Call me back O Lord, to your locks! O *Śambhu*! do save me with your utmost efforts"[42-48]

शिवः प्राह

अममलं प्रिये! क्रन्दनेन ते जहि न धीरतां देवि! सुव्रते !
समयचक्रमेतद् विलक्षणं विपरिवर्तते भूतलेऽनिशम् ।।४९।।
अतिविसङ्गता दृश्यते हि या कलहसङ्कुला स्वार्थतत्परा ।
अशिवरूपिणी मूढतामयी मम तमोमयी सृष्टिरेव सा ।।५०।।
अहह! संहरामि त्रिलोचनो जगदहं महाकालभैरवः[१०] ।
त्वमपि पापमत्तुं करालिका विजयसेऽतिक्रुद्धा भयङ्करी ।।५१।।
कमललोचने! हे मनस्विनि! स्मरसि चिन्मयत्वं न किं निजम् ।
किमु सनातनत्वं च विस्मृतं त्रिपथगामिनि! प्राणदे ! शिवे! ।।५२।।
चितितरङ्गमाला ऋतम्भरे! मम जटासु ते सुप्रवाहिता ।
तव न नित्यता बाधिता क्वचित् कथमतोऽसि दीना प्रदूषिता ।। ५३।।

बोले शिव - हे प्रिये! करो न क्रन्दन इस प्रकार/ सुन्दर व्रत लिया है तुमने पतितों के उद्धार का / धीरता न छोड़ो / समय का चक्र निरन्तर घूम रहा है पृथ्वी तल पर अद्भुत / कलह कोलाहलभरी, स्वार्थतत्पर, अकल्याणी मूढ़ता से भरी/ है यह तमोमयी सृष्टि मेरी ही/ करता हूँ मैं संहार इसका काल भैरव के रूप में / तीसरा नेत्र खोल कर/ तुम भी उस समय कराल काली के समान / क्रोध से भरी लगती हो भयङ्करी / कमल के समान आंखों वाली हे मनस्विनि ! क्यों याद नही चिन्मयता अपनी / क्या भूल गई तुम सनातनता को / प्राणों का सञ्चार तुम्हीं तो करती हो हे कल्याणी!/ ' तुम हो ऋतम्भरा प्रज्ञा / मेरी जटाओं में तुम्हारी ही चैतन्य तरङ्गें बह रहीं निरन्तर/ नहीं हो सकती तुम्हारी नित्यता बाधित कभी / तुम क्यों समझ रही हो

Śiva utters, "O beloved! do not wail thus. You have undertaken the great task of redeeming the fallen. Loose not your patience. The exquisite wheel of time rotates uninterruptedly. This creation of mine is rife with strife and conflict, selfishness and baneful ignorance. At such a juncture I intend to destroy it in the form of *Kālabhairava* by opening my third eye. You too at that time appear like the terrible *Kālī* filled with rage. O lotus-eyed! O virtuous! don't you recall your own inner enlightenment? Have you forgotten your essense of eternity? You are the *Tripathagāminī*. You generate life. O you *Ṛtambharā*! in my locks the waves of your enlightenment move incessantly. None can end your eternity. Why do you think yourself

चितिमयी सुषुम्णानिवासिनी[११]
त्रिवलया तुरीया भुजङ्गिनी ।
किल समाधिगम्याऽविनाशिनी
जयति काशिका सुप्रकाशिनी ।।५४।।
दुरितमस्यति द्रागसिस्तथा
वरणयांऽहसां वारणं भवेत् ।
उभयमन्तरा या विराजते
जयति सैव वाराणसी वरा[१२] ।।५५।।
परमसच्चिदानन्दरूपिणी
भवति सा भ्रुवोर्मध्यवर्तिनी ।
द्विदलपद्मचक्रस्य भेदिनी
जयति सर्वदा ज्ञानदीपिनी ।।५६।।
तदविमुक्तमित्युच्यते बुधैः
पशुपतिः शिवो यत्र मुञ्चति ।

अपने को दीन प्रदूषित ? /।। ४९-५३।।

सुषुम्ना नाड़ी में रहने वाली / तीन वलयों में लिपटी, कुण्डलिनी योग द्वारा अनुभव में आने वाली / प्रकाशमयी है काशी मेरी /काटती पापों को जो है वह असि/ पापों से हटाती जो वह वरणा कहलाती / दोनों (असि-वरणा) के मध्य विराजती वाराणसी / भ्रू प्रदेश के बीच राजती / आज्ञा चक्र का भेदन करती/ परम सच्चिदानन्दरूपिणी / ज्ञानदीपिनी है यह काशी / असि वरणा के मध्य क्षेत्र /

to be impoverished and polluted?[49-53]

My luminious *Kāśī* is held by *Suṣumṇā* lying in three folds. It can be experienced as *Kuṇḍalinī* in the stage of meditation. The one which slashes sins like a sword is *Asi*. The one which expunges sins is called *Varaṇā*. *Kāśī*, which resides between the two, i.e. *Asi* and *Varaṇā* pierces as *Ājñā-chakra* in between the eyebrows and stands as the symbol of knowledge. It is in reality, *Sat*, *Chit* and *Ānanda*. This point between *Asi* and *Varaṇā* is known

परममुक्तिदं धाम सर्वतो-
ऽसिवरणावृतं सुप्रतिष्ठितम् ।।५७।।
विलसतीह विश्वेश्वरः सदा
शरणदः कृपालुः प्रियङ्करः ।
सकलकर्मविद्रावणे क्षमो
भवति सैव रुद्रश्चिदात्मकः ।।५८।।
उपदिशन्नटत्यत्र योऽनिशं
मरणधर्मिणो मन्त्रतारकम् ।
न हि पुनः - पुनर्येन संसृतिं
समुपयाति जीवस्तदात्मकः[१३] ।।५९।।
परमगोपनीयं सनातनं
न हि रहस्यमेतद्धि बुध्यते ।
श्रुतिनिरूपितं गह्वरे स्थितं
समधिगम्यते योगिभिः शुभम् ।।६०।।
सुमुखि! पञ्चभूतेषु दूषिते -
ष्वपि चितिः परा नैव नश्यति ।

कहलाता है अविमुक्त क्षेत्र / नहीं छोड़ते शिव-पार्वती इसे / रहते सदा विश्वेश्वर यहां/ सब कर्मो को काटने वाले रूद्र / वही हैं चित्स्वरूप शिव / मरने वाले जीव को देते / तारकमन्त्र विमुक्तिप्रदायक/ यह रहस्य अति गोपनीय है/ योगी देख सकें समाधि में / वेद निरूपित गूढ़ है सदा / हे सुन्दर मुख वाली गङ्गे / पञ्चभूत दूषित हों तो भी / है परा चिति सदा सुरक्षित /भोगेगा अपने कर्मों का / फल खल मानव

as *Avimukta*, because *Śiva* and *Pārvatī* never desert this place. *Viśweśwara* ever resides here and *Śiva*, the eternal consciousness who severs every *Karma* of the entire creation is no one else, but *Rudra*. He gives the *Tāraka Mantra* to the departing souls. It is a mystery which has to be guarded securely. Only the *yogīs* know it in their meditation. O beautiful-faced beloved ! the ultimate consciousness (*Parā-chiti*) is ever protected though the five elements may become sullied. Wicked human

फलमवश्यमेव स्वकर्मणः
समुपभोक्ष्यते मानवः खलः ।।६१।।
यावत् स्यान्न धगद्-धगद्-धगदिति ज्वाला ललाटोद्गता
रौद्री प्रज्वलिता तृतीयनयनाद् विद्राविणी राविणी।
तावत्त्वं परिवर्तनाय सुतरामाकाङ्क्षती भूतले
गङ्गेऽघानखिलानपेतुमचिरेणैव प्रतीक्षस्व माम् ।।६२।।

सूनृतां वाचमाकर्ण्य गङ्गा नदी
सङ्गमेशं प्रणम्याऽसिघट्टे स्थितम् ।
शृण्वती याति काचिन्नवीनां ननु
स्वच्छगङ्गाऽभियानात्मिकां योजनाम् ।।६३।।

श्रीतुलसी हुलसीसुतो हनुमतः प्रेमास्पदं सत्कविः
रामस्याऽमित-कीर्तिगान-पटुतामाप्तुं धुनीं प्रार्थयन्[१४] ।

आगे चलकर/ ।।५४-६१।।

जब तक मेरे तीसरे नेत्र से जगत् का विदारण करने वाली भयङ्कर ज्वाला धग्-धग् करके नहीं जल जाती, तब तक तुम परिवर्तन की आकांक्षा करती हुई हे गङ्गे ! सम्पूर्ण पापों को नष्ट करने के लिए कुछ दिन मेरी प्रतीक्षा करो और निर्विशेष भाव से बहो ।।६२।।

इस मधुर सत्य वाणी को सुनकर गङ्गा नदी असि सङ्गमेश्वर को प्रणाम करके 'स्वच्छ गङ्गा अभियान' नामक नवीन योजना को सुनती है। श्री हनूमान् के भक्त गोस्वामी तुलसीदास श्रीराम के यशोगान के लिये निपुणता प्राप्त करने हेतु गङ्गा से

beings shall reap the fruit of their misdeeds themselves.[54 -61]

Till that time, the terrible blaze from my third eye does not burst forth to lacerate the world, you O *Gaṅgā* ! awaiting change, flow non-chalantly for some more time and await for me to destroy every sin.[62]

On hearing the immortal words *Gaṅgā* salutes *Asi-Saṅgameśwara* and listens to the import of the new project 'CLEANSE GAṄGĀ'. She touches the bank of that very *ghāt* with Her sharp currents as if to hear sublime joy of poetry, where

यत्रोवास सुखेन तस्य कवितां सुश्रूषमाणेव सा
तं घट्टं स्पृशति द्रुतोर्मिनिचयैः काव्यप्रिया कोमला ।।६४।।

अद्यापीह श्रृणोत्यसौ ध्रुवपदं सङ्गीतगोष्ठ्यामहो !
स्व-स्वच्छीकरणाय तर्कबहुलं कोलाहलं च क्वचित् ।
दृष्ट्वैतान् तटवर्तिदूषणकरान् रात्रिन्दिवं सङ्गतान्
मिथ्या मा वदतेति वक्ति कुपिता क्षुब्धैस्तरङ्गैर्न किम् ? ।।६५।।
वत्सराजस्य[१५] संस्मारकं सुन्दरं
घट्टमालोकते चारुमन्दस्मिता ।
प्रेमगाथा प्रसिद्धा सुवर्णाङ्किता
यस्य काव्येषु नाट्येषु मोदावहा ।।६६।।

प्रार्थना करते हुए जहां निवास करते थे, उस घाट को, मानो सत्कवि की कविता को सुनने की इच्छुक काव्यानुरागिणी, कोमल हृदया गङ्गा अपनी तेज लहरों से छूती है।यहीं पर रसिक गङ्गा संगीत गोष्ठियों में ध्रुपद का गायन सुनती है और कभी अपने को स्वच्छ करने के लिए दिये गये तार्किक भाषणों को भी सुनती है। किन्तु अपने तट पर रात-दिन बहे हुए नालों को देख कर क्या वह अपनी क्षुब्ध तरङ्गों से यह कहती हुई नहीं लग रही है कि "मुझे स्वच्छ करने की झूठी दलीलें न दो"? ।।६३-६५।।

जिसकी प्रेम कथा काव्य और नाट्य में सुन्दर शब्दों में अङ्कित है, उस वत्सराज उदयन के स्मारक घाट को देख कर वह मुसकाती है। संस्कृति के प्रतीक नवीन

Tulasīdāsa, the devotee of *Śrī Hanumān* once resided and prayed to *Gaṅgā* to win Her grace to enable him to sing the praise of *Śrī Rāma* more poignantly. Here itself the connoisseur *Gaṅgā* listens to *Dhrupada* concerts and some times She listens to the so-called deliberations rendered powerfully so as to clean Her water. But don't Her disturbed waves seem to say on looking at the garbage flowing incessantly into Her, "this cleaning of *Gaṅgā* is all hoax"?[63-65]

She looks smilingly at the *ghāt* constructed to commemorate the memory of *Vatsarāja Udayan*, whose tales of love have been immortalized in poems and plays so compellingly. As a witness

साक्षिभूतेतिहासस्य सा सर्वदा
शिल्पिभिः सज्जितान् स्मारकानीक्षते।
सान्ध्यशोभाभिरामान् पुरा निर्मितान्
संस्कृतेः सुप्रतीकान् नवान् सुन्दरान् ।।६७।।

अलिकुलमधुगीतैर्बुध्यमाना निशान्ते
मुकुलितकलिकाभिर्नेत्रमुन्मीलयन्ती ।
विलसति सुकुमारी दिग्पटी गाङ्गतीरे
प्रमुदितवदनाऽसौ चारुसन्ध्यावधूटी ।।६८।।
नयनसरसिजं सा मीलयित्वा दिनाऽन्ते
प्रियविरहजदुःखं भावयन्तीव खिन्ना।
विकसितकमलाक्षी भाति रम्या प्रभाते
तरुणमरुणमर्कं द्रष्टुमुत्कण्ठितेव ।।६९।।
अरुण-तिलक-विन्दुं धारयन्ती ललाटे
सुर-नर-मुनिवन्द्यां स्वर्धुनीं द्रष्टुकामा।

सुन्दर घाटों को देखती, जो सन्ध्या काल में बड़े अभिराम लगते हैं। ६६-६७।।

काशी में गङ्गा तट की सुबह (सुबहे बनारस)बड़ी सुहानी लगती है। रात के अवसान में भ्रमर -समूहों के मधुर गुञ्जन से जगाई जाती हुई, मुकुलित कलियों रूपी आंखों को खोलती हुई, दिशा रूपी पट पहने हुए सुन्दर, सुकुमारी, प्रसन्न वदना सन्ध्या वधूटी सुशोभित होती है। खिले कमल रूपी नेत्र वाली वह तरुण सूर्य को देखने की उत्सुक है। सूर्य रूपी लाल बिन्दी को माथे पर लगाई हुई, प्रातः

to the course of history *Gaṅgā* watches the ancient *ghāts* and the more modern ones made by skilled artisans.[66-67]

The early rays of the dawn at the bank (Subahe Banāras) seems to be exquisite. Like a bashful bride the dusk (*Sandhyā*) wears the attire of the *Diśās*. At the end of the night she is awakened by the humming bees. With her eyes like fully opened lotus, she is eager to get a glimpse of the young sun, who becomes the red vermillion dot on her forehead.She, the *Sandhyāvadhū* of early

विहसित-सित-पुष्प-स्फीत-दन्तावलीभिः
प्रकटितमृदुहासा भासते नित्यमैन्द्री ।।७०।।
उषसि सुरतटीं सा सादरं पूजयन्ती
द्विजकृतजपचर्या-वन्दना-वेदपाठैः ।
खग-कलरव-नादैर्निस्वनं घण्टिकानां
सततमनुरणन्ती भासते नित्यमैन्द्री ।।७१।।

अद्भुतं वास्तुशिल्पेऽङ्कितं तान्त्रिकं
भावलोके निगूढं रहस्यं परम् ।
सप्तद्वारैरुपेतं गुरोर्मन्दिरं
प्रेक्षते जीर्णतां प्रापितं साम्प्रतम्[१६] ।।७२।।
यः श्मशाने चचाराऽद्भुतां साधनां
सिद्धिदां गोपनीयां तथा दुर्लभाम् ।

कालीन सन्ध्या वधू सुर-नर-मुनि द्वारा वन्दित स्वर्धुनी को देखने की उत्सुक है। खिले श्वेत फूलों रूपी दन्तावली से मृदु हास करने वाली पूर्वदिशा, श्री गङ्गा का ब्राह्मणों के जप-तप स्तुति-वेदपाठ द्वारा सादर पूजन करती हुई तथा पक्षियों के कलरव रूपी घण्टियों को बजाती हुई शोभायमान है। ६८-७१।।

भावलोक के अमूर्त सूक्ष्म रहस्य को जहां वास्तुशिल्प में उकेरा गया था, सात द्वारों को पार करके गुरु के धाम में पहुंचने का स्वरूप जिसमें प्रदर्शित था, ऐसे गुरुधाम मन्दिर को अब वह जीर्ण-शीर्ण नष्टप्राय देख रही है। उसके बाद वे

dawn, is curious to see *Swardhunī*, who is worshipped by the deities, human beings and sages. The eastern horizon wears a soft and beaming smile of white flowers. It adores *Gaṅgā* with its clang of temple bells and chant of *Vedic* hymns by *Brāhmins*. The whole scenario is enlivened by the music of the chirping of birds.[68-71]

The intangible mystery of the world of imagination has got engraved in the architecture of the *Gurudhām* temple. She (*Gaṅgā*) watches it which once had been a gateway to the abode of *Guru*, lying in a derelict condition. Then She reaches *Śivālā-Ghāt* where

स्नापितो ध्यानलीनः शवे संस्थितो
गङ्गया वीचिभिर्दीर्घकालावधिम् ।।७३।।
सैव घोरोप्यघोरोऽवधूतो महान्
साधकः 'चेतसिंहं'[१७] प्रमादे रतम् ।
'भ्रष्टराज्यो भवे' तिं क्रुधा शप्तवान्
कौलमार्गी किनारामन्नामा यतिः ।।७४।।
निर्जितः काशिराजस्दाऽङ्ग्लैर् बत
श्रीविहीनः पराभूय यातः क्वचित् ।
सैनिकास्त्यक्तदेहास्तदीया रणे
शेरते स्म प्रजा लुण्ठिताऽऽक्रामकैः।।७५।।
आक्रान्तं नृपदुर्गमाङ्गलगणैर् गौरैः करालैर्भटैः
पौराः क्रूरकृपाणघातविगतप्राणा यमं प्रापिताः।
काशीं क्रन्दनपूरितां शवमयीं विद्रूपिणीमीक्षती
गङ्गाश्रूणि विमुञ्चति स्म रुधिरैर्म्लानाऽतिशोकाकुला[१८]।।७६।।

शिवाला घाट पहुंची, जहां श्मशान में अत्यन्त गोपनीय शव साधना में लगे, गङ्गा द्वारा अपनी लहरों से दीर्घ काल तक नहलाये जाते हुए किनाराम नामक अवधूत अघोरी को देखती रही; जिन्होनें प्रमादी राजा चेतसिंह को भ्रष्टराज्य होने का शाप दिया। उनके शाप देते ही काशिराज चेतसिंह अंग्रेजों द्वारा पराजित हुए और राज्य विहीन होकर महल छोड़ कर भाग खड़े हुए। उसके सैनिक मारे गये और प्रजा लूट ली गई। वह दृश्य बड़ा भयङ्कर था। राजा के दुर्ग को अंग्रेजों के क्रूर सैनिकों ने घेर लिया, पुरवासियों को तलवार के घाट उतार दिया गया। पूरी काशी क्रन्दन और

She has witnessed for a long time the *Aghorī Avadhūta Kinārāma* who had been engaged in secret *Śava-Sādhanā*. He once had cursed *Chet Singh*, the erring king of Banaras to be dethroned. It is said that after being cursed by the *Avadhūta, Chet Singh* was defeated by the British and later escaped from his palace. His soldiers were killed and his subject was looted. It was a terrible sight . The British soldiers had surrounded the castle of the king and the inhabitants of the city were killed. The entire *Kāśī* echoed with the howl of jackals and became ugly due to the piled

स्कन्ददेवो हनूमत्प्रघट्टे स्थितो
भैरवो रूरुरप्यर्च्यते नित्यशः।
संस्थिता यत्र सर्वे ग्रहाः शान्तिदाः
तत्र प्राप्ताऽथ गङ्गा महापुण्यदा ।।७७।।
अस्थिक्रव्यनिकेतनी शिवरुतैः पूर्णा श्मशानेश्वरी
दुर्गन्धैकमयी चिताऽनलयुता कापालिकैः सेविता ।
प्रेतानां चिरनिद्रयाऽतिगहनादोषेव निःशब्दिता-
ऽत्रैवाऽऽद्या[१९] मणिकर्णिकाऽपि निकटे मोक्षप्रदाऽऽलोक्यते ।।७८।।
सत्यनिष्ठः प्रतापी शुचिः सात्त्विको
दानशीलो हरिश्चन्द्रनामा नृपः ।
स्वीचकाराऽत्र चाण्डालकर्माऽनघ[२०]:।
स्मर्यमाणोऽनया मीयतेऽहर्निशम् ।।७९।।

चीत्कार से भर उठी और शवों से पाट दी जाने से विद्रूप हो गई। यह सब देख कर गङ्गा खून से मलिन हो कर शोकाकुल हो आंसू बहाती रही । ७२-७६।।

शिवाला से गङ्गा हनुमान घाट गई जहां रूरू भैरव, नवग्रह तथा हनूमान् जी हैं। तत्पश्चात् हड्डियों और मांस का आलय, सियारिनों के शोर से भरी दुर्गन्धमयी, चिताओं से पटी, कापालिकों द्वारा सेवित प्रेतों के चिर निद्रा से अत्यन्त सुनसान निःशब्द रात्रि के समान, श्मशान को मोक्षदायिनी आद्यमणिकर्णिका के समीप देखती है। यहीं पर सत्यनिष्ठ, प्रतापी, पवित्र, धार्मिक, दानशील राजा हरिश्चन्द्र ने चाण्डाल कर्म स्वीकार किया था ।।७७-७९।।

up number of corpses. *Gaṅgā* got soiled with blood and shed tears at these experiences.[72-76]

From *Śivālā Gaṅgā* proceeds towards *Hanumān-ghāt* where the idols of *Rūrū Bhairava*, *Navagraha* and *Hanumān* are worshipped. After going past this *ghāt Gaṅgā* touches the bank of the *Smaśāna* which holds the debris of flesh and bones. It resounds with the echoes of the howl of wolves. A putrid smell permeates the place as pyres burn everywhere. It is a place acutely lonely like the silent night as the spirits sleep here undisturbed. Here itself the great king *Hariśchandra* renowned for his honesty, purity, valour, piety and generosity had accepted profession of a *chāṇḍāla*.[77-79]

श्रूयते देवनद्याः पवित्रे तटे-
ऽत्रैव चाण्डालवेषोऽशुचिः शङ्करः ।
भेदबुद्धेर्निरासाय वेदान्तिनं
स्वस्वरूपं समादर्शयत् शङ्करम्[२१]।।८०।।

आनन्दः चिदहं शिवोऽहमचिरं साक्षात्कृते चेतसि
श्रीविद्यां त्रिपुरामुपास्त वरदां वात्सल्यपूरां पराम् ।
अद्याप्येष - विशेष - साधनविधिर्यत्रोल्लसत्यर्चने
सैष श्रीपरिभूषितो विजयते तत्कीर्तिकेतुर्मठः ।।८१।।

भैरवी यातना दीयते नो क्वचिद्
देहकेदारनाशो भवत्यन्ततः ।

जनश्रुति है कि देवनदी के तटपर इसी घाट के पास चाण्डाल के वेष में भगवान शंकर ने अद्वैत वेदान्त के मर्मज्ञ शंकराचार्य भगवत्पाद को भेदबुद्धि के निराश के लिए अपना दर्शन दिया, तब उनके अन्तःकरण में मैं आनन्द स्वरूप हूं ,चित्स्वरूप हूं और शिव हूं- ऐसा आत्मसाक्षात्कार हुआ । इसके पश्चात् उन्होंने महात्रिपुर सुन्दरी वरदायिनी वात्सल्यपूर्णहृदया श्रीविद्या की उपासना की । उनके अनुयायी परम्परा प्राप्त इस उपासना पद्धति से आज भी जिस स्थान पर आराधना करते हैं, वह नूतन निर्मित भवन श्रीविद्यामठ के नाम से जाना जाता है, जो श्रीमत् शंकर भगवत्पाद का कीर्तिध्वज है।।८०-८१।।

जहां देहरूपी केदार का नाश हो जाता है और आत्यन्तिकी मुक्ति नाचती है, उस

People say that near this *ghāt* lord *Śiva* appeared in the guise of a *chāṇḍāla* before *Śaṅkarāchāryā*, the profound scholar of *Advaita Vedānta*, to enlighten him with the perception of the non duality of the *Ātman*. There after *Śaṅkarāchārya* got the insight into self knowledge. Then he worshipped *Mahātripurasundarī Śrī Vidyā*. To date his followers hold the same path of worship. Recently *Śrī Vidyā Matha* has been founded at the same place where once he prayed to the goddess.[80-81]

Swardhunī reaches *Kedārā-ghāt*. Here the corporeal existence of beings gets destroyed and the rhythm of inner liberation

मुक्तिरात्यन्तिकी नर्तनं कुर्वती
राजते यत्र तत्रागता[२२] स्वर्धुनी ।।८२।।
अत्र केदारलिङ्गं समुच्चैः स्थितं
किन्तु गङ्गातरङ्गा अधः संस्थिताः ।
केवलं मन्दिरं वीक्ष्यते स्निग्धया
प्रीतिरीतिः किमेतादृशी भूतले? ।।८३।।
पार्वतीरोषभीत्या न दृष्टोऽनया
प्राणनाथो नु केदारनाथोऽनया ।
गौरि! कुण्डे तव स्थापयामि स्वकं
प्रीतिदं तोयमित्याशसंश प्रिया ।।८४।।
सा चतुःषष्टि[२३]मप्येकतः संस्थिताः
प्रेङ्खती योगिनी योगसिद्धाः शुभाः ।
आगता शीतला शीतलामंदिरं
सज्जिताऽनन्तभङ्गैर् मनोह्लादकैः ।।८५।।

केदार घाट में स्वर्धुनी पहुंची। यहां केदारेश्वर का लिङ्ग बहुत ऊंचे पर स्थित है किन्तु गंगा बहुत नीचे है। अतः स्नेह शीला गङ्गा केवल मन्दिर को देखती है ; क्या पृथ्वीतल पर प्रीति की रीति यही है? अथवा अपने प्राणनाथ केदारनाथ को वे पार्वती के रोष के भय से नहीं देखती, अतः गौरीकुण्ड में अपने प्रीति दायक जल को छोड़ आगे बढ़ जाती है। चौंसठ योगिनियों को देखती हुई वे शीतला मन्दिर में अनेक मनोहारी तरङ्गों से सुसज्जित हो कर आती हैं।।८२-८५।।

vibrates. Here the *linga* of *Kedāreśwara* is situated at a great height and *Gaṅgā* flows quite at a lower level. So *Gaṅgā* with all Her love watches the *Kedāra* temple from a distance only. Is separation the fate of love on earth? She does not look at *Kedāra*, Her breath of life, due to the fear of *Pārvati*'s anger and therefore, She leaves Her stream of affection into *Gaurī kuṇda*. She moves embellished with the enchanting waves towards the *Śītalā* temple flowing past the aboad of sixty-four *Yoginis*, i.e. *Chausaṭṭī-ghāt*.[82-85]

अश्वमेधा दशेष्टा पुरा ब्रह्मणा
यत्र यज्ञस्थले तं पुनन्त्यागता ।
संस्मरन्ती प्रयागं पुरा संस्थितं
लुप्तगोदावरी-सङ्गमं[२४] साम्प्रतम् ।।८४।।
तप्तकार्तस्वरोद्दीपते मन्दिरे
विश्वनाथस्य संदर्शनायोत्सुका ।
पूजकानां घटेष्वागता विह्वला
सङ्गताऽथ प्रियेण प्रिया मञ्जुला ।।८७।।
अत्र दृष्ट्वाऽविमुक्तेश्वरस्य स्थलं
ज्ञानवापीं तथा मुक्तिदं मण्डपम् ।
आदिपीठञ्च विश्वेश्वरस्याऽधुना
यावनोपासनागारतः संवृतम् ।।८८।।
दुःखिता भित्तिमध्ये स्थितां स्वाऽनुजां
वीक्ष्य शृङ्गारगौरीं विलुप्तालयाम् ।

जहां पहले ब्रह्मा ने दस अवश्मेध यज्ञ किये और गोदावरी नामक कुण्ड की धारा का संगम था जो अब लुप्त हो गया, उस दशाश्वमेध घाट पर पहुंची । स्वर्णमन्दिर में विराजमान विश्वनाथ के दर्शन के लिए उत्सुक गङ्गा श्रावण में रुद्राभिषेक के लिए घड़ों में जल ले जाने वाले पूजकों द्वारा वहां ले जाई जाती है, इस प्रकार प्रिया-प्रीतम का मिलन होता है। यहां उन्होंने अविमुक्तेश्वर लिङ्ग, ज्ञानवापी, मुक्तिमण्डप को देखा तथा विश्वेश्वर का आदिपीठ जो अब मस्जिद के रूप में परिणत हो गया, उसे देखा ; अपनी बहन शृङ्गार गौरी को बेघर तथा दीवार

She reaches that *Daśāśwamedha-ghāt* where *Brahmā* performed ten *Aśwamedha yajñas.* At this place there had been once a confluence of *Godāvarī* lake which has disappeared now. In the month of *Śrāvaṇa* for *Rudrābhiṣeka* the water of *Gaṅgā* is carried by the devotees of *Viśwanātha* residing in the golden temple. The desire of *Gaṅgā* to get a glimpse of Her lord is thus satisfied and it is a grand union of love. She takes note of *Avimukteśwara, Jñyāna-vāpī, Muktimaṇḍapa* and also the *Ādi pītha* of *Viśweśwara,* which at present has been turned into a

क्रूरतां निन्दतीवाऽनुमेया न किं
प्रायशः क्षुब्धतोया धुनी साम्प्रतम् ।।८९।।
धर्मसंस्थापनायार्तिनाशाय सा
भैरवं दण्डपाणिञ्च ढुण्ढिं शनिम् ।
अन्नपूर्णाञ्च काशीपुराऽधीश्वरीं
प्रार्थयन्ती भवानीं ततोऽग्रेसरा ।।९०।।
बालिकाशिक्षणस्य व्यवस्थापिका[२५]
या हि 'माता वसन्तेति' सर्वाऽऽदृता ।
अध्युवासेदमेनी व्यसेण्टाऽभिधा
भारतीया विदेशे प्रसूताऽपि सा ।।९१।।
आश्रमे 'शान्तिकुञ्जे' वसन्ती मुदा
कामरूपाऽख्यभागे सुरम्येऽञ्चले ।
ब्रह्मजिज्ञासमाना महासाधिका
विश्वबन्धुत्वविस्तारिकाऽराजत ।।९२।।

पर स्थित देख कर वे अक्रामकों की अकीर्ति और क्रूरता की निन्दा क्रोध से लाल आंखों वाली होकर करने लगीं। धर्म की स्थापना और दुःख नाश के लिए भैरव, दण्डपाणि, ढुण्ढिराज गणेश, शनि तथा काशीपुरी की स्वामिनी अन्नपूर्णा तथा भवानी गौरी से प्रार्थना करती हुईं आगे बढ़ीं ।।८६-९०।।

नारी शिक्षा के लिए क्रान्ति करने वाली 'मां वसन्त' डॉ. एनी बेसेन्ट जो भारतीय न होने पर भी भारतीयों को स्वतन्त्र कराने में तत्पर थीं और कमच्छा में शान्ति कुञ्ज

mosque. She decries this act of defilement by intolerant people and Her eyes are red in rage when She finds Her sister *Śriṅgāra Gaurī* banished and displaced. For the proper restoration of the honour of *Dharma* and eradication of sufferings She seems to pray along Her flow to *Daṇḍapāṇi Bhairava, Ḍhuṇḍirāja Gaṇeśa* and *Śani*. She prays to *Annapurṇā*, the reigning deity of *Kāśī* and to *Bhavānī Gaurī* too.[86-90]

In the past the waves of knowledge emanating from *Gaṅgā* also had drenched Dr. Annie Besant. She worked for the cause of women's education with a revolutionary commitment and zeal.

भारतीयान् स्वतन्त्रान् विधातुं तदा
तत्परा या बभूव प्रभामण्डिता ।
प्रायसत् शिक्षितुं स्त्रीः प्रकाशप्रदा
गङ्गया ज्ञानवीचिभिराप्लाविता ।।९३।।
माता भारतभूर्हिमाद्रिमुकुटा श्यामा समुद्राम्बरा
'आजादो' मम नाम वासभवनं कारा करालालयः ।
इत्थं यः समुदाहरन् मुहुरपि क्रूरैः कशाताडितो
'वन्दे मातर' मुद्गिरन्नमरतां लेभे स सम्भाव्यते ।।९४।।
स्थापितोऽश्वोऽश्वमेधस्य यस्मिन् पुरा
तं सुघट्टं समासादिता सौख्यदा ।
साम्प्रतं नृत्यवाद्याद्युपेतस्त्वसौ
गीतगुञ्जायमानो दरीदृश्यते ।।९५।।

में रहती थीं, ब्रह्म जिज्ञासा से युक्त महान् साधिका थीं तथा विश्व-बन्धुत्व की संवाहिका थीं; को गङ्गा ने ज्ञान तरङ्गों से भिगोया ।।९१-९३।।

हिमगिरि के शुभ्रमुकुट को धारण करने वाली, सागर रूपी अम्बर वाली, स्नेहमयी भारत भूमि मेरी मां है, जेल मेरा घर है, आजाद मेरा नाम है- कहने वाले अंग्रेजों के कोड़ों के प्रहार को हस कर झेलने वाले निर्भीक चन्द्रशेखर को गङ्गा ने अनेकों आशीर्वादों से सराहा ।।९४।।

जहां पहले अश्वमेध का घोड़ा स्थापित था, उस घोड़ा घाट में सुखदात्री गंगा आईं। अब राजेन्द्र प्रसाद के नाम से प्रसिद्ध यह घाट समय-समय पर होने वाले

She was not an Indian, yet she was dedicated to the cause of India's freedom.She lived in *Śānti-kuñja* at *Kamachha.* She was curious to know the ultimate truth and carried the message of universal brotherhood.[91-93]

"This land of *Bhārata* which dons the crown of the *Himalaya* and wears the saree of oceans is my mother. The prison is my home and *Āzād* is my name:" the person who spoke so boldly and bore the agony of British torture, was *Chandraśekhara,* whom *Gaṅgā* had blessed profusely.[94]

Gaṅgā, the redeemer comes to *Ghoḍā-ghāt* the point where

दालभेशं[२६] नमन्तीक्षते शोभनां
वेधशालां सुयन्त्रैः सुसज्जीकृताम् ।
मानसिंहस्य नाम्ना प्रसिद्धिं गतं
पावयन्ती सुघट्टं प्रसन्ना धुनी ।।९६।।

वाराणस्या अधिष्ठात्रीं देवीं कमललोचनाम्।
दृष्ट्वा हृष्टा विशालाक्षीं सर्वलोकनमस्कृताम् ।।९७।।

यत्र लिङ्गं जरासन्धराज्ञा पुरा
स्थापितोऽभूदिदानीं विलुप्तं किल।
यत्र मीरोऽपि घट्टे समारब्धवान्
मङ्गले वासरे वृद्धहोलोत्सवः[२७] ।।९८।।

नृत्य गीत वाद्य आदि से गुञ्जायमान है। मान मन्दिर घाट में दालभेश्वर को प्रणाम करती हुई गङ्गा ने राजा मानसिंह के द्वारा स्थापित वेधशाला को यन्त्रों से सज्जित देखा। वाराणसी की अधिष्ठात्री कमल के समान नेत्र वाली सम्पूर्ण जगत् के द्वारा वन्दित विशालाक्षी देवी को देखकर गङ्गा प्रसन्न होती है ।जहाँ पर जरासन्ध राजा ने शिवलिङ्ग स्थापित किया था, जो अब लुप्त हो गया है; जहां से मीर रुस्तम ने बुढ़वा मंगल की शुरुआत की थी, उस मीरघाट को गङ्गा देख रहीं हैं।।९५–९८।।

the horse of *Aśwamedha* was placed. At present the same has become renowned as *Rājendra Prasāda-ghāt* and different musical concerts and dance programmes rejuvenate the place with their resonance. *Gaṅgā* runs past the *Mān Mandir-ghāt,* bows to *Dalbheśwara* and is aware of the observatory established by the king *Mān Singh.* She bows to *Viśālākṣī*, the goddess of *Vārāṇasī*. On Her way *Gaṅgā* comes across the place where king *Jarāsandha* had placed *Śiva liṅga* which stands lost at present. She looks at *Mīr-ghāt* where *Mīr Rustam* had started a fair named *Buḍhvā Maṅgal.*[95-98]

होलानन्तरमेव भौमदिवसे तीरे लहर्यां तथा
लक्षाणां पुरवासिनामनुपमं मेलापकं सुन्दरम् ।
वृद्धाङ्गारकमीरितं शिवशिवापाणिग्रहस्मारकं
दृष्ट्वा हृष्टमना सती सुरधुनी भूयस्तरङ्गायिता ।।९९।।
झङ्कारेण झणज्झणायिततरीं गानस्वनैः पूरितां
मन्दान्दोलनशालिनीं बहुविधैर्दीपैः समालङ्कृताम् ।
काशीनागरिकैस्तु भङ्गरसिकैर्हास-प्रहासप्रियैः
पूर्णामङ्कगतां विलोक्य बहुशोप्यानन्दिता स्वर्धुनी ।।१००।।
होलायां रतिभाविद्धहृदयान् शृङ्गारचेष्टायुतान्
ताम्बूलाशनरागरञ्जितरदान् काश्मीरकालङ्कृतान् ।
नाना-भावविलास-लास्यलसितान् भङ्गैस्तरङ्गायितान्
पौरान् साऽतिशयप्रसन्नहृदयान् मन्दस्मिता प्रेक्षते ।।१०१।।

होली के पश्चात् के मङ्गलवार को गङ्गा तट एवं उसकी लहरों पर लाखों नगरवासी मेले का आनन्द लेते हैं। बुढ़वामङ्गल नाम से प्रसिद्ध इस मेले को जातक कथाओं में वृद्ध अंगारक तथा कालिदास ने ऋतुमंगल कहा है। इस मेले को देखकर प्रसन्न गङ्गा जी भी तरंगित होती हैं। झूमती नावों पर गीत वाद्यों की झंकार तथा दीपमालिका की सजावट होती है। भांग के नशे में चूर होकर हास प्रहास करते हुए काशी के रसिक नागरिकों को अपनी गोद में नाव पर बैठे देखकर स्वर्धुनी भी आनन्दित होती हैं । होली में रतिभाव से युक्त शृंगार चेष्टाएं करने वाले, ताम्बूल सेवन से लाल होठों वाले, अबीर-गुलाल पुते, अनेक भाव-भङ्गिमाओं से युक्त एवं

The Tuesday that follows Holī, the citizens of *Kāśī* enjoy the fair in large numbers sitting either on the banks of *Gaṅgā* or on the boats floating on the waves. This *Buḍhavā Maṅgala* was named *Vṛdha-aṅgāraka* which reminds one of the marriage of *Śiva* and *Pārvatī* and *Kālidāsa* also had referred to it as *Ṛtu Maṅgala*. *Gaṅgā* seems to be delighted to watch this fair. The swaying boats decorated with rows of light hold enchanting musical soirees. *Gaṅgā* enjoys the pranks of the connoisseurs intoxicated with *Bhaṅga*. During Holī *Śrī Gaṅgā* smilingly watches the amorous passion- ridden gestures of the. colourful and euphoric crowd. She

दन्तानां गलितेऽपि सुन्दरतमां दन्तावलीं बिभ्रतः
केशानां पलितेऽपि शोभनतमैः श्यामैः कचैः सज्जितान् ।
भोग्या भावयतः समस्तयुवतीः व्यक्तानुभावांस्तथा
तान् वृद्धान् तरुणायितानपि धुनी दृष्ट्वा स्मितं बिभ्रति ।।१०२।।
सनातनं वृद्धमपीह गङ्गा तिर्यक्कटाक्षैरवलोकयन्ती।
अनेकवर्णैः समलङ्कृतेव व्यराजत प्राक्किल होलिकायाम् ।। १०३।।
किन्त्वद्य प्रकृतिं चराचरजगद्धात्रीं महामङ्गलां
स्वं चैवामृतजीवनां तनुमनः-प्राणेषु सञ्चारिणीम् ।
प्रत्यर्घ्यत्वमतिं विहाय नितरां भोक्तृत्वबुद्ध्या हतान्
सा चैतानसुरायितान् मनुजताहीनान् क्रुधा निन्दति ।।१०४।।
राजेश्वरी वैभवहृष्टचेता
वाराणसीविग्रहमीक्षमाणा ।

भांग के नशे में चूर काशीवासियों की मदमस्ती को श्रीगङ्गाजी मुस्कराती हुई देखती हैं।।९९-१०२।।

पहले होली के रंग में रंगी श्रीगङ्गा जी भी अपने सनातन बुढ़वा शिव जी को तिरछे नेत्रों से देखती हुई बहुत सुन्दर लगती थीं; किन्तु अब चराचर जगत् की जननी कल्याणकारी प्रकृति एवं अमृत जीवन देने वाली तन-मन और प्राणों में सञ्चार करने वाली अपने प्रति पूज्यभाव को त्याग कर भोगवाद से नष्ट चेतना वाले, असुरों के समान आचरण करने वाले मनुष्यों की क्रोधपूर्वक निन्दा करती हैं ।।१०३-१०४।।

इसके आगे गङ्गा राजेश्वरी के वैभव से आकृष्ट चित्तवाली, वाराणसी देवी की

smiles at the outburst of perversion in superannuated men who attempt at attracting beautiful young women despite their own physically demented state.[99-102]

Aeons ago *Gaṅgā* imbued in the colours of Holī seemed exquisite as She looked at Her eternal consort adoringly and bashfully. But now She is enraged to see the practice of debauchery in men who are caught by the whirlpool of materalism. They have become demoniac and have left the path of worship of both, i.e. the mother of the universe, the benevolent nature and the source of resuscitation, which is *Gaṅgā* Herself.[103-104]

Attracted by the wealth of *Rāja-rājeśwarī*, observing the image

गौरीं स्वसारं ललितां ललामाम्
आलोकते चारुगतिर्मनोज्ञा ।।१०५।।
काष्ठप्रकीर्णान् मदनप्रयोगान्
समीक्षते नूनमधीतशास्त्रा ।
तृतीयवर्गस्य जयादृते क्व
प्राप्यस्तुरीयोऽपुनरागमाख्यः ।।१०६।।
अतोऽनुभूतश्रुतिशास्त्रसारा
तीर्थेषु चूडामणिमागतैषा ।
श्रेष्ठं श्मशानं[२८] मणिकर्णिकाऽख्यम्
प्रसंशती वीचिवचोभिरित्थम् ।।१०७।।

श्रीगङ्गा प्राह

धन्ये हे ! मणिकर्णिके ! सुगतिदे ! तीर्थस्वरूपे ! शुभे !
भक्ताऽनुग्रहकारिणि ! त्रिभुवनख्याते! शिवप्रेयसि !

मूर्ति को देखती हुई, ललिता गौरी से मिलती हैं। यहीं (ललिताघाट में) काठ पर खुदे हुए काम क्रीड़ाओं से युक्त नेपाली खपड़ा मन्दिर का भी शास्त्र मर्मज्ञा श्रीगंगा समीक्षात्मक अवलोकन करती हैं; क्यों कि तृतीय पुरुषार्थ (काम) पर विजय प्राप्त किये बिना अपुनर्भव (मोक्ष) रूपी चतुर्थ पुरुषार्थ भला कैसे प्राप्त होगा ? अतएव वेद–शास्त्र के सारतत्त्व का अनुभव करने वाली गङ्गा वहां से मणिकर्णिका नाम के श्रेष्ठ महाश्मशान भूत तीर्थ में आती हैं और मानो अपनी लहरों रूपी वचनों से इस प्रकार कहती हैं – ।।१०५–१०७।।

श्री गङ्गा बोलीं – भक्तों पर कृपा करने वाली, तीनों लोकों में प्रसिद्ध, शिव को

of *Vārāṇasī Devi*, She meets *Lalitā Gaurī*. Here, at *Lalitā-ghāt* there stands the exquisite Nepalese temple named *Nepālī Khaprā* in which there lie engraved the erotic images and *Gaṅgā* seems to examine them critically, because without transending the third *Puruṣārtha*, i.e. *Kāma*, how can one expect to attain *Mokṣa*? So *Gaṅgā*, who has assimillated the crux of the *Vedas* reaches *Maṇikarṇikā* the *Mahāśmaśāna*, the crematorium and speaks out the words of veneration through the voice of Her waves:[105-107]

"You shower grace on your devotees and remain celebrated in

मर्त्यः त्वच्छरणागतो भवभयोच्छेदं प्रकुर्वन्सदा-
ऽमर्त्यः सँल्लभतेऽपुनर्भवपदं शोकातिगो मोदते ।।१०८।।
उत्सङ्गे तव पावने लहरयो मे यावदासादिताः
तावत्ते प्रभया भवन्ति सुतरां देदीप्यमानाः सदा ।
छेत्तुं वै निगडं क्षुरस्य निशिता धारा भवन्त्योऽमला
मोक्षद्वारविमोचनेऽतिपटुतां सम्प्राप्य संशोभिताः ।।१०९।।
प्रान्ते ते मणिकर्णिके! तनुभृतामावर्तनोच्छेदकं
मन्त्रं तारकमुत्तमं पशुपतिर्यावन्न सञ्जल्पति ।
तावत्कालमसङ्ख्यभैरवगणैः सन्तप्यमानं जनं
मातां त्वं करुणामयी सुतरलैः स्नेहाम्बुभिः सिञ्चसि ।।११०।।
चक्रेणोत्खनिता[२१] विभाति निकटे स्नानाय मोक्षार्थिनां
पुण्या पुष्करिणी पुराऽतिविमला संसारचक्रापहा ।

प्रिय लगने वाली, तीर्थरूप हे मणिकर्णिका ! तुम धन्य हो । मरण धर्मा जीव तुम्हारी शरण में आकर भव भय का उच्छेद करता हुआ अमर होकर मोक्ष को प्राप्त करता है और शोक रहित हो जाता है। जब तुम्हारी पवित्र गोद में मेरी लहरें पहुंचती हैं तब वे तुम्हारी प्रभा से देदीप्यमान होकर छुरे की धार के समान तीखी हो जाती हैं और मोक्ष के द्वार को खोलने में निपुणता को प्राप्त कर लेती हैं। जब तक तुम्हारे तट पर पशुपति तारक मन्त्र कान में नहीं फूंकते तब तक भैरव गणों द्वारा सताये गये जीव को तुम करुणामयी माता अपने स्नेहजल से सींचती हो; तुम्हारे निकट ही चक्र पुष्करिणी शोभायमान है, जो भगवान् विष्णु के चक्र से खनी

three *lokas*. You are desired by *Śiva* O you pilgrimage incarnate *Maṇikarṇikā*! blessed are you. The mortal being under your shelter forgets the fear of rebirth and attains *Mokśa* by becoming immortal. One becomes free from grief. When my waves touch you they become sharp as razor's edge by absorbing your brilliance and thus become proficient to open the gate-way to liberation. You nourish the *Jīva* with your water like a compassionate mother till *Paśupati* whispers the *Tāraka Mantra* into their ears. Quite near lies the *Chakra-Puṣkaraṇī* pond which

दृष्ट्वाऽहं मणिकर्णिकेश्वरमिहाऽधःस्थं तृतीये तले
आशासे भगवान् स नूनमखिलान् दोषान् व्यपोहेन्मम ।।१११।।
अन्ये चापि पवित्रतीर्थनिवहा धर्मस्य संस्थापका
मत्तीरे किल सन्ति सुन्दरतमाः स्वर्गादिलोकप्रदाः ।
किन्त्वस्माद् मणिकर्णिकास्नपनजादुत्कृष्टपुण्यात्मकात्[३०]
प्रज्ञानात् पुनरागमेन रहितां मुक्तिं लभन्ते नराः ।।११२।।
मुक्तिमन्त्रो महेशेन कर्णे यथा
श्राव्यतेऽत्रैव तीर्थे परं पावने ।
राजते भूतनाथेन सार्धं तथा
तारिणी तर्पयन्ती जनानम्भसा ।।११३।।

गई है और संसार रूपी चक्र को नष्ट करने वाली है; मोक्षार्थी इसमें स्नान करते हैं। यहीं पर नीचे की तीसरी मंजिल में मणिकर्णिकेश्वर विराजमान हैं, जिन्हें देखकर मैं आशा करती हूँ कि वे कभी प्रदूषणों से मेरा उद्धार करेंगे। अन्य पवित्र तीर्थ भी मेरे तट पर धर्म की स्थापना करते हुए स्वर्गादि लोकों को देने के लिए स्थित हैं; किन्तु मणिकर्णिका तीर्थ में स्नान करने से उत्पन्न पुण्य रूप प्रज्ञान से जीव आवागमन से रहित परम मुक्ति को प्राप्त कर लेता है।।१०८-११२।।

इसी पवित्र तीर्थ में महेश जीव के कान में मुक्ति दायक मन्त्र सुनाते हैं और श्रीगङ्गा जल से उनका तर्पण करती हुई भूतनाथ के साथ सुशोभित होती हैं।

had been dug by the wheel of *Viṣṇu*, and is capable of destroying the cycle of mortal births. Those who crave for liberation bathe in it. Here as *Maṇikarṇikeśwara* resides at the third storey built underground I (*Gaṅgā*) hopefully think to be redeemed by Him from pollution. Other pious pilgrimages (*Tīrthas*) are also there along my bank to establish *Dharma* and grant *Swarga Loka* etc. but bathing at *Maṇikarṇikā tīrtha* engenders that kind of enlightnment which enables *Jīva* to be totally liberated.[108-112]

At this holy *tīrtha Maheśa* chanted the liberating *mantra* into the ears of *Jīva*, *Śrī Gaṅgā*, offered libation of water to him and dwelled with *Bhūtnātha*. At *Gaṇeśa-ghāt* she looks at the *Śamī*

अग्निगर्भं शमीवृक्षमालोकते[३१]
यज्ञसम्पादकं पावनं सुन्दरम् ।
अत्र वैनायकं विग्रहं सुन्दरं
पाययन्ती पयोऽग्रेसरा वत्सला ।।११४।।
दक्षिणाऽऽशामभिप्रेक्षमाणं वरं
सा यमाऽऽदित्यमत्यन्ततेजस्विनम् ।
सङ्कटां सङ्कटाऽऽपायकर्त्रीमपि
द्रष्टुकामाऽऽथ घट्टं समासादिता ।।११५।।
अत्र रामेश्वरं रामघट्टे स्थितं
पूजयन्त्यूर्मिभिर्दृश्यते सर्वदा ।
पश्यति प्राणदात्री चिकित्सालयं[३२]
स्थापितं साम्प्रतं रोगसंहारकम् ।।११६।।
धूतपापादि-पञ्चापगाः पुण्यदाः
सङ्गता यत्र चान्तः प्रवाहाः शुभाः ।
पावनं पञ्चगङ्गातटं[३३] प्राप्य सा
राजते गाङ्गधारा सिता शीतला ।।११७।।

गणेशघाट में यज्ञ के सम्पादक शमी वृक्ष को देखती हैं, वहां सुन्दर गणेश जी की मूर्ति को जल पिलाती हुई बढ़ती हैं। यमघाट में दक्षिण दिशा की ओर देखते हुए यमादित्य को देखती हुई, संकठाजी को देखने के लिए बढ़ती हैं। रामघाट में स्थित रामेश्वर को प्रणाम करती हुई वर्तमान में निर्मित चिकित्सालय को भी देखती हैं। यहाँ से धूतपापा, किरणा, गङ्गा, जमुना, सरस्वती पांच धाराओं का संगम स्थल पञ्चगंगा घाट पहुंचती हैं।।११३-११७।।

tree which is used to accomplish *yajña* and proceeds ahead after pouring water on the idol of *Ganeśa.* At *Yama-ghāt* She locates *Yamāditya* facing south, and moves on to see *Saṅkatā Devi.* At *Rāma-ghāt* She bows to *Rāmeśwara* and also takes note of the recently built hospital. Then She reaches *Pañchagaṅgā-ghāt*, the confluence of five rivers, i.e. *Dhūtpāpā, Kiraṇā, Gaṅgā, Yamunā* and *Saraswatī.*[113-117]

सुकृतिभिरिह पौरैः कार्तिके स्नानशीलैर्
व्रतनियमविशुद्धैः सज्जिताऽऽकाशदीपैः।
द्युतिभिरमितहृद्या देवदीपावलीनां
बहुतरलतरङ्गाऽऽनन्दिता भाति गङ्गा ।।११८।।
विहगकुलरुतानां मञ्जुझङ्काररूपं
सुरयुवतिपदानां शिञ्जनं शृण्वतीव ।
शशिनि समुदिते खे सर्वतः सुप्रकाशा
विकचकुमुदहासा शोभते सान्ध्यवेला।।११९।।
विलसति दिवसान्तेऽस्तङ्गते तिग्मरश्मा-
वरुणिमवसनेयं ग्राम्यबालेव रम्या ।
कनकरुचिरदीप्तैस्तारिका पुष्पपुञ्जै-
रुपजनयति शोभां स्वर्धुनीमर्चयन्ती ।।१२०।।

यहां पर स्नान करने वाले पुण्यात्माओं द्वारा कार्तिकमास में व्रत और नियम करने वाले नागरिक जब गङ्गा को आकाश दीप अर्पित करते हैं तब दीपावली के प्रकाश से जगमगाती हुई तरलतरंगों वाली गङ्गा अत्यन्त सुन्दर लगती हैं। पक्षियों कें कलरवों की झंकार से देव वनिताओं के पैरों की रुनझुन सुनती हुई, चन्द्रमा के उदित हो जाने पर प्रकाशमयी, खिले कुमुदों से हंसने वाली सन्ध्या सुशोभित होती है। दिन के अन्त में वह सूर्य के अस्त हो जाने पर लाल वर्णा सन्ध्या ग्राम्य बाला सी मनोरम लगती है । सुनहले दीपकों से तथा तारों के फूलों से स्वर्धुनी की पूजा करती हुई संध्या सुशोभित होती हैं। अमावास्या की रात्रि में घने अन्धकार रूपी ओढ़नी ओढ़ी हुई, अपनी लहरों में सुशोभित छोटे-छोटे दीपों का स्वागत करती

Gaṅgā glitters dazzlingly and appears to be exquisitely captivating with Her lucid waves when pious and righteous bathers light and offer *Ākāśa-dīpa* during the month of *Kārttika*. *Sandhyā* smiles enchantingly as she listens to the sonorous melody of the chirping of birds which remind her of the music of the tinkle of the anklets of divine damsels. She turns dazzling with the rise of the moon and derives her laughter from the blooming lilies. At the end of the day with sunset, the roseate *Sandhyā* looks as charming as a village belle. She seems to be

घनतिमिरदुकूलां रात्रिदेवीममायां
लहरिषु लघुदीपैः स्वागतोक्तिं वदन्ती।
पुरजनहृदयेषु स्नेहसञ्चारशीला
बहुतरलतरङ्गाऽऽनन्दिता भाति गङ्गा ।।१२१।।

ज्योतिष्पुञ्जैर्नभसि लसिता स्वर्गमन्दाकिनी किं
काश्यामस्यां रुचिररुचिभिर्भासमानाऽवतीर्णा ?
घट्टे-घट्टे मणिरिव समालङ्कृता दीप्यमाना
दीपावल्यो नयनसुभगाः पूर्णिमायां विभान्ति ।।१२२।।

अत्र सोपानपङ्क्तौस्थितः शास्त्रवित्
पण्डितेन्द्रो जगन्नाथनामा कविः ।
आजुहावाऽऽर्तचित्तः परां मुक्तिदां
यावनीप्रेमबद्धः प्रवादैर्हतः [३४] ।।१२३।।

आददानाऽतिवेगेन याताऽग्रगा
लोकनिन्दाकुलं पुत्रमूर्म्यञ्चले ।

हुई, नागरिकों के हृदयों में स्नेह का संचार करती हुई, तरल तरंगों वाली गङ्गा अत्यन्त आनन्दित होती है।।११८-१२२।।

इसी घाट में शास्त्रवेत्ता श्रेष्ठ कवि पं. राजजगन्नाथ ने यवन कन्या से प्रेम करने के कारण लोक निन्दित होकर परा मुक्ति दायिनी गङ्गा को दुःखी हृदय से बुलाया था। यहीं पर लोकनिन्दा से व्याकुल पुत्र को अपने लहरों के आंचल में छिपाकर वे बड़ी तेजी से आगे बढ़ी, जिनकी 'गङ्गा लहरी' की काव्य धारा जलधारा के साथ

offering her oblations to *Gaṅgā* in the form of stars which look as beautiful as flowers and lamps which bear golden hue. On the night of new moon *Gaṅgā* wrapping round the cover of darkness along with Her dancing waves appreciates the little lamps adorning Her waves. *Gaṅgā* with Her pulse of ripples generates affection in the hearts of the citizens.[118-122]

The great scholar and poet *Paṇḍita*rāja *Jagannātha*, who on being censured by the society for his affection for a muslim girl had hailed *Gaṅgā*, the emancipator in deep affliction. The latter (*Gaṅgā*) hid Her out caste son within the folds of Her waves

यस्य गङ्गालहर्यो लहर्योऽभवन्
काव्यधाराऽम्बुधाराभिरेकीकृताः ।।१२४।।
पञ्चगङ्गेश्वरं गौरीं मङ्गलां लोकमङ्गलाम् ।
मयूखादित्यचक्रञ्च, बिन्दुमाधवमीक्षते ।।१२५।।
प्रागासीत् पावनं यत्तु बिन्दुमाधवमन्दिरम्
यवनोपासनास्थानं दृश्यतेऽत्युन्नतं च तत् ।।१२६।।
योगसिद्धं सुविख्यातं तैलङ्गस्वामिनं पुरा ।
स्नापयन्ती सुधाम्भोभिः शोभिता भक्तवत्सला[३५] ।।१२७।।

दीक्षाप्राप्तिसमीहया शुचिमतिः निष्ठायुतः साधकः
सोपाने शयनञ्चकार विमले प्रत्यूषकाले शुभे ।
रामानन्दगुरोर्मुखादिह तदा रामेति यन्निःसृतं
मन्त्रत्वेन तदाददे मृदुवचो दासः कबीरो महान्[३६] ।।१२८।।

एकाकार हो गई।।१२३-१२४।।

यहां पर पञ्चगंगेश्वर, मंगला गौरी, मयूखादित्य, विन्दुमाधव मन्दिर को देखती है; जहां पहले विन्दुमाधव मन्दिर था वहां नगर के सबसे ऊंची मस्जिद (माधवराव का धरहरा) दिखाई देता है। यहीं पर योगसिद्ध तैलंगस्वामी निवास करते थे। उन्हें अपने अमृत जल से स्नान कराती हुई भक्तवत्सला गङ्गा सुशोभित हुईं।।१२५-१२७।।

इसी घाट की सीढ़ियों पर दीक्षा प्राप्ति की इच्छा से पवित्र बुद्धि वाले, निष्ठावान् साधक कबीर दास भोर वेला में लेट गये; जब उन पर पैर पड़ जाने से श्री रामानन्द

and rushed along. The poetic stream of *Gaṅgā-Laharī* and the stream of the river became one at that moment.[123-124]

She flows past *Pañchagaṅgeśwara*, *Maṅgalā Gaurī*, *Mayūkhāditya* and *Vindu-Mādhava* temples. The place where once the temple of *Vindu-Mādhava* was situated, one finds the tallest mosque, i.e. *Mādhava Rao*'s *Dharharā*. The great *Yogī Tailaṅga Swāmī* lived here and *Gaṅgā* seems to have bathed him with Her deathless water.[125-127]

The virtuous devotee *Kabīrdāsa*, a being with pure intellect, desirous of receiving *Dīkṣā* lay prostrate on the steps of

दुर्गां द्वितीयामवलोक्य देवीं
मन्दाकिनी-भैरव-मध्यमेशम् ।
मत्स्योदरीकुण्डमिहप्रदुष्टं[३७]
दृष्ट्वातिखिन्ना परिलक्ष्यमाणा ।।१२९।।
खखोल्कमादित्यमपीक्षमाणा
त्रिलोचनेशं पुरतो नमन्ती ।
गोघट्टमागत्य शनैः-शनैः सा
प्रह्लादघट्टं समुपैति गङ्गा ।।१३०।।
ओङ्कार-कालेश्वर-भूतभारा-
द्यनेकलिङ्गानि समर्चयन्ती।
वीचीविलासैः प्रवहन्त्यशेषा
विराजतेऽसौ खलु राजघट्टे ।।१३१।।

गुरु के मुख से सहसा राम शब्द निकला तो उसी को उन्होंने मन्त्र दीक्षा के रूप से ग्रहण किया।।१२८।।

गङ्गा ब्रह्मचारिणी दुर्गा को देखते हुए, मन्दाकिनी, कालभैरव और मध्यमेश्वर का दर्शन करते हुए जब आज मछोदरी कुण्ड की दुर्दशा को देखती हैं तो बहुत दुःखी होती हैं। उसके बाद खखोल्कादित्य, त्रिलोचन महादेव को प्रणाम करती हुई गायघाट, तथा प्रह्लाद घाट जाती हैं। तत्पश्चात् ओंकारेश्वर, कालेश्वर, भूतभारेश्वर आदि अनेक शिवलिङ्गों का दर्शन करती हुई राजघाट में सुशोभित होती हैं। यहां पर

this very *ghāt* at day break. He accepted the word *Rāma* as *Dīkṣā Mantra*, which came out of *Rāmānanda's* mouth accidentally.[128]

Gaṅgā flows getting a glimpse of *Brahmachāriṇī Durgā*, *Mandākinī*, *Kāla-bhairava* and *Madhyameśwara* and when She witnesses the wretched condition of the present day *Matsyodari Kuṇḍ*, She turns deeply anguished. On Her way to *Gāya-ghāt* and *Prahlāda-ghāt* She bows down to *Khakholkhāditya* and *Trilochan Mahādeva*. She reaches *Rāja-ghāt* after visiting *Oṁkāreśwara*, *Kāleśwara*, *Bhūta-bhāreśwara* and many other *Śiva*

बेसेन्टदेव्या परिकल्प्यमानं
यशःस्वरूपं खलु कृष्णमूर्तेः ।
विद्यालयं पश्यति कन्यकानां
तीरस्थितं नूतननिर्मितञ्च ॥१३२॥

विलोक्य गांधीस्मृतिचिह्नरूपं
संस्थानमत्राऽऽकुलितेति मत्त्वा ।
स्वतन्त्रतायै परिचिन्तयन्तं
समाद्रियन्ते किमु भारतीयाः? ॥१३३॥

आदित्यमूर्तिमपरां सुविराजमानाम्
अत्राऽऽदिकेशवमपीक्षितुमुत्सुका सा ।
पादोदकं परमपावनतीर्थमेतत्
दृष्ट्वा पुराऽतिमुमुदे न पुनस्त्विदानीम् ॥१३४॥

दृष्ट्वा पुरा सुमिलितां वरणां वरेण्यां
स्वीयामितोऽसिमिव शोभितशुभ्रधाराम् ।

एनी बेसेन्ट की कल्पना और जेदद् कृष्ण मूर्ति द्वारा नव निर्मित वसन्त महिला महाविद्यालय को अपने तट पर स्थित देखती हैं। यहीं गांधी संस्थान को स्मृति-चिह्न के रूप में देखती हुई सोचती हैं कि स्वतन्त्रता के लिए सोचने वाले उस महात्मा का क्या भारतीय आज उचित आदर कर रहें हैं? यहीं पर आदि केशव घाट में केशवादित्य तथा केशव को देखने के लिए वे उत्सुक हैं। पहले इस विष्णुपादोदक तीर्थ को देखकर गङ्गा परम प्रसन्न होती थीं किन्तु आज कल नहीं । पहले यहां पर श्रेष्ठ वरणा को मिलते देखकर और यहां से तलवार की धार सी लगती अपनी धारा

liṅgas. She finds Vasanta college for women, the dream of Annie Besent, built anew by J.Kṛṣṇamūrti on Her own bank. Close by looking at the Gandhian Institute, She wonders whether the people of India now pay true homage to him (*Gāndhi)*, who struggled for the freedom of the motherland. She seems eager to see *Keśavāditya* and *Keśava* at *Ādikeśava-ghāt*. Long ago She became delighted to see this *Viṣṇupādodaka-tīrtha*, but She is not happy now. In the past She was elated to see the grand *Varaṇā*

वाराणसीति किल पाणिनिना यदुक्तं[३८]
सार्थं शृणोति पुरनाम तदेव नित्यम् ।।१३५।।
किन्त्वद्य पङ्कनिचयैर्हि विलुप्तकायां
तां सङ्गमेऽतिविकृतिं सततं नयन्तीम् ।
दृष्ट्वा भृशं शपति भोगविलासमग्नान्
तान् साक्षरान् दनुजभावगतान् नरान् हा ! ।।१३६।।

गङ्गासागरतीर्थमस्ति वरणायाः सङ्गमो विश्रुतः[३९]
स्नात्वा यत्र नरः क्वचिन्न जननीगर्भं प्रयाति ध्रुवम्[४०] ।
तं त्वेवं विकृतं प्रदूषणकरं हा ! हन्त ! गंगाऽनिशं
दर्श-दर्शमनुक्षणं प्ररुदतीवालक्ष्यते नो जनैः ? ।।१३७।।

पञ्चक्रोशपरिक्रमाक्रममनुप्राप्ते शिवस्यालये
तीरात्तं वृषभध्वजं च कपिलां धारां नमन्ती मुदा ।

को देखकर वह इस नगरी का सार्थक नाम वाराणसी को सुनती थी। किन्तु इस समय कीचड़ से भरी लुप्त शरीर वाली, संगम स्थल में गन्दगी फैलाती वरणा को देखकर श्रीगङ्गा आज के भोग विलास मग्न साक्षर राक्षसों को बार-बार शाप देती है। वरणा-गङ्गा संगम गंगासागर तीर्थ है, जहां स्नान करके मनुष्य माता के गर्भ में पुनः प्रवेश नहीं करता । उसको रात-दिन प्रदूषित देख-देखकर क्या गङ्गा मानवों को रोती हुई सी नहीं लगती? पञ्चक्रोशी की परिक्रमा के क्रम में प्राप्त कपिल धारा में वृषध्वज को प्रणाम करती हुई सारंगेश (सारनाथ) को दूर से प्रणाम कर , बुद्ध

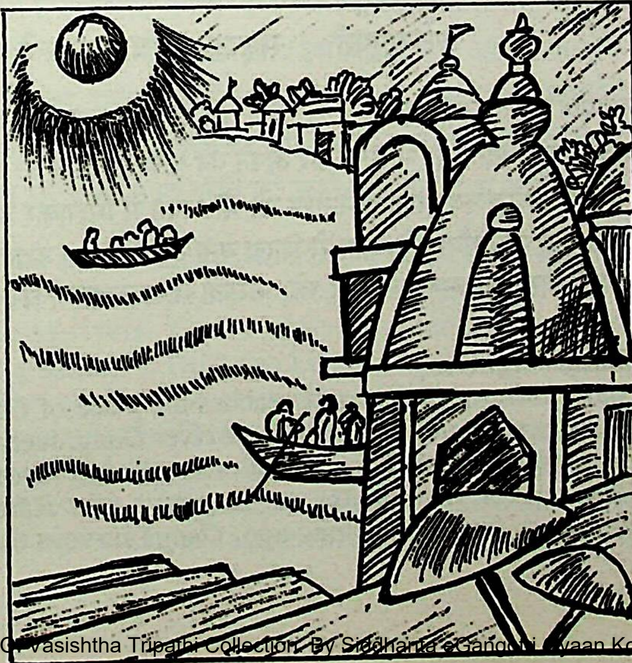
meeting with Her own razor sharp stream from here.The meaningful name *Vārāṇasī* has originated from this very union. But at present *Gaṅgā* curses the accute materialism of the so called literate people for having led *Varaṇā* to her terribly abject and decimated state. The union of *Varaṇā* and *Gaṅgā* is *Gaṅgā-Sāgar-Tīrtha*, by bathing where one is liberated from the cycle of rebirth. Doesn't *Gaṅgā* seem to be wailing to see it (that *Varaṇā Saṅgama*) getting polluted day by day? She salutes *Bṛṣabhadhwaja* at *Kapila*

सारङ्गेशमपि प्रणम्य सुचिरं सा दूरतः श्रावणे
बुद्धस्य स्मरति श्रुतं प्रवचनं कारुण्यपूर्णं सदा ।।१३८।।

मार्कण्डेयमहेश्वरं प्रणतिभिः सन्तोषयन्ती चिरं
सङ्गन्तुं समुपागतां सुललितां तां गोमतीं पश्यति।
नीत्वेमां जमदग्निनार्चितभुवं सम्प्लावयन्ती मुहुः
ग्रामाद् ग्राममगात् तरङ्गबहुला गङ्गा पवित्राऽऽपगा ।।१३९।।

के करुणामय उपदेशों को भी सुनती है तथा मार्कण्डेय महेश्वर को नमन कर, मिलने के लिए आई गोमती को साथ लेकर जमदग्नि (जमानियां) की भूमि को सींचती हुई, एक गाँव से दूसरे गाँव में पवित्र नदी गङ्गा बह रहीं हैं।।१२९-१३९।।

Dhārā, traversing the way of *Pañchakrośī* and then from a distance pays Her tribute to *Sāraṅgeśa* (*Sāranātha*) and listens to the *Buddha's* message of compassion. She bows to *Mārkaṇḍeya Maheśwara* and then accompanies *Gomatī* to irrigate the land of *Jamadagni* (*Jamānia*).Thus the pure river treads from one village to the other. [129-139]



सप्तमः सर्गः
विहार-वर्णनम्

सा प्रयाताऽथ पुण्यप्रदा मङ्गला

पत्तनं गाधिराजस्य[1] सम्प्लावितुम् ।

तत्र गङ्गामुपेत्याऽमृतां पावनीं

धन्यतामेति गङ्गी सरिन्निर्मला ।।१।।

आत्मसात् कुर्वती शोभतेऽमङ्गलां

कर्मनाशामपीयं महौजस्विनी ।

गौतमेनाऽभिशप्ता शिलारूपिणी

राघवेणोद्धृताऽऽसीदहिल्या यथा ।।२।।

वन्यसम्पत्तिभिर्भूयशः श्यामला

शस्यपूर्णा समृद्धा विहारस्थली ।

पुण्यप्रदा मङ्गला गङ्गा अब आ गईं गाधि राज के जिले (गाजीपुर) में ; वहां गङ्गी नाम की छोटी नदी गङ्गा में मिल कर अपने को धन्य समझती है। यह महान् ओजस्विनी गंगा अमङ्गलकारिणी कर्मनाशा को भी अपने में मिलाकर उसी प्रकार पवित्र कर देती है जैसे गौतम के शाप से शिला बनी अहिल्या का उद्धार राघव ने किया था। यहाँ वह वन सम्पदा से हरे भरे, फसलों से लहलहाते , धन-धान्य से

The Bihar Vignette

The benefactor *Gaṅgā* now reaches the place of *Gādhirāja* (Gazipur district) to irrigate it. The little river *Gaṅgī* feels herself honoured to join *Gaṅgā*. This brilliant river *Gaṅgā* redeems the inauspicious river *Karmanāśā* as *Rāghava* (*Śrī Rāma*) had retrieved the ossified *Ahilyā* long ago. *Gaṅgā* surveys the entire

य: सरिन्मालया भूषित: सुन्दरो-
ऽसौ विहारप्रदेशोऽनयाऽऽलोक्यते ।।३।।
अग्निवर्णै: पलाशै: समासज्जितं
काननं यत्र नाना प्रसूनैर्वृतम् ।
उर्वरत्वं दधाना धरा शोभते
तं विहारप्रदेशं प्रविष्टा मुदा ।।४।।
यत्र बोधेन बुद्धोऽभवद् गौतम:
जन्म लेभे महावीरतीर्थङ्कर: ।
यत्र भूपा बभूवु: प्रतापान्विता:
तं विहारप्रदेशं प्रविष्टा मुदा ।।५।।
मागधीं कोशलां लिच्छिवीं मैथिलीं
राज्यकीर्तिं ददर्शोन्नतामेकत: ।
अन्यतो हा ! निपातस्तु कष्टप्रद:
किन्न कालक्रमेणाऽत्र दृष्टस्तया ।।६।।

समृद्ध, नदियों की माला से सुशोभित विहार-प्रदेश को देखती है। आग के समान पलाश पुष्पों से सुशोभित जंगलों वाले तथा विविध पुष्पों से भरे, उर्वरता को धारण की हुई पृथ्वी में गङ्गा ने प्रसन्नता से प्रवेश किया। जहां ज्ञान प्राप्त होने से गौतम बुद्ध हो गये, जहां महावीर तीर्थङ्कर ने जन्म लिया, जहां अनेक प्रतापी राजाओं ने राज्य किया, उस विहार में गङ्गा का आगमन हुआ। मगध, कोशल, लिच्छिवी और मिथिला के राज्यों की उन्नत कीर्ति को उसने एक ओर देखा और दूसरी ओर काल

province of Bihar which abounds in greenery and vegetation and overflows with crops. It is prosperous and adorned with the garlands of rivers. *Gaṅgā* joyfully enters the fertile land of flowering forests of *Palāśa* and blooming flora. *Gaṅgā* comes to that Bihar where *Gautam* became *Buddha*, the enlightened one, where *Mahāvīra Tīrthaṅkara* was born, where numerous kings of valour ruled. In the past She on the one hand witnessed the rise of the kingdoms of *Magadha, Kauśala, Lichhivi* and *Mithilā* and on the other their sad and inevitable fall in the course of time. At

उन्नतिस्तावदौद्योगिकी साम्प्रतं
कार्यतेऽहर्निशं यत्र वैज्ञानिकी ।
वैभवाङ्लङ्कृतिः सर्वतो दृश्यते
तं विहारप्रदेशं गता क्षिप्रगा ।।७।।
वेदगर्भा [२] पुरीमीक्षमाणा पुनः
चिन्तयत्यद्भुतं वैदिकं गौरवम् ।
मन्त्रपूर्वं कृतं यज्ञहोमादिकं
यत्र दृष्टं तया दीर्घकालावधिम् ।।८।।
अस्त्रशस्त्रैर्युता योद्धुमत्रागता
सा तपोविघ्नकर्त्री प्रचण्डाकृतिः ।
दीर्घदंष्ट्रा कराला महाराविणी
कम्पयन्ती मुनीनां मनः कोमलम् ।।९।।
अट्टहासेन शान्तिं निराकुर्वती
भीमकाया महाराक्षसी ताडका ।

क्रम से कष्ट प्रद पतन को भी देखा। आज कल विहार में जो औद्योगिक और वैज्ञानिक उन्नति हो रही है उस वैभव से युक्त प्रदेश को भी वे देख रही हैं। वेदगर्भा पुरी (बक्सर) को देखते हुए वह यहां की प्राचीन वैदिक उन्नति को देखती रही है, जहां बहुत दिनों तक यज्ञ होमादि अनुष्ठान होते थे। यहीं पर अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित, तप की विघ्नरूपा, भयङ्कर आकृति वाली, तीखे दांतों वाली, घोर शब्द वाली ताड़िका मुनियों के कोमल मन को कम्पित करती थी, अट्टहास से शान्ति भङ्ग करने वाली, भयङ्कर शरीर वाली राक्षसी राम-लक्ष्मण को बालक समझकर उनके

present She keenly notes the developments in the fields of technology and industry in this flourishing state. At Buxar (*Vedagarbhāpurī*), the remnants of the ancient *Vedic* culture are appreciated by Her. The place was celebrated for the *yajñas* performed there but *Taḍikā* was there to disturb *Tapas* with her terrible appearance, sharp pointed teeth and clamour. She terrified the soft-hearted sages. This *Taḍikā*, who destroyed the *yajñas* with Her uproarious laughter tried to slay *Rāma* and

मन्यमानाऽऽसुपा बालकौ राघवौ
स्वर्गलोकं गता रामबाणैर्हता[3] ।।१०।।

आङ्ग्लसेनानिभिश्चोदितं भीषणं
चात्र युद्धं प्रचण्डं समावर्तत ।
यावनः शासको निर्जितः सर्वथा
बद्धमूलं कृतं 'कम्पनी'-शासनम्[4] ।।११।।
तीव्रभेरीनिनादैर्नभः पूरितं
सैन्यपाद-प्रहारैर्धरा कम्पिता ।
चन्द्रहासप्रघट्टैः समारेभिरे
शत्रुपक्षेऽपघातं भटा दर्पिताः ।।१२।।
वह्निविक्षेपकाद् निर्गतैर् गोलकैः
तैर्भुसुण्ड्यादिभिः पातिताः सैनिकाः ।
रञ्जिता रक्तपातेन सर्वा मही
सङ्गरे च्छिन्न-भिन्नाङ्गदेहा नराः ।।१३।।

प्राणों को पीना चाहती थी, किन्तु राम के वाण से मारी गई और स्वर्गलोक चली गई।।१-१०।।

यहीं पर अंग्रेज सेनापतियों ने युद्ध में यवन शासक को जीत कर कम्पनी शासन की जड़ें जमा लीं; उस समय तीव्र भेरी नाद से आकाश गुञ्जित हो गया, सैनिकों के पदचापों से पृथ्वी कांपने लगी। तलवारों की टकराहट से सैनिक शत्रुपक्ष में प्रहार करने लगे। तोपों से आग के गोले बरसने लगे, बन्दूकों से गोली खा कर सैनिक

Lakṣmaṇa, taking them to be kids. But she was killed by *Rāma* and thereafter went to *Swarga*.[1-10]

Here itself years ago the British soldiers defeated the Mughal rulers and strengthened the roots of the rule of the East India Company. At that time the sky echoed with the clarion call of trumpets and the earth shook under the foot-steps of marching soldiers. The native soilders struck the British. The cannon shots emitted fire and the wounded soldiers fell on the ground. The

सर्वतस्तीव्रकोलाहलाऽऽतङ्किता
क्रन्दनैश्चापि हा-हाकृतैराकुला ।
स्वाम्भसि त्यक्तदेहान् भटान् मज्जितान्
ईक्षती विव्यथे वत्सला कोमला ।।१४।।
सम्प्रदानं बलेर्वामनायाऽद्भुतं
यत्र सम्पादितं विश्वरूपात्मने ।
प्रापिता तद्बलेः पुण्यकीर्तिस्थलं
साक्षिणी चेतिहासस्य सा सर्वदा ।।१५।।
वामनोऽयं विराडस्ति नारायणो
येन शुक्रेण विज्ञापितो दैत्यराट् ।
योऽसुराणां गुरुस्तत्त्वदर्शी भृगुः
तस्य सिद्धाश्रमं [५] प्रापिता कीर्तिदा ।।१६।।
किञ्च, नेपालदेशादिह, प्रस्थिताम्
आगतां मेलयन्तीं तथेरावतीम् ।

गिरने लगे। पूरी पृथ्वी खून से रंग गई और छिन्न-भिन्न अंगों से पट गई। चारों ओर तीव्र कोलाहल, चीत्कार, हाहाकार, और करुण-क्रन्दन से व्याकुल तथा मरे हुए सैनिकों को अपने में डूबा देखकर कोमल गङ्गा बहुत व्यथित हुई।।११-१४।।

इसके बाद वे जहां बलि ने वामन को अद्भुत दान दिया था, उस बलिकी पुण्यकीर्ति के स्मारक बलिया जनपद में गईं। तत्पश्चात् शुक्राचार्य के आश्रम के निकट पहुंची। पुनः नेपाल से आई ताप्ती को मिलाती हुई घाघरा नदी को अपने में मिलते हुए देखती है।।१५-१७।।

entire earth became sanguine being splashed with blood, and mutilated bodies covered it. The tender-hearted *Gaṅgā* was extremely unhappy to witness the terrible atrocities and the wailing cries around. She was anguished to see the sunk bodies of the warriors in Her water.[11-14]

Then She moves on to *Balia* a famous place named after *Bali* who had made a strange gift to *Vāmana*. Later She reaches the hermitage of *Śukrāchārya*. She finds Herself being united with the river *Ghāgharā* which meets the river *Tāptī* (*Irāvatī*) descending from *Nepāl*.[15-17]

घर्घरां घर्घरं कुर्वतीमापगाम्,
अत्र गङ्गा समासङ्गतां पश्यति ।।१७।।
स्वर्णमृत्स्नां वहन्तीं स्वसारं प्रियां
धावमानां सुवर्णां तरङ्गायिताम् ।
तां सदाऽऽवर्तमालाधरां फेनिलां
शोणमालिङ्गति स्नेहिला सत्त्वरम्।।१८।।

मुक्तकेशीमिव क्रोधितामुग्रगां
तुङ्गभङ्गैर्लिहन्तीमिव क्ष्मामिमाम् ।
भञ्जयन्तीं तटान् घोरशब्दायितां
शोणिताक्षीमिव प्रेङ्खति प्रावृषि ।।१९।।
विन्ध्यभूमौ स्थितादुच्चकैः पर्वतात्
शोणभद्रात् प्रसूतामिमामापगाम् ।
ईक्षते राजपुत्रीमिवाऽऽसादितां
नैक-कूलङ्कषा-सेविका-सेविताम् ।।२०।।

तत्पश्चात् मिट्टी रूपी सोना लेकर दौड़ती हुई, सुन्दर वर्ण वाली तरङ्गों से युक्त, विवर्त रूपी माला को धारण करने वाली,फेन से युक्त सोन नदी का आलिङ्गन स्नेहपूर्वक करती है। वर्षाकाल में खुले बालों वाली, शोणिताक्षी काली के समान क्रोधित, उग्र गति से जाने वाली , ऊंची लहरों से पृथ्वी को लीलती हुई सी तटों को तोड़ती हुई सोन नदी दिखती है। यह विन्ध्य के ऊंचे शोणभद्र नामक पर्वत से उद्गत है और अनेक नदियों रूपी सेविकाओं से सेवित राजपुत्री के समान आकर गङ्गा से मिलती है।।१८-२०।।

Then She rushes forth carrying the rich soil adorned with colourful waves wreathed in whirlpools and lovingly embraces the foaming river *Śoṇa*. During the rainy season the river *Śoṇa* looks like terrible *Kālī* with her loosened locks. It rushes with immense speed and seems to swallow the earth by its high waves. She springs from a mountain named *Śoṇabhadra* of the *Vindhya* range. *Śoṇa* is attended by many tributaries and like a princess she flaunts and merges into *Gaṅgā*.[18-20]

पाटलीपुत्र-वर्णनम्

सङ्गमे पाटलीपुत्रमालोकते
मागधैर्निर्मिता राजधानी पुरा ।
पाटलीपुष्पसम्भार-रक्ताञ्चला
गन्धवाहेन पर्यावृता सुन्दरी ।।२१।।
विम्बसाराऽत्मजोऽजातशत्रुर्युवा
शूरवीरो विजिग्ये गणं [६] लिच्छिविम् ।
'वज्जिमल्लान्' पराभूय विस्तारिता
येन साम्राज्यसीमा स्वकीया तदा ।।२२।।
ईक्षमाणा मुहुर्दुःखिता स्वर्धुनी
क्रूरकर्माणमेनञ्च विद्रोहिणम् ।
प्रेषितो येन राजा प्रजारञ्जको
हन्त ! कारागृहं बिम्बसारः पिता ।।२३।।
किञ्च तस्योदयोभद्र इत्याख्यया
भूषितोऽभूदुदारः सुतः साहसी ।

सोन और गङ्गा के सङ्गम के समीप मगध के राजाओं की राजधानी पाटलीपुत्र थी, जो पाटल (गुलाब) के समूहों से भरी होने से लाल अञ्चल वाली तथा सुगन्धित वायु से पूरित तथा सुन्दर थी। बिम्बसार के पुत्र अजात शत्रु ने लिच्छिवि गण राज्य को जीता और वज्जि तथा मल्लों को पराजित कर अपने साम्राज्य का विस्तार किया। स्वर्धुनी इस क्रूर कर्मा विद्रोही युवा अजात शत्रु को देखकर दुःखी होती थी, जिसने अपने पिता बिम्बसार को कारागार में डाल दिया। उस अजात शत्रु का पुत्र उदयभद्र

The Pāṭaliputra

Pāṭaliputra, the capital of the kings of *Magadha* is situated at the confluence of *Śoṇa* and *Gaṅgā*. Once upon a time, it had been full with an abundance of rose (*Pāṭala*) and sweet fragrance. Here, *Bimbasār*'s son *Ajātśatru* over- powered the *Lichhivi* Republic and extended the boundary of his kingdom by defeating *Vajjis* and *Mallas*. *Swardhunī* felt great remorse to see this violent and cruel youth who happened to imprison his own father *Bimbsar*. *Ajatshatru*'s son *Uday Bhadra* for whom he (*Ajātśatru*) built this attractive capital named *Pāṭaliputra*, was brave

राजधानी नवीना विनिर्मापिता
यत्कृते पाटलीपुत्रनामा शुभा ।।२४।।
शैशुनागादनुस्वीकृतं सत्त्वरं
नन्दवंशेन साम्राज्यमेतन्ननु [७] ।
अन्तिमो येषु नन्दोऽभवद् दुर्जनो
ब्राह्मणानां विरोधी प्रजापीडकः ।।२५।।
तेन थुत्कारितं विष्णुगुप्तं द्विजं
ब्रह्मवर्चस्ववन्तं [८] महापण्डितम् ।
तं शिखां मोचयन्तं परं क्रोधितं
वीक्ष्य गङ्गाऽप्यभूत् क्षुब्धचित्ता तदा ।।२६।।
नन्दवंशप्रणाशे प्रतिज्ञापरः [९]
सैष चाणक्यनामा व्रती ब्राह्मणः ।
चन्द्रगुप्तं महानायकं प्रैरिरद्
मौर्यसाम्राज्य-संस्थापनाय प्रधीः ।।२७।।

साहसी और उदार था और साम्राज्य के विस्तार में लगा था। उसी के लिए उसने पाटलीपुत्र नाम की सुन्दर राजधानी बनवाई ।।२१-२४।।

पाटलीपुत्र में शैशुनाग वंश के पश्चात् नन्दवंश ने राज्य किया, जिसका अन्तिम राजा ब्राह्मणों का विरोधी और प्रजा का पीड़क था। उसने विष्णुगुप्त नामक महान् पण्डित, ब्रह्मतेज सम्पन्न ब्राह्मण का तिरस्कार किया; उस समय शिखा खोलते हुए नन्द वंश के विनाश की प्रतिज्ञा करने वाले, क्रोध से लाल उस ब्राह्मण को देखकर गङ्गा भी बड़ी दुःखी हुई। वह चाणक्य नाम का व्रती ब्राह्मण नंदवंश के सर्वनाश के

and generous.[21-24]

At *Pāṭaliputra* the *Nanda* dynasty succeeded the *Śaiśunāga* dynasty and its last king was an anti-brahmin and a tormentor of the populace. He had shown deep irreverence to a great brahmin scholar *Viṣṇugupta*. When he uncoiled his *śikhā*, making a vow to destroy the *Nanda* dynasty, *Gaṅgā* felt deeply sorry to see the blood-shot eyes of the brahmin. This brahmin assumed the name of *Chāṇakya* and inspired *Chandragupta Maurya* a great warrior

राज्यलिप्सून् सदा विद्विषन्तो नृपान्
छेत्तुमैच्छत् तदा कूटनीतिप्रियः ।
अर्थशास्त्रप्रणेता मनीषी महान्
भारतीयैकताऽऽखण्डतोन्नायकः[१०] ॥२८॥

अर्थश्च मूलमुभयोः पुरुषार्थयोर्वै
अर्थो मनुष्यभरिता सकला धरित्री।
राज्ञि स्वधर्मनिरते सति जीवलोकः
सौख्यं लभेत सुतरामिति कौटिलीयम्[११] ॥२९॥
आन्वीक्षिकीप्रभृतयो विमलाः चतस्रो
विद्या अधीत्य विनयेन विभासमानः ।
राजा प्रजा-विनयने कुशलः प्रतापी
भुङ्क्ते सदा वसुमतीमिति कौटिलीयम्[१२] ॥३०॥

लिये चन्द्रगुप्त नामक महान् सेनानी को मौर्यसाम्राज्य की स्थापना की प्रेरणा देने लगा। नीतिज्ञ चाणक्य ने राज्य लिप्सा में रत एक दूसरे से वैर करने वाले राजाओं में फूट डालना प्रारम्भ किया। वह महान् मनीषी अर्थशास्त्र का रचनाकार था तथा भारतीय एकता और अखण्डता का उन्नायक था।।२५-२८।।

कौटिल्य ने अपने ग्रन्थ में प्रतिपादित किया कि - अर्थ धर्म और काम दोनों पुरुषार्थों का आधार है। अर्थ शब्द मनुष्यों वाली सम्पूर्ण पृथ्वी के लिये प्रयुक्त है। राजा जब धर्म में निरत होता है तभी सभी प्राणी सुख प्राप्त करते हैं। आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता, दण्डनीति -इन चारों विद्याओं के अध्ययन से जब राजा में विनय आता

to found the *Mourya* dynasty. *Chāṇakya*, a great diplomat started to sow hostility and dessension among the ambitious kings who were inimical to eachother. The wise man was a great economist and stood for the integration of India.[25-28]

Kautilya in his great book *Arthaśāstra* asserts that -*Artha* is the base of *Dharma* and *Kāma*. The term *Artha* denotes this entire earth. When the king observes *Dharma*, all the creatures are happy. When a king studies *Ānvīkṣikī*, *Trayī*, *Vārttā* and *Daṇḍnīti*, he

वित्तं त्वपात्रकरयोर्न भवेत् कदाचित्
पात्रो धनेन न कदापि च वञ्चितः स्यात् ।
सम्यक्पदेषु विनियोगविधानरूपं
शास्त्रं सदा विजयते विपुलं गभीरम्[१३] ।।३१।।

सिंहासने समधिरोहयितुं प्रवृत्तो
यश्चन्द्रगुप्तमनिशं ह्युपदेष्टुकामः ।
सद्राजनीतिविषयं विशदीचकार
श्रेष्ठं तमूर्मिभिरहो ! अभिनन्दयन्ती ।।३२।।

अग्रे गता समवलोक्य प्रजां प्रसन्नां
कौटिल्यशिष्य-परिपालनलब्धशान्तिम् ।
सा प्रावहत् सुविमला मधुरस्वनेन
प्रेष्ठं सुतं मृदुलयैरनुलालयन्ती ।।३३।।

है, तब प्रतापी राजा प्रजा में विनय का आधान करके पृथ्वी पर राज्य करता है। धन को अपात्र को नहीं देना चाहिए और पात्र को कभी धन से वञ्चित नहीं करना चाहिए। यह सम्यक् विनियोग का विधान करने वाला कौटिलीय अर्थ शास्त्र अत्यन्त गम्भीर सिद्धान्तों का प्रतिपादक है।।२९-३१।।

जो चाणक्य चन्द्रगुप्त को सिंहासन पर बैठाने के लिए उसे उपदेश देता था, उसने सद्राजनीति के विषय को अपने ग्रन्थ अर्थशास्त्र में विस्तृत किया। उस श्रेष्ठ पुत्र को गंगा लहरों से अभिनन्दित करती हुई आगे बढ़ी और कौटिल्य के शिष्य चन्द्रगुप्त के द्वारा पालित शान्ति पूर्ण जीवन व्यतीत करने वाली प्रजा को देखकर

begets humility, then the valorous king instils the same in his subjects and rules over the earth. Moreover wealth should not be given to the undeserving person and a deserving one should not be deprived of wealth. The *Arthaśāstra* of *Kautilya* teaches the art of proper investment and propounds extremely significant theories.[29-31]

He was the same man who wanted to enthrone *Chandragupta* and expounded the salient features of morality in politics in his *Arthaśāstra*. *Gaṅgā* had honoured that great son with Her rippels and had appreciated the peace-loving people

तस्य पौत्रो जिगीषुः प्रचण्डो युवा
बिन्दुसारस्य पुत्रो महासैनिकः ।
नैकदेशान् विजिग्ये रणे कीर्तिमान्
शूरवीरः प्रतापी नृपो विश्रुतः[१४] ।।३४।।
अश्रुपातच्छलेनाऽवहद् निष्ठुरात्
चेतसः तस्य कारुण्यधाराऽद्भुता ।
दृष्टवान् रक्तपातं कलिङ्गे यदा
कातरोऽभूदशोको व्यथाविह्वलः[१५] ।।३५।।
पार्थिवं तं दयाधारया प्लावितुं
नूनमादाय गङ्गातरङ्गाः शुभाः ।
तेन कारुण्यमातन्वता प्रेषिता
आत्मबोधस्वरूपाः प्रकाशप्रदाः ।।३६।।

विमल धारा से बही और अपनी मधुर ध्वनि से प्रिय पुत्र चन्द्रगुप्त को दुलारने लगी । चन्द्रगुप्त का पौत्र और बिन्दुसार का पुत्र अशोक महान् सेनानी था। उसने युद्ध में अनेक देशों को जीत लिया ; जो शूरवीर, प्रतापी विश्वविख्यात राजा हुआ, उसके निष्ठुर हृदय से आंसुओं के बहाने करुणा की धारा बह चली। जब उसने कलिङ्ग युद्ध में रक्त पात देखा तो दुःख से भरकर अशोक कातर हो उठा। उस समय मानों गङ्गा की लहरों से आत्मबोध एवं प्रकाश प्रदान करने वाली ज्ञान तरंगें लेकर करुणा का प्रसार करने वाले गौतम बुद्ध ने उस राजा के पास यह उपदेश भेजा -।।३२-३६।।

living under the protection of *Chandragupta* and with the music of Her waters caressed the king. *Aśoka*, the grandson of *Chandragupta* and the son of *Bindusāra* was a great warrior. He conquered a host of countries and became celeberated as a brave king. The hard-hearted *Aśoka* shed tears of compassion when he saw that terrible bloodshed in the war of *Kaliṅga*. At that time *Buddha*, the champion of love and compassion sent to the king enlightenment and self-knowledge as if divining them from the waves of *Gaṅgā*.[32-36]

सर्वं प्रतिक्षणमिदं परिवर्तमानं
सर्वं स्वलक्षणमिदं परिदृश्यमानम् ।
शून्यं प्रपञ्चमखिलं प्रतिभाति दुःखं
'भन्ते'! कथं भजसि वृत्तिमिमां कठोराम्[१६] ।।३७।।

हिंसां विहाय करुणार्णवमज्जितः सन्
त्वं मानसात् सकलतापमपेतुकामः।
नित्यं समाचर 'भदन्त' ! चराचरेषु
प्रीतिं तथाऽतिसुभगां मृदुलामहिंसाम् ।।३८।।

अष्टाङ्गमार्गमधुना[१७] त्वमतन्द्रितः सन्
सम्यक् समाचर पवित्रयितुं स्वचित्तम् ।
आगत्य संघशरणं शृणु मे प्रशान्तां
श्रेयस्करीं सदुपदेशमयीं सुवाणीम् ।।३९।।

शस्त्रैर्जयं जहि बिभेहि विनाशवृत्तेः
प्रेम्णा मनोविजयमिच्छ सदा प्रजायाः।

तथागत ने कहा – 'हे भन्ते! जो कुछ संसार में दिखाई दे रहा है वह क्षणिक है, स्वलक्षण है और शून्य है। फिर तुम ऐसी कठोर प्रवृत्ति में क्यों लगे हो ? हिंसा को त्याग कर करुणा में डूब कर अपने मन से सम्पूर्ण ताप मिटा दो। हे भदन्त! चर और अचर सभी में सुन्दर प्रीति और कोमल अहिंसा का आचरण करो। तुम अब आलस्य का परित्याग कर अपने चित्त को पवित्र करने के लिए अष्टाङ्ग मार्ग को अपनाओ और संघ की शरण में आकर 'बुद्धं शरणं गच्छामि' की कल्याणमयी और सुन्दर उपदेशमयी मेरी वाणी को सुनो। शस्त्रों से जय करना छोड़ दो, विनाशवृत्ति से बचो और प्रजा के मन

Tathāgata said,"O *Bhante*! whatever is visible in this world is transitory (*kṣaṇik*) and *śūnya*. Why then do you fan up cruelty? Give up voilence and experience peace practising compassion. O *Bhadant*! treat every creature of this creation with love and compassion. Renounce inertia now and for purification of the self, accept *Aṣṭāṅga-mārga*. Come to the fold of the *Saṅgha* and listen to the redeeming call '*Buddham Śaraṇam Gachhāmi*' and my preachings. Abandon the practice of conquering by force, win

धर्मप्रचारनिपुणस्य नृपस्य नूनं
वश्या भवन्ति सुतरां स्वयमेव लोकाः ।।४०।।
एतत् तथागतवचः मधुरं हितञ्च
श्रुत्वा प्रसन्नवदनः परिहीनशोकः ।
बौद्धो भवन्नतितरां सदयो नरेन्द्रो
राज्यं चकार सुचिरं मतिमानशोकः ।।४१।।
उन्नतिर्ह्रास आलोकितो नैकधा
निर्विशेषेण भावेन राज्ञां तया ।
विक्रमादित्यराज्ये पुनः प्रेक्षितः
काव्य-सङ्गीत-साहित्यशास्त्रोदयः ।।४२।।
ईक्षती संस्कृतिं सभ्यतामुन्नतां
धर्म-विज्ञान-साहित्य-शास्त्रोदयम् ।
गुप्तकाले सुवर्णे युगे प्रावहद्
गाङ्गधारा प्रहृष्टा सती मञ्जुला ।।४३।।

को प्रेम से जीत लो। जो राजा धर्म के प्रचार में निपुण होता है उसके वश में लोक स्वयं हो जाता है'। तथागत की इस मधुर और हितकारी वाणी को सुनकर शोक को त्याग कर प्रसन्न मुख वाला, बौद्ध बनकर दयालु राजा अशोक बहुत दिन तक राज्य करता रहा ।।३७-४१।।

श्रीगङ्गा ने इस प्रकार राजाओं की उन्नति और ह्रास को निर्विशेष भाव से देखा। विक्रमादित्य के राज्य में पुनः साहित्य-संगीत-कला की उन्नति हुई। संस्कृति व सभ्यता की उन्नति, धर्म, विज्ञान, साहित्य और शास्त्र का अभ्युदय देखती हुई गङ्गा

over your subject by the power of love. The common man becomes easily overpowered by that king who follows the path of *Dharma*." Hearing these beneficial teachings of *Tathāgata*, *Aśoka* relinquished his remorse, became a follower of *Buddha* and ruled as a compassionate king.[37-41]

Śrī Gaṅgā, thus, had watched with an air of detachment the rise and fall of the kings. There was a resurgence of art and music and literature during the reign of *Vikramāditya*. *Gaṅgā* rejoiced

कालक्रमेण परिवर्तित-भाग्यचक्रां
दुर्भाग्य-केतुकवलीकृतराजधानीम् ।
क्रूरत्व-ताण्डव-विनष्टसुखामशान्तां ।
दृष्ट्वा द्रुता करुणया विललाप गङ्गा ।।४४।।

हूणैरसङ्ख्य[१८]-वनवासिभिरत्यसभ्यै
आक्रामकैश्च परिलुण्ठित-सर्वशोभाम् ।
तां पाटलीं समवलोक्य समृद्धिहीनां
नूनं स्वभावमृदुला विललाप गङ्गा ।।४५।।

तान् लुण्ठकान् समवरोधयितुं प्रवृत्तः
स्कन्दः कुमारवदयुध्यत शत्रुसैन्यम् ।
तं चिन्तितं स्वलहरीमभिलक्षयन्तं[१९]
वात्सल्यपूर्णहृदया स्मरतीह गङ्गा ।।४६।।

तां पाटलीमभिनवामवलोक्य सिद्धां
वाणीं तथागतमुखात् स्फुटितां तदैव।

गुप्तकाल में प्रसन्नता पूर्वक बही। कालक्रम से पाटलीपुत्र दुर्भाग्य रूपी केतु द्वारा ग्रस ली गई, क्रूरता के ताण्डव ने उस का सुख-चैन छीन लिया, वनवासी असभ्य हूंणों ने आक्रमण कर उसकी शोभा को नष्ट कर दिया। पाटली को ऐसी लुटी हुई देख स्वभाव से कोमल गङ्गा ने मानो विलाप किया । उन लुटेरों को रोकने में आजीवन लगे कार्तिकेय के समान स्कन्द गुप्त शत्रु सेना से आजीवन लड़ते रहे। चिन्तामग्न महल के झरोखे से अपनी गङ्गा की लहरों को एक टक देखने वाले अपने उस पुत्र को गङ्गा आज भी याद करती हैं। जब पाटली का निर्माण हो रहा था

to see the reawaking of culture, religion, science and creative writing during the Gupta dynasty. In the course of time misfortune eclipsed *Pāṭaliputra*. Its peace and prosperity were ruined by the onslaught of violence. The barbarian *Huṇās* attacked and disfigured *Pāṭaliputra*. To see *Pāṭaliputra* raveged thus, the tender-hearted *Gaṅgā* wailed heavily. *Skandagupta* like *Kārtikeya* fought for his entire life to thwart the army of those vandals. She still now remembers her worried son looking at Her

'अभ्युन्नतिं परमवाप्य विनङ्क्ष्यतीयं
कालक्रमेण नगरी' स्मरतीति गङ्गा ।।४७।।

ईक्षतेऽथ प्रतिष्ठापितं पत्तनं
'पट्टणं' शेरशाहेण संज्ञापितम् ।
दुर्गमप्यत्र तीरे कृतं सुन्दरं
राजनीतिप्रियाणां कृते सौख्यदम् ।।४८।।

राजधानी विहारप्रदेशस्य या
साम्प्रतं ज्ञायते सर्व-सौविध्यदा ।
नागरीसभ्यतासंयुताद्यापि पू-
रस्ति वाणिज्यकेन्द्रं समेषां कृते ।।४९।।

यत्र गोविन्दसिंहो गुरुः साहसी
स्वाभिमानी दृढो[२०] जन्म लेभे शुचिः ।

उस समय तथागत ने कहा था कि यह नगरी अभ्युदय को प्राप्त होगी, किन्तु कुछ समय बाद नष्ट कर दी जायेगी- बुद्ध के वे वचन गङ्गा को आज भी याद हैं।।४४-४७।।

उसके बाद वह शेरशाह के द्वारा स्थापित पट्टण (पटना) को देखती है और तट पर बने दुर्ग को भी, जो राजनैतिक गतिविधियों का प्रमुख स्थल रहा है, देखती है। यह पटना आज विहार केन्द्र की राजधानी है और सब सुख सुविधा, नगरीय सभ्यता से युक्त प्रमुख व्यापार केन्द्र है। यहां स्वाभिमानी, पवित्र एवं साहसी गुरुगोविन्द सिंह ने जन्म लिया था और प्राणदान करने पर भी धर्मान्तरण नहीं होने

waves intently through the casement of his palace. It is said that *Tathāgata* had prophesied at the time when the city of *Pāṭalī* was being built that it would see its full flowering but it would also meet its decay later on. *Gaṅgā* till today remembers that prediction of the *Buddha*.[44-47]

Gaṅgā flows past the city of Patna (*Paṭṭaṇa*) founded by Sher Shah and the castle built on Her bank.It happened to be the centre of political activities. At present it is the capital of Bihar and an important buisness centre enjoying the amenities of the modern city life. Here the self-respecting, righteous and fearless

प्राणदानेऽपि न स्वीचकार व्रती
धर्मवीरः स धर्मान्तरं कुत्सितम् ।।५०।।
हन्त ! भित्तौ हठात् स्थापयित्वा चितौ
शासकैः तस्य पुत्रौ स्वधर्मे रतौ ।
तद्धि मर्मान्तपीडाकरं वृत्तकं
स्मर्यते नो कथं सार्द्रया गङ्गया ।।५१।।
वैजयन्ती प्रदेया यशस्कारिणी
यस्य नाम्ना रणक्रीडने केसरी ।
'जीतसिंह' स्तथा निर्ममे मन्दिरं
यत्र तं प्लावयन्ती पुरं दृश्यते ।।५२।।
सङ्गमय्योर्वरत्वप्रदात्रीमसौ
गण्डकीं पावनीं जातु नारायणीम् ।
स्वल्पसारां गयातीर्थसंशोभितां
फल्गुधारां नयन्तीं नदीं पश्यति ।।५३।।

दिया था। उनके दोनों पुत्रों को शासकों द्वारा दीवार पर चुन दिया गया था, जो अपने धर्म के प्रति निष्ठा रखते थे। उस मर्मान्त पीड़ादायी घटना को आर्द्र गङ्गा भला क्यों न याद करेगी। जिस के नाम से यश फैलाने वाली वैजयन्ती (रणजीत सिंह ट्राफी) दी जाती है,उन खेल जगत् के केसरी जीत सिंह ने यहां सुन्दर मन्दिर बनवाया है ।।४८-५२।।

इससे आगे भूमि को उर्वरता प्रदान करने वाली गण्डकी नदी को मिला कर, अल्प जलवाली गयातीर्थ में बहने वाली फल्गु नदी को मिलाने वाली पुनपुन नदी

Guru Govinda Singh was born who embraced death yet did not get converted. His sons were immured alive inside walls by the rulers, as they stood totally dedicated to their own religion. Why shouldn't the moist *Gaṅgā* remember this distressing tragedy? The great sports personality Raṇajīt Singh after whose name the prestigious Raṇjīt Singh Trophy is given has built an imposing temple here.[48-52]

She (*Gaṅgā*) embraces the river *Gaṇḍakī* which turns the soil fertile and then watches the flow of the river *Punpun* which

पुनः पुनां पुनः पुनर्विलोक्य सुप्रवाहिताम् ।
चलज्जलां मनोहरां नयत्यसौ सुसङ्गताम् ।।५४।।

वैशालीं गणतन्त्रशासनयुतामादर्शभूतां पुरा
शान्तां लिच्छिविशासकैर् बहुतरां सम्वर्धितां सुन्दरीम् ।
स्मारं स्मारमहो ! विलुप्तविभवां यात्यग्रतः स्वर्धुनी
काल़स्यैव गतिं विचिन्त्य कुटिलामुत्थानपातान्विताम् ।।५५।।

नालन्दां प्रसृतप्रकीर्तिमतुलां शिक्षास्थलीं नित्यशो
दिङ्नागादिबुधैः प्रतर्कपटुभिर् बौद्धैः समालङ्कृताम् ।
तुर्कैर् नष्टसमस्तशास्त्रविभवां ध्वंसावशिष्टां बत
प्रज्ञानेन विभूषिता समरसा जानाति सा साक्षिणी[२१] ।।५६।।

को श्रीगङ्गा देखती हैं। सुन्दर जलवाली पुनपुन को लेकर आगे बढ़ती हुई गङ्गा वैशाली गणराज्य के उत्कृष्ट वैभव का स्मरण करती है,जो लिच्छिवि शासकों द्वारा समृद्ध की गई थी। उसकी वर्तमान स्थिति पर तरस खाकर वह उत्थान और पतन से युक्त काल की कुटिल गति के विषय में विचार करती है। दिङ्नाग आदि तार्किक बौद्धों से अलङ्कृत विख्यात शिक्षा स्थली नालन्दा को तुर्कों ने नष्टकर दिया। वहां के पुस्तकालय को भस्म कर दिया । इस समय उसके ध्वंसावशेष बचे हैं। उसके विषय में साक्षीरूप से बहती हुई ज्ञान से समत्व को प्राप्त हुई गङ्गा जानती हैं।।५३-५६।।

connects itself with *Phalgu*, a river with scanty waters gliding in *Gayā* region. *Gaṅgā* proceeds forward assimilating the alluring water of *Punpun*. She remembers the great wealth of the Republic of *Vaiśāli* which was made prosperous by the *Lichhivi* rulers. She takes pity on its present plight and ponders over the intricate nature of transitory time. The Turks had attacked and ruined the famous educational centre of *Nālandā* university enriched by the presence of the Buddhist logicians like *Diṅgnāga* and others. The invaders torchd the library of rare books. At present the ruins are to be seen alone. The enlightened *Gaṅgā* knows about this and keeps on flowing as an witness to all this event stoically.[53-56]

राजधानी पुरा बिम्बसारस्य या
राजमाना स्म रम्या समृद्धा वरा ।
वैभवाभूषितां तां समृद्धामपि
ध्वंसशेषामिदानीं विजानात्यसौ ।।५७।।

वैभार-रत्न-विपुलोदय-हेमसंज्ञैः
पञ्चाद्रिभिः परिवृतां परमां सुरम्याम् ।
शीतोष्णकुण्डलसितां विमलैः प्रपातैर्
युक्तां गिरिव्रजमिति[22] श्रुतनामधेयाम्।।५८।।

राज्यप्रकर्षमधिगम्य चिरं रराज
प्रासाद-हर्म्य-मठ-मन्दिर-सङ्कुला या।
सैवाऽद्य राज[23]-गृहमित्यभिधीयमाना
विज्ञायते मगधभूपतिराजधानी ।।५९।।

पाटलीपुत्र से पहले जो राजधानी विम्बसार द्वारा शासित थी, वैभव से परिपूर्ण उस समृद्ध स्थली को आज वे ध्वंसावशेषों में देख रही हैं। इस नगरी का नाम गिरिव्रज था , क्यों कि वहां वैभारगिरि, रत्नगिर, विपुलगिरि, उदयगिरि और सुवर्णगिरि नाम की पहाड़ियां हैं, जो शीतल और उष्ण जल के कुण्डों से युक्त सुन्दर झरनों से सजी हुई सुरम्य स्थली है। जो राज्य की अभ्युन्नति को प्राप्त कर बहुत दिनों तक शोभायमान थी, महलों , मठों ,मन्दिरों से भरी थी, वही राजगीर (राजगृह) नाम से आजकल जानी जाती है। मगध राजाओं की यह राजधानी आज भी पुरातत्त्ववेत्ताओं

She now witnesses that prosperous capital lying in ruins, once ruled by *Bimbsār* prior to the creation of *Pātaliputra*. This city was later known as *Giribraja* as there are different mountain ranges named *Vaibhārgiri*, *Ratnagiri*, *Vipulgiri*, *Udayagiri* and *Suvarṇagiri*, which are richly endowed with the reservoirs of warm and cool water and beautiful springs as well. This enchanting place has seen the burgeoning of the state to the full. This place which once teemed with palạces, monasteries, temples at present is known as *Rājagīra* (*Rājagṛha*). Even today this capital of *Magadha*

अद्यापि दर्शकगणैरभिनन्द्यमाना
स्वातीतगौरवकथामभिजल्पतीव ।
श्यामाञ्चला विविध-पादप-पुष्परम्या
विज्ञायते मगधभूपति-राजधानी ।।६०।।

दूरतो द्वारबङ्गं विलोक्याऽमृता
जानकीजन्मभूमिं नमन्ती गता ।
मैथिलं कोकिलं नाम विद्यापतिं
संस्मन्तीशभक्तं कविं साधकम् ।।६१।।

श्रूयते भक्तिभावाञ्चितस्याप्यहो !
आर्द्रचित्तस्य वाणीं[२४] तदा शृण्वती।
आगता तत्समीपे स्वयं कोमला
सा द्रुता स्नेहधारामयी वत्सला ।।६२।।

अङ्गदेशे तरङ्गैः पदं स्थापितं
यत्र चासीत् पुरा मुद्गलस्याश्रमः।

और दर्शकों द्वारा देखी जाती है, खण्डहरों में स्थित वह अपने अतीत की गौरव गाथा को कहती हुई सी नजर आती है, हरी-भरी विभिन्न पेड़ों-पौधों और फूलों से सुशोभित है।। ५७-६०।।

श्रीगङ्गा दूर से ही दरभंगा को देखकर जानकी की जन्म भूमि मिथिला को प्रणाम करती हैं और मैथिल कोकिल विद्यापति का स्मरण करती हैं। भक्ति से सराबोर जिसकी आर्तवाणी को सुनकर स्नेह धारामयी वत्सला गङ्गा स्वयं उनके पास द्रवित होकर आईं- ऐसा सुना जाता है। फिर उन्होंने अङ्गदेश में कदम

emperors is a centre visited both by the archeologists and the common sight seers. Existing in the desolate ruins the ancient city seems to recount its past glory.[57-60]

Śrī Gaṅgā bows to *Jānakī*'s birth place *Mithilā*, when She nears *Darbhangā* and recalls *Vidyāpati*, the great poet of *Mithilā*. It is said that *Gaṅgā* bearing Her stream of affection reached this dedicated son of Hers to hear his cry of anguish. Then She set Her foot on the land of *Aṅgadeśa* where there once happened to

सप्तधाराभिरावर्धितां गण्डकीं
भाग्यवत्या युतां मेलयन्त्याऽनया ।।६३।।
उर्वरे भूमिभागे सुरम्येऽत्र यद्
दुर्गमुत्कृष्टमासीत् स्थितं रोधसि।
तद्धि भग्नावशिष्टं बत प्राक्तनं
गौरवं श्रावयत् शोभते साम्प्रतम् ।।६४।।
वीक्षिते जह्नुसिद्धाश्रमे पावने
प्रीतिपाथोदधौ मज्जिता जह्नुजा ।
पितृगेहं समासाद्य किञ्चित् क्षणं
ग्लापयित्वा श्रमं प्रस्थिता चञ्चला ।।६५।।
अत्र चम्पाभिधाना महार्हाऽनया
राजधान्यङ्गदेशस्य दृष्टा पुरा ।
सा विकासेन ऋद्धा पुरी चान्तिमा-
ऽऽसीत्ततो विस्तृतं काननं शोभितम् ।।६६।।

रखा जहां पहले मुद्गल ऋषि का आश्रम था। मुंगेर जिले में सात धाराओं से युक्त और भागमती को मिलाने वाली बूढ़ी गण्डक को वे अपने में मिलाती हैं।।६१-६३।।

इस उपजाऊ भूमि में उनके तट पर एक सुन्दर दुर्ग बना था, जो अब भग्नावशेष के रूप में अपने गौरव की कहानी कह रहा है। यहां जह्नु ऋषि के आश्रम को देखकर गंगा प्रसन्न होती हैं , अपने पिता के घर में थोड़ी देर विश्राम करती हुई सी थकान दूर करती हुई आगे बढ़ जाती हैं।यहाँ पहले अत्यन्त समृद्ध चम्पा नाम की

be the hermitage of *Mudgal Ṛṣi.* At Munger she enjoins with Her stream the river *Būḍī Gaṇḍaka,* which has seven streams and also absorbs in itself the river *Bāgamatī.*[61-63]

On this fertile land, on Her bank there was a fort which today narrates the tale of its past glory lying in its present dissolution. *Gaṅgā* is elated to see the hermitage of *Jahnu Ṛṣi.* She seems to rest for a while at Her father's house and after getting refreshed procceeds further.Long ago the immensely luxuriant

साम्प्रतं दक्षिणे रोधसि स्थापितं
साऽगताऽन्यत्पुरं नूतनं सिञ्चितुम् ।
आकरैः पूरितं तून्नतं सौख्यदं
तत्समुद्योगशीलैर् नरैः सङ्कुलम् ।।६७।।
अत्र गङ्गा गभीरा विशालाञ्चला
कौशिकीं सङ्गमायाह्वयत्यूर्मिभिः ।
शापरूपं विहारप्रदेशाय हा !
वृष्टिकालेऽतिविद्रोहिणीं वर्धिताम् ।।६८।।
तामजेयां समाहूय गङ्गा ततः
कौशिकीं सप्तधाराभिरावर्धिताम् ।
बङ्गदेशस्य या राजधानी पुरा
तां गताऽधित्यकां पर्वतैः संयुताम् ।।६९।।

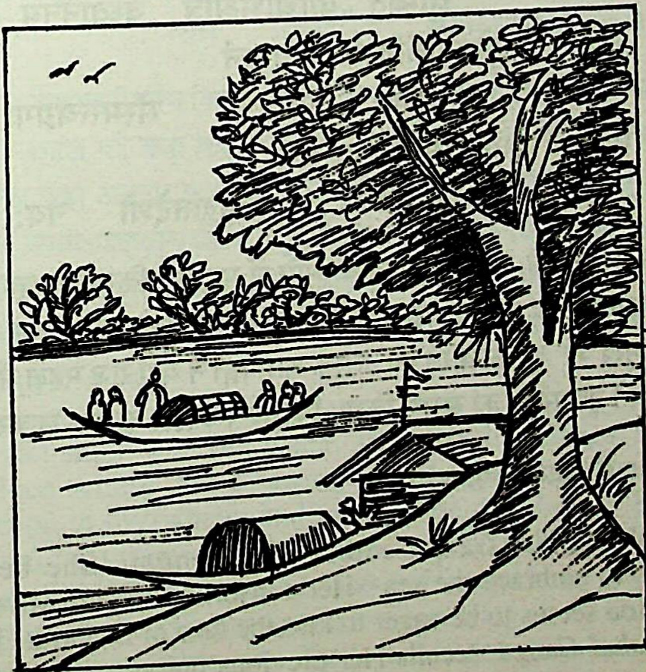
नगरी अङ्ग देश की राजधानी थी, जो विकसित होने से वैभवपूर्ण थी। इसके आगे का क्षेत्र विशाल जंगल था। अब वे अपने दाहिने तट पर स्थित भागलपुर नामक नये नगर को सींचने जाती हैं जो खानों से युक्त, धन से उन्नत, सुख-सुविधा सम्पन्न और उद्योग के कल-कारखानों से युक्त है। यहां गम्भीर विशाल अञ्चल वाली गङ्गा अपनी लहरों से कौशिकी को सङ्गम के लिये मिलाती है, जो वर्षा काल में बाढ़ से अत्यन्त विद्रोहिणी सी लगती है और विहार के लिये शाप रूप है। सात धाराओं में

Champānagari, the capital of *Angadeśa* was situated here. The later was also a highly developed place and hence wealthy. A dense forest stretched beyond it. Now She moves on to moisten the newly built city of *Bhāgalpur* situated on Her right bank, which is endowed with mines, industries and luxury. Here the river *Gaṅgā* with sombre and wide expanse joins along with the river *Kauśikī* which turns ferocious and baneful for Bihar, being flooded during the rainy season. The river *Gaṅgā* reaches the hills of *Rāja Mahala* the erstwhile capital of *Baṅga Bhūmi*. She seems to invite

गङ्गार्णवोभयसमागमसुस्थली या
ख्याता पुरा परमपावनतीर्थरूपा ।
गण्डाद्रिभिः परिवृता रमणीयभूमिः
सैवाऽस्ति 'राजमहलेति'पुरी प्रसिद्धा ।।७०।।

बढ़ी हुई सप्त कोशी को बुलाती हुई गङ्गा राजमहल की पहाड़ियों में जाती है जो पहले बङ्गदेश की राजधानी थी और पर्वतों से सुशोभित है। पहले यहां गङ्गा और सागर का सुन्दर सङ्गम था। यह राजमहल परम पावन तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध था।।६६-७०।।

Saptakośī which billows in seven streams. In the past here was a beautiful confluence of *Gaṅgā* and the sea and it was famed as a very holy pilgrimage.[66-70]



अष्टमः सर्गः

बङ्गभू-वर्णनम्

ऊर्मिपादार्पणं बङ्गभूमौ यदा
सर्वसौभाग्यवत्या कृतं सुन्दरम् ।
कान्तमम्भोधिमालिङ्गितुं चञ्चला-
ऽभूत् तरङ्गैस्तदा सा समुद्रप्रिया ।।१।।
उत्सुकः सागरस्तावदासीत् पुरा
चुम्बितुं वीचिभिश्चात्र वध्वाननम् ।
अत्र बङ्गोपवारांनिधौ पावनं
सङ्गमं प्राक्तनं संस्मरत्यग्रगा ।।२।।
मृत्तिकोपायनं संवहन्त्याऽनया
निर्मितोऽयं समुद्रांतदेशो नवः ।

सर्वसौभाग्यवती श्रीगङ्गा ने जब बंगभूमि में पादार्पण किया तब वह तरङ्गों से अपने कान्त समुद्र का आलिङ्गन करने के लिये चञ्चल हो उठी। सागर भी अपनी वधू के मुख को चुम्बन करने को उत्सुक था। गङ्गा ने यहां राज महल में सागर के साथ अपने पूर्व संगम का स्मरण किया। मिट्टी रूप उपहार को ला-लाकर उसने ही

The Bengal Vignette

When *Śrī Gaṅgā* enters *Baṅgabhūmi*, She becomes restless to embrace the sea–Her consort–with Her waves. The ocean too seems to be eager to kiss the face of his bride. Here at *Rājamahal Gaṅgā* recalls Her previous union with ocean. She has created this delta region of West Bengal by bringing Her rich

पश्चिमो बङ्ग इत्याख्यया विश्रुतो
मृत्तिका स्वर्णमादाय संशोभितः ।।३।।
कर्शिताःत्रासभीताऽत्र बङ्गप्रजा
धारया कृष्णभक्त्या परिप्लावयन् ।
यत्र चैतन्यदेवः किलाऽवातरत्
तं प्रदेशं समासादिता तुष्टिदा ।।४।।
तोयमार्गागतैर् दस्युभिर् लुण्ठिता
वञ्चिता या वणिग्भिश्च वैदेशिकैः।
दुःख-दारिद्रयदीनाः क्षुधापीडिता
दृष्टवत्यत्र बङ्गप्रजाः सा पुरा ।।५।।
अत्र वाणिज्यहेतोः समासादिता
आङ्ग्लवैदेशिका म्लेच्छदेशात् पुरा ।
विस्तृताऽऽवारपारा किलाऽम्भः-पथा
तत्र गङ्गाऽपि पोतावहाऽदृश्यत ।।६।।

इस डेल्टा प्रदेश का निर्माण किया, जिसे पश्चिम बंग कहते हैं। यवनों के अत्याचारों से पीड़ित बंगाल की प्रजा को कृष्णभक्ति की धारा से सींचने के लिये चैतन्य महाप्रभु का जहां अवतार हुआ था, उस प्रदेश में तुष्टिकारिणी गङ्गा जी पहुंची। उसने उस समय जलदस्युओं से लूटी गयी, विदेशी व्यापारियों द्वारा ठगी गई, दुःख-दरिद्रता और भुखमरी से पीड़ित बंग प्रजा को देखा। म्लेच्छ देश ब्रिटेन से अंग्रेज व्यापारी यहां आये। उस समय गङ्गा भी चौड़े फाट वाली थी और उसमें जहाज चलते थे।।१-६।।

gift of soil along with Her water. The placating *Gaṅgā* reaches that place where *Śrī Chaitanya Mahāprabhu* came as an incarnation to overwhelm and nourish the populace of Bengal, oppressed by *yavanas* with the sap of *Kṛṣṇabhakti*. In the bye gone days She had percieved the citizens of Bengal being plundered by pirates, beguiled by foriegn traders and lying in an acute state stricken by famine and poverty. The British traders came here. At that point of time *Gaṅgā* was very wide and navigable.[1-6]

भोगमात्रेरतान् दुर्मतीन् शासकान्
वीक्ष्य निश्चेतना भारतीयाः प्रजाः ।
आङ्ग्लराज्यप्रतिष्ठापनं वञ्चकाः
स्वार्थसिद्धिप्रवीणाः समारेभिरे ।।७।।

'चारनॉको' वणिक् स्वध्वजोत्तोलनं
भारतेऽकल्पयद् धूर्तबुद्धिः सदा ।
बङ्गदेशे भुवं क्रीतवान् प्रायशः
कर्तुमारब्धवान् विक्रयं सर्वतः ।।८।।

व्यापारिणस्ते प्रसृताः समन्तात्
शनैः-शनैः बङ्गविहारभूमौ ।
'सिराजुदौला' नृपतेः प्रयत्नाद्
उन्मूलनं कर्तुमनाः प्रकामम् ।।९।।

सेनापतिः 'क्लाइव'-संज्ञकोऽत्र
व्यराजत प्राप्य जयश्रियं चिरम् ।
'सिराजुदौला'-यवनः प्रवञ्चितो
धूर्तैः स्वसेनानिभिरेव सङ्गरे ।।१०।।

उन लोगों ने यवन शासकों को भोगविलास में डूबा तथा हिन्दुओं को चेतना से शून्य देखकर अपनी स्वार्थ की सिद्धि करना प्रारम्भ किया और अंग्रेजी राज्य की स्थापना के विषय में सोचा। धूर्त बुद्धि चारनॉक ने भारत में अपना झण्डा गाड़ना चाहा। इस लिए उसने बंगाल में जमीन खरीदी और व्यापार करने लगा। धीरे-धीरे अंग्रेज व्यापारी बंगाल और विहार में फैल गये और नबाव सिराजुद्दौला को समूल

To see the luxurious life style of the then rulers and realizing the inertia of the native populace they started making their selfish design effective and thought of promoting the British rule. Clever Job *Chārnoka* acquired land in Bengal and started his business there. Graudually the British traders spread all over Bengal and Bihar and united to uproot *Nawāb Sirājuddoulāh*. They made his army-chief betray him. As a result *Sirājuddoulāh* was badly

आसीत् स युद्धै चतुरः प्रतापवान्
अलं बलं तावदभूत् परेभ्यः ।
तथापि सेनापतिभिश्छलेन
त्यक्तो द्रुहद्भी रणभूमिमंध्ये ।।११।।

एकाकिनं लुण्ठितवैभवं तं
पराजितं नष्टबलं वराकम् ।
कारामुपानीय हतं विपन्नं
विलोक्य गङ्गाऽऽकुलिता बभूव[१] ।।१२।।

सा पलाशस्थली युद्धभूमायिता
भग्नदेहैरसंख्यैः शवैः पूरिता ।
अस्त्र-शस्त्र-प्रहारैर्मुहुर् धर्षिता
रक्तपातैर् भृशं क्लिन्नतां प्रापिता ।।१३।।

रक्तपुष्पैः पलाशैः समाच्छादिता
मङ्गला या मनोहारिणी सैव हा !
रक्तधाराप्रवाहैः कुरूपा सती
काकगृध्रैः शृगालैरभूत् सङ्कुला ।।१४।।

उखाड़ फेंकने में जुट गये। उसके सेनापति को उन्होंने मिला लिया। फलस्वरूप सिराजुद्दौला बुरी तरह हार गया और क्लाइव ने विजय प्राप्त की। यद्यपि यवन नबाब युद्ध कुशल था और उसके पास पर्याप्त सैन्य बल था तथापि अपनों के द्वारा विद्रोह किये जाने के कारण पराजित उसे बन्दी बना लिया गया और उसकी हत्या कर दी गई। ऐसे विपन्न राजा को देखकर गङ्गा व्याकुल हो गई।यह युद्ध प्लासी युद्ध के नाम से जाना जाता है। जो प्लासी पलाश पुष्पों से लाल दिखती थी , वह खून से लाल हो गई। शवों से पूरित होकर कौवों और

defeated and Clive became victorious. The *Nawāb* was a good warrior and had enough soldiers yet was routed in the battle because he was double-crossed by his own men. He was imprisoned and put to death, an incident which annoyed *Gaṅgā* very much. It was the famous battle of *Plāssi*. It was the same *Plāssi* which once flourished with red *palāśa* flowers was soaked in blood. The place was covered with mangled corpses and

भेदनीत्या समुन्मूलिताः शासकाः
पारतन्त्र्याऽन्धकारेऽवलीढा नराः ।
हा! स्वतन्त्रत्वरूपोज्ज्वलोऽर्कस्तदा
भारतेऽस्तङ्गतो दीर्घकालावधिम् ।।१५।।
एतदुत्थानपातं क्रमेणाऽऽगतं
वीक्षमाणोद्गमादासमुद्रं सदा ।
पुत्रकाणां गुणान्दोषजातोभयं
प्रेङ्खती स्वर्धुनी याति रात्रिन्दिवम् ।।१६।।
रामकृष्णोपदेशामृतं पावनं
पाययन्ती स्वतोयेन सम्मिश्रितम् ।
जीवयन्तीव तावद् विपन्नाः प्रजा
बङ्गभूमिं समासादिता पुण्यदा ।।१७।।
मातरं सारदां सत्त्वशीलां तथा
भारतं दीपयन्तं नरेन्द्रं सुतम् ।

चीलों द्वारा ढक ली गई।।७-१४।।

भारतीय शासक भेदनीति (फूट) से उखाड़ दिये गये और सभी लोग परतन्त्रता के गहन अन्धकार में डूब गये। भारत में बहुत दिनों के लिए स्वतन्त्रता का सूरज डूब गया। क्रमशः इस उत्थान पतन को देखती हुई श्रीगङ्गा समुद्रपर्यन्त बहती रही। उन्होंने अपने ही पुत्रों के दोषों और गुणों को इसका कारण माना और रात-दिन अपने कर्तव्य में लगी रहीं । विपत्ति ग्रस्त प्रजा को अपने जल में मिश्रित रामकृष्ण परमहंस के पावन उपदेशामृत को पिलाती हुई वे बंगभूमि में आईं। मां सारदा

ridden with crows and vultures.[7-14]

The policy of divide and rule ousted the Indian rulers and everybody sank in the darkness of slavery. The sun of freedom disappeared for a long time. *Gaṅgā* has ever been a witness to the rise and fall of Her sons. She has perennially flown to the ocean accepting the fact that it is the nature of their action which has determined their fate.She has come to *Baṅgabhūmi* nourishing the imperilled subject with Her water, saturated with the holy

तं विवेकेन पूर्णं सदाऽऽनन्दितं
यत्र सास्मर्यते बङ्गभूमौ मुदा ।।१८।।
ब्रुवन्तमुत्तिष्ठत जाग्रतेति स्वधर्मरक्षाव्रतिनं महान्तम् ।
विवेकिनं ज्ञं कृतिनं विवेकानन्दाभिधेयं स्मरतीह गङ्गा ।।१९।।
यावन्न लक्ष्यं त्वधिगम्यते स्वंतावत्प्रयान्तु प्रयता युवानः।
इतीरयन्तं सततं विवेकानन्दाभिधेयं सुपथं नयन्तम् ।।२०।।
हिन्दुत्वभावं प्रतिबोधयन्तं वैराग्यमादाय परिव्रजन्तम् ।
स्वसंस्कृतेरुन्नयनं चिकीर्षुं वेदान्तिनं भारतभूषणं तम् ।।२१।।
अज्ञाननिद्राहतचेतनानाम् उद्बोधने तत्परमानसञ्च ।
साक्षात्कृतात्मानमहो ! विवेकानन्दाभिधेयं श्रुतिसारविज्ञम् ।।२२।।
दीक्षां गृहीत्वा किल रामकृष्णाद्
ऐच्छत् समन्ताद् नव जागृतिं यः।
देशे-विदेशे भ्रमणं चकार
स्वधर्मनिष्ठाभ्युदयाय सम्यक् ।।२३।।

तथा नरेन्द्र विवेकानन्द को वे सदा याद करती हैं।।१५-१८।।

"उठो जागो लक्ष्य की पूर्ति होने तक मत रुको" – ऐसा कहने वाले विवेक से परिपूर्ण विवेकानन्द को श्रीगङ्गा यहां याद करती हैं; जो हिन्दुत्व जगाने वाले, विरागी साधु , अपनी संस्कृति का उन्नयन करने के इच्छुक , वेदान्त मर्मज्ञ , भारत के भूषण हैं; जो अज्ञान रूपी गाढ निद्रा से आहत चेतना वालों का उद्बोधन करने में लगे हैं, आत्मसाक्षात्कार कर्ता हैं और वेदों के रहस्य को जानते हैं ; रामकृष्ण परमहंस से दीक्षा लेकर जिन्होंने चारों ओर नव जागरण का आह्वान किया और

precepts of *Śrī Rāmakṛṣṇa Paramhaṅsa*. She has ever remembered Mother *Sāradā* and *Narendra-Vivekānanda*.[15-18]

She reminisces the latter's outstanding rousing call,"Arise awake, stop not until the goal is reached." He is the detached *sanyāsi* who has worked to awaken the real spirit of Hinduism. He has been desirous of bringing about a revival of his own culture. He has been a great knower of the quintessence of the *Vedas*. He stands as a precious jewel embellishing Mother India. After getting indoctrinated by *Śrī Rāmakṛṣṇa Paramhansa* he toiled

कन्याकुमारीं समवाप्य धीरः सदा वितर्कार्णवमज्जितः सन् ।
अपश्यदेकाग्रमना मनस्वी पयोनिधेरेव तरङ्गभङ्गान् ।।२४।।

क्षुधां पिपासां परिहाय कामं
शिलोपविष्टो दिवसत्रयं सः ।
निनाय देशे ह्यनुरक्तचित्तः
विचारमग्नो करुणो विरक्तः ।।२५।।

धर्मप्रकाशेन कथं समस्ता
आलोकिता भारतवासिनः स्युः।
सन्देहपङ्कात् कथमुत्तरेयुः
स्वातन्त्र्यसौख्यं कथमाप्नुयुस्ते ।।२६।।

इति प्रकृष्टेन विचारणेन
प्रबोधितोऽसौ सहसा महात्मा ।
उत्थाय तत्प्रस्तरखण्डभागाद्
उत्थापनं सत्त्वरमाचकांक्ष ।।२७।।

अपने धर्म के प्रति निष्ठा उत्पन्न करने के लिए देश-विदेश में भ्रमण किया ।धीर विवेकानन्द कन्याकुमारी में पत्थर पर बैठ कर वितर्क के समुद्र में डूबे हुए एकाग्रचित्त होकर समुद्र की लहरों को देखते रहे। वे भूख - प्यास छोड़ कर तीन दिन उस शिला पर बैठे रहे। देश प्रेम से पूर्ण , करुण और विरक्त वे विचारों में डूबे रहे। समस्त भारत वासी धर्म के प्रकाश से आलोकित कैसे होंगे, सन्देह रूपी कीचड़ से उनका उद्धार कैसे होगा, उन्हें स्वतन्त्रता का सुख कैसे मिलेगा - इस प्रकृष्ट चिन्तन में वे डूबे थे; सहसा उन्हें प्रबोध हुआ। तब उसी शिला से उठकर

for the renaissance of India. He travelled far and wide to generate a sense of reverence in others for his religion. *Swāmī Vivekānanda* sat composed on a rock at *Kanyākumarī* and looked at the sea with concentration. He plunged in an ocean of contradictory thoughts totally forgetting hunger and thirst. He sat for three days on that rock, sad and yet detached. He remained engulfed by the sombre patriotic thoughts as to how the entire India would be enlightened by the true messege of *Dharma*; how would they be retrieved from the grime of superstition. Suddenly

ततः समस्तानपि भारतीयान् उत्तिष्ठ चात्मानमवेहि नूनम्।
उदीरयामास गभीरघोषं सहोत्थितैरेव समुद्रघोषैः ।।२८।।
आनन्दरूपो निजबोधयुक्तः ततः 'शिकागो' इति नामधेये।
देशे समायोजित-विश्वधर्मसम्मेलनेऽगात् तपसा प्रदीप्तः।।२९।।
स्वधर्ममाश्रित्य समग्रलोकाः क्षेमं लभन्तामिति भाषमाणः।
वेदान्तसिद्धान्तमतिप्रकृष्टं प्रस्तूय विश्वं चकितं चकार ।।३०।।
वैष्णवानां हरेर्नामसङ्कीर्तनं
श्रृण्वती नित्यमानन्दिता वैष्णवी ।
शक्तिरूपा स्वयं तान्त्रिकैः सम्मतां
शक्तिपूजामिह प्रेक्षमाणाऽऽगता ।।३१।।
उन्नतं नागरीसभ्यतासंयुतं
तं समुद्योगवन्तं विकासोन्मुखम् ।

उन्होंने शीघ्र ही लोगों को जगाना चाहा। वहीं से उन्होंने सभी भारतीयों को 'उठो! अपने को अब पहचानो' कहकर समुद्र के उद्घोष के साथ-साथ अपने उद्घोष को एकाकार किया। तब आनन्द स्वरूप आत्मबोध से युक्त वे शिकागों में आयोजित विश्व-धर्म सम्मेलन में भाग लेने गये।सभी लोग अपने-अपने धर्म का आश्रय लेकर कल्याण को प्राप्त करें - इस उत्कृष्ट वेदान्त सिद्धान्त को प्रस्तुत कर उन्होंन विश्व को चकित कर दिया ।।१९-३०।।

वैष्णवी गङ्गा वैष्णवों (गौड़ीय सम्प्रदाय) के हरिनाम सङ्कीर्तन को सुनती हुई आनन्दित होती हैं और तान्त्रिकों की शक्ति पूजा को देख स्वयं शक्ति स्वरूपा यहां आईं हैं। आज कल वे बंगाल को नगरीय सभ्यता से पूर्ण उन्नति शील, उद्योगों से

he experienced enlightenment. He wanted to awaken people. He gave his clarion call to every Indian, 'awake and know thyself ', which resounded with the uproar of the sea. He went to participate in the World Conference of Religions at *Chicago*. He astounded the entire world by propounding the great *Vedic* insight, 'let everyone be enlightened by following his own faith, i.e. *Dharma*.'[19-30]

Vaiṣṇavi Gaṅgā feels thrilled to hear the *Harināma* chanting by the *Gaudiya Vaiṣṇava* community. In the mordern

वाहनानाञ्च कोलाहलेनाऽऽकुलं
साम्प्रतं प्रेक्षते बङ्गदेशं ननु ।।३२।।
गङ्गा बङ्गरविं रवीन्द्रममितख्यातं कवीन्द्रं तथा
विद्यासागर-राममोहनसमान् सामाजिकोन्नायकान् ।
अप्यन्यानरविन्दघोषविबुधान् वैज्ञानिकं तं वसुं
स्मृत्वा नूतनजागृतिं पुनरपीच्छन्तीव संलक्ष्यते ।।३३।।
अत्र गङ्गा स्वधारां द्विधा कुर्वती
दृश्यते शस्यसम्पत्करी ऋद्धिदा ।
बङ्गदेशं सुवर्णं प्रियं वीक्षितुं
वाञ्छतीव प्रसारं समन्तात् स्वकम् ।।३४।।
पूर्वबङ्गं परिप्लावितुं दक्षिणां-
पूर्वमाशां गता या विशाला नदी ।

भरे तथा विकास करते हुए, वाहनों की भीड़-भाड़ से भरा हुआ देखती हैं। गङ्गा बङ्गाल के सूर्य कवीन्द्र रवीन्द्र, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, राजाराम मोहन राय जैसे समाज सुधारकों, महर्षि अरविन्द जैसे विद्वानों तथा जगदीश चन्द्र वसु जैसे वैज्ञानिकों का स्मरण करती हुई आज फिर अपने प्रदूषण के निरास के लिए पुर्नजागरण की इच्छुक सी लग रही है। यहां गङ्गा अपनी धारा को दो भागों में बांट लेती है। सस्य सम्पत्ति और समृद्धि को देने वाली वह मानो अपने सोना बांग्ला को चारों ओर से देखने के लिये फैलना चाहती हों । जो विशाल नदी पूर्व बंग को सींचने के लिये दक्षिण पूर्व दिशा की ओर बहती है वह पद्मा नाम से विख्यात है

times She finds Bengal to be the epitome of city culture. Traversing the soil of illustrious people reformers, philosophers and scientists like *Tagore*, *Vidyāsāgar*, *Rājā Rām Mohan Roy*, *Aurobindo*, *J. C. Bose* and others *Gaṅgā* yearns to enter a new era of renaissance again and be pollution free. Here *Gaṅgā* splits Her waters into two streams. This bestower of benedection in the form of wealth and prosperity seems as if eager to spread around to have a look of Her '*Sonār Baṅgla*', i.e. the golden Bengal. The gigantic river which flows south-east ward to irrigate the eastern

सैव पद्माभिधानेन विज्ञायते
प्रेक्षितुं पद्मनाभं समुद्रोन्मुखी ।।३५।।
छिन्नमेतत् प्रियं भारताङ्गं धुनी
वीक्षती दुःखिता कोमलाऽन्तर्मना ।
भारतीयाऽपि साऽभारतीयाऽधुना
मन्यते नूनमात्मानमत्राऽऽगता ।।३६।।
प्राणघातं प्रजानां महाकष्टदं
क्रूरतामत्र सा प्रेक्षमाणा सती ।
सा व्यथाव्याकुला स्वर्धुनी संततं
दुःखपूरप्रवाहैर्युता लक्ष्यते ।।३७।।
सर्वथा त्रासितान् कुप्रहारैर्हतान्
निर्दयैर् हन्त ! निष्कासितानालयात् ।
पोष्यमाणान् पयोभिः प्रियान् पुत्रकान्
वत्सला वीक्ष्य विस्थापितान् रोदिति ।।३८।।

वह पद्मनाम विष्णु को देखने के लिए समुद्र की ओर जा रही है। भारत के अङ्ग को छिन्न हुआ देख (पूर्वी पाकिस्तान/बांग्ला देश के रूप में कटा हुआ देख) कर कोमल मन वाली गङ्गा बड़ी दुःखी है और भारतीय होते हुए भी स्वयं को यहां पर अभारतीय मान रही है। यहां पर की गई उन्मादी क्रूरता से प्रजा को जो कष्ट मिल रहा है उसे देखकर स्वर्धुनी मानों दुःख के पूरप्रवाह से भरी है। सब प्रकार से सताये गये, भयङ्कर प्रहारों से मारे गये और निर्दयों द्वारा घर से निकाल दिये गये उन विस्थापित पुत्रों को देखकर गङ्गा रोती है, जिन्हें उसने अपने जल से पोषित किया है।।३१-३८।।

part of Bengal is renowned as *Padmā*. It seems she flows forward to the ocean to meet *Padmanābha Viṣṇu*. The tender-hearted river *Gaṅgā* is sad to see the dismembered *Bhārata*. She feels here to be an alien. She is deeply anguished to see the prevailing religious intolerence and the torture inflicted on the minorities whom once upon a time She had nourished.[31-38]

विश्रुताद् मानसादुद्गतोऽसौ नदः
कामरूपं परिक्लेदयन्नागतः ।
यामुनाख्यां भजन् ब्रह्मपुत्रस्त्विमां
दीर्घकायस्तरङ्गायितः सङ्गतः ।।३९।।
किञ्च, मेघालयस्योन्नतात् पर्वतात्
प्रस्नुता मेघनाप्यत्र पद्मां गता ।
सर्वसंयुक्तधाराः ततः मेघना-
नामिकैवाऽम्बुधिं गन्तुकामाः स्मृताः।।४०।।
तामपाराम्बुसंघातरूपां नदीं
दृश्यमानामगाधां समुद्रोपमाम् ।
नैकवाणिज्यपोतैः सदाऽऽलोडितां
सङ्गमय्य प्रसन्नोऽभवत् सागरः ।।४१।।
भिद्यमानाऽत्र भागीरथीसंज्ञया
भूषिता सर्वलोकार्चिता वन्दिता ।

प्रसिद्ध मानसरोवर से उद्गत, आसाम की भूमि को सींच कर आये, जिसका दैशिकनाम यमुना है,वह ब्रह्मपुत्र नद अपने विशाल स्वरूप से तरङ्गायित होकर पद्मा में मिल जाता है और मेघालय के ऊंचे पहाड़ों से स्रुत मेघना नदी भी इसमें मिलती है। यहां से यह संयुक्त धारा मेघना ही कहलाती है और सागर में मिलने के लिये आगे बहती है। यह धारा अपार जल राशि से पूर्ण हो जाने पर स्वयं समुद्र सी लगती है, अनेक जहाजों से भरी रहती है। ऐसी नदी को मिला कर सागर प्रसन्न

Sprung from the celebrated *Mānasarovara* and having irrigated the land of *Āssam*, the river *Brahmaputra* known as *Yamunā* around the region, agitated by waves merges in *Padmā* along with its magnificent form. The river *Meghnā* too descending down from the high mountains of *Meghālaya* gets united with this river. Henceforth this synthesis of the rivers is known as *Meghnā* alone and moves forward to blend with the sea. This stream overflows with abundance of water and resembles the sea itself. Many ships navigate in it. The sea seems

पश्चिमं बङ्गमाप्याययन्ती वरा
राजते गाङ्गधाराऽपरा पुण्यदा ।।४२।।
पश्चिमे बङ्गभागे तु नैका पुरः
सिञ्चती मेलयन्ती विभिन्ना नदीः ।
रोधसि प्रेक्षते निर्मिताः शोभनाः
सर्वसौविध्यपूर्णा नवाट्टालिकाः ।।४३।।
तार्किकं चिन्तनं प्रस्तुवन्तीं गिरं
तां नवीनामवच्छेदकेनाऽऽवृताम् ।
हेतुना साध्यसिद्धिं तथा पक्षतां
न्यायवाक्यं प्रतिज्ञादिकं पञ्चकम् ।।४४।।
सूक्ष्मचिन्तापरं शास्त्रमेतन्नवं
कर्कशं श्रोतुकामेव दृश्याऽमला ।
न्यायभूमिं नवद्वीपमासादिता
सा विचारप्रवाहात्मिका मञ्जुला ।।४५।।

होता है। जो दूसरी विभक्त धारा है, वह भागीरथी कहलाती है, जो सभी लोगों द्वारा पूजित और वन्दित है तथा पश्चिम बंगाल को सींचती है। वह यहां अनेक नगरों को सींचती हुई विभिन्न नदियों को मिलाती हुई आगे बढ़ती है । इसके तट पर विशाल अट्टालिकायें खड़ी हैं जो सब प्रकार की सुख सुविधाओं से परिपूर्ण हैं।।३९-४३।।

तार्किक चिन्तन को प्रस्तुत करने वाली नव्यन्याय की अवच्छेदकावच्छिन्न से युक्त भाषा वाले, हेतु से साध्य की सिद्धि, पक्षता, प्रतिज्ञादि पञ्चावयव वाक्यों से युक्त,सूक्ष्म चिन्तन वाले शास्त्र को सुनने के लिए विचार प्रवाह से परिपूर्ण सुन्दर

to be exalted by associating with such a grand river. The other stream which has branched out is the river *Bhāgīrathī*. She is praised and worshipped by everyone. This river moistens West Bengal. It unites with many other rivers and irrigates many cities. Grand palaces stand on her bank which enjoy affluence.[39-43]

Gaṅgā bearing the stream of ideas now enters *Navadwīpa* (*Nadiā*), the study centre of *Nyāya-Śāstra*. She is curious to listen to the subject presented through a special terminology, i.e.

'काव्येषु कोमलधियो वयमेव नाऽन्ये
तर्केषु कर्कशधियो वयमेव नाऽन्ये'।
उद्घोषमेतदमितं किल तार्किकाणाम्
आकर्ण्य तुष्टहृदया प्रतिभाति गङ्गा ।।४६।।
न्यायप्रकर्षलसितां रचनां स्वकीयां
गङ्गाजलेऽर्पयति दीधितिकारहेतोः ।
यस्तं सदा प्रमुदितं भजनाऽनुरक्तं
दृष्ट्वाऽतिविस्मितमना प्रतिभाति गङ्गा ।।४७।।
नैयायिकं हरिगुणाननुकीर्तयन्तं
राधावतारमतुलं मृदुलस्वभावम् ।
दृष्ट्वा महाप्रभुमलौकिकदीप्तिमन्तं
हृष्टा पुरा सुरधुनी तरलैः तरङ्गैः ।।४८।।
अत्रैव सा ललितलास्यलयाऽनुविद्धं
माधुर्यधुर्यलसितं कमनीयकाव्यम् ।

गङ्गा ने न्याय की भूमि नवद्वीप (नदिया) में प्रवेश किया। काव्य के सन्दर्भ में कोमल बुद्धि वाले हम (तार्किक) ही हैं और तर्क में कर्कश बुद्धि वाले भी हम ही हैं –नैयायिकों के इस उद्घोष को सुनकर श्रीगंगा सन्तुष्ट होती हैं। यहीं जो दीधितिकार रघुनाथ शिरोमणि के कहने पर न्याय शास्त्र की उत्कृष्ट रचना को गङ्गा जल में डुबो देते हैं, उन सर्वदा प्रसन्न रहने वाले भजनानुरागीचैतन्य महाप्रभु को गङ्गा आश्चर्य चकित हो देखती हैं। हरि नाम सङ्कीर्तन करने वाले, न्यायशास्त्र विशारद, श्रीराधा के अवतार, कोमल स्वभाव वाले, अलौकिक दीप्तिमान् चैतन्य

.*avachhedakāvachhinna*. Inference of *sādhya* (major term) by *hetu* (middle term), *pakṣatā* (minor term), *pratijñādi-pañchāvayava* (syllogism), the diffrent features of *Nyāya* are also appreciated by *Gaṅgā*. She is pleased to hear the bold statement of the logicians that in the field of creative writing, i.e. poetry, they have soft ideas and in the field of dialectics they are only harsh debators. Here *Gaṅgā* looked amazed at *Chaitanya Mahāprabhu*, a great devotee, dwelling in eternal happiness. She happenes to be delighted to see him (*Chaitanya*) who was a great scholar of

नानाविलासभरितं प्रणयेन सिक्तं
श्रुत्वाऽञ्चिता सुरधुनी जयदेवगीतम् ।।४९।।
गोविन्दकेलिकुतुकं रुचिरं सुवर्णैः
यद् व्यञ्जकं रतिसुखस्य हरिप्रियायाः।
शृङ्गाररससारसुभगं सुकुमारपद्यं
श्रुत्वाऽञ्चिता सुरधुनी जयदेवगीतम् ।।५०।।
रासेश्वर-प्रचुरकाम-कलावितान-
ध्यान-प्रगानकुशलः खलु विष्णुकामः।
साक्षात्करोति सुकृती रसराजतत्त्वं
नित्यं कथं न पुलकाञ्चितरोमराजिः।।५१।।

महाप्रभु को देख स्वर्ग की नदी गङ्गा बड़ी प्रसन्न हुईं।।४४-४८।।

यहीं (नवद्वीप में ही) ललित लास्य और लय से युक्त, माधुर्य की पराकाष्ठा से सुशोभित, नाना विलास से भरे, प्रेम से सिक्त जयदेव के कमनीय काव्य 'गीत गोविन्द' को सुनकर श्रीगङ्गा रोमाञ्चित हो आगे बहती हैं। जो गोविन्द की कामकेलि के कौतूहल से भरा, हरिप्रिया श्रीराधा के रतिसुख का अभिव्यञ्जक है; उस शृङ्गार के सार, सुभग और सुकुमार पद्य को सुनकर वे रोमाञ्चित हो जाती हैं। रासेश्वर श्रीकृष्ण के प्रचुर-काम कला के विस्तार का ध्यान और गान करने वाला साधक स्वयं विष्णुकाम हो जाता है अर्थात् उसकी समस्त कामनाओं का लय हो जाता है। वह पुण्यात्मा पुलकित रोमों वाला होकर भला उस रसराज के तत्त्व का साक्षात्कार क्यों न करे?।।४८-५१।।

Nyāyaśāstra, he who drowned his original writings into *Gaṅgā*, for the welfare of *Dīdhitikāra Raghunātha Śiromaṇi*. He, the incarnation of *Rādhā* was soft-hearted and kept on chanting *Harināma*, thus possessing ethereal glow.[44 -48]

At *Navadwīpa Gaṅgā* Herself is thrilled to listen to the extremely sonorous, erotic amorous, tender poetical work *Gītagovinda* by *Jaideva*. It reflects the eros of both *Govind* and *Rādhā*. The devotee meditating upon the ecstatic union of the celestial lovers himself becomes *Viṣṇu-kāma* – one who is desirous of *Viṣṇu* and hence becomes liberated from the bondage of desires.[48-51]

व्यापारेण प्रचुरविभवोऽभूत् समृद्धः सुरम्यः
सप्तग्रामो विकसिततरः चारुशोभायमानः ।
वृक्षैर्युक्तं स्थलमिह पुरासीदरण्यप्रदेशः
तत्र प्राप्ता सुरसरिदसौ गां परिप्लावयन्ती ।।५२।।
किञ्चिदध्वानमग्रे प्रयान्ती सती
ग्राम्यपौरान् जनान् पाययन्ती पयः।
दैशिकीं नूतनाख्यामवाप्य स्मृता
तत्र 'हुग्ली'[३] ति लोकप्रिया साम्प्रतम्।।५३।।
एकरूपा त्रिरूपाऽभवत् सा पुन-
र्व्यत्ययोऽयं परं विस्मयोत्पादकः ।
सङ्गता याः प्रयागे प्रसीदन्त्यहो!
ता वियुक्ताः किमु व्याकुला सन्ति नो? ।।५४।।
सङ्गमे विप्रयोगे त्रिवेणीति ताः
कथ्यमाना नरान् पावयन्त्यम्भसा ।
युक्तवेणी प्रयागे प्रसिद्धास्तथा
मुक्तवेणीह बङ्गे परिज्ञायते ।।५५।।

इसके बाद गङ्गाजी सप्तग्राम आती हैं जो पहले वैभव सम्पन्न,-समृद्ध, विकसित और शोभा सम्पन्न था। उसके बाद गङ्गा जी पृथ्वी को सींचती हुई, गांव और नगर वासियों को जल पिलाती हुई जब हुग्ली आईं तो उनको भी लोगों ने हुग्ली नाम दे दिया। कुछ आगे बढ़कर वे पुनः तीन भागों में बंट गईं । यह उलटवासी बड़ी आश्चर्यकारी है । जो प्रयाग में मिलकर प्रसन्न हुई थीं वे ही तीन धारायें यहां अलग होकर क्या व्याकुल नहीं होतीं? संगम हो या विप्रयोग दोनों स्थानों पर वे त्रिवेणी

Later She reaches *Saptagrāma*, which once upon a time was prosperous developed and richly endowed. There from she (*Bhāgīrathī*) irrigating the land and quenching the thirst of innumerable creatures has travelled to *Hooghly* from where she has acquired the name *Hooghly*. After travelling for some distance she has again split into three shoots. It is an interesting paradox that those three streams which had once happily joined together at *Prayāga* have got at present dissociated here. Won't

पश्चिमाशामभिप्रावहद् या सरित्
संविभक्ता सती सैव सारस्वती ।
पूर्वदिग्गामिनी याऽपरा निम्नगा
यामुनी तावदिच्छामती सा मता ।।५६।।
या तृतीया त्ववाचीं प्रति प्रस्थिता
मुख्यशाखेह 'हुग्लीति' भागीरथी ।
सा प्रयाता ततः कालिकातापुरीं
रामकृष्णेश्वरीं कालिकामर्चितुम् ।।५७।।

अचिन्त्यचित्स्वरूपिणीमनन्तमूर्तिरूपिणीम् ।
अजेयशक्तिशालिनीमभीष्टसिद्धिदायिनीम् ।।५८।।

कहलाईं। प्रयाग में युक्त त्रिवेणी और यहां बंगाल में मुक्त त्रिवेणी के नाम से जानी गईं। उनमें सरस्वती नाम की धारा पश्चिम दिशा की ओर बही और जो पूर्वदिशा की ओर आई वह भागीरथी रूपी मुख्य शाखा हुग्ली कहलाई। वहां से वह कलकत्ता शहर में गई राम कृष्ण परमहंस की इष्टदेवी कालिका की स्तुति करने के लिए ।।५२-५७।।

श्रीगङ्गा स्तुति करती हैं- जो अचिन्त्य् चित् स्वरूपा हैं, अनन्त मूर्तिरूपा हैं, अजेय शक्तियों से युक्त हैं, अभीष्ट मनोवाञ्छित सिद्धि प्रदान करती हैं; हाथ में

the separation pain the three streams? At both the places they have been called the *Triveṇī*, whether it is a confluence or a parting. At *Prayāga* she is known as united *Triveṇī* and here at Bengal she has been known as the liberated *Triveṇī*. Out of these three streams *Saraswati* flowed westward, the stream of *Yamunā* which went eastward came to be named *Ichhāmatī*. The third stream descending southward was the main river *Bhāgīrathi*, which came to be known as *Hooghly*. From there she reached *Calcutta* to pray *Rāmakṛṣṇa*'s *iṣṭadevi Kālikā*. *Gaṅgā* sends Her prayers to *Kālikā* thus:[52-57]

"The one who is pure consciousness and remains beyond knowledge, one who reveals Herself eternally, is fraught with

करे कृपाणधारिणीं कपालमालशोभिनीम् ।
कराल-कालरूपिणीं नमामि कालिकेश्वरीम् ।।५९।।
गिरीन्द्रनन्दिनीं गिरिस्थितां गिरीशगेहिनीम् ।
गिरामगोचरां गुहाम्बिकां गजाननान्विताम् ।।६०।।
जपाप्रसूनमालिनीं जपादिभिः समर्चिताम् ।
जगद्धितां जयश्रियोज्ज्वलां जगन्मयीं भजे ।।६१।।
त्रिलोचनां त्रयीस्वरूपिणीं तुरीयरूपिणीम् ।
त्रितापहारिणीं तमोविनाशिनीं तमोमयीम् ।।६२।।
निजप्रकाशरूपिणीं निरञ्जनीं नगेश्वरीम् ।
नभोङ्गणे निवासिनीं नतार्तिनाशिनीं नुमः ।।६३।।

खड्ग लिए हैं, कपाल(मुण्ड) माला पहने हुए हैं, भयंकर काल के रूप में हैं,उन महाकाली को मैं प्रणाम करती हूँ। जो गिरिराज हिमालय की पुत्री , पर्वत में रहने वाली, शंकर की गृहिणी, वाणी की अविषय,गुह अर्थात स्कन्द की तथा गणेश जी की माता हैं, जपा कुसुम (अड़हुल) की माला पहने हुए तथा जप आदि से अर्चित हैं, जगत् का हित करने वाली हैं और विजय श्री से सुशोभित हैं; तीन नेत्रों वाली, वेद स्वरूपा, तुरीय रूपा, आधिदैविक – आधिभौतिक – आध्यात्मिक तापों को दूर करने वाली, अज्ञान का नाश करने वाली और तमोमयी हैं। जो स्वयं प्रकाश

nvincible powers and bestows the desired fulfilment. She holds a scimitar in Her hand and wears the garland of skulls. She is Death incarnate (*Kālarūpiṇī*). I bow to Her. She is the daughter of *Girīndra* and a dweller of the mountain (*Himalaya*). She is the consort of *Girīśa* and is beyond the grasp of human discourse. She is the mother of *Skanda* and *Ganeśa*. She wears the garland of hibiscus (*Javāpuṣpa*). Worshipped and venerated by devotees, She showers Her kindness upon the entire universe. She is the goddess of victory. She bears three eyes and is *Veda* incarnate. She is the state of final union of the soul with the Supreme Spirit, the redeemer of the three-fold sufferings, the destroyer of ignorance and sloth. She is Herself the eternal darkeness (*Tamomayī*). She is light and purity personified. She is *Nārāyaṇī*.

प्रचण्डचण्डघातिनीं प्रमत्तमुण्डपातिनीम् ।
प्रदृप्तसैरिभार्दिनीं परात्परां प्रबोधिनीम् ।।६४।।
भवान्तकारिणीं भवप्रियां भयापहारिणीम् ।
भुजङ्गभूषणां विभूतिभूषितामहं भजे ।।६५।।
मुनीन्द्रवृन्दमानसे मरालिनीं महेश्वरीम् ।
मिलिन्दगुञ्जनानुकारि-मञ्जुशिञ्जिनीं नुमः ।।६६।।
शचीन्द्रसेविता शुचीन्द्रियैः सुपूजिता शिवा ।
शुचिस्मिता शुचिव्रता शिवाय मेऽस्तु सर्वदा ।।६७।।
सा तु सारस्वती भूमिभागान् बहून्
सिञ्चती सङ्गतागत्य 'हुग्लीं' पुनः।

रूपा हैं, निरञ्जनी और नारायणी हैं, आकाश रूपी आंगन में निवास करती हैं तथा नत लोगों के दुःख का नाश करने वाली है । प्रचण्ड चण्ड तथा मदोन्मत्त मुण्ड को मार गिराने वाली हैं और दर्प वाले महिषासुर का मर्दन करती हैं, परात्पर ज्ञानस्वरूपा हैं; संसार का अन्त करने वाली, शिव जी की प्रिया , भय को दूर करने वाली, सांपों का आभूषण तथा भस्म का लेप लगाने वाली हैं; श्रेष्ठ मुनिजनों के मानस रूपी मानसरोवर में हंसिनी के समान विराजमान, महेश्वरी, भ्रमरों के गुञ्जन का अनुकरण करने वाली, पायल की झङ्कार वाली देवी को मैं नमस्कार करती हूं । शची और इन्द्र द्वारा सेवित, पवित्र इन्द्रियों वाले साधकों द्वारा पूजित, पवित्र मुसकान वाली, पवित्र व्रत वाली शिवा सदा मेरा कल्याण करें।।५८-६७।।

सरस्वती की वह धारा अनेक भूमिभागों को सींचती हुई पुनः सांकराइल नामक

She resides in the space of the skies and uproots the sufferings of those who seek Her protection. She destroys fearsome *Chaṇḍ* and the haughty *Muṇḍa* and tramples down proud *Mahiṣāsura*. She is transcendental knowledge. She brings the creation to an end and is the beloved of *Śiva*. She despels fears. Snakes happen to ornament Her and She smears Herself with ash. She dwells in the spiritual awareness of the great saints as a swan swims in a lake. She is the great goddess whose anklets imitate the humming resonance of the bees. I bow to such a power. She is served by *Śachī* and *Indra* worshipped by the saints with purest thoughts. She has the purest smile. Let such *Śivā* ever be kind to me."[58-67]

That shoot of *Saraswatī*, irrigating many regions again meets

तोयमार्गेण वाणिज्यसम्पादनं
भूयशः प्रागभूदत्र नद्याः किल ।।६८।।
शोकरूपो विहारप्रदेशं प्रति
क्रोशमानश्च सीमान्तभागात्ततः ।
धावमानोऽत्र दामोदराख्यो नदः
सङ्गतस्तां तरङ्गैः समुद्वेलितः ।।६९।।
रूपनारायण-ब्राह्मणी-द्वारका
एवमन्याश्च नद्यो मिलन्त्यागताः ।
हे मयूराक्षि! हंहो हरिद्रे! शुभे!
एहि मामाह्वयन्तीव सन्दृश्यते ।।७०।।
संविभक्ताऽथ धारोपधारासु सा
जालरूपा सती प्रासरत् सर्वतः ।
द्वीपमापादयन्तीह नानामुखा
याति बङ्गोपपाथोनिधिं प्रत्यहो! ।।७१।।

स्थान में हुग्ली में मिल गई। इस नदी में पहले जल मार्ग द्वारा व्यापार होता था । जो विहार के लिये शोक रूप है वह दामोदर नद सीमान्त भाग से आवाज करता हुआ , लहरों से उद्वेलित हो दौड़ता हुआ हुग्ली नदी में मिलने के लिये ही यहां आता है । रूपनारायण, ब्राह्मणी, द्वारका, अजय, कोपाय आदि नदियां भी इसमें मिलती हैं। मयूराक्षी तथा हल्दी को भी वह बुलाती हुई सी दिखाई देती है। धाराओं, उपधाराओं में विभक्त होकर वह जाल जैसी चारों ओर फैल गई है और अनेक द्वीप

Hooghly at *Sāṅkarail*. This river once used to provide a trade route. The *Dāmodar* river, inauspicious for Bihar, rushes with thundering noise and the frenzy of its waves join with the river *Hooghly*. The rivers like *Rūpanārāyaṇa*, *Brāhmaṇī*, *Dwāraka*, *Ajay*, *Kopai* also unite with Her. She seems to be beckoning the rivers *Mayurākṣī* and *Haldi*. *Gaṅgā* spreads around as a network made of streams and their off-shoot tributaries. She forms deltas and goes towards the Bay of Bengal. Initially while descending down the *Himalaya Gaṅgā* has assimilated many rivers along Her course. Now while merging with

या हिमाद्रेः पयोधिं प्रति प्रस्थिता
मेलयन्ती विभिन्ना नदीः स्वात्मनि।
सैव बङ्गोपवारांनिधिं सङ्गता
तावदेकाप्यनेका भवन्ती मुदा ।।७२।।

क्वचित् प्रसूनं नवमल्लिकाया
विलोकयन्ती मधुमासकाले ।
अन्यत्र पुष्पं नवकर्णिकारं
कर्णावतंसायितुमिच्छतीव ।।७३।।

क्वचिद् रसालाङ्कुर-कण्टकानि
रोमाञ्चयन्ति प्रकृतिं वधूटीम् ।
अन्यत्र पुंस्कोकिल-षट्पदालिः
क्वणन्ति मञ्जु प्रणय - प्रगीतम् ।।७४।।

क्वचित् तटीं कुन्दरदावलीभिः
सुहासिनीं पश्यति वीचिनेत्रैः ।

बनाती हुई अनेक मुहानों वाली होकर बंगाल की खाड़ी की ओर आती है । जो हिमालय से चलकर अनेक नदियों को अपने में मिला कर आगे बढ़ती है, वही एक अब अनेक होकर बंगाल की खाड़ी में समुद्र से मिल जाती है।।६९-७२।।

गङ्गा वसन्त ऋतु में कहीं नवमल्लिका के फूल को देखती हुई और कहीं दूसरे स्थान पर नये कर्णिकार (कनैल) के पुष्प को मानों कर्णफूल बनाना चाहती है। कहीं आम्रमञ्जरियां प्रकृति वधूटी को रोमाञ्चित करती हैं और दूसरी जगह पुंस्कोकिल और भ्रमर-पक्तियां मधुर प्रेमगीत गाते हैं । कहीं- कहीं पर कुन्द पुष्पों की

the sea at the Bay of Bengal, She splits into manyfold streams.[69-72]

In the spring *Gaṅgā* desires to be aromatic by different flowers like the blooming *navamallikā*, *Kaner* (oleandar) etc. Somewhere the mango blossoms seem to render the entire nature thrilled and at some other place the cuckoo and the bees hum the songs of love. With the eyes of Her waves She observes the beauty of the gleaming jasmine (*Kunda*) flowers blooming along Her

वसुन्धरां सर्षपपुष्पपुञ्जैः
पीतोत्तरीयामिव राजमानाम् ।।७५।।
मनोज-बाणैरनलस्फुलिङ्गैः
पलाशपुष्पैः क्वचिदाकुलानि ।
सुशोभते रक्तिमरञ्जितानि
तटानि तोयैरुपशामयन्ती ।।७६।।
ग्राम्या नमन्ति प्रणमन्ति पौराः
तीर्थेषु तीरेषु तरीषु गङ्गाम् ।
पीताभवासा रसिकाः प्रहृष्टा
वासन्तिके पर्वणि चैत्रमासे ।।७७।।

निदाघकाले परितप्यमाना
वीचीषु तस्या अवगाहमानाः ।

दन्तपक्तियों से सुन्दर हास करने वाली तटी रूपी नायिका को यह अपनी लहररूपी आंखों से देखती है और सरसों के पीले फूलों की पीली ओढ़नी ओढ़े हुए वसुन्धरा को देखती है। कहीं आग की चिनगारी जैसे लाल कामदेव के वाणरूपी पलाश पुष्पों से व्याकुल तटों को जल से शान्त करती हुई सी लगती है। चैत के महीने में वसन्तऋतु के पर्वों में पीले वस्त्र पहन कर रसिक और प्रसन्न ग्रामीण और शहरी -दोनों तीर्थों , तटों और नावों में बैठकर गङ्गा की पूजा अर्चना करते हैं।।७३-७७।।

ग्रीष्म ऋतु में तपते हुए सभी प्राणी गङ्गाकी लहरों में डूब-डूबकर स्नान करके तथा अमृत जल को बार-बार पीकर स्फूर्ति को प्राप्त होते हैं। पर्वतों में गर्मी से

alluring bank. She admires the charming earth which wears the mantle of yellow mustard flowers. Sometime She seems to placate the shores aching with the inflamed *palāśa* flowers. They remind one of the sharp arrows of *Kāmadeva*. In the month of *Chaitra* to celebrate the spring, the multitude of men, both from the villages and the cities wear yellow attires and worship *Gaṅgā* variously.[73-77]

In the summer every creature feels refreshed to dip in and

स्फूर्तिं लभन्ते खलु जीवजाताः
सुधामयं वारि निपीय भूरि ।।७८।।
क्वचिद् हिमानी-द्रुतिमाप्य
गङ्गोच्छलत्तरङ्गैस्त्वरितप्रवाहा ।
अन्यत्र तन्वी क्लममन्थरेवा-
ऽऽतपेन तप्ता पुलिनेषु दृश्या ।।७९।।

दिवोम्बुविन्दून् क्वचिदाहरन्ती
विवर्तताटङ्क-विभूषितश्रीः ।
अन्यत्र भङ्गैः परिवर्धमाना
प्रतीयतेऽसौ ननु मुक्तकेशी ।।८०।।
क्वचिन्नयन्ती निखिलं तटानां
सीमामतिक्रम्य भयङ्करोर्मिः ।

बर्फ पिघलने पर गङ्गा उछलती लहरों से तेज गति वाली हो जाती है, किन्तु मैदानी क्षेत्र में वह थकी होने से मन्द गति वाली होकर धूप से सूख कर बालू में लेटी तन्वी सी लगती है।।७८-७९।।

एक जगह आकाश से गिरने वाली वर्षा की बूदों को लेकर कहीं वह विवर्त रूप कर्णाभरण से विभूषित शोभावाली लगती है, दूसरे स्थान पर लहरों से बढ़ती हुई वह बाल खोले काली के समान लगती है। कहीं भयंकर लहरों वाली सीमा का

drink the life-giving water of *Gaṅgā*. But the picture at the mountains is different. When the ice melts, due to heat *Gaṅgā* moves fast with Her rising waves but on the planes She gets tired; due to the heat Her pace is slow and She looks like a lean damsel lying in the folds of sand.[78-79]

She receives the drops of rain falling from the sky and gets swept by the whirlpools. She seems to be adorned with huge earrings of circular ripples. At some places She looks like *Kālī* with swept back locks of waves. Still at some other places She overwhelms the banks with Her ferocious waves and wipes out

अन्यत्र दत्त्वोर्वरतां पृथिव्यै
धावत्यसौ प्रावृषि तीव्रवेगा ।।८१।।

क्वचिच्च काशांशुकमादधाना
पद्माननामिन्दुमयूखगौराम् ।
प्रफुल्ल-पङ्केरुह-कुड्मलाक्षीं
शरद्वधूं पश्यति सा घनान्ते ।।८२।।
ज्योत्स्ना-वितानेन समुज्ज्वलायां
राका-रजन्यां स्मरतीव कृष्णम् ।
आनन्द-कन्दस्य महारसाब्धौ
निमज्जिता प्रेमपयःप्रवाहा ।।८३।।

अतिक्रमण कर तट पर स्थित फसलों, घरों आदि सम्पूर्ण को बहा ले जाती है और दूसरी जगह पृथ्वी को उर्वरता प्रदान करती हुई वर्षा काल में तीव्र गति से दौड़ती हैं।।८०-८१।।

कहीं काश पुष्प की ओढ़नी ओढ़े, कमलों के मुखवाली, चन्द्रमा की किरणों से गोरी, खिले हुए कमल पत्रों की आँखों वाली शरद् वधू को वह वर्षा के अन्त में देखती है। उस शरद् ऋतु में चन्द्रमा की चांदनी से उज्ज्वल पूर्णिमा की रात में वह (गङ्गा) श्रीकृष्ण का स्मरण करती हुई, प्रेम प्रवाह से भर कर आनन्द कन्द के महारास में मानो डूब जाती है।।८२-८३।।

habitats and crops. The same waves rushing wildly regenerate the fertility of the earth.[80-81]

At the end of the rains She feels the advent of the bride *Śarada* who is overladen with *kāśa* flowers. She possesses a face as beautiful as the lotus and is as fair as the moonbeam. She has the eyes like the blooming lotus petals. In the *Śarada* season She remembers *Śrī Kṛṣṇa* during the full moon night when the soft moon rays seem to turn everything into a translucent brightness. She like *Rādhā* plunges into the depth of *Mahārāsa* being surfeited by the thrall of love.[82-83]

क्वचिद् गते नीरवतां हिमाद्रौशृङ्गेषु नीहार-समावृतेषु ।
नारायणध्यानरता पवित्रा हेमन्तकाले प्रतिभाति गङ्गा ।।८४।।
अन्यत्र नित्यं कुरुते स्वभक्तान् प्रत्यूषकालेऽम्बुभिरार्द्रदेहान् ।
आमन्त्रयन्तीव तरङ्गहस्ता कूलेषु दृश्या नयनाभिरामा ।।८५।।

प्रभूतशीतेन जडः समस्तो लोकः शयानः शिशिरे निशायाम् ।
हिमालयादाजलधिं प्रयान्ती कदापि नो विश्रमते मनोज्ञा ।।८६।।
निरन्तरं कर्मरता भवेयुर्नरा व्यनक्तीति दिवानिशं नु ।
शीतोष्णभावान्सुखदुःखहेतूनतीत्य गङ्गा जयति प्रकृष्टा ।।८७।।
उद्गताऽनुक्षणं नूतनैर्वीचिभिः
सा पुराणी नवीनाऽविरामा वरा ।

हेमन्त ऋतु में हिमालय में चारों ओर नीरवता व्याप्त हो जाने पर और चोटियों के बर्फ से ढक जाने पर श्रीगङ्गा नारायण (बद्रीविशाल) के ध्यान में निमग्न सी लगती है। मैदानी इलाके में वह भोर में अपने भक्तों को स्नान कराती है और लहरों रूपी हाथों से बुलाती हुई तटों पर बड़ी नयनाभिराम दिखाई देती है।।८४-८५।।

शिशिर में जिस समय प्रचण्ड शीत से जड़ता को प्राप्त सभी प्राणी रात्रि में शयन करते हैं, उस समय भी यह हिमालय से सागर तक जाती रहती है, कभी भी विश्राम नहीं करती; रातदिन मानो वह मनुष्यों को कर्मपरायण होने का उपदेश देती है; इस प्रकार शीत और उष्णभावों को जीत कर गङ्गा विजयिनी होकर सुशोभित है।।८६-८७।।

प्रतिक्षण नवीन लहरों से निकलती हुई वह पुरानी होते हुए भी नवीन है और श्रेष्ठ

In autumn (*Hemant*) when an all-round silence descends upon the *Himalaya* and the peaks of the mountains become snowclad *Śrī Gaṅgā* seems to be lost in meditation of *Nārāyaṇa* (*Badrīviśāla*). On the plains She bathes Her devotees at day break and seems to call them with Her waving hands.[84-85]

In *Śiśira* the entire world gets benumbed in the grip of cold and hibernates in darkness. She keeps on travelling from the *Himalaya* to the ocean untiringly. It seems as if She preaches human beings the value of action unceasingly. *Gaṅgā* abides as a conqueror of the extremes of heat and cold as well as happiness and sorrow.[86-87]

She bears the old waves and yet She renews Herself

रैखिकं निर्दिशन्तीव सर्गक्रमं
शेषशय्याऽधिरूढान्तिके गच्छति ।।८८।।
सम्प्राप्य सुन्दरवने कपिलाश्रमञ्च
स्मृत्वाऽभिशापमसकृत् सगरात्मजानाम् ।
अद्यापि रोधसि कृपेच्छुकजीवजन्तोः
सन्तारणं प्रकुरुतेऽमृततोयपुञ्जैः ।।८९।।

इत्थं हैमवती तुषारशिखरात् पीयूषसंवाहिनी
प्रादुर्भूय तरङ्गिणी विजयते भूलोकसञ्चारिणी ।
कुम्भीरैः शिशुमार-मीन-कमठ-व्यालादिभिर्भूषिता
बङ्गीयोपसमुद्रगाऽवतु नरान् गङ्गा पुनीता शुभा ।।९०।।

गङ्गा कभी रुकती नहीं, वह अविराम है; मानों सृष्टि के रैखिक सर्गक्रम को बताती हुई वह शेषशायी भगवान् विष्णु के पास चरम विश्रान्ति के लिये जाती है। सुन्दरवन में कपिल मुनि के आश्रम में पहुंच कर वह बार-बार सगर पुत्रों के शाप को याद कर आज भी तट पर कृपा के इच्छुक जीव जन्तुओं का अमृत जल से संतारण (उद्धार) करती है।।८८-८९।।

इस प्रकार हिमालय से उद्भूत बर्फ की चोटियों से पीयूष को ले जाने वाली तरङ्गिणी भूलोक में सञ्चार करने लगी; ऐसी मछलियों कछुओं , शिशुमारों, मकरों, सांपों से विभूषित पवित्र गङ्गा बंगाल की खाड़ी में जाती हुई मनुष्यों की रक्षा करें।

perpetually.The magnificent *Gaṅgā* is irrepressible. Delineating the great epic of creation She as if travels to *Śeṣaśāyī Bhagavān Viṣṇu* for Her ultimate repose. On reaching the *āśram* of *Kapil Muni* at *Sundarvan* She recalls again and again the curse hurled at the sons of *Sagar* and continues redeeming creatures eager to receive Her grace.[88-89]

Thus sprung from the snow-capped peak of the *Himalaya*, the nectar-bearing surge(*Gaṅgā*) started flowing on the earth (*Bhūloka*). Let the holy *Gaṅgā* who is beset with marine creatures protect the humanity while moving towards the Bay of Bengal. The confluence at *Gaṅgā Sāgar* is a holy pilgrimage which brings

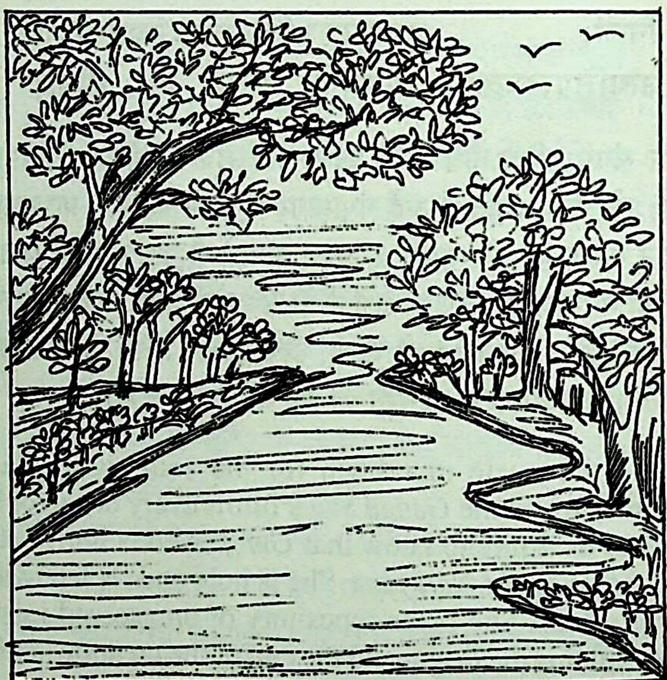
गङ्गासागरसङ्गमो हि परमं तीर्थं महापावनं
संसारागमनं रुणद्धि सुतरां मोक्षार्थिनां नित्यशः।
ये वाञ्छन्ति यथा तथैव ददते तेभ्यः फलं दुर्लभम्
गङ्गासागरसङ्गमस्नपनजं पुण्यं प्रकृष्टं स्मृतम् ।।९१।।

श्रीनारायणपादपद्मजनितां गङ्गां सुधास्यन्दिनीं
श्रीनारायणपादपद्मनिलयामम्भोनिधौ पावनीम् ।
नित्यं नूतनभङ्गभूरिभरितामज्ञेयतत्त्वामहो
उत्पत्तिप्रलयक्रमां त्रिपथगां सत्यां परां धीमहि ।।९२।।

गङ्गासागर संगम पवित्र तीर्थ है जो मोक्ष के इच्छुक जीवों के संसारागमन को रोकता है; जो जैसा चाहते हैं उन्हें गंगासागर में स्नान करने से प्राप्त पुण्य वही फल प्रदान करता है। श्रीनारायण के चरण कमलों से उत्पन्न अमृत प्रवाह वाली, समुद्र में श्री नारायण के चरण कमलों में ही लय होने वाली, पवित्र, नित्य नवीन तरंगों से भरी हुई, अज्ञात रहस्यों वाली, उत्पत्ति और प्रलय के क्रम को बताने वाली, परात्पर सत्यस्वरूपा श्री गङ्गा को हम जानें।।९०-९२।।

an end to the cycle of rebirth for the souls who crave for liberation. A dip at the *Gaṅgā Sāgar* fulfils every desire of human beings. Let us aspire to know that *Gaṅgā* who is born out of the lotus-like feet of *Śrī Nārāyaṇa*. She is holy and replete with ever renewing waves. She is the repository of unresolved mistery of life and explains the origin and the end of the creation and She is the Final Truth incarnate.[90-92]





॥ अध्यात्मम् ॥

अणोरणीयसीं गङ्गां ब्रह्मद्रवस्वरूपिणीम् ।
वेदाद्यगोचरां नित्यां प्रणमामि परात्पराम् ॥

नवमः सर्गः
अध्यात्म-वर्णनम्

यामामनन्ति मुनयः चितितोयरूपां
ब्राह्मीं द्युतिं सुललितां दधतीमरूपाम्।
अव्याकृताञ्च निगमागमवेद्यतत्त्वां
तामादिशक्तिममृतां प्रणमामि गङ्गाम् ।।१।।

ज्ञानाम्भसा क्षरति कल्मषपङ्कजालं
अज्ञानजं जनन-मृत्यु-जरादिरूपम् ।
चैतन्यवारिपरिपूर्णतटां मनोज्ञां
तामादिशक्तिममृतां प्रणमामि गङ्गाम्[1]।।२।।

जिसे मुनि चैतन्य जल रूप कहते हैं, जो ब्राह्मी द्युति अर्थात् परब्रह्म परमात्मा के प्रकाश को धारण करती हैं, जो अगुण तथा अरूप हैं, अव्याकृत हैं, निगम और आगम द्वारा जिनके वास्तविक तत्त्व को जाना जा सकता है; आदि शक्ति रूपा अमृतमयी उस गङ्गा को मैं प्रणाम करती हूं। जो सम्पूर्ण अविद्या से उत्पन्न अज्ञान रूप पाप, जो जन्म-मृत्यु-जरा (बुढ़ापा) के रूप वाला है, को ज्ञान रूपी जल से

Transcendence

I bow in reverence to *Gaṅgā*, the symbol of primal power and immortatily. The sages have known Her as the water of revelation. She holds the lustre of Supreme Reality. She is free from attributes and happens to be formless and remains undistorted (*avyākṛta*), Her reality can be known through *Nigama* and *Āgama* alone. *Gaṅgā* wipes out ignorance born out of *Avidyā*. She expunges ephemerality adumbrated in the cycle of birth, death and decay by Her shower of enlightenment. I bow to *Gaṅgā* who

ज्ञानार्थकाद् गमयतेर्विमलं स्वरूपं
प्राप्त्यर्थकादपि परं पदमद्वितीयम्[२] ।
आसादयत्यखिललोकहिता वरेण्या
गङ्गेति पावनमनोहरनामधेया ।।३।।
वेदैरवेद्य-विभु-निर्गुण-निर्विकारं
यन्नेति-नेति[३] वचसा श्रुतयो गृणन्ति ।
नीराकृतौ परिणतं हि तदेव तत्त्वं
ब्रह्मद्रवेति ऋषिभिः परिगीयमानम् ।।४।।
यो वै रसस्त्वभिहितः[४] श्रुतिसारविद्भिः
आह्लादयत् सहृदयान् कविकाव्यतत्त्वम् ।

धो डालती है; उस चैतन्य रूपी जल से पूर्ण तटों वाली मनोहर गङ्गा को प्रणाम करती हूं। गङ्गा शब्द गम् धातु से बना है,जो ज्ञानार्थक भी है और प्राप्त्यर्थक भी। 'गमयति प्रापयति ज्ञापयति वा भगवत्पदं' इस व्युत्पत्ति के आधार पर गङ्गा अद्वितीय परम पद को प्राप्त कराती है तथा सम्पूर्ण लोक का हित करने वाली एवं श्रेष्ठ है।।१-३।।

जो तत्त्व वेदों से भी नहीं ज्ञात होता; व्यापक, निर्गुण निर्विकार जिस तत्त्व को श्रुतियां 'नेति-नेति' कहती हैं, वही नीराकार रूप में परिणत होकर ऋषियों द्वारा ब्रह्मद्रव शब्द से कहा जाता है अर्थात् ब्रह्म ही द्रव-जल हो गया है। वेदों के मर्मज्ञों ने जिसे रस कहा है और जो कवि के काव्य का सार बन कर सहृदयों को

brims with Her water of knowledge.The word *Gaṅgā* is derived out of the verb root '*gaṁ*' which denotes knowledge and helps to attain enlightenment as well. On the basis of this very etymology, which means both 'goes' and 'reveals', *Gaṅgā* reveals primordial knowledge. She helps to attain the Ultimate Reality. She is the benefactor of the entire creation.[1-3]

That element which is not decipherable even by the *Vedas*, which is all pervading and untouched by the attributes of change (*Nirguṇa,Nirvikāra*) is addressed by *Śrutis* as '*neti-neti*', gets transformed into an aqueous form and is known as *Brahma-drava* by *ṛṣis*. It is believed that *Brahman* Himself assumes the form of water.The element which the knowers of the secret of the *Vedas*

गङ्गापयः स्त्रवति स्वादु सुधामयं तत्
ब्रह्मद्रवेति ऋषिभिः परिगीयमानम् ।।५।।
आकाशमण्डलगतोज्ज्वलकान्तिमत्या
विज्ञापितं दिविपदं परमस्य विष्णोः ।
मन्दाकिनी सुरधुनीति जगत्प्रसिद्धा
गङ्गेति दीव्यति चिरं जयति त्रिलोक्याम् ।।६।।
व्याप्नोति विष्णुरखिलं परयाऽऽत्मशक्त्या
ब्रह्माण्ड-मण्डलमखण्डमशेषमेकः ।
सोऽयं हरिस्त्रिभुवनं प्रमिणोति मन्ये
पादत्रयेण परिसीमयितुं समष्टिम्[५]।।७।।
सानन्दचिन्मयपदेषु हरेर्लसन्ती
पीयूषधारधवला नु ऋतम्भरा[६] सा ।
आलोकवारिसरसा किल राजमाना
गङ्गेति दीव्यति चिरं जयति त्रिलोक्याम् ।।८।।

आह्लादित करता है, वही स्वादिष्ट अमृतमय तत्त्व गङ्गाजल के रूप में बहने वाला ब्रह्मद्रव है।।४-५।।

जो आकाश मण्डल में उज्ज्वल कान्ति से प्रकाशित है और विष्णु अर्थात् व्यापनशील परब्रह्म के पद को बताती है; वही आकाश गङ्गा मन्दाकिनी, सुरधुनी नाम से जगत् में विख्यात है और गङ्गा नाम से तीनों लोकों में जय-जयकार से युक्त है। विष्णु (परब्रह्म) अपनी आत्मशक्ति से अखण्ड ब्रह्माण्ड को व्याप्त कर लेता है ; वही अपने तीन पैरों से समष्टि को समेटने के लिये त्रिभुवन को नापता है— ऐसा कहा जाता है। इसी विष्णु के आनन्दमय चिन्मय पदों में पीयूषधार सी धवल

have addressed as *Rasa*, which delights a connoisseur as the sap of poesy, has become the *Brahma-drava*.[4 -5]

She reveals Herself in the space as a resplendent brilliance and unveils about the secret of the all-pervading Supreme Reality, i.e. *Parabrahman*. *Gaṅgā* is venerated in the three *lokas* as a luminous galaxy. She is extolled both as *Mandākinī* and *Surdhunī* in this world. The myth of *Viṣṇu*'s measuring of three *lokas* tells that His energy permeates through the universe. *Gaṅgā* reigns as

नारा जलान्ययनमस्य स भासमानः
चैतन्यवारितरलो विरलश्च देवः[७] ।
नारायणोऽर्कवलये सुविराजमानो
विद्योतते नभसि जीवयितुं त्रिलोकीम् ।।९।।

तस्य प्रभैव गगने तमसः परस्ताद्
ज्योतिःसमूहसलिला गमनोद्यतेव ।
गङ्गापदेन विदिता प्रसृता समन्ताद्
विद्योतते नभसि जीवयितुं त्रिलोकीम् ।।१०।।

या 'त्वप्रकेतसलिला'[८] सदसत्स्वरूपा
सैव प्रकेतसलिले परिवर्तमाना ।
आनन्दमङ्गलमयी चितिधाररूपा
धातुः कमण्डलुगता विदिता प्रबुद्धैः ।।११।।

ऋतम्भरा गङ्गा आलोक रूपी जल से सरस होकर आकाश-गङ्गा के रूप में विराजमान है। 'नारा कारण जल ही है अयन जिस का 'वह चैतन्य वारि से तरल देदीप्यमान नारायण सूर्य मण्डल में विद्यमान हो कर तीनों लोकों में जीवन का सञ्चार करने के लिये आकाश में चमकता है । उसकी प्रभा (=सूर्यप्रभा) अन्धकार को चीरती हुई ज्योतिः समूह रूपी जल वाली जब गमन (=फैलने) को उद्यत होती है तो गङ्गा नाम से जानी जाती है।।६-१०।।

जो सत् और असत् - अनिर्वचनीय 'अप्रकेत-सलिल' है, जब वही ' प्रकेत-सलिल' के रूप में परावर्तित होती है ; तब आनन्द तथा श्रेयस्करी चैतन्य धारा ब्रह्मा के कमण्डलु में आ गई--ऐसा ज्ञानी जन मानते हैं अर्थात् चिति की निराकार

the milky way saturated with the light of consciousness. She resides woven to the sublime steps of *Viṣṇu*. *Surya-Nārāyaṇa* (Sun) existing in the solar-system shines to resuscitate the entire creation. The light of the Sun which pierces through darkness is known as *Gaṅgā*.[6-10]

It is said that when the intangible *Gaṅgā* evolves as the tangible wave of consciousness generating *Ānand*, She enters the chalice of *Brahmā*. The transcedental state of consciousness is

आद्यन्तहीनपरमात्मनि निर्विकल्पे
सम्भूतयो मुकुलिता विलसन्ति यावत् ।
अण्डाकृतिं समुपलभ्य हिरण्यगर्भः
स्वर्णाऽऽभयाऽप्रतिमया विचकाऽस्ति लोके ।।१२।।

सोऽयं विधातृकलशत्वमुपैति तावद्
यत्र स्थिता परमविन्दुस्वरूपिणी सा ।
उल्लासदीप्तितरला ललिताऽसुधारा
गङ्गेति पावनमनोहरनामधेया[९] ।।१३।।

विश्वास एव शिव इत्यभिधीयमानः
श्रद्धामयः परममङ्गलमूर्तिरीशः[१०] ।
प्रज्ञां बिभर्ति विमलां धवलां पवित्रां
गङ्गाख्यया सुविदितामृतधाररूपाम् ।।१४।।

अवस्था अप्रकेत सलिल है और उसका सोपाधिक होना प्रकेत–सलिल के रूप में बदलना है। आदि अन्त से रहित निर्विकल्प निराकार परमात्मा में जब सम्भूतियां ज्ञान इच्छा क्रिया के रूप में मुकुलित होती हैं तो वही चैतन्य सोपाधिक होकर अर्थात् अण्डाकृति को प्राप्त कर हिरण्यगर्भ कहलाता है और चैतन्य की स्वर्णिम आभा से संसार में प्रकाशित होता है। वही हिरण्यगर्भ ब्रह्म कमण्डलु है जहां परमविन्दुस्वरूपिणी चिति–गङ्गा उल्लास रूपी दीप्ति से तरल प्राणधारा के रूप में स्थित है।।११–१३।।

विश्वास ही शिव हैं; वे श्रद्धामय, मंगल स्वरूप और ईश्वर हैं, जो विमल–धवल पवित्र प्रज्ञा रूपी गङ्गा को अपने मस्तक में धारण करते हैं अर्थात् विश्वास में ही

Apraketa-Salila and its finite state is *Praketa*. The formless Primal cause who is beyond birth and death becomes finite touched by the tremors of desire to know and the waves of volition to act and is known as *Hiraṇya-garbha*. The same glows with eternal brilliance of consciousness and is the cosmos itself. *Gaṅgā* is that source of life which is contained in this *Brahma-kamaṇḍalu*.[11-13]

Faith is *Śiva* Himself. He is benevolent and holds *Gaṅgā* the incarnation of pure knowledge on his forehead. The locks of *Śiva*

एता नु वा शिवजटाः प्रथिता द्युलेखा
वन्द्या विभान्ति रुचिरा विपुला गभीराः ।
सा तासु विद्युदिव नूनमनुप्रविष्टा
गङ्गा प्रकाशसलिला ललितोर्मिदेहा ।।१५।।
व्योम्नि प्रकाशसलिलेन परिस्फुरन्ती
या दुग्धधार-धवला त्वरितप्रवाहा ।
सा व्योमकेश-कच-जूटवितानमध्ये
सङ्कीर्तिताऽवतरिता किल गाङ्गधारा ।।१६।।
यद् वा विशालवनरूपजटासमूहे
शश्वत्प्रवाहमयजीवनधाररूपा ।
संसार-वृक्ष-परिषेचनदत्तचित्ता
गङ्गा विभाति वरदा भवभीतिहन्त्री ।।१७।।
धातुः कमण्डलु-विनिर्गत-शुभ्रनीरा
सैषा यदा शिवशिरोरुहजालबद्धा ।

प्रज्ञा का उदय होता है। अथवा शिव की जटायें आकाश में फैली द्युलेखायें हैं, उनमें विद्युत् की तरह तरंगित चैतन्य किरणें ही गङ्गा है। आकाश में प्रकाश रूपी जल से स्फुरित होती हुई जो दुग्ध धार के समान धवल विद्युत् का त्वरित् प्रवाह है, वही व्योमकेश के जटाजूट में अवतरित गङ्गा की धारा है--ऐसा कहा जाता है। अथवा शिव की जटायें विशाल वन हैं, जिनमें शाश्वत् प्रवाहमय जीवन की धारा बहती है, जो संसार रूपी वृक्ष को सींचने में लगी वरदायिनी, जन्ममृत्यु के भय का नाश करने वाली गङ्गा के रूप में बहती है।।१४-१७।।

ब्रह्मा के कमण्डलु से निकली शुभ्रनीरा गङ्गा जब शिव की जटाओं में फंस गईं

are the rays of heaven (*Dyuloka*) and the waves of consciousness (*Chaitanya*) are the reflection of *Gaṅgā*. It is said that the dynamic currents shooting forth from the scintillating water of skies become *Gaṅgā* enmeshed in the locks of *Vyomakeśa*. The locks of *Śiva* are eternal forests through which the waves of eternal life flow, which water the tree of life, dissolve the cycle of mortality and assume the form of *Gaṅgā*.[14-17]

Gaṅgā with Her pure water sprouted out of the chalice of *Brahmā*

मायाविवर्तपतितेव मता तदानीं
सोपाधिकेति विबुधैश्चितिरप्रमेया ।।१८।।
सन्देह-जालविकलाः सुविशालतृष्णा-
ऽहंकारदृप्तहृदयाः सगरस्य पुत्राः ।
आविद्यकेन दुरितेन हताः समस्ताः
चैतन्यदीप्तिसलिलेन समुद्ध्रियन्ते ।।१९।।
अज्ञानविग्रहवतां सगरात्मजानां
गाढं तमः तिरयितुं यतते तपस्वी ।
सौरं भगं सततमीरयति प्रकृष्टं
तं वै भगीरथपदेन विदन्ति विज्ञाः ।।२०।।
यद्वा प्रकाशगतिवाहकशक्तितत्त्वं
नित्यं भिदन्नतति यत्र घनाऽन्धकारम् ।

तो विद्वानों ने जाना कि अप्रमेय चिति तत्त्व माया के विवर्त में फंस कर सोपाधिक हो गया। सन्देह के जाल में फंसे अत्यधिक तृष्णा वाले, अहंकार से भरे सगर पुत्र (जीव) अविद्या के पाप से मरते हैं और चैतन्य सलिल गङ्गा से उनका उद्धार होता है; अर्थात् अविद्या का नाश तत्त्वबोध से होता है। अज्ञान रूपी शरीर वाले सगर पुत्रों के गहन अज्ञानान्धकार को दूर करने के लिये जो सौर (परमात्मा-चैतन्य) के भग अर्थात् तेज को प्रेरित करता है, वह भगीरथ तत्त्व है।।१८-२०।।

अथवा प्रकाश की गति का वाहक वह तत्त्व जो नित्य घने अन्धकार को चीरता है; उसका अनुकरण ज्योतिर्मयी चिति करती है। वही गङ्गा का भगीरथरथका

and got stuck in the tresses of *Śiva*'s hair. The sages have called that state as a confluence of *Chiti-tattva* (pure consciousness) and *Māyā*. The sons of *Sagar* the symbol of ignorance get doomed for their disbelief, desire, egotism and *Avidyā* and again they are saved by the redeeming touch of *Gaṅgā*. Enlightenment (*Tattva-bodha*), in fact, destroys the mist of ignorance (*Avidyā*). The *Bhagīratha* element is that which sends the rays of wisdom to efface the dense veil of ignorance worn by the sons of *Sagar*. [18-20]

It seems that the enlightened consciousness follows the ele-

ज्योतिर्मयी तमनुधावति तत्त्वविद्भिः
ख्याता भगीरथरथं त्वनुगच्छतीति ।।२१।।
यद्वा हिमालयमनन्तमखण्डदेवं
यद् द्रावयत्प्रतिदिनं सुतरां चकास्ति ।
तेजो दिवाकरमयूखगतं प्रदीप्तं
विज्ञैर्भगीरथपदेन विभाव्यते तत् ।।२२।।
आनन्दमूलमखिलं भगशब्दवाच्यं
सम्प्रेरयत्यविरतं स भगीरथोऽसौ ।
श्रेयस्करं सृजति नूतनमार्गमिच्छन्
भूयादिहाऽमृतरसस्य नवाऽवतारः ।।२३।।
यद् वा पवित्रहिमशैलपयांस्यनेन
मार्गेण भारतभुवि प्रवहन्तु शश्वत् ।
इत्थं स्वपूर्वजसुयत्नमपूरयद् यः
तं वै भगीरथपदेन विदन्ति विज्ञाः ।।२४।।

अनुसरण करना है। अथवा हिमालय रूपी अनन्त और अखण्ड देव को जो पिघलाते हुए निरन्तर चमकता है, वह सूर्य की किरणों से निकला तेज भगीरथ पद वाच्य है। अथवा आनन्द का मूल भग कहलाता है , उसे जो प्रेरित करे वह भगीरथ है। अमृतरस के अवतार हेतु वह श्रेयस्कर मार्ग का सृजन करता है। अथवा पवित्र हिमालय के इस मार्ग से जलधारायें निकल कर भारतभूमि को सींच कर हरा-भरा बनायें-यह संकल्प ले कर जिसने अपने पूर्वजों के प्रयत्न को पूर्णता दी, वह

ment which absorbs the speed of light and rips open the thick darkness. It imitates the rhythm of *Gaṅgā* following the chariot of *Bhagīratha*.The *Bhagīratha* element is the energy of the Sun which melts the magnificent *Himalaya* and shines eternally.The core of *Ānand* is *Bhaga* and the catalyst which motivates it is *Bhagīratha*.It is that same element which to make the rush of the immortal stream descend down, creates a worthy pathway. That dynamism, which once had pledged to fulfil the efforts of its ancestors to irrigate the entire land of *Bhārata* with the water of

विष्णोः पदाद् विधिकमण्डलुवर्तिनी सा
शम्भोर्जटा-विपिन-गह्वरमाविशन्ती ।
या भूर्भुवः स्वरिति विष्टपमाश्रयन्ती
साऽऽम्नायते त्रिपथगेति बुधैर्महार्हा ।।२५।।
व्याप्ता च जाग्रति समस्तचराचरेषु
स्वप्नेऽनुसीव्यति तथैव सुषुप्तिकाले ।
ज्योतिर्मयी विजयते सुतरां तुरीया
साऽऽम्नायते त्रिपथगेति बुधैर्महार्हा ।।२६।।
वामे त्विडा तनुभृतामथ पिङ्गला वै
मध्येऽनयोर्लसति मेरुगता सुषुम्णा ।
यस्यां चितिर्वसति कुण्डलिनी तुरीया
साऽऽम्नायते त्रिपथगेति बुधैर्महार्हा[११] ।।२७।।

राजा भगीरथ के नाम से संसार में प्रसिद्ध है।।२१-२४।।

श्रीगङ्गा विष्णु के चरणों से निकल कर ब्रह्मा के कमण्डलु में आती है, तत्पश्चात् शिव के जटा रूपी वन एवं गुफाओं में प्रवेश करती है। भूलोक, अन्तरिक्ष तथा स्वर्ग लोकों में विचरण करने के कारण विद्वानों द्वारा त्रिपथगा कहलाती है। जो जाग्रत अवस्था में सभी चराचर प्राणियों में व्याप्त है, स्वप्न में तथा सुषुप्ति अवस्था में भी विद्यमान है, वह ज्योतिर्मयी तुरीय तत्त्व रूपा गङ्गा तीनों अवस्थाओं में विद्यमान होने के कारण त्रिपथगा कहलाती है। जो शरीरधारियों के बांयी ओर इड़ा, दाहिने पिङ्गला और मध्य में सुषुम्णा के अन्दर कुण्डलिनी के रूप से

the *Himalayas* stands celebrated as *Bhagīratha* the king.[21-24]

Śrī Gaṅgā comes out of the feet of *Viṣṇu* and enters the chalice of *Brahmā*. There after She enters the dense forests and caves of the mesh of *Śiva*'s hair. The wise sages have named Her *Tripathagā* as She courses through *Bhūloka*, *Antarikṣaloka* and *Swargaloka*. *Gaṅgā*, the *Turīya tattva*, is known as *Tripathagā* as She permeates the existence of every creature during their *Jāgrata* states. She dwells in them during *Swapna* and *Suṣupti*. The sages have called Her *Tripathagā* who dwells in the *Suṣumṇā* as

ॐकारनाददनदिते प्रणवाक्षरेऽर्ध-
मात्रास्थिता जयति मन्त्रमयी त्रयी या।
सा ध्यानयोगविषया विमला परा वाग्
आम्नायते त्रिपथगेति बुधैर्महार्हा ।।२८।।
सौन्दर्यराशिरतुला शिवसत्यरूपा
गङ्गा कलिन्दतनयाऽथ सरस्वती च ।
सम्मिश्रिता त्रितयभावमनुप्रपन्ना
साऽऽम्नायते त्रिपथगेति बुधैर्महार्हा ।।२९।।
अध्यात्मयोगविषया निहिता गुहायां
सच्चिद्घना सकलभूतमनुप्रविष्टा ।
दिष्ट्यैव गोमुखगुहोद्गतनिर्झरी सा
प्रत्यक्षगोचरतया कृतिनः पुनाति ।।३०।।
साऽनन्तविस्तृतियुता महनीयरूपा
साकारतां व्रजति सूक्ष्मतनुर्वरेण्या ।

विराजमान है, उसे विद्वानों ने त्रिपथगा कहा है। ॐ कारनाद ब्रह्म में, प्रणवाक्षर में, जो अर्धमात्र चन्द्रविन्दु के रूप से विद्यमान है; वह ध्यान योग की विषय परा वाणी त्रिपथगा कही जाती है। जो सत्य शिव और सुन्दर स्वरूप वाली है; गङ्गा,यमुना, सरस्वती के रूप से सम्मिलित हो कर त्रितयभाव में रहती है उसे विद्वान् त्रिपथगा कहते हैं।जो अध्यात्म योग की विषय है और बुद्धि रूपी गुफा में स्थित है, सच्चिदानन्द स्वरूप से प्राणियों में अनुस्यूत है, वही गोमुख से निकली निर्झरिणी के रूप में संसार के भय को दूर करने के लिये सौभाग्य से प्रकट हुई है। जो अनन्त

Kuṇḍalinī set between *Iḍā* and *Piṅgalā*. *Gaṅgā* is *Ardha-mātrā chandravindu* in *Oṁkāra*. She is the Prime Word and the subject of meditation (*Dhyāna yoga*). The sages have known Her as *Tripathagā* who is the incarnation of Truth, Beauty and Good interwoven like *Gaṅgā-Yamunā-Saraswati*. She resides in the essence of intellect and pervades every creature in the universe in the form of pure consciousness. It is that *Gaṅgā* who fortunately reveals Herself as a river from *Go mukha* to allay the meterial fears in the world. She is the infinite and subtle power who

अव्यक्ततां परिहरत्यनुकम्पमाना
संदृश्यते जगति गोमुखनिर्गता वा ।।३१।।
संशोभते सुवदने स्वरभेदपूर्णा
छन्दस्वती मुखरिताऽक्षरनादरूपा ।
गङ्गैव गोमुखविनिर्गतवैखरीवाक्
शब्दायते विविधवर्णविभूषिताङ्गा[१२] ।।३२।।
उन्मेषयन्नखिलजीवगतिं समन्ताद्
यः प्रत्यहं ह्युषसि नित्यमुपैति तावद् ।
आद्योदयो दिवि दिवाकरदीधितीनां
विज्ञायते जगति गोमुखसंज्ञया वा ।।३३।।

चिदानन्दा संविद् भवभयविनाशेऽतिचतुरा
निराकारा नित्या श्रुतिभिरनभिज्ञातविषया ।

विस्तार वाली महान् स्वरूप वाली, सूक्ष्म और श्रेष्ठ तत्त्वरूपा है; वह अपने अव्यक्तभाव को त्याग कर, दया करती हुई गोमुख से जलधारा के रूप में निकली है, जगत् में दृश्यमान है। जो अक्षरनादरूपा वेदवाणी उदात्त,अनुदात्त, स्वरित के भेदों से युक्त हो कर वैदिकों के मुख में विराजमान हैं, वही गङ्गा है। वही मुख रूपी इन्द्रिय से वैखरी के रूप में विभिन्न वर्णों से विभूषित होकर उच्चरित होती हुई शब्द करती है। जो सम्पूर्ण जीव-जगत् को उषःकाल में जगाती हुई क्रियाओं में लगाती है, वह गो=सूर्य की मुख=किरणों का समूह संसार में गोमुख नाम से जानी जाती है।।२५-३३।।

जो चिद् और आनन्दरूपी ज्ञान(संविद्)भवभय के नाश में अत्यन्त निपुण है,

renounces Her intangibility and becomes visible in the world due to Her mercy from *Go mukha*. *Gaṅgā* the Prime Word resides in the voice of *Vedic* priests as *Udātta*, *Anudātta* and *Swarita* and the same comes out as *Vaikharī*, and gets embellished with numerous letters. It is believed that *Go mukha* in one of its emanation is the mesh of the rays of the Sun which awakens the entire cosmos at the break of dawn.[25-33]

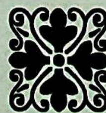
The *Vedas* even do not know the transcendental mystery

नराकारा भूत्वाऽवतरति कदाचिद् भुवि परा
तथा नीराकारा सरसरसधारा विजयते[१३] ।।३४।।

आनन्दं विदधाति या ऋतमयी या चिन्मयी शाश्वती
दिव्यालोकतरङ्गिणी तिरयति ध्वान्तं नितान्तं नृणाम् ।
यद्वारि प्रभवन्ति दातुमनिशं भुक्तिञ्च मुक्तिं परां
सा गङ्गा वितितीतरीतु सततं श्रेयांसि भूयांसि नः ।।३५।।

नित्य है और वेदों द्वारा भी जिसका विषय (रहस्य) ज्ञात नहीं है, वही निराकार परा संवित् कभी नराकार रूप में पृथ्वी पर अवतार लेती है और वही नीराकार हो कर सरस रसधारा (गङ्गा) के रूप में सुशोभित होती है। जो ऋत(सत्य)और चित्स्वरूपा है, जो शाश्वततत्त्व आनन्द प्रदान करती है, जो दिव्य चिन्मय आलोक की नदी मनुष्यों के अज्ञानरूपी अंधकार को दूर करती है, जिसका ज्ञानजल मनुष्य को परा मुक्ति और ऐहिक भुक्ति-दोनों प्रदान करने में समर्थ है,वह सुन्दर रस से युक्त गङ्गा हमारे अनेकों कल्याणों का विस्तार करे।।३४-३५।।

of *Gaṅgā*, the formless and the eternal, the symbol of *Chit* and *Ānanda* and the remover of the fear of rebirth. She appears as the different incarnations in the world and again it is the same spirit which flows in the form of water. She, the symbol of truth and infinite knowledge bestows *Ānanda*. She is the river of divine enlightenment, who despels the darkness of ignorance. Her water of wisdom is able to grant mankind liberation and total prosperity. Let that *Gaṅgā* be saturated with edifying water and bestow endless welfare on us.[34-35]



॥ प्रदूषणाम् ॥

अहो! बत महत्पापं क्रियतेऽहर्निशं भुवि ।
प्राणप्रदायिनी गङ्गा दूष्यतेऽद्य नराधमैः।।

दशमः सर्गः

प्रदूषण-वर्णनम्

भारते सर्वसौभाग्यसंवर्धकं
सुप्रसिद्धं त्रिलोक्यां गुणैरद्भुतैः ।
जीवनाऽऽधाररूपं मनस्तृप्तिदं
राजते गाङ्गवारि प्रकृष्टं परम् ।।१।।
गोमुखान्निर्गतं निर्मलं पावनं
पापहं तापहं शोकसंहारकम् ।
पुष्टिदं तुष्टिदं भुक्तिदं मुक्तिदं
राजते गाङ्गवारि प्रकृष्टं परम् ।।२।।
पर्वतात् प्रसुतं स्वच्छमत्यद्भुतं
शीतलं स्फूर्तिदं यत्सुधासोदरम् ।

भारत में सब प्रकार के सौभाग्य को बढ़ाने वाला, अपने अद्भुत गुणों से तीनों लोकों में प्रसिद्ध, जीवन का आधार भूत,मन को तृप्ति प्रदान करने वाला गङ्गा का उत्कृष्ट जल सुशोभित है। गोमुख से निकला,पाप-ताप-शोक को नष्ट करने वाला, पुष्टि- तुष्टि और मुक्ति देने वाला है। पर्वत से निकलने वाला स्वच्छ,अनुपम,

Pollution

The exquisite water of *Gaṅgā* is the source of every kind of prosperity in India. It embodies outstanding qualities and is celebrated in the three *lokas*. It is the origin of life and bestower of fullness of mind.This water originates from *Go-mukha* cave and dispels sin, suffering and sorrow. It nurtures life and provides liberation. Human beings have polluted the water of this

तज्जलं स्वार्थचिन्ताऽऽकुलैर्मानवैर्
दूषितं हा ! कृतं कीदृशो विस्मयः? ।।३।।
यत्सदा पीयते प्राणिभिर्निर्मलं
यद् विना जीवनं धार्यते वा कथम् ?
दूषितं तज्जलं शक्यते साम्प्रतं
नैव पातुं मुदा नैव हातुं सदा ।।४।।
सत्सुधाधारवच्शुभ्रमासीत् पुरा
प्राणसञ्चारकञ्चामयध्वंसकम् ।
पङ्किलं हन्त! जातं तदेवाऽधुना
पीयतां वा कथं हीयतां वा कथम्[१] ? ।।५।।
दिव्यलोको यदाचम्य मोदान्वितैः
प्राप्यते गाङ्गभक्तैः पवित्रैश्चिरम् ।

शीतल, स्फूर्तिदायक, अमृत का सहोदर इस जल को स्वार्थ में ही लगे हुए (समष्टि हित को भुला बैठे) मानवों ने दूषित कर दिया, यह कैसा विस्मय है? जिस निर्मल जल को सभी प्राणी सर्वदा पीते हैं, जिसके बिना जीवन धारण ही नहीं होता, वही जल आज दूषित हो गया है, उसे न तो प्रसन्नतापूर्वक पीया जा सकता है और जीवन के लिए आवश्यक होने के कारण छोड़ा भी नहीं जा सकता; जो पहले प्राण का सञ्चारक, रोग का संहारक, अमृत की धारा के समान सफेद था, वही अब कीचड़ से सना दुर्गन्धमय हो गया है, उसे कैसे पीया जाय कैसे छोड़ा जाय? ।।१-५।।

जिस जल के आचमन करने से गङ्गा के पवित्र भक्त स्वर्ग लोक को प्राप्त करते

peerless river which soothes and generates the zest for life. Selfish people are engaged in destroying this nectar-like life-giving river, isn't it astonishing? The water, which is drunk by every creature, without which life is not possible, lies polluted today. Neither can it be taken happily nor discarded as it is essentail for life. The river which was once the life-giver and destroyer of diseases and stood with gleaming purity, at present lies in a rancid form with putrid stench.[1-5]

Today it seems to be a terrible dilemma to swallow its water. By merely touching its water the great devotees are supposed to

फेनिलैः तद्धि निष्ठीवनैर्मिश्रितं
पीयतां वा कथं हीयतां वा कथम् ।।६।।
या च नीता भुवि स्वर्गलोकादहो!
पूर्वजोद्धारकामेन राजर्षिणा ।
नीयते सैव हा! स्वात्मनाशोद्यतैः
कुत्र मत्तैरिदानीं न विज्ञायते ।।७।।
स्तूयते या स्तवैः सूक्तिभिर्मङ्गलै-
रर्च्यते गन्धमाल्यैः प्रदीपैः शुभैः ।
तां तटेष्वागताः स्नानपानार्थिनो
हन्त ! थुत्कारयन्तस्तिरस्कुर्वते[२] ।।८।।
सङ्गता यत्र नद्यः प्रपाताः पुरा
सीकरैः संयुताः स्वच्छतोयाः शुभाः।

थे, वही आज साबुन के झाग और थूक -खखार से मिश्रित हो गया है, उसे कैसे पीया जाय कैसे छोड़ा जाय। जो अपने पूर्वजों के उद्धार की कामना से राजर्षि भगीरथ के द्वारा पृथ्वी में लाई गई, वही आज अपने नाश के इच्छुक पागल मनुष्यों द्वारा कहां ले जाई जा रही है-- पता नहीं। जो सूक्तियों, माङ्गलिक वचनों तथा स्तुतियों से; गन्ध- अक्षत,पुष्पमाला, और सुन्दर प्रदीपों से पूजी जाने योग्य है, उसी को तट पर नहाने वाले लोग थूकते समय थू-थू करते हुए तिरस्कृत कर रहे हैं। जिसमें पहले सुन्दर प्रपात और नदियां सीकरों से सुशोभित होती हुई अपने

reach heaven but in reality now it has become thoroughly polluted getting mixed with the discharge of the froth of detergents and spittle. Once the *Rājarṣi Bhagīratha* had brought Her down on the earth to absolve his predecessors. At present mindless humanbeings gripped by their passion for the self- destruction are driving Her towards devastation. She deserves to be worshipped with hymns, *gandha*, *akṣata*, garlands and lamps but She receives the disdain of the bathing millions as they spit into Her while washing themselves in Her water. Once She was joined by beautiful brooks and unsoiled rippling tributaries but at

मूत्र-विष्ठा-मलानां प्रणाल्यः सदा
सम्मिलन्तीह हा! तत्र रोगप्रदाः [३]।।९।।
काय-वाङ्-मानसानां मलध्वंसिनीं
स्फूर्तिमूर्जस्विता-दायिनीमद्भुताम् ।
योजयन्त्यर्थलुब्धाः कथं साम्प्रतं[४]
प्राणसंहारकैरुग्रपूतिद्रवैः ।।१०।।
जीवने गृह्यमाणाऽधुना भूयशः
'प्लास्टिकेति' प्रसिद्धा नवा निर्मितिः।
दूषणोत्पादिका याऽवसाने लयं
नो समीयात् पृथिव्यां शताब्दीमपि ।।११।।
यच्च 'सिन्थेटिके'ति समाख्यायते
नूतनाविष्कृतः तैलरूपोऽशुचिः ।
आत्मनाशाय कुर्वन्ति हा ! मानवाः
तस्य दैनन्दिनं कुप्रयोगं हठात् ।।१२।।

स्वच्छ जल से मिलती थीं, उसी में हाय! आज मूत्र-विष्ठा और कूड़े-कचरे से भरी हुई रोगप्रद नालियां आ कर मिल रही हैं। जो शरीर मन और वाणी के मल को धोती है, अद्भुत स्फूर्ति प्रदान करने वाली है, उसमें अर्थ लोलुप मनुष्य आज प्राणसंहारक तीव्र रासायनिक द्रवों को क्यों उड़ेल रहे हैं ?।।६-१०।।

आज की जीवन-चर्या में प्लास्टिक का नवीन प्रयोग भूयशः हो रहा है जो प्रदूषण का कारक है, क्यों कि उसका पृथ्वी में विलय शताब्दियों तक नहीं हो सकता। फलतः वह कूड़े-कचरे के रूप में प्रदूषण को बढ़ाता है। आज सिन्थेटिक पदार्थ का मानव दैनन्दिन प्रयोग धड़ल्ले से कर रहा है और आत्मनाश को

present She is yoked with filthy and infected sewers. Why is the greedy mass pouring effluents into this life-giving, invigorating water which wipes out the grime of the body, mind and words? [6-10]

The rampant use of plastic in modern life increases pollution because the former can not be destroyed easily. The unbridled use of synthetic chemicals by human beings is inviting

जीवितत्त्वं विनष्टं भवत्यम्भसां
येन तैलेन विध्वंसकेनाऽनिशम् ।
तद्धि गङ्गाजले क्षिप्यतेऽहर्निशं
सर्वथा प्राणवायोः समुच्छेदकम् ।।१३।।
प्राणवार्युनदीनां प्रणष्टोऽखिलो
हा! विषाक्तेन गन्धेन सम्मिश्रितः ।
जीवजाता जलीयाः कथं जीविताः
स्युः कथं मानवाः स्वस्थतामाप्नुयुः ।।१४।।
हा! जनानामतिक्रान्तवृद्ध्या न किं
भूतलं भारमग्नं दरीदृश्यते ।
आपगा दूषणं संवहन्त्यो न किं
सभ्यतायाः विनाशे रता आहताः ।।१५।।
भौतिकी- सम्पदापद्विषव्याकुला
दूषणग्राहपर्याकुला जर्जरा ।
वीक्ष्य हा नागरीसभ्यतां कृत्रिमां
भर्त्सयन्ती भृशं दुःखिता चिन्तिता ।।१६।।

आमन्त्रित कर रहा है। उस विध्वंसक पदार्थ से (सिन्थेटिक केमिकल्स से)जल का जीवितत्व नष्ट हो रहा है। इसको रातदिन कारखानों के कचरे के रूप में गङ्गा जल में फेंका जा रहा है। इस विषैले दुर्गन्धित द्रव से जल में रहने वाला आक्सीजन नष्ट हो रहा है;तब जल में रहने वाले जीवजन्तु कैसे जीवित रहेंगे और मनुष्य कैसे स्वस्थ रहेंगे? जनसंख्या की बेतहाशा वृद्धि से पृथ्वी भारमग्न हो गई है। प्रदूषणों को ढोती हुई नदियां सभ्यता के विनाश में लगी हैं। भौतिक सम्पदा के विष से व्याकुल, दूषण रूपी ग्राह से ग्रसित हो कर छटपटाती हुई जर्जर गङ्गा बनावटी

their doom. It depletes the oxygen content in water. How long can creatures live safely in such a contaminated water? How long can mankind sustain its health? The earth seems burdened by the ever increasing population. The polluted rivers seem to be ruining the civilization. Touched by the poison of the materialistic way of life the resourceful *Gaṅgā* seems to assail the fake urban life.[11-16]

उद्भिदान् पाययन्ती जलं रोधसि
स्तन्यदानोत्सुका बालवत्सेव या ।
छिन्नमूलान् च तान् पादपान्पुत्रकान्
वीक्ष्य तारस्वरेणाऽऽक्रुशत्याकुला ।।१७।।
फुल्लपुष्पच्छलेनैव येषां पुरा
स्निग्धहासं समादाय मोदान्विता ।
छिन्न-भिन्नाङ्गदेहान् विदीर्णान् तरून्
पीतपत्राश्रुयुक्तान् कथं पश्यति[६] ।।१८।।
पर्वतीयेऽञ्चले वन्यनाशेन हा[७]!
नश्यते शुभ्रकान्तिर्हिमानी भृशम् ।
तेन चोत्पाद्यते भूक्षरं नित्यशः
सर्वथाऽऽपत्करं घातकं दुर्भगम् ।।१९।।

नगर सभ्यता की निन्दा करती हुई बड़ी दुःखी और चिन्तित है।।११-१६।।

जो तटों पर पौधों, वृक्षों, लता- गुल्मादिकों को जल पिलाती हुई ऐसी लगती थी मानो स्तन्य (दूध)दान देने की उत्सुक बालवत्सा (छोटेवच्चे की माता)हो, वही अपने पुत्र तुल्य पेड़ों को जब कटा हुआ, उखड़ा हुआ देखती है तो व्याकुल हो कर ऊंचे स्वर से चिल्लाती हुई सी लगती है। जो पहले उन पेड़ों की हंसी को खिले हुए फूलों के रूप में बटोरती हुई प्रसन्न होती थी, वही आज लहरों के आंचल में उनके पीले पत्ते रूपी आंसुओं को देख कर हाय! कैसे जीवित है? पहाड़ों में वनों की अन्धाधुन्ध कटाई से बर्फ तेजी से नष्ट हो रही है। गर्मी पड़ने से बर्फ पिघल जाती है। उससे सदैव भूस्खलन होता रहता है जो बड़ा घातक है और अनेक प्राकृतिक आपत्तियों को देने वाला है।।१७-१९।।

She seems to be a mother grieving over the ruin of Her saplings whom She had nourished once feeding them with Her water. She, who had once happily gathered the smile of the trees like flowers in Her waves, today amasses their tears resembling yellow leaves. Alas! it is unbearable to Her.The mindless deforestation on the mountains destroys their coolness. The snow melts in excessive heat and it results in severe landslides, causing terrible natural calamities.[17-19]

सैकतानां चयं बिभ्रती संततं
मृत्तिकाभिर्यथा पूर्यतेऽनुक्षणम् ।
लोपयित्वा जले क्ष्मातले किं न सा
शुष्कतामाददानाऽनुमेया बुधैः ॥२०॥
बन्धकार्येण भ्रष्टास्तथा खण्डिता
धारणे मेदिनीमक्षमा भूधराः ।
तेन कम्पायमानाऽचला लक्ष्यते
भीषणामापदं संदधाना मुहुः ॥२१॥
याऽनवच्छिन्नधाराऽतिवेगान्विता
प्रावहत् पर्वतादासमुद्रं पुरा ।
सैव भिन्नाङ्गदेहा कृता साम्प्रतं
सिञ्चनार्थं प्रणाल्यो हि निष्कासिताः ॥२२॥
एकतः क्षीणकायाऽभवद् मन्थरा
भङ्गुरा दोषजातैरसावन्यतः ।

बालुओं के ढेर को निरन्तर बहाने वाली नदी जैसे प्रतिक्षण गाद से भर रही है, उससे गङ्गा का जल पृथ्वी के नीचे लुप्त हो जायगा और नदी सूख जायगी ; क्या यह अनुमान विद्वान् लोग नहीं कर रहे हैं? बांधों के निर्माण में गिराये गये और तोड़े गये पहाड़ पृथ्वी को धारण करने में असमर्थ हो गये हैं ; इससे बार-बार भू कम्प आते हैं जो भयङ्कर आपत्तियों को उपस्थित कर देते हैं। जो पहले अनवच्छिन्न धारा थी और बड़े वेग से युक्त होकर हिमालय से सागर तक बहती थी, उससे अब खेतों को सींचने और अनेक सुख सुविधाओं के लिए अनेकों नहरें निकाल दी गई हैं और उसे छिन्न-भिन्न कर दिया गया है। इस प्रकार एक ओर तो इसे क्षीणकाय

Wise men feel apprehensive that the river shall go underground. The erection of various dams has ruined the mountains and the earth has become prone to earthquakes. Once upon a time She was a forceful river with unbroken stream coming out of the *Himalaya*. At present She seems to have been mutilated as numerous canals have been cut out of Her to irrigate fields. On the one hand She has been made lean, Her pace slowed and the

हा! कथं जीविता स्यादिदानीं कलौ
सभ्यतायाः शवं संवहन्ती चिरम् ।।२३।।
योजनानां शतैः कीर्तिता सत्यपि
स्निग्धया सत्वरं दीयते सद्गतिः।
प्रापिता दुस्तरं दुर्गतिं केन वा
पुण्यशीलेन मातः ! ततो रक्ष्यसे? ।।२४।।

उत्तराखण्डभूमौ प्रवेशाय या
श्रीहरिद्वारभूतोच्यते सा पुरी ।
दूषणद्वाररूपाऽधुना दृश्यते
पर्वतादागतानां सुरस्त्रोतसाम् ।।२५।।

बना कर मन्दमन्थर गति वाला बना दिया गया है (नदियों का वेग समाप्त होने से उनकी सर्पिलता जो प्रदूषण को पचाती है, जल को शुद्ध करती है, समाप्त हो गई है) और दूसरी ओर अनेक प्रदूषणों (कूड़े-कचरों, रसायनों) को डाल कर इसे नष्ट कर दिया गया है। हाय! इस कलियुग में चिरकाल तक सभ्यता के शव को ढोती हुई यह कैसे जीवित रहेगी? जो सैकड़ों योजन (अनेकों कोश)दूर से स्मरण करने मात्र से शीघ्र ही सद्गति प्रदान करने वाली है, वह इस दुस्तर दुर्गति को प्राप्त करा दी गई है। हे माता! कौन ऐसा पुण्यशाली होगा जो इस विनाश से तुम्हारी रक्षा करेगा?।।२०-२४।।

हाय! जो पुरी उत्तराखण्ड के तीर्थों (बद्री-केदारधाम)के लिए द्वार भूता हरिद्वार थी, वह आज पर्वतों से आई हुई देवनदियों के लिये प्रदूषण की द्वार हो गई है

incessant pouring down of effusions into Her has totally ruined Her. Alas! how is She to continue in this *Kaliyuga* bearing the present cultural degenaration. Once just a thought of Her redeemed people far and wide, now She Herself has been thrown into a state of abject misery. Where is the virtuous one who shall save Her from this utter disaster ?[20-24]

Alas, *Haridwāra*, the gateway to numerous *tīrthas* of *Uttarākhaṇḍa* has become the gateway to pollution for the heavenly rivers descending from *Himalaya.* On Her banks are

भूयशः स्थापितानामितोऽस्यास्तटे
वैद्युतानां तथैवौषधानां गृहात् ।
हन्त! 'मीथेन'- नामा कुवायुः सदा'
घातको दूषणाऽऽवर्धकः क्षिप्यते ।।२६।।
झर्झरीति स्वनं कुर्वतीभिः पुरा
स्वच्छतोयाभिरावर्धिता चादृता ।
पङ्किलाभिश्च सा सङ्गता साम्प्रतं
दूषिताभिः सरिद्भिर्न किं दूष्यते ? ।।२७।।
स्वं समुद्धर्तुमस्यां समायान्ति याः
प्राग् मलानां प्रणाल्योऽतितन्व्यः क्वचित् ।
वर्धमानाः प्रकामं नदा भीषणाः
स्वर्धुनीं भाययन्तः सदा सङ्गताः ।।२८।।

(अर्थात् हरिद्वार से हीं गङ्गा को बुरी तरह प्रदूषित करने का क्रम चल पड़ता है।) यहां उसके तट पर स्थापित विद्युत् उद्योग के कारखाने (भेल)तथा ओषधि निर्माण के कारखाने जो गन्दगी डालते हैं, उससे निकलने वाली मीथेन गैस बड़ी घातक और प्रदूषक है। पहले जो झर्झर नाद करती हुई स्वच्छ जल वाली धाराओं से बढ़ाई जाती थी, वही आज कूड़े से भरी दूषित नदियों से मिली हुई स्वयं क्या दूषित नहीं हो रही है? पहले कभी छोटी-मोटी गन्दी नालियां अपना उद्धार करने के लिए इसमें मिलती थीं, परन्तु अब तो फैक्ट्रियों के प्रदूषण से भरे बड़े-बड़े नाले स्वर्धुनी को डराते हुए उसमें सदैव मिलते रहते हैं।।२५-२८।।

situated factories like BHEL and pharmaceutical industries, which pour pollution into Her.The Methane gas ejected by them is fatal to health. She was the one who once cascaded down roaring and gurgling and joined up with pure streams but today isn't She anguished to find Herself filthy mixed with polluted streams? Earlier impure drains rarely poured into *Gaṅgā* and even if that happened at all, filth was chastened by Her touch, but at present the bigger gutters bearing effusions from the factories spew incessantly into *Swardhunī* and threaten Her existence.[25-28]

उग्रगन्धैर्जुगुप्साकरैर्वीचिभिर्
यत्र वीभत्सता नर्तनं कुर्वती ।
तां परित्रासयन्ती दरीदृश्यते
तत्पुरं वीक्ष्य शोकाकुलाऽहर्निशम् ।।२९।।
एकतश्चर्मणः क्षालनेनाऽऽहता
भ्रंशिता चापि रासायनैरन्यतः ।
हन्यते प्राणरूपाऽम्बुदेहाऽमृता
दूषणानां निकायैर्भृशं पूरिता[९] ।।३०।।

तारकं श्रावयन्ती शिवा मुक्तिदा
प्राप्य काशीं पुरा विश्वनाथप्रिया ।
हर्षिताऽऽसीदिदानीं शवैः सङ्कुला
दूषिताऽहर्निशं दुःखिता चिन्तिता[१०] ।।३१।।

जहां तीखी गन्ध वाली, घृणा पैदा करने वाली, लहरों से वीभत्सता क्रूर नृत्य करती है और श्रीगङ्गा को डराती रहती है, उस कानपुर शहर को देख कर स्वर्धुनी शोकाकुल हो जाती है; जहां एक तरफ चमड़े के प्रक्षालन से और दूसरी ओर केमिकल्स के मिलाने से प्राणरूप जल वाली अमृतमयी गङ्गा मारी जा रही है और प्रदूषणों के ढेर से पूर्ण हो रही है।।२९-३०।।

जो विश्वनाथ की प्रिया मुक्तिदात्री गङ्गा काशी में आकर पहले जीव को तारक मन्त्र सुनाती थी और हर्षित होती थी, वही इस समय शवों से पटी रह कर सदैव

Gaṅgā becomes dismayed to behold the state of Kanpur which frightens Her with its rancid smell emitting out of the tanneries. On the one hand *Gaṅgā* is being polluted by the tanneries and on the other the life-giving *Gaṅgā* is being ruined by getting contaminated by chemicals.[29-30]

Long ago this very *Gaṅgā*, the liberating force and the consort of *Viśwanātha*, who came to *Kāśī* and sang the *Tāraka*-

आत्मविद्यास्थली या पुराऽऽसीदहो!
उन्मुखा सैव भोग्यान् पदार्थानभि ।
हन्त! भोक्तृत्ववादप्रहारैर्हता
भाति चेतोविहीनेव वाराणसी[११] ।।३२।।

शस्यसम्पत्तिभिः सर्वशोभायुता
या विहारस्थली साऽधुना दुर्भगा ।
दोषजातैः तिरस्कुर्वती स्वर्धुनीं
दृश्यते पूरितोद्योगजातैर्भृशम्[१२] ।।३३।।

कोमलां गाङ्गधारामिदानीं ननु
त्रासयन्ती दरीदृश्यते भूयशः ।
पूरयन्ती सदा सर्वरासायनैर्
बङ्गभूमिर्मलानां निकायस्थली[१३] ।।३४।।

दुःखी और चिन्तित रहती है। जो वाराणसी पहले आत्मविद्या की केन्द्र थी, वही आज भोगवाद की ओर उन्मुख हो कर उपभोक्तावाद के प्रहार से हत हो चेतना विहीन सी लगती है।।३१-३२।।

जो विहार-प्रदेश शस्य -सम्पत्ति से हरा भरा रहता था, वह इस समय कल-कारखानों की भरमार से युक्त है और उनसे निकलने वाले प्रदूषणों से गङ्गा को गन्दा कर रहा है। कोमल गङ्गा की धारा को इस समय अनेक प्रकार से दुःखी कर रही है प्रदूषणों के ढेर की स्थली बनी बंगभूमि,जो सब प्रकार के रासायनिक द्रवों से

mantra rapturously remains plunged in grief as She lies strewn with cropses and caracasses at present. This *Vārāṇasī* which once had been the centre of *Ātmavidyā*, at present seems to have collapsed being gripped by the fever of consumerism.[31-32]

The ancient state of Bihār too which thrived with an abundance of harvest is now infected equally in this way. The pure stream of *Gaṅgā* is being weighed down by the accumulation of chemical pollution in *Baṅgabhūmi*. Once upon

स्वच्छ-पीयूष-पानीय-धारायुता
प्रस्थिता या हिमाद्रेः पवित्राङ्कतः ।
दूषिता सङ्गता सा पयोधिं न किं
पापपुञ्जप्रवाहा सती जर्जरा ।।३५।।
पुण्यदः सङ्गमः साम्प्रतं दृश्यते
दूषणस्याऽऽलयः सर्वरोगप्रदः ।
नारकीयां गतिं प्रापितो यः स्वयं
सोंऽहसां स्यात्किमुद्धारकः प्राणिनाम्? ।।३६।।
शन्तनोरङ्गने! क्वाऽस्ति ते साम्प्रतं
स प्रतापी सुतो नाम देवव्रतः?

गङ्गा को पाट रही है। जो हिमालय की पवित्र गोद से स्वच्छ अमृत धार को ले कर चली थी;क्या समुद्र तक आते -आते वह पाप पुञ्जों को ढोने वाली और जर्जर नहीं हो गई? जो गङ्गा -सागर संगम पुण्य प्रदान करने वाला था , वही अब प्रदूषण का घर और रोगप्रद हो गया है। जो स्वयं नारकीय गति को प्राप्त है , वह प्राणियों का पाप से उद्धार क्या करेगा?।।३३-३६।।

हे राजा शन्तनु की पत्नी गङ्गे ! तुम्हारा देवव्रत नाम का प्रतापी पुत्र कहां है, जो पुनः तुम्हारा इस पाप पुञ्ज से उद्धार करने के लिए भीष्म प्रतिज्ञा करे । (अर्थात् आज गङ्गा-प्रदूषण का निवारण छोटे-मोटे संकल्पों से नहीं भीष्म प्रतिज्ञा से ही

a time She had descended from the untainted *Himalaya* with Her unalloyed stream, but doesn't She seem wearied bearing the weight of sins of mankind as She nears the sea? *Gaṅgā-Sāgara saṅgam* which once upon a time was destined to be a liberator of sins; the bestower of *puṇya*, today has become the abode of pollution and infection. How will this *tīrtha* with its present hellish state sustain the creation? [33-36]

The turmoiled heart of the poet asks, 'O you the partner of king *Śāntanu*, where is your valiant son *Devabrata* who will take an unshakable vow (*Bhīṣma-pratijñyā*) to save you from this piled

योो हि कुर्वीत भीष्मां प्रतिज्ञां पुनः
त्वां समुद्धर्तुमस्मादघौघादहो! ।।३७।।

विज्ञानोन्नति-सूचकं नव-नवं यन्नाभिकीयोर्जसः
विश्वस्मिन् क्रियते परीक्षणमिदं वैज्ञानिकैर्यन्मुहुः ।
विस्फोटे तदसह्यदावदहने लोके पतङ्गायिते
जाते सर्ग-निसर्ग-विप्लवभरे कस्योन्नतिः काम्यते ।।३८।।

सर्वं मानसिकं हि कल्मषमिदं व्यक्तं नृणां भोगिनाम्
कृत्येषु प्रतिबिम्बितं विकुरुते यज्जीवनं प्राणिनाम् ।
तेनेयं प्रकृतिः प्रदूषणचयैः त्रस्ता दरीदृश्यते
गङ्गायाः कमनीयकान्तिभरितान्यङ्गानि शीर्णानि हा! ।।३९।।

सम्भव है)।।३७।।

वैज्ञानिक विज्ञान के उन्नति के सूचक नाभिकीय उर्जा के नये-नये परीक्षण विश्व स्तर पर कर रहे हैं; किन्तु उनके विस्फोट से उत्पन्न भीषण ज्वालाओं से होने वाली ऊष्मा में जब सम्पूर्ण सृष्टि ही पतङ्गों के समान जल जायेगी तो शक्तिमान् बनने का महत्वाङ्क्षी मानव उस आत्मघाती शक्ति से किसकी उन्नति करेगा। भोगी मनुष्यों का सम्पूर्ण मानसिक कल्मष उनके कार्यों में प्रतिबिम्बित है, जो उनके जीवन को विकृत कर रहा है। इसीलिए बाह्य प्रकृति और पर्यावरण भी प्रदूषणों से त्रस्त दिखाई दे रहे हैं और गङ्गा के कमनीय कान्ति युक्त अंग भी नष्ट हो रहे हैं।।३८-३९।।

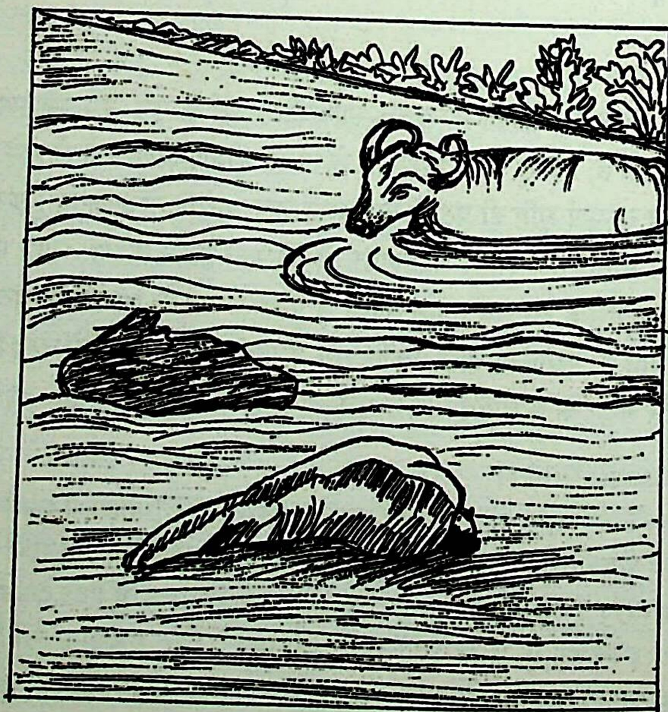
up viciousness'? [37]

Scientists are busy in exploding the atoms and its heat threatens to reduce the very existence of the creation to ashes. The destruction of nature betrays the aim of progress. What becomes of this enormous chunk of power if it is self-destructive? The mental filth and degeneration of the materialistic people are evident in their actions. It is ruining their own lives. The entire nature and ecology look terrified and the soft and comely *Gaṅgā* also is getting ruined.[38-39]

बुद्धिर्नश्यति मानसं कलुषताऽऽक्रान्तं न किं दृश्यते ?
सुप्ताधीर्न हि चेतना मुकुलिता भ्रष्टो विवेको न किम् ?
अज्ञानेन विलुप्तबोधविभवा धीरा न सन्तीह किम् ?
सर्वञ्चैतदनर्थकं प्रकुरुते यद्यद्य को विस्मयः ?।।४०।।

बुद्धि नष्ट हो गई है, मन गन्दा हो गया है, धी सो गयी है, चेतना मुकुलित नहीं है, विवेक भ्रष्ट हो गया है, धीर पुरुषों के ज्ञान वैभव को अज्ञान ने लूट लिया है; तब ये सब मिल कर यदि अनर्थों को जन्म देते हैं तो आश्चर्य की क्या बात है?।।४०।।

There is inner pollution everywhere, conscience and the inner compunction do not have any impact on them. Ignorance seems to dominate the entire system and hence breeds disaster. [40]



॥ निवारणाम् ॥

निर्मलीकरणं भूयान्नूनमस्याः प्रयत्नतः ।
यथैयान्न जगद्धात्री धरां त्यक्त्वा त्रिविष्टपम् ॥

एकादशः सर्गः

निवारणम्

अमृततोयमयीं सुरनिम्नगां भुवि
समाऽऽनयनाय भगीरथः ।
यतितवानधुना किल दूषिता
विमलवारिमयी क्रियतां पुनः ।।१।।
सुकृतपुञ्ज-निकुञ्जनिवासिनी
विपुल-पातकपुञ्ज-विनाशिनी ।
सुभग-चञ्चल - वीचि-विलासिनी
विमल-वारिमयी क्रियतां पुनः ।।२।।
तरल-शीतल-तोय-तरङ्गिणी
मधुर-घर्घर-नाद-निनादिनी ।

जिस अमृतजलमयी देवनदी गङ्गा को पृथ्वी में लाने के लिए राजा भगीरथ ने प्रयास किया, वह आज दूषित हो गई है; उसे पुनः निर्मल जल वाली बनाना है। पुण्य पुञ्ज रूप निकुञ्ज (लता समूहों)में रहने वाली, विपुल पापों के समूहों को नष्ट करने वाली, सुन्दर चञ्चल लहरों के विलास वाली, तरल, शीतल जल तरंगों वाली,

The healing touch

Bhagīratha, the king earnestly endeavoured to bring *Devanadī* which bore nectar-like water down to this earth. Today that river has become polluted. Its purity has to be revived. One has to make *Gaṅgā* clean, who is the symbol of virtue. She is the eternal destroyer of evil. Embellished with Her beautiful waves

विकच-पुष्पसुगन्ध-सुवासिनी
विमलवारिमयी क्रियतां पुनः ।।३।।
कल-कलेति सुकेलिकलापिनी
छल-छलेति विवर्णविषादिनी ।
झर-झरस्वनगुञ्जित-हासिनी
विमलवारिमयी क्रियतां पुनः ।।४।।
सकलजीव-सुजीवनदायिनी
निखिल-पादपमूल-रसायनी ।
भरत-भूमि-महत्त्वविधायिनी
विमलवारिमयी क्रियतां पुनः ।।५।।
अथ चतुर्दशपापमपावनं
त्रिपथगा-शुचिरोधसि वर्ज्यताम्[१] ।
स्मरत पद्मपुराणवचांसि भो[२] !
विमलवारिमयी क्रियतां पुनः ।।६।।

मधुर घर्घर शब्द करने वाली, खिले हुए पुष्पों के सुगन्धों वाली, कल-कल ध्वनि से क्रीड़ा करने वाली,छल-छल से अपने दुःख को व्यक्त करने वाली, झर्झर ध्वनि से हँसने वाली देव नदी को फिर से निर्मल जल वाली बनाया जाय। सम्पूर्ण जीव जगत को जीवन देने वाली,सभी पेड़ों, जड़ी बूटियों में रस संचार करने वाली, भारत के महत्त्व को बढ़ाने वाली देवनदी गङ्गा को (उसके पुत्र) पुनः स्वच्छ बनायें।।१-५।।

श्रीगङ्गा के पवित्र तट पर चौदह कार्य नहीं करने चाहिए- शौच, कुल्ला, बाल झाड़ना, निर्माल्य डालना, मैल छुड़ाना, शरीर मलना, हँसीमजाक करना, दान लेना,

of cool water She murmurs softly while flowing. *Gaṅgā* emanates enchanting fragrance of flowers. The surge of Her waves is sometimes playful and sometimes Her ripples move sadly. She is the preserver of the life-giving precious medicinal plants. She is the pride of *Bhārata-bhūmi*.[1-5]

One must abstain from doing these following fourteen acts on the banks of *Gaṅgā* : defecation, rinsing the mouth, combing the hair, throwing the remains of an offering made to a deity, washing scum, washing the body, frolicking, taking alms, love

किमु विकासपथस्य विलासिनो!
ननु विनाशपथं रचयन्ति हा! ।
झटिति रीतिरियं परिवृत्यतां
विमलवारिमयी क्रियतां पुनः ।।७।।

सरसतामपहाय सुधामयीं
विरसता भुजगी परिगृह्यते ।
विषमयं सकलं न भवेज्जलं
विमलवारिमयी क्रियतां पुनः ।।८।।

नगरभूमिगताः खलु नालिकाः
मल-पुरीष-निमित्त-सुनिर्मिताः ।
सुरनदीं प्रति यान्तु न ता यथा
नवविधिः प्रखरैरुपयुज्यताम् ।।९।।

'सुलभ' इत्यधुना परिचाल्यते[३]
मलचयाय नवीनविधिर्यथा ।

रतिक्रिया, दूसरे तीर्थ के प्रति अनुराग, दूसरे तीर्थ का महिमागान, कपड़ा धोना, जलपीटना, तैरना – यह पुराणों का वचन है। इसे स्मरण करना चाहिए।।६।।

विकास पथ पर चलने वाले लोग क्यों विनाश पथ की रचना कर रहे हैं, शीघ्र ही इस रीति को बदलना होगा। अमृतमयी सरसता को छोड़ कर विरसता रूपी विषैली सांपिन को क्यों अपनाया जा रहा है? श्री गङ्गाका जल विषमय न हो पाये, अतएव उसे पुनः स्वच्छ बनाना है। नगर में अनेक सीवर-लाइनें भूमि के अन्दर विछाई गई हैं; उनका जल देव नदी में न गिरे, इसलिए प्रखरमति वाले तकनीकि वेत्ताओं को नवीन विधि का उपयोग करना चाहिये । मल को एकत्रित करने की नवीन विधि

making, praising and admiring other *tīrthas*, washing, beating the waves and swimming. This has been ordained by *Padma-purāṇa* and *Brahmāṇda-purāṇa*. It must not be forgotten.[6]

Why do the steps to progress pave the way to devastation? People seem to have chosen leaving aside Her boon in their folly.This attitude must be changed. Let not the water of *Gaṅgā* be polluted, it has to be cleaned. The sewers should not open into

विविधलाभकरी रचनात्मिका
कृतिरनुक्रियतां परिशोधिका ।।१०।।
सततदूषणकारिरसायनं
विविध-कुत्सित-तैलनिदोहनम् ।
अपि च 'सिन्थिटिके'त्यभिसंज्ञितं
रिपुदलं प्रकृतेर् विनिवार्यताम् ।।११।।
'अवजलं' सततं बहुपङ्किलं
वहति धावति देवनदीं प्रति ।
तदवरोधयितुं सुविचार्यतां
विमलवारिमयी क्रियतां पुनः ।।१२।।
अयि बुधा बहुशास्त्रविशारदा!
विरचयन्तु नवीनसुयन्त्रकम् ।
सकल-दूषणहेतुरवस्करो
निचयकुण्डगतः क्रियतां चिरम् ।।१३।।

'सुलभ' जैसे आज कल चलाई जा रही है, उसी प्रकार विभिन्न लाभ कारक रचनात्मक कार्यों को प्रारम्भ करना चाहिये , जो गङ्गा को परिशुद्ध करने में सहायक हों।।७-१०।।

विभिन्न प्रकार के कुत्सित पदार्थ से निकले कार्बनिक तत्त्वों से बने केमिकल्स, जो सिन्थेटिक कहलाते हैं, इन प्रकृति के शत्रुओं को दूर भगाना चाहिये। जो गन्दा जल देवनदी की ओर निरन्तर बह रहा है उसको रोकने का प्रयत्न होना चाहिये। बहुशास्त्रविशारद विद्वान् वैज्ञानिकों, यन्त्रविदों, तकनिकिवेत्ताओं, इञ्जीनियरों को ऐसा नवीन यन्त्र का निर्माण करना चाहिये , जिससे सभी कूड़े का ढेर नदी में गिरने के बजाय एक अलग कुण्ड में संचित हो और उसका कहीं अन्यत्र उपयोग हो ।।११-१३।।

Devanadī and the layout of the drains should be changed by insightful technocrats. More organizations like 'Sulabha International'. should evolve new methods to divert waste matter away from *Gaṅgā*.[7-10]

Synthetic objects born out of carbonic elements must not contaminate *Gaṅgā*. The flow of dirty water into the *Devanadī* ought to be stopped. Recycling of waste matter has to be

अहह! कर्तित-गुल्म-लता-तरुः
प्रतिदिनं क्रियतेऽद्य हिमालयः ।
वनविनष्टिरहो! अवरुध्यतां
सुखसमृद्धिहरी विपदास्पदम् ।।१४।।

हिमगिरिः प्रभवो बहुभास्वताम्
अपि महौषधिमूल-महीरुहाम् ।
यदमृतत्वमनुत्तममासृजत्
सुरसरित्पयसामतिदुर्लभम् ।।१५।।

खनिज-गन्धक-धातु-रसायनैर्
हिमगिरिप्रभवैश्च सुमिश्रितैः ।
सकलपोषकतत्त्वमयी ह्यसा-
वमृतधारयुताऽभिमता बुधैः ।।१६।।

अपि सुपात्रगतं बहुकालिकं
विकृतिमभ्युपगच्छति न क्वचित् ।
अनुपमं धवलं विमलं जलं
तदमृतं विबुधैरभिमन्यते [४]।।१७।।

हाय आज हिमालय से पेड़ों, लताओं आदि को अन्धाधुन्ध काटा जा रहा है। इस सुख समृद्धि का हरण करने वाले विपत्ति कारक वन विनाश को शीघ्र रोकिये। हिमालय अनेक चमकती औषधियों, जड़ी-बूटियों और वृक्षों की उत्पत्ति स्थली है, जहां से देव नदियों के जल में अमृतत्व बहता है। हिमालय में उत्पन्न खनिज-गन्धक-धातु तथा जीवनवर्धक रसायनों से मिश्रित होकर गङ्गा की धारा बहती है, उसमें सभी पोषकतत्त्वों का समावेश हो जाता है, इसलिए जानकार लोगों ने इसे

introduced by the expert engineers and technocrats.[11-13]

The mindless deforestation of *Himalaya* has to be checked immediately. *Himalaya* is the source of medicinal plants from which numerous rivers absorb their sustaining power. Here only different minerals and salts get mixed with the water of *Gaṅgā*. That is why the informed people call Her *Amṛta-dhār*. Her water

नगमही सततं सुविभूषिता
तरुलताहरिदाभरणैर्वृता ।
सकलदिक्षु लसन्तु मनोहरा
गिरिभुवि प्रसृता वनराजयः ।।१८।।
हिमनदाः तरला न भवन्तु ते
प्रखरतापयुतैः पवनैर्हताः ।
विविध-पादप-गुल्म-तृणादिभिर्
विलसतु प्रचुरं वनदेवता ।।१९।।
विविधबन्धयुता न विधीयतां
सतततीव्रगतिः क्रियतां धुनी ।
परिमिता विदधातु च नालिका
भुवि परिप्लवनाय विनिर्मिताः।।२०।।
मलसमूह-सुदोहदरूपिणः
समुपयोग-सुपुष्पफलान्विताः ।

अमृत धार कहा है। अच्छे बर्तन में बहुत दिनों तक रखे रहने पर भी यह खराब नहीं होता और अनुपम, धवल और निर्मल बना रहता है, इसी लिये अमृत है (अर्थात् मरा नहीं है)। पर्वत भूमि सदा वृक्षों, लताओं और घासों से हरी-भरी रहे। पर्वत शृङ्खलायें वनराजियों से सुशोभित हों । ग्लेशियर्स गर्म हवा के झोकों ने न पिघलें, वनदेवता वन्य वृक्षादिकों से सुसज्जित रहे।।१४-१९।।

गङ्गा को बांधों में न बांधा जाय, उसके जल को तीव्र प्रवाह के लिये छोड़ दिया जाय। उन नहरों की संख्या भी सीमित हो, जो भूमि को सींचने के लिए निकाली जांय। मल समूह खाद के रूप में उपयोग में लाया जाय; अतः गङ्गा के दोनों

remains fresh even after it is preserved for a long time. May the greenery of the mountains increase. Let the glaciers not melt being assailed by the gush of hot air.[14-19]

Gaṅgā should not be restrained by the erection of dams. Her water should gush forth freely. The number of canals which irrigate farms and fields should remain limited. Human waste should be utilized as natural compost. Trees should be planted on

सुरनदीतटवर्तिमहीरुहा
उभयतो विलसन्तु मनोहराः ।।२१।।
धवलधारधरा धरिणी सदा
सरस-शस्य-समृद्धिकरी शुभा ।
सुमन-सौरभ-वासित-विग्रहा
भवतु शान्तियुता सुखदा वरा[५]।।२२।।
भगीरथो निर्मितवान् यथाऽस्या
गभीरखातं पुनरप्यशेषम् ।
हिमाद्रितस्तत्तु तथैव कार्यं
पयोधिपर्यन्तमथापि नूनम् ।।२३।
नाव्यत्वमस्याः पुनरस्तु येन
व्यापारजातं प्रबभूव पूर्वम् ।
तथा पुनः खातगभीरतोया
तरीवहेयं लसताद् मनोज्ञा ।।२४।।

किनारों में वृक्ष लगाये जांय, वे उस खाद को ग्रहण कर पुष्प और फल से युक्त हों। पृथ्वी धवलधारमयी गङ्गा को धारण करे और सरस धन-धान्य से सम्पन्न हो, पुष्पों के सुवास से सुवासित हो कर शान्ति और सुख देने वाली हो।।२०-२२।।

जिस प्रकार भगीरथ ने हिमालय से सागर तक गङ्गा के लिए खात (नहर जैसा मार्ग) बनाया, उसी प्रकार आज भी गङ्गा के खात को हिमालय से सागर तक गहरा बनाने की आवश्यकता है। जिस प्रकार पहले इसमें नौका के सन्तरण की क्षमता थी और इसके जल मार्ग से जहाजों से व्यापार होते थे, उसी प्रकार आज भी गम्भीर

the banks of *Gaṅgā* and sustained by that natural compost the trees shall bear fruits and flowers. Let the entire earth holding *Gaṅgā* be blessed with prosperity.[20-22]

As *Bhagīratha* had dug the earth from *Himalaya* down to *Sāgara* for the free flow of *Gaṅgā* similarly today also the need for dredging is strongly felt. Her navigability should be reinstated.[23-24]

विश्रुता स्वर्धुनी शास्त्रे सर्वदा मकरासना ।
अधुनाऽपि पुनर्दृश्या भवेत्सा मकरालया ।।२५।।

मत्स्य-ग्राहयुता भवेत् सुरधुनी संशोभिता कच्छपैः
पूर्णा स्याज्जलशोधकैर् जलचरैः सा शिंशुमारैः सदा ।
स्मृत्वाऽस्या अधिदैवतं सुविमलं रूपं परं सौख्यदं
सर्वं नाशकरं प्रदूषणमिदं दूरेऽपसार्यं द्रुतम् ।।२६।।

धर्मस्येयममोघभीतिरधुना भस्मासुरैर्मृश्यताम्
मूकाऽन्धो बधिरो भवेद् विषमिदं पीत्वा हि वंशक्रमः ।
गङ्गां जीवनदायिनीं कथमिमे भोक्तृत्ववादैर्हता
भोगासक्तिमया नराः प्रतिदिनं नूनं तिरस्कुर्वते ।।२७।।

खात वाली हो कर यह नौका की वाहिका बने।।२३-२४।।

शास्त्रों में स्वर्धुनी को मकरासना बताया गया है। आज भी उसमें मकर तथा अन्य जलजन्तुओं को रहना चाहिये, जो उसको स्वच्छ बनायेंगे। स्वर्धुनी गङ्गा मछली, घड़ियाल, कछुओं, शिशुमारों आदि जलशोधक जन्तुओं से युक्त हो। उसका अधिदैवत स्वरूप (देवी रूप)जो निर्मल, सुखदायक है, का स्मरण करते हुए सर्वनाशी प्रदूषण को शीघ्र ही दूर करना चाहिए (अर्थात् गङ्गा को नदी नहीं देवी समझ कर उसे पवित्र रखना चाहिये)।।२५-२६।।

धर्म के अमोघ भय से उन भस्मासुरों (अपना नाश स्वंय करने वालों) को विचार करना चाहिये कि— विषमय जल को पीकर उनकी ही आगे की पीढ़ी गूंगी, बहरी, अंधी हो जायेगी। जो भोक्तृत्वाद से नष्ट चेतना वाले भोगासक्ति में निमग्न

The scriptures say that *Gaṅgā* is *Makarāsanā*. It indicates the presence of different kinds of aquatic creatures in Her. She should be revered as a goddess and not merely as a river alone. She should be made pollution free.[25-26]

Those *Bhasmāsuras* who are driven toward self-destruction should ponder over the great laws of nature. Drinking the polluted and poisonous water their own successors will become crippled and deformed. People immersed in materialism are

शक्तिस्तोयमयी दिवोऽवतरिता साक्षात्परा देवता सामान्या
जलवाहिनी सरिदियं नैव प्रकल्प्या क्वचित् ।
कल्याणाय सुकल्पितां त्रिभुवने पूज्यां बुधैर्वन्दितां
सेवन्तां स्वसुखाय कल्पलतिकां गङ्गां जगन्मातरम् ।।२८।।

प्रातिनिध्यं नदीनां सा कुरुते तोयरूपिणी ।
निर्मलायामतस्तस्यां सर्वासां स्वच्छता भवेत् ।।२९।।

सर्वासामापगानां प्रतिनिधिरतुला पुण्यतोया विशाला
स्वच्छीभूयाऽमृताऽङ्गा पुनरपि रुचिराऽपेतदोषा पवित्रा ।
सेव्या स्याज्जीवजातैर् विमलजलमयी भुक्ति-मुक्ति-प्रदात्री
गङ्गा कूले दुकूलायितसितलहरी भासताद् भारते नः ।।३०।।

होकर गङ्गा का नित्य तिरस्कार कर रहे हैं उनको उचित अनुचित का विचार करना चाहिए । यह देवी गङ्गां तो स्वर्ग से उतरी जलरूपिणी साक्षात् परा शक्ति रूपा है, इसे सामान्य जलवाहिनी नदी कभी नहीं समझना चाहिये । जो कल्याण करने वाली, तीनों लोकों में पूजनीय, विद्वानों द्वारा वन्दनीय है, उस जगन्माता,कल्प लता गङ्गा की अपने कल्याण के लिए सेवा करनी चाहिये। पुण्यतोया यह विशाल गङ्गा नदी सभी नदियों की प्रतिनिधि है। अमृतमय अंगों वाली यह स्वच्छ होकर, दोष रहित होकर, विमल जलवाली होकर जीव समूहों द्वारा सेव्य हो तथा भुक्ति और मुक्ति प्रदान करे और गङ्गा अपने तट पर सफेद लहरों के दुकूल (पट)से युक्त होकर हमारे भारतवर्ष में सर्वदा सुशोभित होती रहे।।२७-३०।।

misusing *Gaṅgā*. This *Devi Gaṅgā* is a celestial power in aquatic form who descends from *Swarga*. She should never be deemed as an ordinary river. She is the one who has been worshipped by great sages. People should serve Her in their own interest and for their own well being. *Gaṅgā* with Her holy water is the representative of every river. Let *Gaṅgā* who is Herself being served and worshipped by creatures, grant liberation to us. May She move with Her pure white waves and embellish *Bhārata* eternally.[27-30]



।। श्रीगङ्गार्पणमस्तु ।।

॥परिशिष्टम्॥

(1) ...... Glossary

(२)....... सन्दर्भ-सूची

(३)....... सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(1)

Glossary

Akṣata -- Unhusked and pounded rice washed with water and used as an article of worship in all religious and sacred ceremonies.

Advaita -- Non-duality. The *Sanātanī* monistic view of the *Brahman*, the Supreme Reality.

Anaṅga -- Mythological name of Kāmadeva. See *Kāmadeva*.

Anudātta -- The subdued accent.

Antarikṣa -- The cosmos.

Apsarā -- A dancing girl at the court of *Indra*, the *Vedic* god.

Apraketa -- Indiscriminate, unrecognizable (Ṛg. X 129.3).

Amāvāsyā -- The new moon.

Amṛtadhār -- *Gaṅgā* is contemplated as the stream of nectar.

Arghā -- The lower part of *Śivaliṅga*. See *liṅga*.

Artha -- Attainment of wordly prosperity, regarded as one of the four ends of human existence, the other three being-*Dharma*,*Kāma* and *Mokṣa*.

Arthaśāstra -- A book treating practical life and political government.

Ardhamātrā chandravindu-- The inscrutable sound (which is) yet to be comprehended.

Alakanandā -- A river that runs from the *Himalayas* and falls into *Bhāgīrathī*.

Alakāpuri -- The residence of *Kuber* which is situated on a peak of the *Himalayas*.

	See *Kuber*.
Avadhūta --	One who has renounced the world, an ascetic, a *yogī*.
Avyākṛta --	Elementary substance from which all things are created, considered as one with the substance of *Brahman*. See *Brahman*.
Avidyā --	Spiritual ignorance, illusion.
Aśvamedha --	A celebrated ceremony, the antiquity of which goes back to the *Vedic* period in which a sacred horse used to be sacrificed (See Ṛg. 1.162-163)
Aṣṭākṣara --	A *mantra* (incantation) containing eight syllables.
Aṣṭāṅga mārga --	The eight right paths propounded by the *Buddha*.
Ahār --	Name of a city in Uttar Pradeśa.
Ahaṅkāra --	Individuation (The third of the eight elements of creation). See *Sāṅkhya-Kārikā* 22.
Ākāśadīpa --	Lamp lighted in honour of *Lakṣmī* or *Viṣṇū* and elevated on a pole in the air at *Dīpāvalī* festival in the month of *Kārttika*.
Āgama --	A sacred text.
Āditya --	Name of god in general, especially of *Sūrya* (Sun).
Ātmavidyā --	Spiritual knowlge.
Āratī --	A dish holding a lighted lamp, incense or other articles, is moved in a series of circles in front of the idol as a process of worship.
Āryasamāja --	A sect established by *Swāmī Dayānanda Sarasvatī*.
Ikṣwāku --	The first king of the *Solar Dynasty* in *Ayodhyā*; the predecessor of *Śrī Rāma*.
Idā --	In *Yoga*, the left of the three vessels

running from the loin to the head.

Uttar Kuru -- One of the nine divisions of the world; the country of the northern *Kurus*. See M.William.

Udātta -- The acute accent.

Ṛtambharā -- Perception of the Ultimate Truth.

Ṛṣi -- An inspired sage.

Kaṇvāṣrama -- Hermitage of the renowned sage and author of several hymns of *Ṛg. Veda.*

Kamaṇḍalu -- An earthen or wooden water-pot used by ascetics and devout persons.

Karṇa -- The king of *Aṅga*, elder brother of mother's side of the *Pāṇḍu* princes, being the son of God *Sūrya* by *Kuntī* before her marriage with *Pāṇḍu*. See the *Mahābhārata.*

Karṇavāsa -- A city in Uttar Pradeṣa, situated near *Kannauj.*

Karṇikar -- Name of a flower (Latin name Pterospermum acerifoliuma).

Karma -- Action with its fruit and implications of merit; religious observance, action or rite.

Kalinda -- A mountain from which river *Yamunā* springs.

Kalinga -- The fomer name of present *Orissa.*

Kāma deva -- The Hindu god of love.

Kāmāri -- Lord *Śiva*, the enemy of *Anaṅga*, See *Anaṅga.*

Kāṡa -- A kind of grass used for mat.

Kāśī -- Name of a celebrated city on *Gaṅgā*, the modern Banaras. A holy pilgrimage and one of the most ancient cities of India.

Kinnar -- A mythological being with human body and horse's head; attendant of *Kuber.*

Kuṇḍalinī -- The vital energies awakened by practising *Hatha yoga.*

Kuber -- The demi god of riches and tresure, the chief of the *Yakṣa.*

Kumāril Bhatta -- A renowned scholar of *Mimānsā* philosophy.

Kuru -- Mythological king of India;originator of the famous *Kaurava* dynasty of the *Mahābhārata.*

Kuśa -- A sacred grass used at certain religious ceremonies.

Kṛṣṇa -- The incarnation of Lord *Viṣṇu.*

Ketumāl -- Name of an ancient place.

Kailāśa -- Fabulous residence of *Kuber* and abode of Lord *Śiva*, placed in the *Himalayan* range and regarded as one of the loftiest peaks to the north of the *Mānas* lake.

Krośa -- A measure of distance, approximately two miles.

Kṣaṇika -- Momentary, transitory.

Kṣāra Samudra -- The salt ocean.

Gaṅgā -- The most sacred river of India; supposed to have sprung from the locks of Lord *Śiva.*

Gaṅgottari -- A holy pilgrimage where *Gaṅgā* descends from *Go mukha.* See *Gomukha.*

Ganeśa -- Single attendant of Lord *Śiva* and son of goddess *Pārvatī.* See *Pārvatī.*

Gaṅdha -- Scented substance.

Gandhamādhan Parvata -- A mountain renowned for its fragrant forests. See M. William.

Gandharva -- Demigod of Lord *Indra* (God of the clouds); celestial minstrel or musician.

Garuḍa -- Name of a mythological bird, the vehicle of Lord *Viṣṇu* and enemy of the serpent race; son of *Kaśyapa*

	and *Vinatā*.
Gādhirāja --	Ancient king of *Kānyakubja* and father of sage *Viśwāmitra*.
Girirāja --	The *Himalaya*.
Giriśa --	Name of Lord *Śiva*.
Guru --	A spiritual guide, mentor.
Gopī --	Cowherdess.
Go mukha --	A chasm in the *Himalaya* mountains through which the *Gangā* flows (erroneously conceived to be shaped like a cow's mouth).
Go loka dhāma --	Lord *Kṛṣṇa's* abode.
Ghāt --	A landing-stair on a river bank.
Chakravartittva --	Sovereignty of the world.
Chaṅdrakānta maṇi --	Moon stone; ạ gem supposed to be formed from the congealation of the moon's rays and to desolve under the influence of its light.
Chaṇda Muṇda --	Name of twin demons.
Chaṇdikā --	Title of goddess *Durgā*.
Chāṇdāla --	The lowest of the original mixed *Āryan* communities.
Chinmaya --	Consisting of pure consciousness; Supreme Sprit.
Chid --	The principle of pure consciousness.
Chiḍa --	A kind of pine tree.
Chaitanya Mahāprabhu --	Incarnation of *Rādhā*; founder of *Gaudīya Vaiṣṇava* sect.
Jahnu --	Name of an ancient king who adopted the river Gaṅgā as his daughter.
Jāhnavī --	Another name of *Gaṅgā*.
Jāgrata --	A state of wakefulness; vigilant.
Jīva --	The individual soul.
Takṣaka --	One of the principal *Nāgas*. See *Nāga*.
Tattvabodha --	Enlightenment.
Tathāgata --	Another name of Lord *Buddha*.
Tapas --	Penance.

***Tamoguṇa* --**	Ignorance; in *Sankhya* philosophy one of the three constituents of every thing in nature(the other two being *Sattva* and *Rajas*).
***Trayī* --**	The three *Vedas* taken collectively (*Ṛg*, *Yaguṣ* and *Sāma*).
***Tāḍikā* --**	A fiendish character of the *Rāmāyaṇa*,
***Tāraka* --**	Saviour.
***Tāraka mantra* --**	Invocating chant that releases one from the cycle of rebirth.
***Triloki* --**	Three worlds taken collectively; the universe.
***Triloki pati* --**	The Lord of the three worlds; a name of Lord *Śiva*.
***Triveṇi* --**	The place near *Prayāg* where *Gaṅgā* joins *Yamunā* and receives *Saraswati* which flows underground.
***Triśūl* --**	Trident.
***Tripath* --**	The three paths taken collectively, i.e. the sky, the earth and the nether world.
***Tripathgā* --**	Name of *Gaṅgā* who flows in the sky, earth and the nether world.
***Tripathagāmini* --**	Same as *Tripathgā*.
***Tīrth* --**	Pilgrimage.
***Tīrthrāja* --**	Name of *Prayāg*.
***Tīrthaṅkar* --**	Saint and propagator of the *Jain* sect.
Turiyā --	The fourth state of the soul in which it becomes one with the *Brahmaṇa*.
***Dakṣa* --**	Name of one of the *Prajāpatis*.
***Dakṣa Yajña* --**	A mythological event. See *Śiva Purāṇa*.
***Daṇḍanīti* --**	Polity.
***Dingnāga* --**	Name of a Buddhist philosopher.
***Diśā* --**	Direction; end of the horizon.
***Dīdhiti* --**	A commentary on *Nyāya* philosophy by Raghunāth Śiromaṇi.
***Deva* --**	God.

Devadāru -- A tree of pine or cedar variety.

Devanadi -- Name of several sacred rivers, specially *Gaṅgā.*

Devarṣi -- Name of *Nārada*, a sage and devotee of Lord *Viṣṇu.*

Devabrata -- Another name of *Bhisma.*

Devi -- Celestial, divine, goddess.

Dyulekhā -- Rays of the heaven.

Dharma -- Innate sense of values. See *Artha.*

Dhūrjati -- Name of Lord Śiva for his matted locks.

Dhruva -- The pole star personified as a son of *Uttānpād* and grandson of *Manu.*

Dhruva pada (Dhrupada)-- The most magestic and sublime musical form in Indian classical vocal tradition. *Dhruva* means fixed and *pada* means stanza. A high class type of classical music developed from the ancient *Prabandha.* It (Dhṛupad) was popular from 16th to 19th century.

Dhruva Loka -- Mythologically one of the divisions of paradise.

Nat-nāgar -- Lord *Kṛṣṇā* who loves to dance.

Navamallikā -- A kind of jasmine.

Nāga -- Mythological race of *Kadrū* or *Surasā* inhabiting the waters or the city *Bhogavatī* under the earth; they are supposed to have a human face with serpent - like lower extremities.

Nāga yajña -- Serpent sacrifice performed by king *Janamejaya.*

Nārāyṇa -- Another name of Lord *Viṣnu.*

Nārāyaṇa Parvata -- A mountain from where river *Alakanandā* sprang.

Nirguṇa -- The Supreme Self who is devoid of attributes.

Nigama -- The *Veda* or *Vedic* text.

Nirākāra -- The Supreme Being who is formless.
Nirvikāra -- The immutable Supreme Self.
Nīhāra -- Hoar-frost.
Nirājan -- See *Ārati*.
Nīvār -- Wild rice.
Pakṣatā -- Minor term used in *Nyāya* philosophy.
Padma -- Name of *Gaṅgā* flowing in *Baṅglādeśa*.
Padmanābha -- Name of Lord *Viṣṇu*.
Padma Purāṇa -- Name of a mythological text.
Paramātman -- The Supreme Spirit or *Brahman*.
Parāchiti -- Supreme Consciousness.
Parikṣita -- Name of an ancient king. See the *Mahābhārata*.
Palāśa Puṣpa -- The blossom of the tree Buteā Frondosa.
Paśupati -- Another name of Lord *Śiva*.
Pratīpa -- Name of king. See the *Mahābhārata*.
Pāṇḍavās -- Sons of *Pāṇḍu*, the king of *Hastināpur*. See the *Mahābhārat*.
Pātāla -- Nether world.
Pārvatī -- Nameof goddess Durgā; daughter of the mountain king *Himalaya*.
Piṅgalā -- In yoga, the right of three vessels of the body running from the loin to the head.
Pindārak -- Name of a river.
Pināka -- A bow of Lord *Śiva*.
Pinākin -- Lord *Śiva;* who bears the bow named *Pināka*.
Puṇya -- Virtuous act.
Bali -- Name of a demon king.
Brahman -- The Absolute Being or Reality.
Brahmaloka -- The world or heaven of Brahmā (A division of the universe and one of the supposed residences of pious

spirits).

Brahma vidyā -- See *Ātmavidyā*.

Brahmānanda Purāṇa -- Name of a mythological text.

Bāla mukunda -- Infant *Kṛṣṇa* who grants liberation.

Bimbsār -- Name of a king.

Bimb fruit -- Name of a fruit (red gourd).

Bindusār -- A king of *Magadha*, contemporary of the *Buddha*.

Bhagīratha -- Name of an ancient king of *Ayodhyā* who brought down the sacred river *Gaṅgā* from heaven to the earth and carried this river to the ocean in order to purify the ashes of his ancestors.

Bhaṅga -- An intoxicating beverage.

Bhadant;Bhante -- A term of respect applied to a Buddhist mendicant.

Bhadra -- A stream of *Gaṅgā*, rising on the northern summit of *Meru* and flowing through *Uttar Kuru* into the northern ocean.

Bhadrāśva varṣā -- Name of a country lying east of the *Illāvṛta* country.

Bhasmāsur -- A demon who from Lord *Śiva* got the curse in the guise of blessing to burn anything he put his hand on. He burnt himself in this process.

Bhāgavata Purāṇa -- Name of a *mythological text* related to *Śrī Kṛṣṇa*.

Bhāradwāja muni -- Name of a *ṛṣi*.

Bhārata -- Ancient undivided India named after king *Bharata*. See *Śrīmad Bhāgavata*.

Bhiṣma -- Name of the son of *Śāntanu* by *Gaṅgā* who took a dreadful vow for the happiness of his parents.

Bhūrja -- The birch tree.

Bhoja -- Name of a celebrated king of *Mālva* (*Dhārā*) who had been a great patron

	of *Sanskṛt* learning.
Makarāsanā --	Name of *Gaṅgā* perceived as sitting on a crocodile.
Maṇikarṇikā --	Name of the sacred burning *ghāt* in *Vārāṇasī*.
Mandākinī --	Name of an arm of *Gaṅgā* flowing through the valley of *Kedārnath* in the *Himalayas*.
Maharṣi Kapil --	A sage and founder of *Sāṅkhya Śastra* .
Mahābhiṣa --	Name of a king of the *Ikṣwāku* dynasty.
Mahārāsa --	The most ecstatic and playful moment of Lord *Kṛṣṇa* with the *gopis*. See *Gopi*.
Mahiṣāsura --	A demon killed by goddess *Durgā*.
Mādhurya --	Sweetness, loveliness, exquisite beauty, charm; a feeling of tender affection of *Kṛṣṇa* like that of a girl for her lover.
Mān sarovar --	Name of a sacred lake and place of pilgrimage on mount *Kailāśa*; the abode of Lord *Śiva*.
Māyā --	A term frequently occurs in *Vedānt*; illusion. By means of this illusion one percieves the universe, which does not really exist, as inherent in *Brahma* which alone really exist.
Māyāpuri --	Name of a city; *Haridwār*.
Mālyavān Parvata --	Name of a mountain or mountains (lying east of mount *Meru*).
Mīmānsā Śāstra --	Name of one of the three great divisions of orthodox *Hindu* philosophy.
Yakṣa --	A class of semi - divine beings; attendants of *Kuber*. See *Kuber*.
Yamunā --	A river commonly called *Jamunā*, It rises in the *Himalayas* and meets

	Gaṅgā at *Allāhābād.*
Yajña --	Sacrificial rite or ceremony.
Yāga --	Any ceremony in which offerings are presented.
Yājñavalkya --	An ancient sage.
Rasa --	Spiritual ecstasy.
Rasāswāda --	Perception of spiritual ecstasy.
Rasyamāna --	Being tasted or perceived.
Rāseśwer --	Lord of spiritual ecstasy.
Rāseśwarī --	Goddess of spiritual ecstasy.
Rādhā --	Name of the celebrated *Gopi* (cowherdess) loved by *Kṛṣṇā.*
Rādhā mahotsava --	A festival celebrated in the name of *Rādhā.*
Rudra --	Another name of Lord *Śiva.*
Rudrābhiṣeka --	A bathing ceremony of Lord *Śiva* along with the chantings of *Vedic* hymns.
Rūpa --	Superb beauty.
Rāma līlā --	Name of the dramatic representation performed at the annual festival which takes place in northern India, specially at *Vārāṇāsī* in the beginning of October.
Rāslīlā --	The circular dance of *Kṛṣṇa* and the milkmaids of *Vṛndāvan.*
Raibhya --	Name of a sage.
Lākṣagiri --	Name of a place near *Allahabad.*
Lichhivi --	Name of a regal race; people of ancient *Lichhabi.*
Lakṣmī --	Goddess of wealth; consort of Lord *Viṣṇu.*
Liṅga --	The genital organ of *Śiva* worshipped in the form of a phallus.
Līlā --	The acts of a deity as performed at pleasure (esp. of the avatārs of *Rāma* and *Kṛṣṇa).*
Loka --	The wide space or world either the

universe or any division of it- the sky or the heaven. *Lokas* are commonly enumerated as heaven, earth, and the first two denote a fuller classification of the seven worlds, viz. *Bhūr loka*- the earth,*Bhuvar loka*-the space between the earth and the sun inhabited by sages and the enlightened ones etc., *Svar loka*- Indrā's heaven above the sun or between it and the polar star, *Mahar loka*- a region above the polar star inhabited by sage *Bhṛgu* and other saints who survive the destruction of the three lower worlds, *Janar loka*, inhabited by *Brahma*'s son *Sanata kumar*, *Taper loka*-inhabited by deified ascetics, *Satya loka* or *Brahma loka*- abode of Lord *Brahmā* translation to which exempts from rebirth.Elsewhere these seven worlds are described as earth, sky, heaven and middle region, place of rebirth, mansion of the blest, and abode of truth.

***Loka kartā* --** Creator of the world.

***Varaṇā* --** Name of a small river running past the north of Banāras in to *Gaṅgā*.

***Vārāṇasi* --** See *Kāśī*.

***Vasanta* --** The spring.

***Vasus* --** Class of gods whose number is usually eight.

***Vāmana* --** Incarnation of *Viṣṇu*. See *Śrīmad Bhāgavat Purāṇa*.

***Vikāra* --** Evolutes-that which is evolved from a previous source (5 organs of sense+5organs of action+mind +5gross elements=16). See *Sāṅkhya-Kārikā* 3.

Virajā --	Name of a beloved of *Kṛṣṇa* who was changed into a river.
Virāta --	All-pervaḍing Lord *Viṣṇu.*
Viśvanātha --	Lord of the universe.
Viśweśwar --	See *Viśvanātha.*
Viṣṇu --	All-pervador. The second deity of the sacred triad. See *Śiva.*
Viṣṇupāda (charaṇa) --	Foot of *Viṣṇū;*
Vṛśabhadhwaja --	Name of *Śiva.*
Veda --	The sacred *Hindu* text.
Vaikharī --	Sound coming out from the mouth.
Vaiṣṇavī--	Another name of *Gaṅgā*, related to *Viṣṇu.*
Vaiśālī --	Name of a town founded by king *Viśāla.*
Vyomakeśa --	Name of Lord *Śiva* whose locks coveṛ the sky.
Śaṅkarāchārya --	Name of a celebrated scholar and founder of *Advaita Vedānta.*
Śanì --	The planet saturn, the son of the sun and represented as of a black colour.
Śarada --	The autumn (the time of ripening).
Śāntanū --	Name of an ancient king, the 14th descendant of *Kuru.* See the *Mahābhārata.*
Śāla --	Name of a tree, very tall and stately.
Śikhā --	A tuft or lock of hair on the crown of the head.
Śiva --	The name of disintegrating and reproducing deity; the third god with *Brahmā* and *Viṣṇu.*
Śiśir --	The cool or dew season.
Śukadeva --	The son of *Vyāsa*; a born philosopher and said to have narrated the *Bhāgavata Purāṇa.*
Śumbha --	Name of a demon killed by goddess

	Durgā.
Śūnya --	Vacuity, non-entity, absolute non-existance (esp.with the Buddhists).
Śūla --	A sharp instrument or pointed dart.
Śūlapāṇī --	Name of Lord *Śiva* who holds a spear in his hand.
Śweta --	A mythological king.
Śeṣaśāyī --	Name of Lord *Viṣṇu,* who sleeps in the couch of a celebrated serpant named *Śeṣa,* said to have one thousand heads.
Śrāvāṇa --	Name of the fifth luner month of the *Hindu* calendar (July-August).
Śri --	It is frequently used as an honorific prefix (= sacred, holy) to denote dignity and greatness.
Śruti --	The *Veda.*
Skanda --	Lord of war; the name of *Kārtikeya,* son of *Śiva* and*Agni.*
Skandagupta --	Name of a king.
Sagar --	Name of the king of Solar race; the forefather of *Bhagiratha.*
Saṅgha --	The whole community or collective body or brotherhood of the Buddhist monks.
Sati --	Consort of Lord *Śiva.*
Sandhyā --	Juncture of day and night, morning or evening; twilight.
Sanyāsi --	One who completely renounces the world and its attachments; an ascetic.
Saptarṣhi --	Seven sages; a constellation named after them.
Saraswatī --	Name of the river which got lost in the sands of the great desert.
Swarit --	The mixed tone (accent) lying between high and low.
Swargārohṇa Parvata --	Name of a peak of the *Himalayas.*

Swarṇadī--	Celestial river,Name of *Gaṅgā.*
Swardhunī(Suradhunī)--	See *Swarṇadī.*
Swapna --	Spiritual indolence.
Sāṅkhya Śāstra --	Name of one of the six systems of Indian philosophy, attributed to sage *Kapil.*
Sāmagāna --	A metrical hymn of *Sāma Veda.*
Sitā --	Name of the fabulous branch of *Gaṅgā.*
Suchakṣu --	A stream of *Gaṅgā.*
Sumeru --	Name of a mountain.
Suṣumṇā --	A particular artery of the human body, said to lie between *Idā* and *Piṅgalā,* the channel of the spinal cord.
Suṣupti --	Spiritual ignorance or great insensibility.
Hari --	Name of Lord *Viṣṇu.*
Hastināpura --	The capital of the *Kuru.* See the *Mahābhārata.*
Hinduttva --	*Hindu* identity.
Hiraṇyagarbha -	The title of *Brāhman* who is supposed to be born of a golden egg formed from the seed of the Self-existent Being.
Hetu --	Middle term.
Hemakuṇda --	Name of a place in the *Himalaya*n range.
Hemakūta --	Name of one of the ranges of a mountain.
Hemagiri --	Name of mountain *Meru.*



सन्दर्भ-सूची

प्रथमः सर्गः

१. राधा कृष्णाङ्ग-संभूता या देवी द्रवरूपिणी ।
तदधिष्ठातृदेवीयं रूपेणाप्रतिमा भुवि ।।
ब्र. वै. पु. अ. ३.श्लो.४/ द्र.-वही अ. २-३।

२. वही गङ्गा स्तोत्र अ. ३/१-३/ द्र. वृ.ना.पु. गङ्गोत्पत्ति अ. ६-१० ।

३. रसो वै सः तै. उप. २/७ ब्रह्मानन्द बल्ली -सप्तम अनुवाक ।

४. वृ. ना. पु. गङ्गोत्पत्ति अ. ४ श्लो. ४०-४४।

५. श्रीमद्भागवत स्क. ५, अ. १७ । वा. रा. बाल. का. स. २९/२०-२१
कल्या. वामनांक ९१ श्लो ३३-३४ ।

६. वही ८/२१/४।

७. ब्र. वै.पु. नरनारायण- संवाद अ २/२-३।

८. महाभारत आदि पर्व अ. ९१-९२।

९. द्र.वृ.ना. पु.अ. ६ -१०।

१०. द्र. सांख्य-दर्शन ।

११. यज्ञेष्वनधिकारत्वादपुत्राणामिति स्मृतेः।
पौत्रं तमंशुमन्तं हि पुत्रत्वं कृतवान् प्रभुः।।
वृ.ना.पु. ८/१५।

१२. द्र. वाल्मीकि रामायण बा. का. ४३-४४ सर्ग ।

१३. तपो दीर्घं समादिष्टद् गोकर्णे रघुनन्दन।वा.रा.बा. का. ४३/१२।
पश्चिम समुद्र के तट पर गोकर्ण तीर्थ जिसका विस्तार दो कोश।
कल्या. ना. पुराणाङ्क पृ.६०० ।
गोकर्णं नाम विख्यातं क्षेत्रं सर्व सुरार्चितम् ।
सार्धयोजन विस्तारं तीरे पश्चिम वारिधेः।। ब्र. पु. अ. ५५/७।
कटक-गोकर्ण तीर्थ -कल्या. तीर्थाङ्क पृ.१०९।

१४. नमस्ते विश्वमित्रायै रेवत्यै ते नमो नमः।
स्क.पु. दशहरास्तोत्र ३२। वृ. ना. पु. अ १४/१६।

१५. ह्लादिनी पावनी चैव नलिनी च तथैव च।
तिस्त्रः प्राचीं दिशो जग्मुः गङ्गा शिवजला शुभा ।।
सुचक्षुश्चैव सीता च सिन्धुश्चैव महानदी ।

तिसश्चैतादिशं जग्मुः प्रतीचीं च दिशः शुभाः ।।
सप्तमी चान्वगात्तासां भगीरथरथं तदा । वा. रा.बा. का. स.४३/१२-१४।

१६. अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाऽभिधानतः ।
परदारोपसेवा च कायिकं त्रिविधं स्मृतम्।।
पारुष्यमनृतञ्चैव पैशुन्यं चैव सर्वशः ।
असम्बद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम्।।
परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्टचिन्तनं।
वितथाऽभिनिवेशश्च मानसं त्रिविधं स्मृतम्।।
स्क. पु. काशी. पू. २७/१५२-१५४ ।
दैहिक- (१)विना दी हुई वस्तु को लेना। (२) निषिद्ध हिंसा।(३)परस्त्री संगम। वाचिक- (१) कठोर वचन बोलना। (२) झूठ बोलना ।(३) सब ओर चुगली करना। मानसिक- (१) दूसरे के धन को लेने का विचार। (२) मन में दूसरे का बुरा सोचना।(३)असत्य वस्तुओं में आग्रह रखना।

१७. ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशम्यां हस्तसंयुते ।
स्क. पु. का. खण्ड/ गङ्गादशहरा स्तोत्र। अ. ४/श्लो १ तथा ४५।

द्वितीयः सर्गः

१. गरेण सहितं पुत्रं दृष्ट्वा तेजोनिधिर्मुनिः ।
जातकर्म चकाराऽसौ तन्नाम सगरेति च ।।
वृ. ना. पु. गंगोत्पत्ति अ. ६ श्लो. ११ ।
असमञ्ज इति ख्यातं केशिनी सगरात्मजम् । वा.रा.बा.का. ३८/१६।

२. असमञ्ज स कर्माणि चकारोन्मत्त चेष्टितः। वृ.ना.पु. गङ्गोत्पत्ति ७/२४।

३. अंशुमान् नाम तनयो बभूव ह्यसमञ्जसः ।
शास्त्रज्ञो गुणवान् धर्मी पितामहहिते रतः।। वही ७/२७।

तृतीयः सर्गः

१. राशीभूतः प्रतिदिनमथ त्र्यम्बकस्याट्टहासः - मेघदूतम् पू. ५८।

२. द्र. अभिज्ञान शा. नान्दी श्लोक १/१।

३. स्क. पु. मानस खण्ड अ. ३/७ ।

४. स्वर्गारोहण द्र. कल्याण तीर्थाङ्क पृ. ६०।

५. वही पृ. ६०।

६. वही पृ. ६०।

७. भीमशिला– सरस्वती नदी पर विशाल पत्थर से बना पुल जो भीम के द्वारा रखा गया माना जाता है।

८. विष्णु-प्रयाग – विष्णु गङ्गा+अलकनन्दा।
नन्द प्रयाग–नन्दाकिनी+अलकनन्दा।
कर्ण प्रयाग–पिण्डारक+अलकनन्दा।
रुद्र प्रयाग–मन्दाकिनी+अलकनन्दा।
देव प्रयाग–भागीरथी+अलकनन्दा।

९. द्र. छन्दोमञ्जरी–पं. हरदत्त शास्त्री की प्रभा टीका पृ. ८।

१०. उत्तरयति संसार-सागरात् । म. भा. १३/१४९/६६।

११. उत्तरं प्रधानं श्रेष्ठः। शब्द क.।

१२. दक्षिणस्योत्तरो गिरिः। वही ।

चतुर्थः सर्गः

१. हृषीकेश का पौराणिक नाम कुब्जाम्रक है। महाभा. आरण्यक पर्व अ.८२/३६।
इसे कुब्जतीर्थ भी कहा गया है– कुब्जाख्यं तीर्थमनघं ।
द्र. वृ. ना. पु. गङ्गामाहात्म्य अ. ६ श्लो. ३४।

२. हृषीकाणि नियम्याहं यतः प्रत्यक्षतां गतः ।
हृषीकेश इति ख्यातो नाम्ना तत्रैव संज्ञितः ।। वाराह. पु. रूरूक्षेत्र ऋषिकेश महिमा ।

३. एकैवाऽहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा । दु. स. १०/५ ।

४. कल्या. तीर्थाङ्क पृ. ६२– ६३ ।

५. वही पृ. ६२–६३। उ. प्र. पत्रिका कुम्भ महापर्व अप्रैल १९८६ पृ. २७ ।

६. वही पृ० ६३।

७. वही पृ. ६३।

८. अश्वो वोढेति यत्सूक्तं चतुःषष्टिसमुद्भवम् ।
छन्दऋषिदेवतायुक्तं जपं चक्रे ततः परम् ।।
विनियोगं वाजिकृतं गाधिना यत्प्रकीर्तितम् ।
ततस्ते वाजिनस्तस्मात् निष्क्रान्ताः सलिलाद् द्विजाः।।
सर्वश्वेताः सुवेगाश्च श्यामैकश्रवणास्तथा ।
शतानि सप्तसंख्यानि तावत्संख्यैर्नरैर्युता।।
गंगातीरे शुभे पुण्ये कान्यकुब्जसमीपगम् ।
अस्मिन् स्नाने कृते मर्त्यो वाजिमेधफलं लभेत् ।
स्क. पु. ना.ख. अ. १६५ श्लो. ३४–३७। म. भा. आ. प. अ ११५/१५–१६।

९. राम गंगा का उद्गम गढ़वाल कुमाऊं सीमा में पाण्डुआ खाल से नीचे कुमाऊं की ओर आते समय कालीमाटी नामक स्थान में है। आधे इंच की पतली धार के रूप में उद्भूत रामगङ्गा कुछ ही दूर मेहल चैटी नामक जगह पर विशाल नदी का रूप धारण कर लेती है और चौखुटिया से आगे बहती हुई मैदानों में उतरती है।

१०. उ. राम. च. ३/४७ ।

११. द्र. गंगा हिमालय से सागर तक – पारिस्थितिक अध्ययन । पृष्ठ ५४ –७५।

पञ्चम :सर्गः

१. यत्राऽयजत भूतात्मा पूर्वमेव पितामहः ।
प्रयागमिति विख्यातं तस्माद्भरतसत्तम ।।१४।। म.भा.वनपर्व अ. ८५/१४।

२. स लोकपालः प्रतिमप्रभावस्तीर्त्वा महात्मा वरदो महानदीम् ।
ततः समृद्धान् शुभ-समस्यमालिनः क्रमेण वत्सान् मुदितानुपागमत् ।।
वा. रा. अयो. ५२/१०१।

३. द्र. यवन और मुगल काल (उ. प्र. पत्रिका फरवरी १९८४) पृ. ९ ।

४. भरद्वाज मुनिवसहिं प्रयागा । रा. च. मा. बाल काण्ड दो. ४४–४५।

५. शंकरदिग्विजय ७ सर्ग ७७– १२१ श्लो. ।

६. तु शब्दः तातो यस्य स तुतातः (तु शब्द से कुमारिल को ज्ञान हुआ था)
द्र. काव्यप्रकाश– उ. १(आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि टीका)।

७. गौराङ्गमहाप्रभु और वल्लभाचार्य – उ.प्र. पत्रिका (फरवरी ८४) पृ. ७७।

८. रामानन्द कल्याण भक्ताङ्क पृ. ३४४–४७ ।

९. ह्वेनसाङ्ग का विवरण– सि–यू–की (ह्वीली द्वारा सङ्कलित)।

१०. वही ।

११. उ. प्र. पत्रिका (फरवरी १९८४) पृ. ८०।

१२. ह्वेनसाङ्ग का विवरण– सि–यू–की (ह्वीली द्वारा सङ्कलित)।

१३. द्र. गर्गसंहिता वृन्दावन खण्ड अ. २६/१२ माधुर्य खण्ड १७/२–११।

१४. माघमासे गते जीवे मकरे चन्द्रभास्करे ।
अमावस्या तदा योगः कुम्भाख्यःतीर्थनायके ।।
गङ्गा–यमुनयोर्योगं वदन्ति परमर्षयः ।।
सिता सितोदकं तीर्थं ब्रह्माद्याः सर्वदेवताः ।
मुनयोः मानवश्चैव सेवन्ते पुण्यकाङ्क्षिणः।।

१५. श्रीगङ्गाजी – कल्या. भाग १४ सं. ९. पृ. १६७०।

षष्ठः सर्गः

१. कृते त्रिशूलवद् ज्ञेयं त्रेतायां चक्रवत्तथा ।
द्वापरे तु रथाकारं शङ्खाकारं कलौ युगे ।
मुखं शङ्खस्य गङ्गायां पृष्ठं देहलिसन्निधौ ।
वामपार्श्वस्थितं तोयं रामाख्यं वरणाभिधम् । ब्र. वै. पु. काशी रहस्य ।

२. परिस्फुरद् गाङ्गजलाभिरामां, कामारिशूलाग्रधृतां लयेऽपि ।
स्क. पु. का. खं.अ ५/२०।

३. वाराणसी वैभव – पृ ८३–९९।
द्र. सन्मार्ग तीर्थाङ्क – वाराणसी आर्य तीर्थों का समन्वय स्थल ।
डॉ. पी. वी.राणा सिंह – पृ. ३७१–७२ तालिका २ ।

४. वही– पृ. ३७७–३८०। शिवायतन वारा. वै. पृ. १२२–७४ ।

५. स्क. पु. का. खं. अ. ५७। विनायक पीठ – वरा. वै. पृ. १००।

६. लोलार्क उत्तरार्कश्च साम्बादित्य स्तथैव च।
चतुर्थो द्रुपदादित्यो मयूखादित्य एव च ।।४५।।
खखोल्कश्चारूणादित्यो वृद्धकेशवसंज्ञकौ ।
दशमो विमलादित्यो गङ्गादित्यस्तथैव च ।। ४६।।
द्वादश्चायमादित्य काशीपुर्यां तथैव च ।।४७।।स्क. पु. का. खं. अ. ४६ ।

७. अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका ।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैते मोक्षदायिकाः ।। काशी रहस्य. अ. १३।

८. दिवोदास – द्र. काशी खण्ड अ. ३९ ।

९. असि को पुराणों में शुष्कनदी कहा गया है, जो वर्षा में जल वाली होती थी ।
वाराणसी नदी या च यावच्छुष्कानदी तु वै। मत्स्य.पु.१८३ अ. श्लो.४०।

१०. पाणिभ्यां परितः प्रपीड्य सुदृढं निश्चोत्य निश्चोत्य च ।
ब्रह्माण्डं सकलं पचेलिम रसालोच्चैः फलाम्भो मुहुः।।
पायं पायमपायतस्त्रिजगतीम् उन्मत्तवत्तै रसैः।
नृत्यं ताण्डव- डम्बरेणविधिना पायान्महाभैरवः ।।
स्क. पु. का. ख. अ. ३१/७।

११. सा सुषुम्णा परा नाडी त्रयं वाराणसी त्वसौ ।
तदत्रोत्क्रमणेसर्वं जन्तूनां हि श्रुतौ हरः ।। स्क. पु. का. खं अ. ५/२६ ।

१२. द्र. जबालोपनिषद् ।

१३. भगवानन्तकालेऽत्र तारकस्योपदेशतः ।

अविमुक्ते स्थितान् जन्तून मोचयेन्नात्र संशयः।। स्क.पु.का.खं.अ. ५/२८।

१४. तुलसी तवतीर-तीर सुमिरत रघुवंश वीर।
विचरत मति देहि मोह महिष कालिका ।। विनय पत्रिका १७।

१५. द्र. स्वप्नवासवदत्तम् -भास, सुबन्धु।

१६. द्र.वाराणसी आर्यतीर्थों का समन्वय- डा.पी. वी. राणा सिंह -सन्मार्ग तीर्थाङ्क पृ. ३८२ मानचित्र-१०।

१७. द्र. पञ्चक्रोशात्मक ज्योतिलिङ्ग - पं केदार नाथ व्यास - पृ. २७३-२८० ।

१८. काशी का इतिहास - डॉ. मोती चन्द्र पृ. २५४-२७६।

१९. वाराणसी वैभव पृ. १८२ ।

२०. काशी का इतिहास पृ. १८४।

२१. शङ्कराचार्य की चाण्डल दर्शन की घटना को किसी प्रमाणिक ग्रन्थ में नहीं देखा गया। शङ्कर दिग्विजय के पंचम सर्ग में आदि शङ्कराचार्य का काशी आगमन वर्णित है किन्तु वहां इस घटना का उल्लेख नहीं है। ऐसा अनुमान किया जा सकता है कि चूंकि यहीं (वर्तमान हरिश्चन्द्र घाट) पर चाण्डालों की बस्ती है,अतएव सम्भव है कि उनको चाण्डाल के रुप में शिव दर्शन हुआ होगा। इसी के पास वर्तमान श्रीविद्या मठ स्थापित है। डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार- " स्थूल ज्ञान के द्वारा उन्होंने ब्रह्म की आराधना की, पर उपनिषदों में प्रतिपादित रहस्य तत्त्व का साक्षात् दर्शन उन्हें काशीश्वर के रूप में यही प्राप्त हुआ। अन्नमय देह शूद्रभाव है, चैतन्य आत्मा ब्रह्मभाव है - यही शङ्कराचार्य का काशी में प्राप्त अनुभव था।"
द्र. का. इति.(भूमिका) पृ.९।

२२. केदारेशं महालिङ्गं देहकेदारनाशनम्। ब्र. वै. पु. त्रिस्थली सेतु पृ. १६२।

२३. द्र. पञ्चक्रोशात्मक ज्योतिर्लिङ्ग - पृ. १५९-१६१।

२४. डेढसी के पुल के पास गोदावरी कुण्ड था उसकी धारा गंगा में मिलती थी वहां प्रयाग घाट था । द्र. जेम्स प्रिंसेप का नक्शा ।

२५. डॉ एनी वेसेण्ट थियॉसाफिकल सोसायटी की अध्यक्षा रही । १९०४ में उन्होंने नारी जागरण के लिये महिला महाविद्यालय की स्थापना कमच्छा परिसर में की; किन्तु वह राजघाट स्थानान्तरित हो गया। पुनः १९५४ में उसी स्थान में श्री रोहित मेहता ने वंसन्त कन्या महाविद्यालय की स्थापना की।

२६. मीरघाट में दालभेश्वर है और जरासंध द्वारा स्थापित लिङ्ग लुप्त है ।
पंचक्रोशात्मक ज्योति र्लिङ्ग पृ. १३८।

२७. बुढ़वा मङ्गल काशी का अनुपम सांस्कृतिक उत्सव है । होली के बाद के मङ्गल के दिन मनाया जाता है। लाखों-लाखों नर-नारी इस उत्सव को देखने गङ्गा तट पर आते है; अतः इसे लाखा मेला भी कहते है। कालिदास ने इसे

उदुमङ्गल (संस्कृत में ऋतु मङ्गल अभि: शा. ६/२) कहा है। लोकगीतों में इसे बुढ़वा नाम मिला। बुढ़वा मङ्गल खेलें फाग गौरा संग लिये। मध्यकाल के सगुण भक्त उपासकों नेअपनी बन्दिशों से बुढ़वा आराध्य को रिझाने के लिए बुढ़वा मङ्गल उत्सव प्रतिष्ठित किया। इसमें गङ्गा में सजी धजी नावों में संगीत की शास्त्रीय/उपशास्त्रीय शैलियों में गायन होता है। विस्तृत द्र. जेम्स प्रिंसेप। सहारा विशेषाङ्क दिनाङ्क १.४.९७। का. इति. पृ. ३७९।

२८. श्म शब्देन शवः प्रोक्तः शानं शयनमुच्यते। स्क. पु. का.ख अ.३०/१०३। द्र. काशी का इति. पृ. ६३५।

२९. खनित्वात् तत्र चक्रेण रम्या पुष्करिणी हरिः।
निजाङ्गस्वेदसन्दोहसलिलैस्तामपूरयद् ।।५२।। स्क. पु. का. खं. अ. २६।
चक्रपुष्करिणी तीर्थं पुरा ख्यातमिदं शुभम् ।।६४।। वही।

३०. तारकं ब्रह्म व्याचष्टे तेन ब्रह्म भवन्ति हि ।।२७।। वही अ. ५।
षडक्षर राममन्त्र तारकमन्त्र है–रामतापनीयोपनिषद् कल्या. उपनिषदङ्क।

३१. गणेश घाट में एक मकान की छत पर शमी वृक्ष आरोपित है वहां भगवान गणेश की लाल पत्थर की मूर्ति है।

३२. वल्लभराम शलिग्राम मेहता अस्पताल।

३३. द्र. स्क. पु. का. ख. अ ५९।

३४. द्र. रसगङ्गाधर – प्रथमानन भूमिका।

३५. तैलंग स्वामी द्र. पंचक्रोशात्मक ज्योतिर्लिङ्ग – पृ. २६९।

३६. का. इति. पृ. १९०।

३७. मत्स्योदरी– प्रिंसेप के समय में बनारस घना नहीं बसा था। शहर की लम्बाई तीन मील और चौड़ाई एक मील से अधिक नहीं थी। प्रिंसेप के समय में मैदागिन के तालाब का विस्तार बहुत बड़ा था। यह झील उन झीलों में से एक थी, जो गङ्गा के समानान्तर शहर में फैली थी, जो बाढ़ के समय गङ्गा का फैला पानी ग्रहण करती थी...."समानान्तर में फैली ये झीलें प्राचीन मत्स्योदरी की द्योतक है" (प्रिंसेप पृ.३) एक ओर मत्स्योदरी झील दूसरी ओर मत्स्योदरी परिखा। झील को अन्तश्चर और परिखा को वहिश्चर कहा गया है। परिखा का जल वरणा में गिरता था और बाढ़ में गङ्गा का जल वरणा और परिखा को उल्टा ढकेलता मत्स्योदरी झील तक आ जाता,वहाँ से मन्दाकिनी गोदावरी होता हुआ, पुनः गङ्गा में गिरता था, जिससे गङ्गा से घिरी काशी मत्स्याकार हो जाती थी। का.इति.अ. १० पृ.३५६/३५७।

३८. वाराणसी = वरणा च असी च तयोर्नद्योरदूरे भवा।
अदूरभवश्च (पा. सू. ४/२/७०) इत्यण् ,ङीप्।
वरणासी च नद्यौ द्वे पुण्ये पापहरे उभे।

तर्योरन्तर्गता या तु सैव वाराणसी मता ।। शब्द क. ।
३९. द्र. पंच क्रोशात्मक ज्योतिर्लिङ्ग काशी माहा. पृ. ९५ ।
४०. गङ्गावरणयोः पुण्यात् सम्भेदात् तीर्थभूमिकाम् ।।१।।
सङ्गमे तत्र निष्णातः सङ्गमेशं समर्च्य ।
नरो न जातु जननीगर्भसङ्गममाप्नुयात् ।।२।।
स्क. पु. का. ख. अ. ८४।

सप्तमः सर्गः

१. श्रीगङ्गा कल्या. १४/९ पृ. १४७२ ।
२. बक्सर- वही १४/९ पृ. १४७२।
३. बा. रा. बा. का. सर्ग २५-२६।
४. बक्सर युद्ध - आधुनिक भारत - डॉ जगन्नाथ प्रसाद पृ. ५६
५. बलिया में भृगु आश्रम - श्रीगङ्गा -कल्याण १४/९ पृ.१४७२।
६. प्राचीन भारत का इतिहास- पृ.१६८।
७. प्राचीन भारत का इतिहास - पृ. १६५।
८. प्राचीन भारत का इतिहास - पृ. १७५।
९. द्र. मुद्राराक्षस - प्रथम सर्ग ।
१०. मौर्य साम्राज्य का इति. पृ. ९९।
११. अर्थ एव प्रधानः इति कौटिल्यः । अर्थ मूलौ धर्म कामौ। अर्थशास्त्र अ. ७/७।
१२. वही अ. २/८१,३/३/३,४/४,५/५-६।
१३. लब्धानामपि वित्तानां बोद्धव्यौ द्वावतिक्रमः ।
अपात्रे प्रतिपत्तिश्च पात्रे चाऽप्रतिपादनम् ।।
१४. प्राचीन भारत का इतिहास मौर्यकाल पृ. १७८-१९०।
१५. नन्दमौर्य साम्राज्य का इतिहास पृ. २७७।
१६. सर्वं क्षणिकं क्षणिकं, दुःखं दुःखं, स्वलक्षणं स्वलक्षणं, शून्यं शून्य - मिति भावना चतुष्टयम् । सर्वदर्शन संग्रह- पृ. ३५।
१७. अष्टाङ्गमार्ग- सम्यग् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यग् वाणी, सम्यक् कर्म, सम्यग् आजीव, सम्यग् व्यायाम, सम्यक् स्मृति, सम्यक् समाधि ।
१८. प्राचीन भारत का इतिहास पृ. २८६।
१९. प्राचीन भारत का इतिहास पृ. २८४।
२०. श्रीगङ्गा-कल्या. १४/९ पृ. १६२३। कल्या. ती. पृ. १५९।
२१. *Nalanda- A Ghosha*
२२. म. भा. सभा. पर्व २१/१-१०।

एषा वसुमती नाम वसोस्तस्य महात्मनः । वा. रा. ३२/८।
चक्रे पुरवरं राजा वसु नाम गिरिव्रजम् – वा. रा. ३२/७।

२३. राजगृह– द्र. कल्या. तीर्थाङ्क पृ. १६७।

२४. वर सुख सार पावल तुव तीरे, छोर इत निकट नयन बहनीरे ।
कि करव जप तप जोग थियाने, जनम कृतारथ एकहि सनाने,,
एक अपराध छमब मोर जानी, परसल माय पार तुव पानी । विद्यापति पदावली

अष्टमः सर्गः

१. प्लासी युद्ध – (२३ जून १७५७) ।
द्र. आधुनिक भारत डॉ जगन्नाथ प्रसाद मिश्र पृ.४४।

२. चैतन्य महाप्रभु – कल्याण भक्ताङ्क।

३. *Hoogly* शब्द *Portuges Ogely* (मतान्तर में *Ogelum* अर्थात् ग्राम) शब्द से उत्पन्न हुआ है। *Portuges* जब यहाँ आये तो उन्होंने इस समृद्ध ग्राम में गोदाम बनाया। उनकी भाषा में गोदाम का प्रतिशब्द है *Ogely*, जिससे बाद में अपभ्रंश के रुप में *Hoogly* शब्द उपजा। होगला सुन्दरवन इलाके में पाया जाता है । इस पौधे के लिए दलदल जैसी नर्म, गीली जमीन की आवश्यकता है , जो *Hoogly* नहीं है *Hoogly* शहर के बगल में चुंचुंड़ा शहर का नाम चिंसुरा घास के जङ्गल के कारण पड़ा है । यह नाम भी *Portuges* ने ही दिया है ।

नवमः सर्गः

१. यथाऽन्या सरितो लोके वारिपूर्णा सहस्त्रशः ।
तथैव नानुमन्तव्या सरित् त्रिपथगामिनी ।।८६।।
श्रुत्यक्षराणि निश्चोत्य कारूण्याच्छम्भुना मुने ।
निर्मिता तद्रवैरेषा गङ्गा गङ्गाधरेण वै ।।८७।।
योगोपनिषदामेतं सारमाकृष्य शङ्करः ।
कृपया सर्वजन्तूनां चकार सरितां वराम् ।।८८।। स्कं.पु.का.ख.अ.२८।

२. गमयति प्रापयति ज्ञापयति वा भगवत्पदम्। शब्द क.।

३. नेति–नेति। वृह.उप. ४/२/४।

४. व्यक्तः स तै विभावाद्यैः स्थायीभावो रसः स्मृतः। का. प्र. ४/२८।
व्यक्तिश्च भग्नावरणा चित् । रसगङ्गाधर–प्रथमानन पृ. ९०।

५. यस्य उरूषु... ऋक्. १.१५४.१।

६. विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः। ऋक्. १.१५४-५
७. नारा आपो अयनमस्य सः नारायणः। अमरकोश
८. तम आसीत् तमसा गूळमग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम् ।
तच्छ्येनाभ्वपिहितं यदासीत् तपसस्तन्महिम्ना जायतैकम् ॥
ऋक्. (७/१२९/३) द्र. कल्या. शत्त्यङ्क पृ. ९९।
९. द्र. गंगा चिन्मय आलोक की नदी- सन्मार्ग गङ्गा विशेषांक ।
१०. श्रद्धाविश्वासरूपिणौ। रा. च. मा. बा. का. -२।
११. गोरक्षपद्धति १/५६/१-२।
१२. गङ्गावतरण की दार्शनिक व्याख्या- प्रो. राममूर्ति त्रिपाठी
द्र. सन्मार्ग- गङ्गा विशेषाङ्क।
१३. द्र. शङ्कराचार्यकृत गङ्गाष्टकम् ।

दशमः सर्गः

१. द्र. प्रदूषण की गम्भीर समस्या – आज २३-६-८३।
अब जीना दूभर हुआ इस गन्दगी में – आज ३१-१-९९ रविवासरीय पृ.१।
२. द्र. गङ्गा जल प्रदूषण आज २५-२-८४।
गङ्गा में प्रतिदिन प्रवाहित हो रहा टनों कूड़ा-कचरा- आज ३०-१२-९८ पृ.८।
३. द्र. जहर के दरिया अमृत जैसी गङ्गा में -रविवासरीय हिन्दुस्तान २७-२-८३।
४. डी. डी.टी. का प्रयोग स्वास्थ्य के लिए घातक- आज १-६-८४।
गङ्गाः हिमालय से सागर तक – पृ. १५०।
५. वही पृ १५१।
६. *Turning Himalayas stone - blad. Times of India10.3.84.*
७ *A viable Plan for Reafforestation. P. S. Jha.*
Times of india 10.4.83. गङ्गा हिमालय से सागर तक- पृ.४१,९७-११०।
८. वही पृ. ५२।
९. वही पृ. ५४-७४ ।
१०. छांव चिडियों का लगा है मांगने (काशी का सफर नामा)-
रंजीत कुमार रघुवंश। आज २४-३-८४ ।
११. गङ्गा- हिमालय से सागर तक । पृ. ७५-१००।
Pollution of River Ganga in U.P. with special referenc to
Varanasi- Er. N.C. Pandey.

१२. गङ्गाः हिलालय से सागर तक – पृ. ८८–९०।

१३. हिमालय से सागर तक – पृ. ९०–९६।

एकादशः सर्गः

१. गङ्गां पुण्य जलां प्राप्य चतुर्दश विवर्जयेत् ।
शौचमाचमनं केशनिर्माल्यमघमर्षणम् ।।
गात्रसंवाहनं क्रीडा प्रतिग्रहमथो रतिं ।
अन्यतीर्थरतिं चैव अन्यतीर्थप्रशंसनम् ।
वस्त्रत्यागमथाघातसंतारं च विशेषतः।।
ब्र. पु. प्रायश्चित तत्त्व १/५३५।
कार्ययोजना के दूसरे चरण में गङ्गा में सीवेज का प्रवाह पूरी तरह रुकेगा।
आज ६.२.९९ पृ. ३।

२. मूत्रं वाऽथ पुरीषं वा गङ्गातीरे करोति यः ।
न दृष्ट्वा निष्कृतिस्तस्य कल्पकोटिशतैरपि । पद्म. पु. ७/८/९८।
श्लेष्माणं वापि निष्ठीवं दूषिकाङ्गं वाऽश्रु वा मलम् ।
गङ्गातीरे त्यजेद् यस्तु स नूनं नारकी भवेत् ।। वही ७।८।९९।
परिधेयाम्बराम्बूनि गङ्गास्त्रोतसि न त्यजेत् ।
न दन्तधावनं कुर्यात् गङ्गागर्भे विचक्षणः ।।
कुर्याच्चेन्मोहतः पुण्यं न गङ्गास्नानजं लभेत् । वही ७/९/४४/४५।

३. डॉ. विन्देश्वर पाठक ने सफाई और पर्यावरण के क्षेत्र में सुलभ आन्दोलन की शुरूआत की । उन्होंने पटना में 'सुलभ इण्टर नेशनल' की स्थापना की । १९९४ में वे इन्द्रिरागान्धी प्रियदर्शिनी पुरस्कार से सम्मानित हुए ।

४. द्र. गङ्गा हिमालय से सागर तक । पृ.९–१३।

५. द्र. गंगा परियोजना– वैज्ञानिक विश्लेषण–गङ्गा हिमालय से सागर तक–पृ.१४६

६. ६ अरब खर्च होनें पर भी गङ्गा जल पीने योग्य नही रह गया – दैनिक जागररण १३–१–९७।
.... ताकि धरती का पर्यावरण सुधरे – आज रविवासरीय विशेषाङ्क
३१.१.९९ पृ.१।



सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१ --- अमर कोश- रामाश्रमी टीका ।
२ --- अभिज्ञान शाकुन्तलम् ।
३ --- अर्थशास्त्र -कौटिल्य ।
४ --- आधुनिक भारत- जगन्नाथ प्रसाद - प्रतिमान प्रकाशन, इलाहाबाद ।
५ --- उत्तरा खण्ड यात्रा ।
६ --- उत्तर प्रदेश पत्रिका।
७ --- ऋग्वेद ।
८ --- कल्याण- तीर्थाङ्क।
९ --- कल्याण-नारद पुराणाङ्क।
१० --- कल्याण-शक्त्यङ्क।
११ --- कल्याण-भक्ताङ्क।
१२ --- काशी रहस्य ।
१३ --- काशी का इतिहास-डॉ मोतीचन्द्र।
१४ --- काव्य प्रकाश।
१५ --- कुमार सम्भवम् ।
१६ --- गङ्गा-जगदीशचन्द्र मिश्र।
१७ --- गङ्गा-त्रिरत्नन्यास द्वारा सम्पादित ।
१८ --- गङ्गा-लहरी- पं. राज जगन्नाथ ।
१९ --- गङ्गा- हिमालय से सागर तक -पारिस्थितिक अध्ययन- डा वी. डी. त्रिपाठी।
२० --- गङ्गावतरण - डॉ. जगन्नाथदास रत्नाकर।
२१ --- गङ्गोत्तरी महात्म्य।
२२ --- गोरक्ष पद्धति।
२३ --- छन्दोमञ्जरी (प्रभा टीका) चौखम्भा संस्करण।
२४ --- दुर्गा सप्तशती।
२५ --- देवी भागवत ।
२६ --- नन्द मौर्य सामाज्य का इतिहास - श्री रामगोयल ।
२७ --- *Nalnda : A Ghosh 1986- Archeological Survey of India.*
२८ --- पद्मपुराण ।
२९ --- पञ्चकोशी परिक्रमा- पं. केदार नाथ व्यास।
३० --- प्राचीन भारत का इतिहास - द्विजेन्द्र नारायण झा एवं कृष्णमोहन त्रिपाठी ।

३१ --- पुराणों में गङ्गा- सम्पादक दयाशंकर दूबे।
३२ --- वृहन्नारदीय पुराण।
३३ --- ब्रह्मवैवर्त पुराण।
३४ --- ब्रह्माण्ड पुराण।
३५ --- महाभारत ।
३६ --- मत्स्य पुराण।
३७ --- मुद्राराक्षस।
३८ --- मेघदूत।
३९ --- रसगङ्गाधर।
४० --- रामचरित मानस।
४१ --- वाल्मीकीय रामायण।
४२ --- वाराणसी वैभव - कुबेरनाथ शुक्ल।
४३ --- विद्यापति पदावली।
४४ --- विनय पत्रिका।
४५ --- शङ्कर दिग्विजय।
४६ --- सर्वदर्शन संग्रह।
४७ --- सन्मार्ग - तीर्थाङ्क।
४८ --- सन्मार्ग - गङ्गा विशेषाङ्क।
४९ --- स्कन्द पुराण - मानस खण्ड।
५० --- स्कन्द पुराण- काशी खण्ड।
५१ --- स्कन्द पुराण- नागर खण्ड।
५२ --- शब्दकल्पद्रुम।
53 ----- Sanskṛt English Dictionary- M. William.
54 ----- Sanskṛt English Dictionary- V.S.Apte.



कृतित्व

यह कृति वसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी के दो बुद्धिजीवी व्यक्तित्वों की सारस्वत-निर्मिति है। मूल रचना एवं हिन्दी अनुवाद है डॉ. कमला पाण्डेय का तथा अंग्रेजी भावानुवादकर्त्री हैं डॉ. अनुराधा बैनर्जी।

उत्तम शैक्षणिक योग्यता से सम्पन्न डॉ. पाण्डेय ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से एम.ए.(संस्कृत) एवं प्राचीन न्याय के गम्भीरतम ग्रन्थ न्याय वार्तिक तात्पर्य परिशुद्धि के समीक्षात्मक अध्ययन पर १९७७ में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की तथा सम्पूर्णानन्द सं.वि.वि. से साहित्याचार्य की पदवी भी प्राप्त की है। संस्कृत भाषा के उन्नयन की अभिलाषिणी आप संस्कृत-मातृ-मण्डलम् की स्थापिका एवं सञ्चालिका हैं, अनेक शैक्षणिक शोध-पत्रों के प्रकाशन के साथ ही 'देववाणी के नये सन्दर्भ' एवं 'श्रीगङ्गा दण्डकम्' आपकी प्रकाशित कृतियां है।

मौलिक चिन्तन की धनी डॉ. अनुराधा बैनर्जी ने उत्कृष्ट शैक्षणिक योग्यता के साथ काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से एम.ए. (अंग्रेजी) एवं पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। त्रिपथगा की भांति आपकी रचना धर्मिता तीन भाषाओं (अंग्रेजी, हिन्दी, बंगला) में गतिशील है। कविताओं, कहानियों एवं शोधपत्रों के साथ-साथ आपकी दो पुस्तकें भी प्रकाशित हैं- (१)Critical analysis of Graham Green's fiction, Graham Green- Ways of salvation. (२) बंगला कविता संग्रह- (डॉ. अरुणा मुखोपाध्याय के साथ)

रक्षत गङ्गाम्

रक्षत गङ्गां, रक्षत गङ्गां, रक्षत गङ्गां मातरम्

गङ्गां मातरम्॥१॥

स्मरत पुराणे लिखितं वचनं,

चतुर्दशानां तटे वर्जनम्

अघहारिण्यै अघं न देयम्

प्रियकारिण्यै प्रियं प्रदेयम्

रक्षत अमलां रक्षत विमलां रक्षत स्वच्छजलाम्

गङ्गां मातरम् ॥२॥